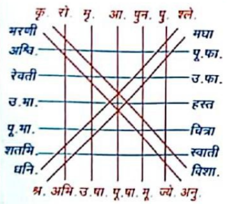
विवाहे पञ्चशलाका चक्रम्



वधू प्रवेशनेदाने वरणे पाणिपीडने।
वेध: पञ्चशलाकाख्योऽन्यत्रसप्तशलाकक:।।

अथ ग्रहाणां चतुर्विध सम्बन्धमाह।

प्रथम: स्थानसम्बन्धो दृष्टिजस्तु द्वितीयक: तृतीय: सत्येकतादृष्टि: स्थित्येकत्र चतुर्थक:।।१।।

अन्योन्यगौ तथा स्वे स्वेसंयुतावन्यभेस्थिति:। पूर्णेक्षितौ मिथे वापि चैक वर्ग गतौ यदा।।२।।

अथ ग्रहाणां फल विचारे विशेषमाह उच्च त्रिकोण स्वसुहृच्छत्रु नीच गृहांकगै: शुभं सम्पूर्णपादेन दलं पादाल्प निष्फलमिति।

वाण पंचकम्। (रवि गतांशा)

व्रतेत्याज्य: रोग: ८, १७, २६

अनलोऽयंगृह स्याच्छादने त्याज्य: सशल्य: २, ११, २०, २९

नृपसेवायां नृप: ४, १३, २२

यात्रायांत्याज्य: चोर: ६, १५, २४

विवाहेत्याज्य: मृत्यु: १, १०, १९, २८

।।ॐ।।
श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्

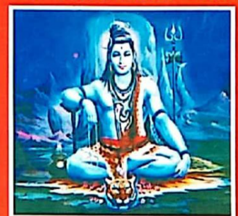


राजा-गुरुः

।श्री।
काशी का शुद्ध पञ्चाङ्ग



।।ॐ।।
श्री विश्वनाथाय नमः



मंत्री-मंगल

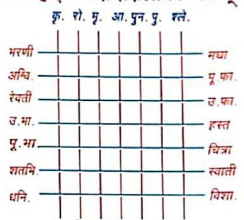
अथ ग्रहाणामरिष्टं परिहरत्वमत्राह

राहु: दोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चर:। त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चित:।।१।।

पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमा। सप्तदोषं रविर्हन्याद्विशेषादुत्तरायणे।।२।।

अथ स्थान विशेषेण ग्रहाणां विफलत्वमाह- सभानुरिन्दु: शशिजश्चतुर्थे गुरु: सुते भूमिसुत: कुटुम्बे।।भृगु: सपत्ने रविज: कलत्रे विलग्नतस्ते विफला भवन्तीति।।३।।

विवाहादन्यत्र सप्तशलाका चक्रम्।



चक्रे सप्तशलाकाख्ये सवेध: सर्वकर्मसु।
चिन्तनीयो विवाहे तु पञ्चरेखासमुद्भव:।।

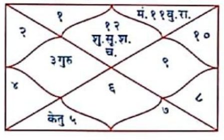
श्री संवत् २०८३, शाके १९४८, बंगला सन् १४३२ मेषार्कतः १४३३, ईसवीय सन् २०२६-२०२७, फसली सन् १४३३-१४३४, हिजरी सन् १४४७-१४४८ गतकलिः ५१२७, वर्ष विश्वा १८ समर्घताकरम्।

अकूपारं तीर्त्वा जनकतनयापादकमले।
प्रणम्याथो लंकामनयतसलीलं मलिनताम्।।
कृते यो रामस्य प्रथितचरितं कल्मषहरम्।
सदाऽहं तं वन्दे पवनतनयं भक्त परमम्।।

श्रीसंवत् २०८३, शाके १९४८ वर्षे समय-शुद्धिः

खरमास:-	वर्षारम्भात्- वैशाख कृष्ण १२ भौमत: (१४.४.२०२६) यावत्।
गुरु:	वर्षारम्भे मिथुने, अधिक ज्येष्ठ कृष्ण ३ बुधत: (३.६.२०२६) कर्क राशौ। आषाढ शुक्ल १ बुधत: (१५.७.२०२६) पश्चिमास्त: श्रावण कृष्ण १२ सोमत: (१०.८.२०२६) पूर्वोदय:। मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शनित: (१२.१२.२०२६) वक्री वर्षपर्यन्तम्।
शुक्र:	आश्विन शुक्ल ३ भौमत: (१३.१०.२०२६) पश्चिमास्त: कार्तिक कृष्ण २ बुधत: (२८.१०.२०२६) पूर्वोदय:।
शनि:	वर्षपर्यन्तम् मीन राशौ, आषाढ शुक्ल १२ रवित: (२६.७.२०२६) वक्री, मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरुत: १०.१२.२०२६ मार्गी।
राहु:-	वर्षारम्भे कुम्भ राशौ, मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुत:। (३.१२.२०२६) मकर राशौ वर्षपर्यन्तम्।
केतु:-	वर्षारम्भे सिंह राशौ, मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुत: (३.१२.२०२६) कर्क राशौ वर्षपर्यन्तम्।
पौराणिक-	अधिक ज्येष्ठ शुक्ल ६ शुक्रत: (२२.५.२०२६) अगस्त्यास्त: भाद्रपद कृष्ण १२ भौमत: (८.९.२०२६) अगस्त्योदय:।
खरमास:	धनु-मीन राशिगते सूर्ये खरमास:।
विवाह:	वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ कृष्ण, कार्तिक शुक्ल, मार्गशीर्ष, पौष शुक्ल, माघ, फाल्गुन।

वर्ष लग्नम्
११।१७।२।४५



आर्द्रादौ भूमादौ वर्षाढक

आर्द्रा.	पुनर्व.	पुष्य	श्लेषा	मघा
२।।	२।।	२	१।।	३।।
पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती
१	२	१।।	१	१

आषाढे ३, श्रावणे ४, भाद्रपदे ३, आश्विने २, कार्तिके, अन्येषु मासेषु साधारण वृष्टि:।

विन्ध्योत्तरवासिनांविंशोत्तरीयमतेनायव्ययचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशय:	योग
१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११	आय:	१२३
२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८	व्यय:	८७

विन्ध्यदक्षिणवासिनामष्टोत्तरीयमतेनायव्ययचक्रम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशय:	योग
११	५	८	२	५	८	५	११	१४	२	२	१४	आय:	८७
५	१४	११	११	५	११	१४	५	११	८	८	११	व्यय:	११४

अनेन चक्रेण विशेष विचार:- लाभव्ययौ समीकृत्वा एक हीनं तु कारयेत्। अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्।। लाभं१, सौख्यं २, क्लेश ३, रोगं ४, लोकापवादनं ५, सम्मानम् ६, विजयं ७, हानिः ८, कथितं पूर्व सुरभिः।। अथवा उभय लाभैक्यं लाभः।। व्ययैक्यंञ्च व्यय इति। विभागे यत्र लाभैक्यमधिक तत्र शुभम्। काश्यां पलभा ५।४५ आक्षांशाः २५।१८ चरखण्डा ५७।४६।१९, देशान्तर स्पष्ट घट्यादिः १।९

धर्मो रक्षति रक्षितः

श्रीकाशीस्थधर्मसभासद्वांसम्मतम् - २०८३

सत्यान्नास्ति परोधर्मः

वर्षारम्भे
'रौद्र'
नाम संवत्सर:
संकल्पादौ वर्षपर्यन्तम् योजनीयम्

श्री डॉ.जीवनाथ ओझा, एम.ए.गणित पीएच.डी. विद्यावारिधि ज्योतिषशास्त्राचार्येण प्रवर्तितम्

प्रधानसम्पादक
रामेश्वरनाथ ओझा एम.ए. ज्योतिषशास्त्राचार्य

सम्पादिका
श्रीमती कान्ति ओझा एम.एससी. गणित, ज्योतिषी

सहायक सम्पादक- श्रेयांश ओझा

कार्यालय श्री महावीर पञ्चाङ्गम्
बी. ३७/१८२-क, खन्ना वाटिका, बिरदोपुर, वाराणसी। मो. ९४५१५२८८३४

सलाहकार- डॉ. सुरेन्द्रनाथ ओझा पूर्व प्रोफे. राजकीय आयुर्वेदिक कालेज सं.सं.वि.वि. वाराणसी।

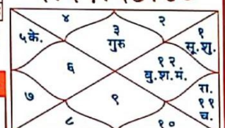
अजगरा (तारगाँव) चन्दौली, वाराणसी।

अग्रिम वर्षे
चैत्र शुक्ल १ बुधत:
'दुर्मति'
नाम संवत्सर:
प्रवेक्ष्यति।

श्री पंडित ऋषिकेश पाण्डेयेन विरचितम्

प्रकाशक- ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर वाराणसी।

जगल्लग्नम्
२।२९।५८।४०



जन्मलग्नाज्जगल्लग्न फलम्

१ देह सुखम्	७ स्त्री
२ धन लाभ:	८ रोगभयम्
३ कुटुम्ब वृद्धि:	९ धर्म लाभ:
४ मित्र सुखम्	१० पुत्रप्राप्ति:
५ पुत्र प्राप्ति:	११ लाभ:सुखम्
६ शत्रु जय:	१२ व्यय कष्टम्

मूल्य- 85/-
विदेश में $ 6/-

विषय-सूची

प्रवर्तक एवं आद्यसम्पादक

स्व.डॉ.जीवनाथ ओझा

एम.ए.गणित, ज्योतिषशास्त्राचार्य

विद्यावारिधि पीएच.डी.



विद्वत्सुपूज्यः कमनीयकीर्तिः। ज्योतिर्विदां यो गणिते च दक्षः।।
पञ्चांग निर्माण विधौ प्रशस्तः। तं जीवनाथं पितरं नमामि।।१।।
वाराणसी मण्डलमध्यवर्ती। ग्रामः सुधन्यो भुवि तारगाँवः।।
लब्ध्वा च येनात्र जनिः पवित्रा। प्रीतिर्भवेत्तस्य सुपादपद्मे।।२।।
दूरीकृतस्तेन घनाऽन्याकरः। शिक्षाप्रचारेण सदानराणाम्।।
सर्वं स्वकार्यं हनुत्प्रसादात्। संसाधितं तं प्रणमामि नित्यं।।३।।

दो शब्द

विगत ८३ वर्षों से प्रस्तुत **श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्** आपकी सेवा में अनवरत् प्रकाशित हो रहा है। अनन्त श्रीविभूषित स्वामी करपात्री जी ने सन् १९४३ में दिल्ली के यमुना तट पर एक यज्ञ का आयोजन किया था, उसी अवसर पर हमारे पूज्य पिता स्व०पण्डित जीवनाथ ओझा ने उनका दर्शन कर पञ्चाङ्ग निर्माण-प्रकाशन की अपनी अभिलाषा बताई तब श्रद्धेय स्वामी करपात्रीजी ने हनुमत् आराधना के लिए 'अकूपारं तीर्त्वा जनकतनया पादकमले......' श्लोक दिया तथा अपनी सम्मति एवं आशीर्वाद इस पञ्चाङ्ग के निमित्त प्रदान किया। तब से अद्यतन् यह पञ्चाङ्ग आपके सम्मुख है।

आप कृपालु पाठकों के स्नेह एवं सहयोग का ही परिणाम है कि आज काशी का यह प्राचीन एवं लोकप्रिय पञ्चाङ्ग भारत ही नही अपितु विदेशों में रहने वाले भारतीय बन्धुओं मे भी सर्वथा प्रचलित है।

पञ्चाङ्गापेक्षित परामर्श, सुझाव का हम सदैव आदर करते हैं, अतः अपना अमूल्य सुझाव और सम्मति भेजते रहें, इससे हमारा उत्साह बढ़ेगा। यद्यपि कि पूरा प्रयास किया जाता है कि कहीं कोई त्रुटि न रह जाये किन्तु दृष्टि में न आने के कारण यदि कोई छूट हो जाती है तो आप विद्वत्जनों से निवेदन है कि सहयोग करें।

पुनश्च– यदि पञ्चाङ्ग में छपाई से सम्बन्धित कोई त्रुटि हो जैसे पक्ष उल्टा लगा हो या ना लगा हो या छपाई से सम्बन्धित और कमी हो तो कृपया 9369516832 पर संपर्क कर अपना नाम, पता लिखवा दें। आपकी शिकायत दूर की जायेगी।

कृपाकांक्षी
रामेश्वरनाथ ओझा
श्रीमती कान्ति ओझा
9451528834

श्रीमंगलमूर्त्तयेनमः

काशीशं गणनायकं सुरगुरुं देवीं तथा श्रीपतिम्।
स्तुत्वावायुसुतं सभक्ति मनसा ध्यात्वा च नत्वा गुरुम्।।
स्वर्गीयं पितरं नमामि विवुधं श्रीजीवनाथं हि तम्।
नित्यं लोकहिताय यस्य कृपया पञ्चाङ्गमातन्यते।।

संवत्सरावली

सतयुग का मान	-	१७,२८००० वर्षाणि
त्रेतायुग का मान	-	१२,९६,००० वर्षाणि
द्वापरयुग का मान	-	८,६४,००० वर्षाणि
कलियुग का मान	-	४,३२,००० वर्षाणि

इस वर्ष कल्पारम्भ से १९५५८८५१२७ वर्ष कलियुग के आरम्भ काल से ५१२७ वर्ष, श्रीविक्रमादित्य के सिंहासनारोहण काल से २०८३ वर्ष एवं शकारम्भ से १९४८ वर्ष व्यतीत हुए। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा १९ मार्च गुरुवार को सूर्य सिद्धान्तीय अहर्गण = ७१४४८४१६५३९० + ३५५ = ७१४४८४१६५७४५ एवं ग्रहलाघवीय अहर्गण ६८ तथा गतचक्र ४६ है। वर्षारम्भ से **रौद्र** नामक संवत्सर चलेगा, जो संकल्पादि में वर्षभर प्रयोग किया जायेगा।

५४वाँ 'रौद्र' संवत्सर– **अल्पतोयप्रदा मेघा अल्पसस्या च मेदिनी।**
निष्ठुराः पार्थिवाः रौद्रे दवाग्निः प्रजायते।।

रौद्र नामक संवत्सर के फल में वर्षा थोड़ी, पृथ्वी पर अन्न का उत्पादन अल्प, राजालोग निष्ठुर होंगे तथा वनों में आग लगेगी।

५५वां 'दुर्मति' संवत्सर– **सुभिक्षं भुवि सामान्यं व्यवहारं प्रवर्तते।**
भवेच्च मध्यमा वृष्टिर्दुर्मती वत्सरे प्रिये।।

शिवजी कहते हैं कि हे प्रिये पार्वती! दुर्मति संवत्सर में पृथ्वी पर सुभिक्ष, लोगों का व्यवहार सामान्य रहेगा। मध्यम वर्षा होगी।

ग्रह सभासद विचार– **चैत्रादिमेषादिकुलीरतौली मृगादिवाराधिपतिक्रमेण।**
राजा च मन्त्री ह्यथ सस्यनाथो रसाधिपो नीरसनायकश्च।।
आर्द्रादिनाथो घननायकश्च धान्याधिपश्चापदिनादिवारः।।

राजा गुरु फलम्

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुधाश्च धेनवः।
यजन्ति विप्रा वहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवं सर्व जनेषु वर्तते।।

इस संवत्सर में राजा का पद इस बार वृहस्पति को प्राप्त होने से पृथ्वी पर वर्षा उत्तम होगी, गायों में दूध बहुत उतरेगा, अग्नि होत्री ब्राह्मण यज्ञ-यज्ञादि करने वाले होंगे, सबके घर में मंगल उत्सव सम्पन्न होंगे।

मंत्री भौम फलम्

अवनिजो ननु मंत्रिपदं गतो भवति दस्युगदादिजवेदना।
जनपदेषु जयं सुखसंचयम न बहु गोषु पयो द्विजकर्म च।।

यदि मंगल मंत्री हो तो चोर तथा रोग से लोगों को पीड़ा मिलेगी। जनपदों में जय, सुख की वृद्धि, गायों में अल्प दूध तथा विप्र लोग निजकर्म में निरत रहेंगे।

सस्येश शुक्र फलम्– **शुक्रो यदा धन्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं च।**
गोधूमशालीक्षुधानप्रियंगुवृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि।।

शुक्र के सस्येश होने के फल में सुन्दर वर्षा, गेहूँ, धान, ईख, नागरमोथा, कंगुनी का उत्पादन अधिक तथा वृक्षों में फल-पुष्प सुखप्रद होंगे।

दुर्गेश चन्द्र फलम्– **गढ़पतिर्मृगलांछनको यदा नृपसुराज्यविलासित पौरजाः।**
बहुधनेक्षुजगोरसभोगिनो नर वरा नरर्णितविग्रहाः।।

इस बार चन्द्रमा दुर्गेश है जिसके फल में सुव्यवस्थित शासन से जनता प्रसन्न रहेगी। बहुत वर्षा, गोरस, ईख तथा रस पदार्थो का उपयोग एवं लोगों के द्वारा शासकों का यशोगान किया जायेगा।

धनेश गुरु फलम्– **सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो, वणिजवृत्तिपराः सुखभाजनाः।**
फलितपुष्पितभूमिरुहाः सदा विविधद्रव्ययुता भुवि मानवाः।।

गुरु के धनेश होने के फलस्वरूप व्यापारी तथा फूल के रोजगारीयों को लाभ होगा। वृक्ष फल-पुष्प से सुशोभित तथा मनुष्य विविध द्रव्यों से युक्त रहेंगे।

रसेश सूर्य फलम्– **रसपतौ तरणौ धरणी तदा विरसभोगतथाल्पयोधरा।**
वसनतैलघृतप्रियमानवाः सुखरसं च भुनक्ति महीपतिः।।

यदि सूर्य रसेश हों तो वर्षा की कमी, रस पदार्थों का अल्प उत्पादन होगा। भोग्य साधनों की कमी, मनुष्यों को वस्त्र तेल घी अधिक प्रिय होगा तथा राजा लोग सुख भोग करेंगे।

धान्येश बुध फलम्– **बहुसस्ययुता पृथ्वी रसानां च महर्घता।**
नीतियुक्ताः सदा भूपा बुधे धान्याधिपे सति।।

वुध के धान्येश होने के फलस्वरूप पृथ्वी बहुत धान्य से युक्त, रसपदार्थों में मंहगी होगी। राजा लोग नीतिपूर्वक कार्य करने वाले होंगे।

नीरसेश गुरु फलम्– **हरिद्रापीतवस्तूनां पीतवस्त्रादिकं च यत्।**
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा।।

नीरसेश के पद से सुशोभित गुरु के फल में हल्दी आदि पीले पदार्थ तथा पीताम्बरादि वस्त्रों में सबकी रूचि होगी।

फलेश चन्द्र फलम्– **यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता व्रतिभिःकुसुमैर्युताः।**
द्विजमुखा वरभोगसमन्विता नृपतयो नयनाटनतत्पराः।।

फलेश चन्द्रमा के फल में वृक्षों में अधिक फल-फूल होंगे। विप्रलोग उत्तम भोग पदार्थों का उपभोग करेंगे तथा राजा लोग नीति निपुणता से व्यवहार करेंगे।

मेघेश चन्द्र फलम्– **चन्द्रे मेघाधिपे जाते बहुतोयप्रदा घनाः।**
नन्दन्ति पार्थिवाः सर्वे प्रजानां च सुखं सदा।

चन्द्रमा ही मेघेश भी हैं। इनके मेघेश होने के फलस्वरूप बहुत वर्षा होगी। राजा लोग प्रमुदित तथा प्रजा को सदा सुख रहेगा।

रोहिणी वास फलम्– **खण्डवृष्टिश्च सन्धिषु।** रोहिणी निवास इस वर्ष सन्धि में होने से खण्डवृष्टि होगी। *संवत्सर वास फलम्–* **सर्वधान्यं महर्घंस्याद्वणिग्वेश्मनि संस्थिते।** संवत्सर का निवास वैश्य के घर में होने से सभी अन्न महँगे होंगे। *समय वाहन फलम्–* **-जनता भ्रमिता सर्वाश्चतुष्पदाः प्रपीडिताः। विफला सकला धात्री नौका वाहनवत्सरे।।** इस वर्ष समय का वाहन नौका है जिसके फल में जनता भ्रमित, चौपायों को पीड़ा, सम्पूर्ण पृथ्वी फलरहित होगी। *आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश फलम्–तिथि फलम्–* **स्यान्नवम्यां त्वीतिबाधनम्।** आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश नवमी तिथि में हो रहा है जिसके फल में ईति-भीति (अतिवृष्टि, मूषक,टिड्डी आदि का प्रकोप) होगा। *वारफलम्–* **सोमे सुभिक्षदः।** आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश सोमवार को हो रहा है जो सुभिक्षकारक है। *नक्षत्रफलम्–* **हस्ते सर्वसुखावहम्।** सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश हस्त नक्षत्र में होने से सुखवर्द्धक है। सुभिक्षकारक है। *योगफलम्–* **अल्पवृष्टिवरीयांस्तु-** आर्द्रा प्रवेश वरीयान योग में होने से अल्पवृष्टि होने के योग बन रहे हैं। *बेलाफलम्-* **रात्रौ सस्याभिवृद्धये।** आर्द्रा नक्षत्र का प्रवेश रात्रि में हो रहा है जोकि सस्यवर्द्धक होगा। *नवमेघानां–* **अल्पवृष्टिश्च काले** काल नामक मेघ में अल्पवृष्टि के योग मिल रहे हैं। *चतुर्मेघानां–* **पुष्करो मन्दवृष्टिश्चः-** पुष्कर मेघ होने से अल्पवृष्टि होगी।

वर्षा विचार

१५ से २२ जून के बीच मानसून पूर्व साधारण वृष्टि होने की सम्भावना बन रही है। २२ जून सोमवार से आर्द्रा प्रवेश के साथ हल्की वर्षा होगी। जून के अन्त २९-३० जून तथा जुलाई की शुरुआत में बहुत अच्छी वर्षा होगी। पुनर्वसु ६ जुलाई के सूर्य में १४-१५-१६ जुलाई के आसन्न भी वर्षा की सम्भावना बन रही है। पुष्य नक्षत्र २० जुलाई को अथवा इसके आगे-पीछे के दिनों में अच्छी वर्षा होगी। श्लेषा नक्षत्र ३ अगस्त के आसन्न साधारण वर्षा के योग है। १० से १५ अगस्त के आसन्न वर्षा होगी। मघा नक्षत्र १७ अगस्त को तथा अगस्त के अन्त में भी वर्षा के योग है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के सूर्य ३१ अगस्त के आसपास बहुत अच्छी बरसात होगी। सितम्बर के प्रथम सप्ताह में भी अच्छा पानी बरसेगा। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र १४ सितम्बर के आसपास हल्की से साधारण वृष्टि होगी। २० सितम्बर से २५ सितम्बर तक भी पानी बरसने की सम्भावना है। हस्त नक्षत्र २७ सितम्बर के आसपास तथा अक्टूबर के प्रारम्भ में वर्षा होगी। चित्रा नक्षत्र में भी वर्षा के योग है। स्वाती नक्षत्र में अक्टूबर के अन्त में भी वर्षा के योग है।

वर्ष फलम्

ध्वनि रुच्चरितोऽध्वरे द्युगामी विपुलो यज्ञमुषां मनांसि भिन्दन।
विचरत्यनिशं द्विजोत्तमानां हृदयानन्दकरोध्वरांशभाजाम।।
विविद्यैर्वियदुन्नतैः पयोदैर्वृतमुर्वी पयसाभितर्पयद्भिः।
सुरराज गुरोः शुभे तु वर्षे बहुसस्या क्षितिरुत्तमर्द्धियुक्ता।।

वेद के अंग अर्थात् वेदाङ्ग के रुप में प्रतिष्ठित ज्योतिष शास्त्र वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को परमपिता ब्रह्मा जी ने इस सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी। ज्योतिषीय काल गणना के अनुसार चार युगों की व्यवस्था की गई है। अन्तिम कलियुग के ५१२७ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।

ज्ञान एवं विवेक के अधिष्ठाता देवगुरु बृहस्पति के नेतृत्व में **'रौद्र'** नामक नया संवत्सर १९ मार्च गुरुवार से प्रारम्भ हो रहा है, अतः इस संवत्सर के राजा बृहस्पति भगवान हैं। मंत्री का पद मंगल को प्राप्त हुआ है। आकाशीय मंत्री परिषद के कुल १० विभागो में आठ विभाग शुभ ग्रहों के पास है। अकेले गुरु के पास राजा सहित कुल तीन विभाग हैं। इस प्रकार शुभग्रहों का ही वर्चस्व है।

गुरु के इस साल राजा होने से इस वर्ष धार्मिक व सांस्कृतिक आयोजनों से सम्पूर्ण देश का वातावरण पवित्र आकर्षक व मनोरंजक बना रहेगा। सात्विक चर्चा का प्रचार प्रसार तथा तामसिक विचारों का भेदन होगा। राजा व अधिकारी वर्ग यह सतत् चिन्तन करेंगे कि जनता का सर्वविध कल्याण हो सके। खाद्यान्नों की ऊपज अच्छी होगी। पृथ्वी पर सभी चतुष्पद हाथी, घोड़ा, ऊँट, भैंस, गाय तथा अन्य सबको अनुकूल वातावरण में सुख मिलेगा। मनुष्यों में वैचारिक स्तर पर बुद्धि एवं विवेक का सम्मीश्रण दिखाई देगा। लाल-पीले-काले विविध प्रकार के बादल जल से पृथ्वी को परिपूर्ण करेंगे। मनुष्यों में एवं चौपायों में भी रोग व व्याधि की कमी दिखाई देगी। राजनीति धर्मनीति में पारदर्शिता-शुचिता एवं आपसी सहभागिता का वातावरण दिखाई देगा। जनता जनार्दन एवं अधिकारी अपने-अपने निर्दिष्ट कार्य को करने में ही सुख एवं सन्तोष का अनुभव करेंगे। अन्न की उत्पत्ति प्रचुर मात्रा में होने से सर्वत्र कल्याणकारक परिस्थिति दृष्टिगोचर हो सकेगी। वैदिक सनातन धर्म के उत्थान के लिए जनता एवं सरकार दोनों तरफ से पर्याप्त प्रयत्न किये जायेंगे। विद्वानों को सर्वत्र आदर भाव से सम्मानित किया जायेगा।

मंत्री का महत्वपूर्ण पद मंगल को प्राप्त हुआ है। मंगल शासन प्रशासन एवं देश की सैन्य शक्ति का कारक ग्रह है। राजा गुरु एवं मंत्री मंगल दोनों में पूर्ण आपसी मित्रता का सम्बन्ध है, अतः सेना की आवश्यकता को देखते हुए सरकार द्वारा सैन्य बल को विस्तारित किया जायेगा। नये-नये अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण एवं संचय-संवर्धन किया जायेगा। देश की सैन्य क्षमता एवं राजनीतिक सूझ-बूझ से विश्व का शक्तिशाली से शक्तिशाली देश भी भारत की तरफ आँख नहीं दिखा सकेगा। पड़ोसी शत्रुओं को मुंहतोड़ जवाब मिलेगा। मंगल के मंत्री होने से विश्व का तापमान बढ़ेगा तथा झुलसा देने वाली गर्म हवायें चलेगी। देश के अन्दर ही छुपकर बैठे आतंकवादियों, नक्सलवादियों से धन-जन को क्षति भी उठानी पड़ेगी। इस प्रकार परिस्थिति अनुकूल होते हुए भी मंगल से प्रभावित देशों एवं शहरों में तेज हवायें चलेंगी, आंधी-तूफान समुद्री तूफान से क्षति पहुंच सकती है। राजनैतिक विद्वेष, उलटफेर विग्रह सामाजिक संरचना के ताने-बाने को बिखेरता रहेगा। अग्निभय विस्फोट एवं आंतकवादी घटनाओं से क्षति पहुंचने की सम्भावना बनी रहेगी। राजा गुरु और मंत्री मंगल की जोड़ी से सत्ताधीशो को जन्मना या कर्मणा ब्राह्मण वर्ग का सम्मान करना पड़ेगा। सेना को अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित करना पड़ेगा। 'नृषेषु-अमात्वेषु' एक सम्मति देश की रक्षा के लिए अत्यन्त प्रभावकारी भूमिका निभायेगी। सेना के उच्च पदस्थ अधिकारी प्रभूत आयुध से सैन्य शक्ति को सम्वर्धित करेंगे। शिक्षा जगत में विज्ञान एवं आयुर्वेद की सन्तोष प्रद उन्नति होगी। औषधियों का भण्डार भरेगा। प्राचीन ज्ञान विज्ञान, वेद-पुराण इत्यादि में छुपे ज्ञान-रहस्य को प्राप्त करने के लिए शासन स्तर से प्रयास किये जायेंगे। वर्ष प्रवेश कुण्डली के अनुसार वर्ष लग्न में चार ग्रह, द्वादश भाव में तीन ग्रहों की युति है। निकटतम दो राशि कुम्भ एवं मीन में ही कुल सात ग्रह बैठे है अतः उच्च राजनीतिक इच्छा शक्ति, सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद भी गम्भीर से गम्भीर आतंकवादी घटनाएं घटेंगी। जनता और सेना को क्षति उठानी पड़ेगी। यद्यपि कि केन्द्र का बृहस्पति प्रशासनिक सूझ-बूझ एवं बुद्धिमता से स्थिति को संभालने में सहायक बनेगा। इस संवत्सर के मंत्री मंण्डल में शुभ ग्रहो का वर्चस्व होने से देश के वातावरण में सुख-शान्ति एवं सुभिक्ष का वातावरण रहेगा। समयानुकूल अच्छी वर्षा से कृषि की ऊपज अच्छी होगी, जिससे देश का आर्थिक विकास बढ़ेगा। देश में विभिन्न चीजों का उत्पादन होगा तथा उसे विदेशों में निर्यात् किया जायेगा जिससे विदेशी मुद्रा का भण्डार बढ़ेगा। गुरु के राजा होने तथा धनेश होने से सोने का अच्छा संग्रह देश के खजाने में कर लिया जायेगा।

वर्षा एवं खेती की दृष्टि से यह संवत्सर अत्यन्त शुभ फलकारक है। आतंकवादी घटनाओं से देश का साम्प्रदायिक ताना-बाना प्रभावित हो सकता है। कुछ दैवी-प्राकृतिक घटनाएं भी घटेगी जिससे गम्भीर क्षति उठानी पड़ेगी। कुल मिलाकर यह संवत्सर प्रायः शुभफलकारक है।

राशिफलम् संवत् २०८३

मेष– चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

प्राय: प्रत्येक कार्यों मे व्यवधान आ जाया करेंगे जिससे विलम्ब होता रहेगा। पद प्रतिष्ठा मे कमी का अनुभव होगा। सगे सम्बन्धी-परिजन-मित्रों का रुखा व्यवहार मानसिक रुप से परेशान करता रहेगा। शारीरिक सुख स्वास्थ्य भी बहुत अनुकूल नही रहेगा। रोजी-रोजगार मे झंझटे आयेगीं। राजकीय एवं न्यायालय से सम्बन्धित कार्यो में प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहेगी। आप शनि की चढ़ती साढ़े साती की चपेट में है अत: शनि एवं गुरु दोनो ही परेशान करते रहेंगे। ३ जून से वृहस्पति बदल जायेगा; राशि वालो की परेशानियाँ थोड़ी कम तो होगी किन्तु समस्याये किसी न किसी रुप मे बनी रहेंगी। शनि एवं गुरु दोनो की शान्ति का उपाय करते रहेंगे तो रास्ता निकलता रहेगा। गुरु की शान्ति के लिए चने की दाल, हल्दी गुड़ का लड्डू बनाकर प्रत्येक गुरुवार को गाय को खिलावें। 'ॐ बृं बृहस्पतये नम:' मंत्र का १ माला जप स्वयं करें। शनि के लिए प्रत्येक शनिवार को पीपल वृक्ष की जड़ मे स्थित शनि भगवान को तेल चढ़ावें तथा तिल युक्त तिल-तेल का दीपक जलावें एवं ''ॐ शं शनैश्चराय नम:'' मंत्र का यथा सम्भव जप करें तो अवश्य लाभ मिलेगा। नवम्बर-दिसम्बर एवं जनवरी आप के लिए अनुकूल रहेगा एवं कुछ कार्य बन जायेंगे। राहु-केतु लाभ देते रहेंगे।

वृष– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो

राशिवालो के लिए वर्षारम्भ मे गुरु का गोचर फल अनुकूल है। धन-सम्पत्ति से सम्बन्धित सफलताएँ मिलेगी तथा लाभ होगा। शत्रु पराजित हो जायेंगे अथवा आप से सुलह-समझौता कर लेंगे। स्त्री-परिवार का उत्तम सुख सान्निध्य प्राप्त होगा। घर-परिवार मे मंगल कार्य होंगे। पद एवं प्रतिष्ठा मे वृद्धि होगी। आपके माध्यम से स्वजनों का भी काम बन जायेगा। धार्मिक कार्यो को करने का अवसर प्राप्त होगा। स्वास्थ्य सुधरेगा एवं आपके साहस-पराक्रम मे वृद्धि होगी। नये अधिकार एवं पद की प्राप्ति होगी। स्थायी सम्पत्ति मे वृद्धि होगी अर्थात् नवीन जायदाद, घर मकान के कार्यो मे सफलता मिलेगी। सहयोगी एवं सहायक आपकी मदद करने के लिए तत्पर रहेंगे। राहु-केतु अकस्मात कोई कार्य बना देंगे जिससे अच्छा लाभ होगा। ३ जून से बृहस्पति बदलकर हल्का पड़ जायेगा तथा कई समस्याये खड़ी हो जायेंगी। स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा। सगे सम्बन्धियो से अनबन चल सकती है। रोजी-रोजगार में व्यवधान खड़े हो जायेंगे। गुरु की शान्ति का उपाय करते रहेंगे तो रास्ता निकलता रहेगा। 'ॐ बृं बृहस्पतये नम:'' मंत्र का १ माला जप नित्य करें।

मिथुन– का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा

वर्षारम्भ मे राशि में ही आया बृहस्पति बहुविध परेशानियाँ खड़ी करता रहेगा। मान-सम्मान में कमी आ जायेगी तथा शरीर को कई प्रकार की बीमारियाँ घेर लेंगी। आमदनी प्रभावित हो जायेगी जिससे आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ जायेगा। लगेगा बुद्धि काम नही कर रही है तथा हर कार्यो मे असमंजस बना रहेगा। नौकरी में अधिकारियों के साथ अनबन हो सकती है तथा व्यवसाय में लाभ की कमी का अनुभव होगा। लड़ाई झगड़ा, वाद-विवाद से दूर रहे अन्यथा अपमानित होना पड़ सकता है। व्यर्थ का झगड़ा-झंझट हो जाया करेगा। शनि के कारण आपके पास काम तो बहुत रहेगा और आप लगातार परिश्रम भी करते रहेंगे किन्तु उसका पूर्ण प्रतिफल प्राप्त नही हो पायेगा। बुद्धि विभ्रम के कारण सही निर्णय नही ले पायेंगे। ३ जून से बृहस्पति परिवर्तित होकर सभी परेशानियो का हल निकालने लगेंगे। रुके एवं अधूरे कार्य पूर्ण होने लगेंगे तथा स्वास्थ्य में भी सुधार हो जायेगा। घर-परिवार मे विवाह पुत्र जन्म आदि मांगलिक कार्य के अवसर आ जायेगे। शत्रुओं का शमन हो जायेगा और वे आपसे समझौता कर लेगें। राहु-केतु भी शुभ फलकारक हैं। अकस्मात कोई स्थायी लाभ हो सकता है।

कर्क– ही, हु, हे, हो, डा, डी, डु, डे, डो

राशि वालो के यह वर्ष मध्यम फलकारक है। यद्यपि कि आप अपना कार्य सही तरीके से परिश्रम के साथ करेंगे किन्तु परिणाम अच्छे नहीं आयेंगे। घर-परिवार एवं परिजनों का सहयोग नही मिलेगा तथा उनसे दूर भी होना पड़ सकता है। विश्वासपात्र व्यक्ति से भी धोखा मिलेगा। सदाचार मे कमी आ जायेगी एवं व्यर्थ का उपदेश देते रहेंगे। कष्टकर यात्राये करनी पड़ सकती है। खर्च बहुत बढ़ जायेगा जिससे आर्थिक संतुलन बिगड़ जायेगा। ३ जून से बृहस्पति बदल कर आपकी ही राशि में आ जायेगा। मानसिक एवं शारीरिक कष्ट बना रहेगा तथा प्राय: सभी कार्यो मे रुकावटे आ जाया करेंगी। झंगड़ा-झंझट, विवाद से बचते रहना ही आपके लिए लाभकारी होगा। धर्मपालन एवं ईश्वर के प्रति आस्था के भाव मे कमी आ जाने से पूजा-पाठ में भी मन नहीं लगेगा। राहु-केतु कुछ न कुछ काम बनाते रहेंगे जिससे पैसा आता रहेगा। नवम्बर-दिसम्बर एवं जनवरी का समय आपके लिए अच्छा रहेगा। रुके एवं अधूरे कार्य पूरे होगें, स्वास्थ्य में सुधार होगा तथा मान सम्मान बढ़ेगा। गुरु की शान्ति के लिए चने की दाल हल्दी गुड़ का लड्डू गाय को खिलावे तथा 'ॐ बृं बृहस्पतये नम:' मंत्र का १ माला जप नित्य करें तो परेशानियों में कमी आयेगी।

सिंह– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

वर्षारम्भ में एकादश-लाभ भाव से आया गुरु के गोचर का फल आपके लिए सर्वथा अनुकूल है। पुत्रादिकों की उन्नति नये पद अथवा अधिकार की प्राप्ति मान-सम्मान में वृद्धि तथा बहुविध लाभ के अवसर आयेंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई स्थायी लाभ होगा। शत्रु पराजित हो जायेंगे अथवा आप से समझौता कर लेंगे। विवाह पुत्र जन्म आदि मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। नौकरी में पदोन्नति एवं व्यापार मे अच्छा लाभ होगा। भौतिक सुख-सुविधाओं के नवीन साधन इकट्ठे करने का शौक होगा। राजकीय एवं न्यायालय से सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलेगी। सबके बावजूद शनि की ढैय्या कुछ न कुछ अपना रंगा दिखाती रहेगी। स्त्री-पुत्रादिकों से मनमुटाव पैदा हो सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य भी प्रभावित रहेगा। सन्तान-सम्पत्ति मित्र तथा घरेलू सुविधा के संसाधनों के लिए यह शनि अच्छा नहीं है। अत: शनि की शान्ति का उपाय अवश्य करते रहें। राहु एवं केतु अपव्यय करायेंगे। ३ जून से बृहस्पति बदलकर हल्का पड़ जायेगा। पैसे का खर्च बढ़ जायेगा। स्वास्थ्य खराब रहने लगेगा तथा समाज में आपके प्रति अच्छी धारणा नही रहेगी। कई तरह की परेशानियाँ घेर लेंगी। शनि-गुरु की शान्ति का कुछ न कुछ उपाय अवश्य करते रहें।

कन्या– टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो।

राशि वालों के लिए यह वर्ष मध्यम फलकारक है। पद-प्रतिष्ठा में कमी आयेगी। स्वयं का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा जिससे मन परेशान रहा करेगा। पैसों की कमी का अनुभव होगा। खर्च की अधिकता रहेगी। जमीन-जायदाद से सम्बन्धी कार्यों में व्यवधान आ सकता है। स्त्री-सन्तान का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसके कारण मानसिक व्यथा रहेगी। ३ जून से स्थिति सकारात्मक होगी और आपके पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी साथ ही साथ आप मानसिक रुप से सकारात्मक उर्जा का अनुभव करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, धन-सम्पत्ति के क्षेत्र में भी आपको अच्छे परिणाम मिलेंगे। शनि के प्रभाव के कारण घर-परिवार से दूर रहना पड़ सकता तथा कष्टकर और अनचाही यात्राएं आपको करनी पड़ सकती है। राहु-केतु के कारण स्वास्थ्य परेशान करेगा और चुनौतियाँ लेकर आयेगा किन्तु अचानक किसी न किसी माध्यम से धन का आगमन भी कराता रहेगा।

तुला– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

वर्षारम्भ में बृहस्पति अनुकूल है तथा शुभफल प्रदान कर रहा है। आपके कार्य क्षमता का विस्तार होगा तथा आप द्वारा उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय कार्य किये जायेंगे। पुत्रादिकों की उन्नति होगी एवं नये अधिकार पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। प्राय: प्रत्येक कार्यों में सफलता मिलती रहेगी। यह समय भाग्योन्नति का है। शनि सर्वथा अनुकूल फल दे रहा है। शत्रु-विरोधी शान्त हो जायेंगे, अथवा आप से सुलह-समझौता कर लेंगे। स्त्री-परिवार का उत्तम सुख सान्निध्य प्राप्त होता रहेगा। प्रेम सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आयेगी। जमीन-जायदाद सम्बन्धी कोई स्थिर लाभ होने का समय है। ३ जून से बृहस्पति परिवर्तित होकर हल्का पड़ जायेगा। पद-प्रतिष्ठा मान-सम्मान में कमी का अनुभव होने लगेगा। पैसों की कमी हो जायेगी तथा मन उदास रहा करेगा। फिर भी नवम्बर-दिसम्बर एवं जनवरी का समय आप के लिये भाग्योदय कारक है। राहु-केतु पैसा भी दिलायेंगे किन्तु खर्च भी करायेंगे कुल मिलाकर राशि वालों के लिये यह वर्ष अच्छा एवं शुभफलकारक है। परिश्रम करने से सफलता मिलती रहेगी।

वृश्चिक– तो, ना, नी, नू, ने नो, या, यी, यू

वर्षारम्भ में अष्टम भाव से गुरु का गोचर फल बहुविध कष्टकारक है। रोग-शोक-बन्धन की स्थिति। स्वयं का स्वास्थ्य प्रभावित रहा करेगा जिससे शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार के कष्ट आते रहेंगे। कष्टकर यात्रायें करनी पड़ सकती हैं। पंचम का शनि भी कष्टकारक है। खर्च बढ़ जाने से आर्थिक संतुलन बिगड़ता रहेगा। परिजनों को भी कष्ट होगा। लड़ाई-झगड़ा से सर्वथा दूर ही रहें। ३ जून से गुरु का राशि परिवर्तन आपकी प्राय: सभी परेशानियों को खत्म कर देगा। स्वास्थ्य सुधरने लगेगा, धन का आगमन होने लगेगा। मान-सम्मान पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पुत्रादिकों की उन्नति होगी तथा अधीनस्थ प्राय: सभी कार्यों में सफलता का मार्ग निकलने लगेगा। राहु-केतु कुछ परेशान करेंगे। शारीरिक एवं मानसिक कष्ट देंगे किन्तु ३ दिसम्बर से राहु-केतु का राशि परिवर्तन आपके लिए शुभफल कारक होगा। वर्षारम्भ में गुरु की शान्ति का उपाय जैसे चने की दाल-हल्दी गुड़ का लड्डू गाय को खिलावें। शनि की शान्ति के लिए शनि भगवान को तिल-तेल का दीपक जलावें, तेल चढ़ावें। कष्ट कटता रहेगा, रास्ता निकलता रहेगा।

धनु– ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे

वर्षारम्भ में गोचरवश सप्तम् भाव से संचरण करता हुआ बृहस्पति बहुवधि शुभफलकारक है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं के नये-नये साधन जुटेंगे। स्त्री परिवार का उत्तम सुख-सान्निध्य प्राप्त होगा। नया घर मकान-भूमि इत्यादि के कार्यों में सफलता मिलेगी। घर-परिवार में मांगलिक कार्य करने के अवसर आ जायेंगें। प्रेम सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आयेगी। नौकरी व्यवसाय में उन्नति, पदोन्नति के अवसर आ जायेंगे। अच्छा भोजन अच्छा स्वास्थ्य। ३ जून से बृहस्पति बदलकर अष्टम भाव का हो जायेगा। परेशानियाँ घेर कर आ जायेगी। रोग-शोक एवं बन्धन की स्थिति। कष्टकर यात्रायें करनी पड़ेंगी। वाणी-व्यवहार में कटुता एवं कठोरता आ जायेगी जिसके कारण घर-परिवार एवं समाज में आप की स्थिति थोड़ी-बिगड़ जायेगी। नौकरी में विपरीत स्थानान्तरण अथवा अधिकारियों से अनबन होगी जिससे मानसिक क्लेश होगा। व्यवसाय धन्धा मन्दा पड़ जायेगा। पैसे की कमी का अनुभव होगा। आप शनि की ढैय्या से गुजर रहे हैं, अत: कुछ न कुछ कष्ट शनि के कारण भी होगा। राहु-केतु अप्रत्याशित रूप से कुछ न कुछ काम बनाते रहेंगे, पैसा दिलाते रहेंगे। गुरु-शनि की ग्रहशान्ति करते रहने से कोई विशेष कष्ट नहीं होगा।

मकर– भो, जा, जी (जू, जे, जो) खी, खू, खे, खो, गा, गी

राशि वालों के लिये वर्षारम्भ में छठें भाव से आया बृहस्पति मध्यम फल कारक है। सुन्दर से सुन्दर व्यक्ति एवं अच्छी से अच्छी वस्तु भी आप को आकर्षित नहीं कर पायेंगे। उदासी एवं दीनता का भाव छाया रहेगा। घर-बाहर कहीं भी मन नहीं लगेगा। तरह-तरह के रोग व्याधि शरीर को कष्ट पहुँचाते रहेंगे। स्त्री-पुत्रादिकों से वैचारिक मतभेद पैदा होगा। पेट से सम्बन्धित कोई परेशानी हो सकती है जिससे शरीर कमजोर होगा। धन की कमी का अनुभव होगा। राजकीय एवं न्यायालय सम्बन्धी कार्यों में विपरीत परिणाम आ सकते हैं। राहु-केतु भी अच्छा फल नहीं दे रहे हैं। ३ जून से बृहस्पति परिवर्तित होकर आप के लिये शुभ-फलकारक हो जायेगा। शनि वर्षारम्भ से ही आप के लिए अत्यन्त बलवान है अत: शनि और गुरु दोनों एक साथ शुभ फल देकर आप की समस्त परेशानियों को समाप्त कर देंगे। प्राय: प्रत्येक कार्यों में सफलता मिलने लगेगी। नौकरी में पदोन्नति एवं व्यवसाय में उन्नति होगी। घर-परिवार में विवाह-पुत्र जन्मादिक मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। स्त्री-परिवार का उत्तम-सुख सान्निध्य प्राप्त होगा। नया घर नई गाड़ी एवं भौतिक सुख-सुविधाओं के अनेक साधन एकत्रित हो जायेंगे। अच्छे समय का सदुपयोग करना चाहिये।

कुम्भ– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो दा

वर्षारम्भ में पंचम भाव से आया हुआ बृहस्पति अत्यन्त शुभ फलकारक है। आपकी बुद्धिमता का विकास होगा एवं वाणी व्यवहार में निखार आयेगा जिससे आप उल्लेखनीय कार्य करने में सफल होंगे। घर-परिवार समाज में प्रशंसा के पात्र होंगे। पुत्रादिकों की उन्नति होगी एवं घर-परिवार में विवाह एवं पुत्र जन्मादिक मांगलिक कार्य के अवसर आयेंगे। स्त्री-परिवार का उत्तम सुख-सानिध्य प्राप्त होगा। भौतिक सुख-सुविधाओं के नये साधन जुटेंगे। भूमि-भवन-वाहन से सम्बन्धित कोई स्थिर लाभ होगा। अधीनस्थ सहायक सभी आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। स्वास्थ्य सुधरेगा, नौकरी में पदोन्नति एवं व्यवासय में वृद्धि होगी। सबके बावजूद आप शनि की उतरती साढ़े साती के चपेट में हैं अत: कुछ न कुछ परेशानी लगी रहेगी। ३ जून से बृहस्पति भी बदलकर हल्का पड़ जायेगा अत: अनेक समस्यायें खड़ी हो जाया करेंगी। स्वास्थ्य ढीला-ढाला रहेगा एवं पेट से सम्बन्धित रोग परेशान कर सकते हैं। झगड़ा-विवाद से दूर रहना ही आप के लिए लाभकर होगा। राहु-केतु कहीं न कहीं से पैसा दिलाते रहेंगे। नवम्बर-दिसम्बर जनवरी आप के लिए काम बनाने वाले होंगे। गुरु की शान्ति के लिए 'ॐ बृं बृहस्पतये नम:' मन्त्र का एक माला जप नित्य करें तथा शनि भगवान को तिल-तेल का दीपक अर्पित करें।

मीन– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

राशि वालों के लिये यह वर्ष अच्छा नहीं है। आप की राशि में ही शनि संचरण कर रहा है अत: आप शनि की मध्य साढ़ेसाती के चपेट में है। तरह-तरह की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आर्थिक परेशानियाँ आ सकती हैं जिससे कष्ट होगा। चतुर्थ भाव से आया बृहस्पति भी सहायता नहीं कर रहा है। मन अशान्त रहेगा। नये शत्रु एवं विरोधी पैदा हो जायेंगे। घर-परिवार से दूर कष्टकर यात्रायें करनी पड़ेंगी। राजकीय एवं न्यायालय से सम्बन्धित कार्यों में व्यवधान आ जायेंगे। उदास मन थका हुआ शरीर आप को आकर्षणहीन बना सकते हैं। राहु के कारण कुछ न कुछ पैसा भी आता रहेगा और काम भी बनता रहेगा। ३ जून से बृहस्पति बदल जायेगा और आप की सभी परेशानियाँ काई की तरह छट जायेंगी। स्वास्थ्य सुधरने लगेगा। असन्तुष्ट परिजन एवं विमुख हुए मित्र आप से मेल-जोल बढ़ा लेगें। रुके एवं अधूरे कार्यो में प्रगति होने लगेगी, वाणी-बुद्धि का विकास होगा एवं आप के द्वारा उल्लेखनीय कार्य किये जायेंगे। भौतिक सुख-सुविधा के साधन जुटेंगे। नौकरी में पदोन्नति एवं व्यवसाय में उन्नति होगी। प्रत्येक शनिवार को शनि भगवान के निकट तिल तेल का दीपक जलावें। सुन्दर काण्ड का पाठ एवं हनुमान जी की आराधना करें।

मासफलम् : तेजी मन्दी विचार के साथ

चैत्र शुक्ल पक्ष–वर्ष का पहला पखवारा प्राय: शुभफलकारक है। खाद्यान्नों के भाव में नरमी का रुख बनेगा। ब्राह्मणों को सरकार के किसी निर्णय से पीड़ा पहुँचेगी। तिल तेल, मूँगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपारी, रुई, सूत, कपास, चाँदी में तेजी की धारणा रहेगी। मंगल राहु बुध की युति चेचक आदि बीमारी का कारण बन सकती है। उच्च राशि का शुक्र महिला वर्ग का उत्थान करायेगा।

वैशाख मास–मास का पूर्वार्ध अर्थात् कृष्ण पक्ष सुख-सुविधा कारक रहेगा। जनता संतुष्ट दिखाई देगी। मेष संक्रान्ति १४ अप्रैल के बाद से देश एवं देशवासियों के सम्मुख कुछ परेशानियाँ शुरु हो जायेगी। मंगलवार की मेष संक्रान्ति पड़ोसी देशों के साथ तनाव का कारण बनेगी। कुछ आतंकवादी घटना घटकर, धन-जन को क्षति पहुँचा सकती है। लू के थपेड़े तापमान बढ़ा देंगे। गर्मी बढ़ जायेगी। रुई, कपास, सूत, घी, तेल, सरसों नारियल सुपारी, बादाम सभी प्रकार के फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चाँदी, सोना में तेजी चलेगी। १७ अप्रैल अमावस्या का चतुर्ग्रही योग दैवी-प्राकृतिक घटना तूफान आँधी, वर्षा तथा कुछ अन्य अनहोनी करा सकता है। अप्रैल के उत्तरार्ध में मौसम बहुत खराब रहेगा। २५ अप्रैल के आसन्न वर्षा हो सकती है।

ज्येष्ठ मास (१)–मलमास लगने के कारण इस वर्ष जेठ दो महीने तक रहेगा। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि पहला जेठ अर्थात् २ मई से ३१ मई, या पूरा ही महीना बहुत भारी पड़ेगा। यद्यपि कि दैनिक उपभोग की वस्तुयें सुलभ एवं सस्ती रहेंगी, किन्तु दैवी प्राकृतिक घटना अथवा किसी अन्य घटनाओं के कारण काफी क्षति उठानी पड़ेगी। पड़ोसी देश से युद्ध जैसी परिस्थिति बन सकती है।

ज्येष्ठ मास (२)–यह मास अपेक्षाकृत सुभिक्षकारक है। १ जून से २९ जून तक जेठ का दूसरा महीना चलेगा। इसमें गर्मी बहुत पड़ेगी तथा तेज हवा के साथ आँधी-पानी के भी योग बन रहे हैं। १५ जून के आसन्न मानसून पूर्व की वर्षा होने की सम्भावना है। सोमवार की मिथुन संक्रान्ति शुभफलकारक है। आर्द्रा नक्षत्र के सूर्य २२ जून के फल में सर्वत्र खेती शुरु होने लायक वर्षा हो जायेगी। जून के अन्त में अच्छी वर्षा होगी।

आषाढ़ मास–३० जून से २९ जुलाई तक यह महीना चलेगा। उमस भरी चिपचिपाती गर्मी से जनता व्याकुल और परेशान हो जायेगी। मास के पाँच मंगलवार एवं मंगलवार की अमावस्या ज्वर-बुखार संक्रामक रोग फैलने का कारण बनेगी। पुनर्वसु नक्षत्र का सूर्य ६ जुलाई के आसन्न अच्छी वृष्टि होगी। अमावस्या १४ जुलाई के एक-दो दिन के अन्तराल में सर्वत्र व्यापक वर्षा होने की सम्भावना है। शुक्ल पक्ष में २० जुलाई को पुष्य नक्षत्र के सूर्य में सामान्य वर्षा होगी। कहीं कहीं वर्षा का अभाव भी दिखाई देगा। कर्क राशि की सूर्य संक्रान्ति शुभफल कारक है। २२ जुलाई के आसन्न भी अच्छी वर्षा होगी। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी, सोना का भाव चढ़ेगा। खाद्यान्नों में मन्दी चलेगी।

श्रावण मास– मास के पाँच गुरुवार एवं पाँच शुक्रवार सामान्यतया शुभ फलकारक हैं। दैनिक उपभोग की वस्तुओं घी दूध छेना, पनीर का भाव चढ़ा रहेगा, किन्तु खाद्यान्नों के भाव में नरमी चलेगी। श्लेषा नक्षत्र के सूर्य ३ अगस्त के आसन्न वायु-वेग के साथ हल्की वर्षा होने के योग हैं। शुक्ल पक्ष में १० अगस्त के आसपास अच्छी वर्षा होने की सम्भावना बन रही है। मघा नक्षत्र १७ अगस्त के आसन्न भी वर्षा होगी। सोमवार की सिंह राशि की सूर्य संक्रान्ति का फल सुभिक्षकारक है। किसी राजनेता के वियोग का सामना करना पड़ सकता है। चाँदी, सोना, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि तथा लालरंग की वस्तुओं एवं रत्न इत्यादि का भाव चढ़ जायेगा।

भाद्रपद मास– मास के पाँच शनिवार घटनाकारी हैं। दैवी-प्राकृतिक आपदा-भूस्खलन बादल फटने, अत्यधिक वर्षा से खेतों एवं धन-जन दोनों को क्षति पहुँचेगी। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के सूर्य ३१ अगस्त से वर्षा का क्रम चलेगा और सामान्य से अच्छी बरसात हो जायेगी। उफराफाल्गुनी नक्षत्र के सूर्य १४ सितम्बर के आसन्न सामान्य वर्षा होगी। २० सितम्बर से पुनः अच्छी वर्षा के योग प्राप्त हो रहे हैं। कन्या राशि की सूर्य संक्रान्ति १७ सितम्बर गुरुवार का फल सुभिक्षकारक है। कपूर, केसर, कस्तूरी चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्य व रुई कपास में तेजी आयेगी। खाद्यान्नों में गेहूँ, जौ, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, मसूर तथा सोना चाँदी, लोहा, ताँबा में मन्दी चलेगी। दुधारु पशुओं के भाव चढ़ जायेंगे।

आश्विन मास– मास के पाँच रविवार एवं शनिवारी अमावस्या दुर्घटनाकारी हैं। राजनीतिक विग्रह-विरोध का स्तर बहुत गिर जायगा। कोई गम्भीर बीमारी महामारी फैल सकती है। पाँच सोमवार भी होने से खाद्यान्नों तथा दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुयें सस्ती एवं सुलभ होंगी। मासारम्भ २७ सितम्बर को हस्त नक्षत्र के सूर्य में एवं सितम्बर के अन्तिम दिनों में गरज-चमक के साथ सामान्य वृष्टि होगी। तुला राशि के सूर्य १७ अक्टूबर रविवार के फल मे गेहूँ, चना, चावल, तिल, तेल, सरसों, जीरा, हल्दी, धनियाँ तथा सोना, चाँदी, मूंग, सफेद वस्त्र में तेजी आयेगी। उड़द मूँग, लोबिया में मन्दी चलेगी। लौंग, इलायची, जायफल, नारियल का भाव सम चलेगा। दुधारु पशुओं का भाव चढ़ेगा।

कार्तिक मास– मास के पाँच मंगलवार किन्तु सोमवार की अमावस्या मिला जुला प्रभाव दिखायेंगे। दैवी प्राकृतिक दुर्घटना समुद्री तूफान अथवा अन्य किसी आपदा से काफी क्षति पहुँच सकती है। पाँच मंगलवार एवं मंगलवार की संक्रान्ति तथा कुछ अन्य ग्रह योग मिलकर कोई बड़ी दुर्घटना करा सकते हैं। किसी प्रदेश में सता परिवर्तन की भी सम्भावना है। किसी महापुरुष का वियोग भी सहन करना पड़ सकता है। शुक्ल पक्ष विशेष भारी पड़ेगा। मंगलवार की वृश्चिक संक्रान्ति खेती तथा अन्य सब्जी की फसल को विशेष क्षति पहुँच सकती है। गेहूँ, जौ, चना, मटर, अरहर, मसूर, उड़द, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मिर्च, नारियल का भाव मन्दा होगा। लकड़ी एवं कोयला का भाव चढ़ जायेगा।

मार्गशीर्ष मास– अगहन का महीना सुभिक्ष एवं सुविधाकारक है। पाँच बुधवार एवं पाँच गुरुवार शुभफल कारक है। देश के पश्चिमी प्रान्तों में राजनीतिक विग्रह-विरोध का वातावरण बनेगा। चावल एवं गन्ने का उत्पादन अच्छा होगा। फल एवं सब्जी का भाव कुछ सस्ता होगा। बुधवार की धनु संक्रान्ति नारियल, खोपरा, किशमिश, छुहारा, चिरौंजी, लौंग, जीरा, आदि में तेजी चलेगी। सूत एवं सूती वस्त्र शण, जूट तथा चौपायों में तेजी आयेगी। कुल मिलाकर यह महीना राहत देगा।

पौष मास– मास के पाँच शुक्रवार सुभिक्ष कारक है। पूरा उत्तर भारत भयंकर कोहरे की चपेट में आ जायेगा जिससे जन जीवन थम सा जायेगा। महिला जगत के उत्थान के लिए सरकार द्वारा कोई कारगर कदम उठाया जायेगा। किसी महिला को उच्च पद प्राप्त हो सकता है। गुरुवार की अमावस्या एवं गुरुवार की ही मकर की संक्रान्ति शुभ फलकारक है। गेहूँ, जौ, मक्का, बाजरा, चन्दन, शक्कर, गुड़, खाण्ड, घी में मन्दी चलेगी। सूत, कपास, सफेद, कपड़े, तम्बाकू, शोरा, बिनौला, कोयला, लकड़ी, जूट, दुधारु पशु। इन सभी चीजों में तेजी आयेगी। सोना, चाँदी एवं किराना की चीजो में घटा-बढ़ी चलेगी। सरसो, अलसी और पोस्ता में तेजी चलेगी। दैनिक उपयोग की चीजे सुलभ एवं सस्ती रहेंगी। १९ जनवरी के आस-पास बूँदा-बाँदी एवं वर्षा हो सकती है।

माघ मास– यह महीना बहुत भारी पड़ेगा, ऐसा प्रतीत हो रहा है। मास के पाँच शनिवार, शनिवार की अमावस्या एवं शनिवार की ही संक्रान्ति एवं अमावस्या को सूर्य, चन्द्रमा और राहु की युति कुछ न कुछ अनकही-अनहोनी होने का संकेत दे रहे हैं। भूकम्प, भूस्खलन, पहाड़ो पर भारी हिमपात तथा अन्य किसी दैवी प्राकृतिक आपदा से धन-जन को क्षति पहुँचने के योग बन रहे हैं। १३ फरवरी के आस-पास मौसम करवट लेगा, जाती हुई ठंडक वापस आ जायेगी। शुक्ल पक्ष में दूध-घी, गेहूँ, जौ, चना, नमक, मिर्च में तेजी आयेगी। मक्का, ज्वार, बाजरा, मूँग, मोठ, उड़द, सरसों, तिल, तेल, अलसी, राई आदि में कुछ मन्दी की धारणा बनेगी। सोना, चाँदी, जस्ता, पीतल, ताम्बा, लोहा, रुई, कपास, सूत, वस्त्र, बिनौला के दाम में तेजी चलेगी।

फाल्गुन मास– यह महीना शुभाशुभफलकारक है। इस मास में पाँच रविवार हैं तथा पाँच सोमवार हैं। अग्निकाण्ड अथवा आतंकवादी, उग्रवादी, नक्सलवादी घटना से क्षति पहुँचेगी। दिन में तेज धूप होगी तथा पहाड़ों पर हो रहे हिमपात के कारण रात में ठंड भी पड़ेगी। ज्वर-बुखार, चेचक इत्यादि बीमारी फैलेगी। सोमवारी अमावस्या एवं सोमवारी मीन की संक्रान्ति शुभ फलकारक है। ठंडक पड़ने का सिलसिला चलता रहेगा। गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, तिल, अलसी, सरसों, राई, कोयला, लकड़ी, पत्थर, गाय, बकरी, घोड़ा, भैंस के भाव में मन्दी चलेगी। मूँग, अरहर, मसूर, उड़द, रुई, सूत सोना, चाँदी का भाव स्थिर रहेगा। दूध, घी में तेजी रहेगी।

चैत्र कृष्ण पक्ष– वर्ष का अन्तिम पखवारा बहुत भारी पड़ेगा। पक्ष के तीन मंगलवार एवं वर्षान्त पक्षान्त अमावस्या का चतुर्ग्रही योग कुछ न करामात दिखा के जायेगा। कोई ऐसी घटना घटेगी चाहे वह दैवी-प्राकृतिक हो अथवा हिंसक घटना, जिससे भारी क्षति उठानी पड़ेगी। पड़ोसी देश से संघर्ष हो सकता है।

ग्रहण विवरणम् संवत् २०८३ शाके १९४८

सूर्य ग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण लगना एक सामान्य खगोलीय प्रक्रिया है। सूर्य ग्रहण अमावस्या को होता है जबकि चन्द्रग्रहण पूर्णिमा तिथि को लगता है। संवत् २०८३ शाके १९४८ दिनांक १९ मार्च २०२६ से ६ अप्रैल २०२७ के बीच कुल तीन ग्रहण लगेंगे जिसमें २ सूर्यग्रहण होंगे एवं १ चन्द्रग्रहण होगा। इस वर्ष उपरोक्त तीनों ग्रहण भारत में कहीं दिखाई नहीं देंगे अतः उसका कोई भी धार्मिक महत्व नहीं होगा न ही कोई सूतक काल होगा और न ही किसी भी राशि पर ग्रहण का कोई प्रभाव-फल होगा। ग्रहण के निमित्त कोई स्नान-दान भी नहीं किया जायेगा। पञ्चाङ्गीय औपचारिकता का निर्वाह करते हुए तीनों ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

१. सूर्य ग्रहण– श्रावण की अमावस्या (३०) बुधवार १२ अगस्त २०२६ को खग्रास सूर्य ग्रहण लगेगा। यह ग्रहण पश्चिमी यूरोप, पश्चिमी अफ्रीका, ग्रीन लैंड, उत्तरी अमेरिका, उत्तरी अटलांटिक महासागर और उत्तरी प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का आरम्भ रात में ९ बजकर ४ मिनट पर होगा तथा रात्रि १ बजकर २८ मिनट पर यह सूर्य ग्रहण समाप्त हो जायेगा। चूंकि यह ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा इसलिए इसका कोई भी महत्व हम भारतीयों के लिए नहीं होगा।

२. चन्द्रग्रहण– श्रावण शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार तद्नुसार २८ अगस्त २०२६ को खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण लगेगा। यह चन्द्रग्रहण अंटार्कटिका, अफ्रीका, एशिया, यूरोप हिन्द महासागर अटलांटिक महासागर और प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का स्पर्श दिन में ८ बजकर ४ मिनट पर होगा तथा मोक्ष दिन में ११ बजकर २२ मिनट पर हो जायेगा। यह चन्द्र ग्रहण भी भारत भूमि में नहीं दिखाई देगा इसलिये इसका कोई भी धर्म शास्त्रीय महत्व भारत में नहीं होगा।

३. सूर्यग्रहण– माघ अमावस्या (३०) शनिवार ६ फरवरी २०२७ को कंकणाकृति सूर्यग्रहण लगेगा। यह सूर्य ग्रहण दक्षिण अमेरिका, अन्टार्कटिका दक्षिण एवं पश्चिम अफ्रीका अटलांटिक महासागर, प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का प्रारम्भ सायं ६ बजकर २८ मिनट पर तथा मोक्ष रात्रि १२ बजकर ३२ मिनट पर होगा। यह सूर्य ग्रहण भी भारत से कहीं भी नहीं देखा जा सकेगा अतः इसका भी कोई धर्मशास्त्रीय प्रतिबन्ध, सूतक, राशिफल इत्यादि नहीं माना जायेगा।

सूतक– सूर्य ग्रहण का सूतक स्पर्श समय से १२ घंटे पूर्व प्रारम्भ हो जाता है एवं चन्द्र ग्रहण का ९ घंटे पूर्व। स्पर्श के समय स्नान पुनः मोक्ष के समय स्नान करना चाहिए। सूतक लग जाने पर मन्दिर में प्रवेश करना मूर्ति को स्पर्श करना, भोजन करना, मैथुन क्रिया, यात्रा इत्यादि वर्जित है। बालक, वृद्ध, रोगी अत्यावश्यक में पथ्याहार ले सकते हैं। भोजन सामग्री जैसे दूध, दही, घी इत्यादि में कुश रख देना चाहिए। ग्रहण मोक्ष के बाद पीने का पानी ताजा ले लेना चाहिए। गर्भवती महिलाएँ पेट पर गाय के गोबर का पतला लेप लगा लें। ग्रहण अवधि में श्राद्ध-दान-जप, मंत्र सिद्धि इत्यादि का शास्त्रोक्त विधान है। **ग्रहण जहाँ से दिखाई देता है सूतक भी वहीं लगता है एवं धर्मशास्त्रीय मान्यताएं भी वहीं लागू होती है तथा उसका फलाफल भी वही लागू होगा।**

☞ आभार- ग्रहण विवरण तथा ग्रहों के उदय-अस्त, चन्द्रोदय-चन्द्रास्त खोगल विज्ञान केन्द्र के सौजन्य से।

सम्पादन- **श्रीमती कान्ति ओझा (एम.एससी.गणित)**

सिंहस्थ कुंभमहापर्व नासिक २०२७

जब बृहस्पति सिंह राशि में आता है तथा सूर्य और चन्द्रमा भी सिंह राशि में आ जाते हैं उस समय अमावस्या तिथि में नासिक में सिंहस्थ कुम्भ महापर्व का मुख्य स्नान होता है। सन् २०२७ में ३१ अगस्त को ऐसी परिस्थिति बनेगी और सिंहस्थ कुम्भ महापर्व में नासिक के गोदावरी नदी में यह स्नान अपनी परम्परा एवं भव्यता के साथ सम्पन्न होगा।

सिंह राशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ।
गोदावर्या भवेत् कुम्भो जायते खलु मुक्तिदः।।

तद्नुसार संवत् २०८४ की भाद्रपद कृष्ण अमावस्या में भौमवती अमावस्या का मणिकाञ्चन योग दुर्लभ एवं अतीव पुण्यफलकारी होगा। इस प्रकार ३१ अगस्त २०२७ को सिंहस्थ महाकुम्भ पर्व नासिक में मुख्य स्नान आयोजित किया जायेगा।

शनि की साढ़ेसाती

शनि वर्ष पर्यन्त मीन राशि में संचरण करेगा। कुम्भ राशि वालों के लिये उतरती, मीन राशि वालों को मध्य तथा मेष राशि वालों के लिए चढ़ती शनि की साढ़ेसाती चलेगी। सिंह एवं धनु राशि वालों को शनि की ढैय्या चलेगी।

परामर्श- **शनि जन्य कष्ट निवारणार्थ शनि स्तोत्रम-**

नमस्ते कोण संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते।। नमस्ते बभ्रुरुपायृष्णाय च नमोऽस्तुते।।
नमस्ते रौद्र देहाय नमस्ते चांतकाय च।। नमस्ते यम संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्द संज्ञाय शनैश्चर नमोस्तुते।। प्रसीदं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

१. उपरोक्त शनि स्तोत्र अथवा महाराज दशरथ कृत शनिस्तोत्र का पाठ प्रत्येक शनिवार को करें, सम्भव हो तो नित्य करें। २. नौकर-भृत्य-सहायक का भरण-पोषण करें तथा उसको पास रख उसकी सहायता करें। ३. कौवे को चारा दें। ज्यादा कष्ट समझ में आवे तो काँसे के कटोरे में तेल रखकर उसमें अपनी मुखाकृति देख कटोरा सहित दान ग्रहण करने वाले को दान दें। ४. सुन्दरकाण्ड का पाठ नित्य करें।

शनिदान मंत्र-शनैश्चर प्रीतिकरं दान पीड़ा निवारकम्।
सर्वापत्ति विनाशाय द्विजाग्रयाय ददाम्यहम्।।

विंशोपका:

धान्यम् ११, तृणम् ५, शीतम् १३, तेजम् १३, उष्णम् १७, वायुः १३, वृद्धिः १५, विनाशः १५, विग्रहः ११, क्षुधा ३, तृष्णा १, निद्रा ७, आलस्यम् ७, उद्यम् ५, शान्तिः ७, क्रोध ५, दम्भ ११, मैत्री १३, उत्सव ९, पाप ५, पुण्यत्व ५, उग्रता १३, रसोत्पत्ति ७, फलोत्पत्ति ११, व्याधि ३, व्यधिनाश ९, आचार ७, अनाचार १७, मृत्यु ७, जन्म १३, चौर १५, अग्नि ९, शमन ११, सत्यम् ३, वर्षा १७, धर्म ५, रत्न ११, वस्त्रम् ९, अनावृष्टि १७, अतिवृष्टि ११, मूषक ७, शूल ९, सेवकत्त्वम् ७, स्वामित्त्वम् १७, घृतम् ९, तैलम् ५, दुकूलम ५, ऊनी वस्त्रम् १७, भेदः १, उत्साह ९, भैषज्य ३।

चूल्हिका स्थापना मुहूर्त्ता:

(सभी मुहूर्त्तों में चक्र शुद्धि प्राप्त है। मिट्टी का चूल्हा गैस चूल्हा इत्यादि)

वैशाख शुक्ल पक्ष
तिथि ३ सोमे (२०.४.२६) दिवा ७।३६ वादनात्परं रोहिण्यां
तिथि ५/६ बुधे (२२.४.२६) आर्द्रायाम् ल.३
तिथि १३ बुधे (२९.४.२६) हस्त नक्षत्रे ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
तिथि ११ बुधे (१३.५.२६) उ.भा.ल.२वा३

आषाढ़ कृष्ण पक्ष
तिथि १ बुधे (१.७.२६) दिवा ६।३३ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम्
तिथि २ गुरौ (२.७.२६) उत्तराषाढ़ायाम्

भाद्रपद शुक्ल पक्ष
तिथि १० सोमे (२१.९.२६) उत्तराषाढ़ायाम्

आश्विन शुक्ल पक्ष
तिथि १२ शुक्रे (२३.१०.२६) पूर्वाभाद्रपदे

कार्त्तिक कृष्ण पक्ष
तिथि ११ गुरौ (५.११.२६) उत्तराफाल्गुन्यां

कार्त्तिक शुक्ल पक्ष
तिथि ११ शुक्रे (२०.११.२६) भद्रा दिवा २।१३ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
तिथि १ बुधे (२५.११.२६) रोहिण्यां

पौष शुक्ल पक्ष
तिथि १५ शुक्रे (२२.१.२७) भद्रा दिवा ७।२० वादनात्परं पुनर्वसौ पुष्ये

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
तिथि २ बुधे (१०.३.२७) उत्तराभाद्रपदे ल.३

जल यंत्र कर्म मुहूर्त्ता:

(नलकूप, चापाकल इत्यादि के लिए बोरिंग, समरसेबुल पम्प)

चैत्र शुक्ल पक्ष
तिथि ९ शुक्रे (२७.३.२६) दिवा ११।३२ वादनात्परं पुष्ये
तिथि १२ सोमे (३०.३.२६) मघायां

वैशाख कृष्ण पक्ष
तिथि ६ बुधे (८.४.२६) मूले
तिथि ११ सोमे (१३.४.२६) धनिष्ठायां
तिथि १३ बुधे (१५.४.२६) पूर्वाभाद्रपदे

वैशाख शुक्ल पक्ष
तिथि ८ शुक्रे (२४.४.२६) भद्रा दिवा १२।२२ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
तिथि ५ बुधे (६.५.२६) मूले
तिथि ५ गुरौ (७.५.२६) पूर्वाषाढ़ायां
तिथि ९ सोमे (११.५.२६) रिक्ता दिवा १०।१३ वादनात्परं शतभिषायां

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
तिथि ५ गुरौ (२१.५.२६) दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये
तिथि ६ शुक्रे (२२.५.२६) पुष्य नक्षत्रे

अधिक आषाढ़ कृष्ण पक्ष
तिथि ६ शनौ (६.६.२६) धनिष्ठायां

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
तिथि ५ शुक्रे (१९.६.२६) श्लेषायां
तिथि ७ रवौ (२१.६.२६) पूर्वाफाल्गुन्यां
तिथि १५ सोमे (२९.६.२६) भद्रा दिवा ३।३५ वादनात्परं मूले

आषाढ़ कृष्ण पक्ष
तिथि ५ रवौ (५.७.२६) दिवा १२।३३ वादनात्पूर्व शतभिषायां

आषाढ़ शुक्ल पक्ष
तिथि १ बुधे (१५.७.२६) पुष्य नक्षत्रे
तिथि २ गुरौ (१६.७.२६) श्लेषायां

श्रावण शुक्ल पक्ष
तिथि १ गुरौ (१३.८.२६) श्लेषायां-मघायां
तिथि २ शुक्रे (१४.८.२६) दिवा ६।४५ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां
तिथि ११ रवौ (२३.८.२६) भद्रा दिवा २।४५ वादनात्पूर्व मूले
तिथि १५ शुक्रे (२८.८.२६) शतभिषायां

भाद्रपद कृष्ण पक्ष
तिथि १३ बुधे (९.९.२६) भद्रा दिवा ११।४१ वादनात्पूर्व श्लेषायां

भाद्रपद शुक्ल पक्ष
तिथि ९ रवौ (२०.९.२६) रिक्ता दिवा ४।२२ वादनात्पूर्व पूर्वाषाढ़ाया

आश्विन शुक्ल पक्ष
तिथि ६ शुक्रे (१६.१०.२६) प्रातः ६।२२ वादनात्परं मूले नक्षत्रे
तिथि ११ गुरौ (२२.१०.२६) दिवा ११।४१ वादनात्परं शतभिषायां
तिथि १२ शुक्रे (२३.१०.२६) पूर्वाभाद्रपदे

कार्त्तिक कृष्ण पक्ष
तिथि ८ सोमे (२.११.२६) पुष्य नक्षत्रे
तिथि १० बुधे (४.१०.२६) भद्रा दिवा १२।५३ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां

कार्तिक शुक्ल पक्ष
तिथि ३ गुरौ (१२.११.२६) दिवा १।२८ वादनात्परं मूले
तिथि ४ शुक्रे (१३.११.२६) भद्रा सायं ६।१२ वादनात्परं पूर्वाषाढ़ायाम्
तिथि १० गुरौ (१९.११.२६) पूर्वाभाद्रपदे

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
तिथि ५ रवौ (२९.११.२६) पुष्ये
तिथि ६/७ सोमे (३०.११.२६) भद्रा प्रातः ७।३७ वादनात्पूर्व श्लेषायां

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष
तिथि १ गुरौ (१०.१२.२६) मूले
तिथि २ शुक्रे (११.१२.२६) पूर्वाषाढ़ायां
तिथि ७ बुधे (१६.१२.२६) दिवा ९।५४ वादनम् यावत् शतभिषायां
तिथि ८ गुरौ (१७.१२.२६) पूर्वाभाद्रपदे

पौष कृष्ण पक्ष
तिथि ५ सोमे (२८.१२.२६) मघायां
तिथि १५ शुक्रे (२२.१.२७) भद्रा दिवा ७।२० वादनात्परं पुनर्वसु-पुष्ये

माघ कृष्ण पक्ष
तिथि १२ बुधे (३.२.२७) मूल नक्षत्रे

माघ शुक्ल पक्ष
तिथि २ सोमे (८.२.२७) शतभिषायां
तिथि १३ शुक्रे (१९.२.२७) रिक्ता दिवा ९।१५ वादनात्पूर्व पुष्य नक्षत्रे

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
तिथि २ सोमे (२२.२.२७) पूर्वाफाल्गुन्यां
तिथि ११ बुधे (३.३.२७) पूर्वाषाढ़ायां

फाल्गुन शुक्ल पक्ष:
तिथि ११ गुरौ (१८.३.२७) भद्रा दिवा १२।४५ वादनात्पूर्व पुष्य नक्षत्रे
तिथि १२ शुक्रे (१९.३.२७) श्लेषायां

चैत्र कृष्ण पक्ष
तिथि ७ सोमे (२९.३.२७) मूले

विशेष (श्रेष्ठ) मुहूर्त्ता:

(षोडष संस्कारों को छोड़कर नूतन उद्योग-व्यापार, वाहन क्रय इत्यादि के लिये)

चैत्र शुक्ल पक्ष
तिथि २ शुक्रे (२०.३.२६) रेवत्यां

वैशाख शुक्ल पक्ष
तिथि ३ सोमे (२०.४.२६) दिवा ७।३६ वादनात्परं रोहिण्यां
तिथि ७ गुरौ (२३/२४.४.२६) रात १।१७ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
तिथि २ सोमे (१८.५.२६) दिवा २।११ वादनात्परं मृगशिरायां
तिथि ५ गुरौ (२१.५.२६) दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
तिथि ३० सोमे (१५.६.२६) मृगशिरायां

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
तिथि ४ गुरौ (१८.६.२६) पुष्य नक्षत्रे दिवा १२।४० वादनात्पूर्व

आषाढ़ कृष्ण पक्ष
तिथि १२ शनौ (११.७.२६) दिवा ८।१९ वादनात्परं रोहिण्यां

आषाढ़ शुक्ल पक्ष
तिथि ५ रवौ (१९.७.२६) रात्रि १०।२१ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे

श्रावण कृष्ण पक्ष
तिथि १० शनौ (८.८.२६) दिवा १०।५१ वादनात्परं दिवा २।५८ वादनात्पूर्व रोहिण्यां

श्रावण शुक्ल पक्ष
तिथि ४ रवौ (१६.८.२६) सायं ६।४७ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे

भाद्रपद शुक्ल पक्ष
तिथि २ रवौ (१३.९.२६) दिवा २।२४ वादनम् यावत् हस्त नक्षत्रे

आश्विन कृष्ण पक्ष
तिथि ३ भौमे (२९.९.२६) दिवा ७।२४ वादनात्पूर्व अश्विन्यां
तिथि १० सोमे (५.१०.२६) पुष्य नक्षत्रे दिवा ३।१९ वादनात्पूर्व

आश्विन शुक्ल पक्ष
तिथि ४ बुधे (१४.१०.२६) भद्रा दिवा ११।५ वादनात्पूर्व अनुराधायां
तिथि ८ सोमे (१९.१०.२६) दिवा २।१ वादनात्परं श्रवणे

कार्त्तिक कृष्ण पक्ष
तिथि ८ सोमे (२.११.२६) दिवा ९।४ वादनम यावत् पुष्य नक्षत्रे

कार्त्तिक शुक्ल पक्ष
तिथि २ बुधे (११.११.२६) दिवा ११।६ वादनम यावत अनुराधायां
तिथि ७ सोमे (१६.११.२६) रात ११।२१ वादनम् यावत श्रवणे

मार्गशीर्ष कृष्णा पक्ष
तिथि ५ रवौ (२९.११.२६) सायं ५।१७ वादनम् यावत पुष्य नक्षत्रे

पौष शुक्ल पक्ष
तिथि ७ शुक्रे (१५.१.२७) दिवा ८।५१ वादनात्पूर्व रेवत्यां

माघ शुक्ल पक्ष
तिथि १२ गुरौ (१८.२.२७) रात ६।५३ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
तिथि ७ सोमे (१५.३.२७) दिवा ७।४४ वादनात्परं ८।४९ वादनम् यावत् मृगशिरायां
तिथि ११ गुरौ (१८.३.२७) दिवा १२।४५ वादनात्पूर्व पुष्य नक्षत्रे

पञ्चाङ्ग देखने की रीति

गत ८३ वर्षों से यह पंचाग प्रकाशित हो रहा है। अत: प्राचीन प्रेमियों के निमित्त पञ्चांग देखने की विधि बताना तो पिष्टपेषण मात्र ही है। पुनरपि, नवीन उत्सुक एवं जागरुक बन्धुओं के हित हेतु संक्षिप्त निर्देशन देना आवश्यक है।

प्रत्येक विज्ञान में बड़ी पारिभाषिक शब्दावलियों के स्थान पर सुविधार्थ संक्षिप्त संकेत निर्धारित कर लिए जाते हैं। इस पंचांग में भी किंचित् निर्णीत चिह्न हैं। उनका सम्यक् ज्ञान प्रथम ही आवश्यक है। वे निम्नांकित है।

उपरोक्त संकेतों को यदि किसी पक्ष का आश्रय लेकर समझा जाय तो सरलता से समझ मे आ सकता है।

सांकेतिक चिह्न	स्पष्टार्थ	सांकेतिक चिह्न	स्पष्टार्थ	मुहूर्त के स्पष्टार्थ
दि.मा.	दिनमान	रा.	सायमान से राष्ट्री.तारीख	ग्र.व.वि. - ग्रहवल विस्वा
ति.	तिथि	चं.रा.प्र.	चन्द्रसंचार अर्थात् उक्त घटी पल पर चन्द्रराशि बदलेगा	सू.दा. - सूर्यदान
वा.	वार			चं.दा. - चन्द्र दान
घ.प.	घटी पल			भौ.दा. - भौम दान
घं.मि.	घण्टा-मिनट	सू.उ.	सूर्य-उदय	श.दा. - शनि दान
दि.	दिन	सू.अ.	सूर्य-अस्त	रा.के. - राहु-केतुदान
रा.	रात	उ.	उपरान्त	मृ.बा. - मृत्युबाण
न.	नक्षत्र	या.	यावत्	लग्न १ = मेष लग्न, लग्न
यो.	योग	ति.दा.	तिथि-दान	२= वृष लग्न, लग्न ३ =
क.	करण	र.क्रां.	रविक्रान्ति (प्रतिदिन सूर्यो. कालिक क्रान्ति)	मिथुन इसी तरह सभी लग्नों
अं.	अंग्रेजी तारीख	रे.अं.	रेलवे घटी अन्तर	को दर्शाया जाता है।
सौ.	सौर तारीख	चं.अ.	चन्द्र-अस्त	ना.च.शु.= चक्र शुद्धि नहीं
फ.	फसली	चं.उ.	चन्द्र-उदय	भू.सू.= भूमि सुप्त
		भ.	भद्रा	

उदाहरण- चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (ति.१५) को लीजिए। इस तिथि को दिनमान ३०।४६ लिखा गया है। इसका अर्थ हैं कि सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन का मान ३० घटी ४६ पल हैं। आगे तिथि वार में १५ गुरुवार लिखा है, इसका अर्थ तिथि १५को गुरुवार है। आगे घ.प.१।३४ लिखा है। इसका अर्थ तिथि १५ का मान १ घटी ३४ पल तक रहेगा। घण्टा मिनट का खाना घटी पल को घण्टा मिनट में परिवर्तित कर देता है। जैसे तिथि १५ का मान दिन ६ बजकर २९ मिनट तक रहेगा। इस तिथि को हस्त नक्षत्र का मान २६ घटी ४९ पल है जो दिन ४ बजकर ३५ मिनट तक है। ध्रुव नामक योग है जिसका मान १९ घटी १० पल है जो दिन १ बजकर ३१ मिनट तक रहेगा। बव विष्टि का मान १ घटी ३४ पल तक है। द्वितीय करण बा का मान ३२ घटी ३३ पल है। राक्षस नामक योग है। इसके आगे चन्द्र संचार का खाना है जिसमें तुला राशि का ५८ घटी ४६ पल पर प्रवेश करेगी। इसके बाद उस दिन का सूर्योदय ५।५१ पर एवं सूर्यास्त ६।९ पर होगा। रविक्रान्ति जैसे ४।४० है इसका अर्थ ४ अंश ४० कला उत्तर क्रान्ति है। सूर्योदय कालिक स्पष्ट सूर्य ११ राशि १७ अंश ५८ कला ५७ विकला है। उस दिन की सूर्य गति ५९।९ अर्थात् ५९ कला ९ विकला है। रेलवे अन्तर +२ लिखा हैं। इसका अर्थ है उस दिन २ मिनट जोड़ देने पर उस दिन का रेलवे घड़ी (स्टैण्डर्ड टाइम) के अनुसार समय होगा। चन्द्र अस्त होने का समय आगे दिया गया है। इसके अतिरिक्त दैनिक सूर्योदय कालिक ग्रह दिये गये हैं। प्रत्येक दिन की ग्रहगति दी गई है। दैनिक लग्न सारिणी भी दिन-रात संयुक्त लिखी गई हैं। प्रत्येक पक्ष में पक्षफल, धर्मशास्त्र, राशिफल और मुहूर्त्त सरल नागरी लिपि मे लिखा गया है। काशी सूर्य घड़ी के समय (लोकल टाईम) में पंचांग में दिए हुए दैनिक अन्तर को संकेत के अनुसार धन-ऋण कर देने से काशी में रेलवे घड़ी (स्टै.टा.) के अनुसार समय हो जायेगा।

मुहूर्त्त तालिका संवत् २०८३

नोट-विस्तार से पक्ष में देखकर निर्णय लें। तिथि एवं अंग्रजी तारीख का मिलान सम्बन्धित पक्ष देखकर अवश्य कर लें।

विवाह मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १३ बुधे (१५.४.२६) दिवा १।६ वादनात्परं उ.भा. मृत्युबाण भद्राव्याप्तिः।
तिथि १४ गुरौ (१६.४.२६) मृत्युबाण दिवा १२।४५ वादनात्परं रेवत्यां आ.ल.गोधूलिः।

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ सोमे (२०.४.२६) दिवा ७।३६ वादनात्परं रोहिण्यां दिवा ल.२ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.७रात्रि ९।२७ वादनात्परं भद्रा।
तिथि ४ भौमे (२१.४.२६) दिवा ८।१४ वानात्परं मृगशिरायां दिवा लग्नं २ वा ल. गोधूलि वा रात्रौ ल.७ वा लग्नं १०।
तिथि ९ शनौ (२५.४.२६) रात्रि ११।१७ वादनात्परं मघायां लग्नं १०।
तिथि १० रवौ (२६.४.२६) मघायां दिवा ल.२ वा ल.३ वा ल.गोधूलिः वा ल.७।
तिथि ११ सोमे (२७.४.२६) रात्रि १०।४५ वादनात्परं उ.फा. भौमवेधः।
तिथि १२ भौमे (२८.४.२६) उ.फा. भौमवेध तत्परं हस्त नक्षत्रे शनिवेधः।
तिथि १३बुधे(२९.४.२६) हस्त नक्षत्रे शनिवेधः।
तिथि १४गुरौ (३०.४.२६)स्वात्यां भद्राव्याप्तिः।
तिथि १५ शुक्रे (१.५.२६) भद्रा दिवा ८।५४ वादनात्परं स्वात्यां दिवा ल.५ वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्न १०।

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ रवौ (३.५.२६) अनुराधायां मृत्युबाणः सूर्यवेधः।
तिथि ३ सोमे (४.५.२६) अनुराधायां मृत्युबाणः।
तिथि ४ भौमे (५.५.२६) दिवा १०।५३ वादनात्परं मूले लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १० वा लग्नं ११।
तिथि ५ बुधे (६.५.२६) दिवा १।२६ यादनम् यावत् मूल नक्षत्रे पंचेष्टाभावः।
तिथि ५ गुरौ (७.५.२६) दिवा ३।४७ वादनात्परं उ.षा. दिवा लग्नं ७ वा लग्नं गोधूलिः वा लग्नं १०।
तिथि ६ शुक्रे (८.५.२६) भद्रा दिवा ८।२४ वादनात्पूर्व उ.षा. पचेष्टाभावः।
तिथि १० भौमे (१२.५.२६) रात्रि ९।० वादनात्परं उ.भा.लग्नं १० वा लग्नं ११।
तिथि ११ बुधे (१३.५.२६) उ.भा.मृत्युबाणः।
तिथि १२ गुरौ (१४.५.२६) रेवत्यां लग्नं गोधूलिः रात्रि ७।५१ वादनं यावत्।

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (१९.६.२६) दिवा ३।२३ वादनात्परं मघायां लग्न गोधूलिः वा रात्रौ ल.१
तिथि ६ शनौ (२०.६.२६) दिवा २।४३ वादनं यावत् मघायां दिवा लग्नं ७।
तिथि ७ रवौ (२१.६.२६) दिवा २।२८ वादनात्परं उ.फा. दिवा लग्नं ७ वा भद्रा रात्रि ७।५६ वादनात्पूर्व लग्न गोधूलिः।
तिथि ८ सोमे (२२.६.२६) भद्रा दिवा ७।३९ वादनात्परं उ.फा. दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः दिवा २।४२ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे लग्न गोधूलि वा रात्रौ लग्नं १।
तिथि ९ भौमे (२३.६.२६) दिवा ३।२५ वादनम् यावत् हस्त नक्षत्रे दिवा लग्नं ४।
तिथि १०बुधे (२४.६.२६) दिवा ४।४० वादनात्परं स्वात्यां लग्नं गोधूलि वा रात्रौ लग्नं १२ वा लग्नं १।
तिथि ११ गुरौ (२५.६.२६)भद्रा दिवा ८।४१ वादनात्पूर्व स्वात्यां दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः।
तिथि १२ शुक्रे (२६.६.२६) रात्रि ८।२८ वादनात्परं अनुराधायां मृत्युबाणः।
तिथि १३ शनौ (२७.६.२६)मृत्युबाणः दिवा ९।५१ वादनात्परं अनुराधायां दिवा लग्नं ५ वा लग्नं ६, ७ वा लग्नं गोधूलि रात्रि १०।५३ वादनं यावत्।
तिथि १४ रवौ (२८.६.२६) रात्रि १।३१ वादनात्परं मूल नक्षत्रे लग्न १ रात्रि २।३५ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः।
तिथि १५ सोमे (२९.६.२६) भद्रा दिवा ३।३५ वादनात्परं मूल नक्षत्रे लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १२ वा लग्नं १।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (१.७.२६) प्रातः६।३३ वादनात्परं उ.षा. दिवा ल.७ वा ल.गोधूलिं वा रात्रौ ल.१२ वा ल.१।
तिथि २ गुरौ (२.७.२६) दिवा ८।४३ वादनम् यावत् उ.षा. दिवा ल.४।
तिथि ६ सोमे (६.७.२६) मृत्युबाण रात्रि ९।४८ वादनात्परं उ.भा.ल.१ वा ल.२।
तिथि ७ भौमे (७.७.२६) उ.भा.दिवा ल.४ वा दिवा १२।३७ वादनात्परं रेवत्याम् दिवा ल.७वा ल.गोधूलि वा ल.१वा ल.२।
तिथि ८ बुधे (८.७.२६) रेवत्याम् दिवा ल.४
तिथि १२ शनौ (११.७.२६) दिवा ८।१९ वादनात्परम् रोहिण्यां दिवा ल.७ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.१२ वा ल.१
तिथि १३ रवौ (१२.७.२६) रोहिण्यां मृगशिरायां गुरु बृद्धत्व दोषः।

कार्तिक शुक्ल पक्षः

तिथि ११ शुक्रे (२०.११.२६) उ.भा.भद्रा दिवा २।१३ वादनात्पूर्व दिवा ल.१० वा रात्रि ३।४९ वादनात्परम् रेवत्याम ल.७
तिथि १२ शनौ (२१.११.२६) रेवत्याम् दिवा ल.१०वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.३
तिथि १५ भौमे (२४.११.२६) रात्रि १।३ वादनात्परं रोहिण्यां ल.७।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (२५.११.२६) रोहिण्यां दिवा ल.१० वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.१०वा रात्रि ११।३९ वादनात्परं मृगशिरायां ल.७
तिथि २ गुरौ (२६.११.२६) मृगशिरायां दिवा ल.१० वा ल.गोधूलि वा रात्रो ल.३
तिथि ६/७ सोमे (३०.११.२६) सायं ९ वादनात्परं मघायां ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.३ वा ल.४ वा ल.७।
तिथि ८ भौमे (१.१२.२६) मघायां दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः।
तिथि ९ बुधे(२.१२.२६) दिवा१।४६ वादनात्परं उ.फा.ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.३ वा ल.४ ल.७।
तिथि १० गुरौ (३.१२.२६) उ.फा.दिवा ल.१० दिवा २।२३ वादनात्परं भद्रा। रात्रि १।५८ भद्रात्परं हस्त नक्षत्रे शनिवेधः।
ति. ११ शुक्रे(४.१२.२६)हस्त नक्षत्रे शनिवेधः।
तिथि १२ शनौ (५.१२.२६) दिवा १।४० वादनात्परं स्वात्यां ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.३वा ल.५ वा ल.६ रात्रि १।९वादना. मृत्युबाणः।
तिथि १४ सोमे (७.१२.२६) दिवा ४।१७ वादनात्परं अनुराधायां ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.३ वा ल.६।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (९.१२.२६) रात्रि ८।३० वादनात्परं मूल नक्षत्रे ल.५ वा ल.७
तिथि १ गुरौ (१०.१२.२६) मूल नक्षत्रे ल.गोधूलि वा ल.३ वा ल.५
तिथि २ शुक्रे (११.१२.२६) रात्रि १।३८ वादनात्परं उ.षा. ल.७।
तिथि ३ शनौ (१२.१२.२६)उ.षा.दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.३वा ल.५रात्रि १२।३६ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः।

पौष शुक्ल पक्षः

तिथि ११ सोमे (१८.१.२७) रात्रि ३।२९ वादनात्परं रोहिण्यां ल.८।
तिथि १२ भौमे (१९.१.२७) रोहिण्यां दिवा ल.१२। दिवा ३।४१ वादनात्परं मृगशिरायां सूर्यवेधः।
तिथि १३ बुधे (२०.१.२७) दिवा २।२८ वादनम् यावत् मृगशिरायां सूर्यवेधः।

माघ कृष्ण पक्षः

तिथि २रवौ (२४.१.२७) प्रातः७।४२ वादनात्परं मघायां दिवा ल.१२ वा दिवा ल.३ वा ल.गोधूलि रात्रि १०।३८ वादनात्परं मृत्युबाणः।
तिथि ३ सोमे (२५.१.२७) रात्रिशेष ५।२८ वादनात्परं उ.फा. ल.९ पंचेष्टाभावः।
तिथि ४ भौमे (२६.१.२७) उ.फा. दिवा ल.१२ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.५ वा ल.७ वा ल.८।
तिथि ५ बुधे (२७.१.२७) हस्त नक्षत्र शनिवेधः
तिथि ६ गुरौ (२८.१.२७) रात्रि ४।५४ वादनात्परं स्वात्यां ल.९ पंचेष्टाभावः।
तिथि ७ शुक्रे (२९.१.२७) स्वात्यां दिवा ल.१२ वा दिवा ल.३ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.५ वा ल.६ वा ल.७ वा ल.८ वा ल.९ पंचेष्टाभावः।
तिथि ९ रवौ (३१.१.२७) प्रातः६।५७ वादनात्परं अनुराधायां दिवा ल.१२वा ल.३ वा ल.गोधूलि व रात्रौ ल.५ पंचेष्टाभावः रात्रि १०।५ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः।
तिथि १० सोमे (१.२.२७) अनुराधायां भद्रा व्याप्तिः।
तिथि ११ भौमे (२.२.२७) दिवा १०।४९ वादनात्परं मूले दिवा ल.३ सायं ६।२९ वादनात्परं मृत्युबाणः।
तिथि १२ बुधे (३.२.२७) मूले मृत्युबाणः व्याप्तिः।
तिथि १३ गुरौ (४.२.२७) दिवा ३।५०उ.षा. भद्रा व्याप्तिः।
तिथि १४ शुक्रे (५.२.२७) उ.षा.दिवा ल.३ **तत्परं मासान्तः।**

माघ शुक्ल पक्षः

तिथि ३ भौमे (९.२.२७) रात्रि १।५४ वादनात्परं उ.भा.ल.८ वा ल.९ पंचेष्टाभावः।
तिथि ४ बुधे (१०.२.२७) भद्रा दिवा १२।६ वादनात्पूर्व उ.भा.पदे दिवा ल.११ वा दिवा ल.१२ भद्रा रात्रि १२।४ वादनात्परं ल.७ वा ल.८ वा रात्रि २।३७ वादनात्परं रेवत्यां शनियुतिः ल.९ पंचेष्टाभावः।
तिथि ५ गुरौ (११.२.२७) रेवत्यां शनियुतिः मृत्युबाण दिवा २।५२ वादनात्पूर्व ल.११वा ल.१२ वा ल.२ वा दिवा ल.३।
तिथि ८ रवौ (१४.२.२७) रात्रि १२।५८ वादनात्परं रोहिण्यां मृत्युबाणः।
तिथि ९ सोमे (१५.२.२७) मृत्युबाण दिवा १।३१ वादनात्परं रोहिण्यां ल.गोधूलि वा ल.७ रात्रि ११।४१ वादनात्परं मृगशिरायां पंचेष्टाभावः।
तिथि १० भौमे (१६.२.२७) मृगशिरायां दिवा ल.१२ वा ल.१ वा ल.२ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६।
तिथि १४।१५ शनौ (२०.२.२७) भद्रा सायं ५।३७ वादनात्परं मघायां ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६ वा ल.७

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि १ रवौ (२१.२.२७) मघायां दिवा ल.३ दिवा २।२३ वादनम यावत्।
तिथि २ सोमे (२२.२.२७) दिवा १।२१ वादनात्परं उ.फा. दिवा ल.३ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६ वा ल.७ वा ल.८।
तिथि ३ भौमे (२३.२.२७) मृत्युबाण दिवा ११।३८ वादनात्पूर्व उ.फा. पंचेष्टलग्नाभावः तत्परम हस्त नक्षत्रे मृत्युबाण भद्रा व्याप्तिः।
तिथि ४ बुधे (२४.२.२७) मृत्युबाण दिवा ११।२२ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः।
तिथि ५ गुरौ (२५.२.२७) दिवा १२।३० वादनात्परं स्वात्यां सूर्यवेधः।
तिथि ६ शुक्रे (२६.२.२७) दिवा १।१० वादनात्पूर्व स्वात्यां सूर्यवेधः।
तिथि ७ शनौ (२७.२.२७) दिवा २।२१ वादनात्परं अनुराधायां दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६ वा ल.७।
तिथि ८रवौ (२८.२.२७) दिवा ३।५८वादनात्पूर्व अनुराधायां दिवा ल.१२ वा ल.२
तिथि ९ सोमे (१.३.२७) सायं ६।२ वादनात्परं मूल नक्षत्रे ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६,७,८
तिथि १० भौमे (२.३.२७) भद्रा दिवा ४।१८ वादनात्पूर्व मूल नक्षत्रे दिवा ल.१२, २
तिथि ११ बुधे (३.३.२७) रात्रि ११।१ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् ल.८
तिथि ११ गुरौ (४.३.२७) उ.षा.दिवा ल.१२ दिवा १०।३ वादनात्परं मृत्युबाणः।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १ भौमे (९.३.२७) दिवा ९।२५ वादनात्परं उ.भा.दिवा ल.२ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.७।
तिथि २ बुधे (१०.३.२७) उ.भा.दिवा ल.१२ वा दिवा १०।१६ वादनात्परं रेवत्यां दिवा ल.२ वा ल.गोधूलिः वा रात्रौ ल.७।
तिथि ३ गुरौ (११.३.२७) रेवत्यां दिवा १०।३६ वादनम् यावत् दिवा ल.२।
ति. ६ रवौ (१४.३.२७) मृत्युबाण दिवा९।३७ वादनात्परं रोहिण्यां दिवा ल.२ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६।
तिथि ७ सोमे(१५.३.२७)रोहिण्यां दिवा ल.१ दिवा९।३९ वादनात्परं **मीनार्कः खरमासः।**

वर-वरणं कन्या वरणं मुहूर्त्ताः

(तिलक गोद भराई)

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १३ बुधे (१५.४.२६) दिवा १।६ वादनात्परं भद्रा पूर्व उत्तराभाद्रपदे।

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि २ रवौ (१९.४.२६) दिवा ९।११ वादनात्परं कृत्तिकायां।
तिथि ३ सोमे (२०.४.२६) दिवा ७।३६ वादनात्परं रोहिण्यां।
तिथि ११ सोमे (२७.४.२६) भद्रा दिवा ८।९ वादनात्पूर्व पूर्वाफा.वा भद्रात्परं रात्रौ।
तिथि १३ बुधे (२९.४.२६) हस्त नक्षत्रे।
तिथि १५ शुक्रे (१.५.२६) भद्रा दिवा ८।५४ वादनात्परं स्वात्यां।

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (४.५.२६) दिवा ८।१५ वादनम् यावत् अनुराधायां।
तिथि ५ गुरौ (७.५.२६) पूर्वाषाढ़ायां-उ.षा.
तिथि ६ शुक्रे (८.५.२६) भद्रा दिवा ८।२४ वादनात्पूर्व उ.षा. वा भद्रा रात्रि ८।५७ वादनात्परं श्रवणे कन्या वरणं।
तिथि ११ बुधे (१३.५.२६) उत्तराभाद्रपदे
तिथि १२ गुरौ (१४.५.२६) रेवत्यां

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शुक्रे(१९.६.२६)दिवा ३।२३वादनात्परं मघायां
तिथि ७ रवौ (२१.६.२६) भद्रा रात्रि ७।५६ वादनात्पूर्व पू.फा. - उ.फा.
तिथि ८ सोमे (२२.६.२६) भद्रा दिवा ७।३९ वादनात्परं उ.फा.हस्त नक्षत्रे
तिथि १० बुधे (२४.६.२६) स्वात्यां
तिथि ११ गुरौ (२५.६.२६) भद्रा दिवा ८।४१ वादनात्पूर्व स्वात्यां
तिथि १२ शुक्रे (२६.६.२६) रात्रि ८।२८ वादनात्परं अनुराधायां

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (१.७.२६) दिवा ६।३३ वादनात्परं उ.षा.
तिथि २ गुरौ (२.७.२६) उत्तराषाढ़ायां भद्रा रात्रि ८।२९ वादनात्पूर्व श्रवणे कन्या वरणं
तिथि ६ सोमे (६.७.२६) भद्रा रात्रि ८।५९ वादनात्परं उ.भा.
तिथि ८ बुधे (८.७.२६) रेवत्यां
तिथि ११ शुक्रे (१०.७.२६) दिवा ९।४८ वादनात्परं कृत्तिकायां

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (२०.११.२६) भद्रा दिवा २।१३ वादनात्पूर्व उ.भा.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (२५.११.२६) रोहिण्यां
तिथि २ गुरौ (२६.११.२६) मृगशिरायां
तिथि १० गुरौ (३.१२.२६) भद्रा दिवा २।२३ वादनात्पूर्व उ.फा. हस्त नक्षत्रे
तिथि १३ रवौ (६.१२.२६) दिवा २।४७ वादनं यावत् स्वात्यां

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ गुरौ (१०.१२.२६) मूल नक्षत्रे
तिथि २ शुक्रे (११.१२.२६) पूर्वाषाढायां
तिथि ४ रवौ (१३.१२.२६) रिक्ता भद्रा दिवा १।३६ वादनात्परं श्रवणे कन्या वरणं
तिथि५सोमे (१४.१२.२६) धनिष्ठायां कन्या वरणं।

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि ११ सोमे (१८.१.२७) भद्रा दिवा ४।१९ वादनात्पूर्व कृत्तिकायां
तिथि १३ बुधे (२०.१.२७) दिवा २।८वादनात्पूर्व मृगशिरायां

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ५ बुधे (२७.१.२७) हस्त नक्षत्रे
तिथि ७ शुक्रे (२९.१.२७) स्वात्यां
तिथि १२ बुधे (३.२.२७) मूले-पूर्वाषाढ़ायां
तिथि १३ गुरौ (४.२.२७) भद्रा दिवा ४।३० वादनात्पूर्व पूर्वाषाढ़ायां

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ गुरौ (११.२.२७) रेवत्यां
तिथि ८ रवौ (१४.२.२७) भद्रा दिवा ९।१० वादनात्परं कृतिकायां
तिथि ९ सोमे (१५.२.२७) रिक्ता सायं ६।२६ वादनात्परं रोहिण्यां

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२२.२.२७) दिवा १।२१ वादनात्परं उ.फा.
तिथि ६ शुक्रे (२६.२.२७) स्वात्यां
तिथि ८ रवौ (२८.२.२७) अनुराधायां
तिथि ११ बुधे (३.३.२७) पूर्वाषाढायां
तिथि ११ गुरौ (४.३.२७) उत्तराषाढ़ायां
तिथि १२शुक्रे (५.३.२७) श्रवणे कन्या वरणं

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (१०.३.२७) उ.भा. रेवत्यां
तिथि ३ गुरौ (११.३.२७) रेवत्या
तिथि ६ रवौ (१४.३.२७) कृत्तिकायां-रोहिण्यां
तिथि ७ सोमे (१५.३.२७) भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्व रोहिण्यां-मृगशिरायां

वैवाहिक वधूप्रवेश मुहूर्त्ता

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ सोमे (२०.४.२६) दिवा ७।३६ वादनात्परं रोहिण्यां ल.३
तिथि ८ शुक्रे (२४.४.२६) भद्रा दिवा १२।२२ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे ल.५,६
तिथि ११ सोमे (२७.४.२६) रात्रि १०।४५ वादनात्परं उ.फा. ल.९

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (४.५.२६) दिवा ८।१५ वादनम यावत् अनुराधायां ल.२ वा ३
तिथि ५ गुरौ (७.५.२६) दिवा ३।४७ वादनात्परं उ.षा. ल.गोधूलिः।
तिथि ६ शुक्रे (८.५.२६) भद्रा दिवा ८।२४ वादनात्पूर्व उ.षा. ल.३
तिथि १२ गुरौ (१४.५.२६) रेवत्यां ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (१९.६.२६) दिवा ३।२३ वादनात्परं मघायां
तिथि ८ सोमे (२२.६.२६) भद्रा दिवा ७।३९ वादनात्परं उ.फाल्गुन्यां ल.६
तिथि ११ गुरौ (२५.६.२६) भद्रा दिवा ८।४१ वादनात्पूर्व स्वात्यां ल.३
तिथि १२ शुक्रे (२६.६.२६) रात्रि ८।२८ वादनात्परं अनुराधायां ल.११

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि २ गुरौ (२.७.२६) उ.षा.श्रवणे ल.६
तिथि ६ सोमे (६.७.२६) भद्रा रात्रि ८।५९ वादनात्परं उ.भाद्रपदे

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (२०.११.२६) भद्रा दिवा २।१३ वादनात्पूर्व उ.भा. ल.९

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि २ गुरौ (२६.११.२६) मृग.ल.८,११
तिथि१०गुरौ (३.१२.२६)भद्रा दिवा २।२३ वादनात्पूर्व उ.फा.हस्त नक्षत्रे ल.८,११
तिथि ११ शुक्रे (४.१२.२६) हस्त नक्षत्रे ल.८ वा चित्रायां लग्न गोधूलि

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ गुरौ (१०.१२.२६) मूले ल.९
तिथि ५ सोमे (१४.१२.२६) धनिष्ठा.ल.९

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि ७ शुक्रे (१५.१.२७) भद्रा दिवा ८।५१ वादनात्पूर्व ल.११

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ६ गुरौ (२८.१.२७) भद्रा दिवा ८।३७ वादनात्पूर्व चित्रायां ल.११
तिथि ७शुक्रे (२९.१.२७) स्वात्यां ल.११,२

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ गुरौ (११.२.२७) रेवत्यां ल.११व२
तिथि ९ सोमे (१५.२.२७) रिक्ता सायं ६।२६ वादनात्परं रोहिण्यां ल.गोधूलि
तिथि १३ शुक्रे (१९.२.२७) रिक्ता दिवा ९।१५ वादनात्पूर्व पुष्य लक्षत्रे ल.१२

फाल्गुन कृष्ण पक्षः

तिथि २ सोमे (२२.२.२७) दिवा १।२१ वादनात्परं उ.फा. ल.३
तिथि ५ गुरौ(२५.२.२७)चित्रायां ल.११वा१२
तिथि ११ गुरौ (४.३.२७) उ.षा.ल.१२वा३
तिथि १२ शुक्रे (५.३.२७) श्रवणे ल.२

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ३ गुरौ (११.३.२७) रेवत्यां ल.२
तिथि ७ सोमे (१५.३.२७) भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्व रोहिण्यां ल.१२

द्विरागमन मुहूर्त्ता

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १३ बुधे (१५.४.२६) दिवा १।६ वादनात्परं उ.भा. ल.गोधूलि:

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ सोमे (२०.४.२६) दिवा ७।३६ वादनात्परं रोहिण्यां ल.३
तिथि ७ गुरौ (२३.४.२६) पुनर्वसौ ल.२वा३
तिथि ८ शुक्रे (२४.४.२६) भद्रा दिवा१२।२२ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे ल.५ वा ६
तिथि ११ सोमे (२७.४.२६) रात्रि १०।४५ वादनात्परं उ.फा. ल.९
तिथि १३बुधे (२९.४.२६) हस्त नक्षत्रे ल.३
तिथि १५ शुक्रे (१.५.२६) भद्रा दिवा ८।५४ वादनात्परं स्वात्यां ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (४.५.२६) दिवा ८।१५ वादनम् यावत् अनुराधायां ल.२ वा ३
तिथि ५ बुधे (६.५.२६) मूले ल.३
तिथि ५ गुरौ (७.५.२६) दिवा ३।४७ वादनात्परं उ.षा.ल. गोधूलि:।
तिथि १२ गुरौ (१४.५.२६) रेवत्यां ल.३

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (२५.११.२६) रोहिण्यां ल.१२
तिथि २ गुरौ (२६.११.२६) मृग. ल.८व११
तिथि ९ बुधे (२.१२.२६) रिक्ता रात्रि २।४८ वादनात्परं उ.फा. रात्रि शेषे ल.७
तिथि १० गुरौ (३.१२.२६) भद्रा दिवा २।२३ वादनात्पूर्व उ.फा. हस्त नक्षत्रे ल.८ वा ११ वा १२
तिथि ११ शुक्रे (४.१२.२६) हस्त नक्षत्रे ल.८ वा चित्रायां ल.गोधूलि

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (९.१२.२६) रात्रि ८।३० वादनात्परं मूले
तिथि १ गुरौ (१०.१२.२६) मूले ल.९
तिथि ५ सोमे (१४.१२.२६) धनिष्ठायां ल.९
तिथि ७ बुधे (१६.१२.२६) दिवा ९।५४ वादनम यावत शतभिषायां ल.९

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ९ सोमे (१५.२.२७) रिक्ता सायं ६।२६ वादनात्परं रोहिण्यां ल.गोधूलि
तिथि ११ बुधे (१७.२.२७) रात्रि ८।३४ वादनात्परं पुनर्वसौ ल.६
तिथि १२ गुरौ (१८.२.२७) पुनर्वसौ ल.१२
तिथि १३ शुक्रे (१९.२.२७) रिक्ता दिवा ९।१५वादनात्पूर्व पुष्य नक्षत्रे ल.१२

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२२.२.२७) दिवा १।२१ वादनातपरं उ.फा. ल.३
तिथि ५ गुरौ (२५.२.२७) चित्रायां ल.११,१२
तिथि ११ गुरौ (४.३.२७) उ.षा.ल.१२व३
तिथि १२ शुक्रे (५.३.२७) श्रवणे ल.२ (त्रयोदश्यां)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ३ गुरौ (११.३.२७) रेवत्यां ल.२
तिथि ७ सोमे (१५.३.२७) भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्व रोहिण्यां ल.१२

गर्भाधान

मानव जीवन के षोडश संस्कारों में गर्भाधान संस्कार ही आधारभूत संस्कार है और इसको अवश्य ही तिथि नक्षत्रों एवं लग्नो से ग्रहों के बलाबल को ध्यान में रखते हुए करना एक यशस्वी सन्तान हेतु आवश्यक एवं समीचीन होगा। इसलिए इसक महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रमुखता से दिया जा रहा है।

वैशाख कृष्ण पक्षः

तिथि ११ सोमे (१३.४.२६) शत.रात्रौ ल.८

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ११ सोमे (२७.४.२६) रात्रि १०।४५ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ५ गुरौ (७.५.२६) रात्रौ उ.षा. ल.९
तिथि ६ शुक्रे (८.५.२६) रात्रि ८।५७ वादनात्परं श्रवणे ल.९
तिथि ११ बुधे (१३.५.२६) उ.भाद्रपदे ल.९

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि २सोमे (१८.५.२६) रोहिण्यां रात्रौ ल.९
तिथि ९ सोमे (२५.५.२६) उ.फा.रात्रौ ल.९
तिथि १२ गुरौ (२८.५.२६) स्वात्यां ल.९

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ४ गुरौ (४.६.२६)रात्रि ८।२४ वादनात्परं उ.षा. ल.११
तिथि ५ शुक्रे (५.६.२६) श्रवणे ल.९ वा११

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १०बुधे (२४.६.२६)स्वात्यां रात्रौ ल.१२
तिथि १२ शुक्रे (२६.६.२६) रात्रि ८।२८ वादनात्परं अनुराधायां

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि ६ सोमे (६.७.२६) भद्रा रात्रि ८।५९ वादनात्परं उ.भा. पदे

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ६ सोमे (२०.७.२६) हस्त नक्षत्रे रात्रौ ल.१२
तिथि १० शुक्रे (२४.७.२६) अनुराधायां भद्रा रात्रि ११।२ वादनात्पूर्व।
तिथि१५ बुधे (२९.७.२६) श्रवणे रात्रौ ल.१२

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि १ गुरौ (३०.७.२६) धनि.रात्रौ ल.१२
तिथि २ शुक्रे (३१.७.२६) शतभिषायां रात्रौ ल.१२
तिथि ९ शुक्रे (७.८.२६) भद्रा रात्रि १२।२ वादनात्पूर्व रोहिण्यां

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि १२ सोमे (२४.८.२६) रात्रि ९।१२ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायां

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

तिथि ८ शुक्रे (४.९.२६) रात्रि ११।१३ वादनात्पूर्व रोहिण्यां

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

तिथि ६ गुरौ (१७.९.२६) अनुराधायां
तिथि १० सोमे(२१.९.२६)उ.षा.रात्रौ ल.२,३
तिथि १३ गुरौ (२४.९.२६) रात्रौ शतभिषायां

आश्विन कृष्ण पक्ष

तिथि ६ शुक्रे (२.१०.२६) भद्रा रात्रि ११।५ वादनात्परं मृगशिरायां

आश्विन शुक्ल पक्ष

तिथि २सोमे (१२.१०.२६)स्वात्यां रात्रौ ल.३
तिथि १० बुधे (२१.१०.२६) शतभिषायां रात्रौ ल.३

कार्तिक कृष्ण पक्ष

तिथि ११ गुरौ (५.११.२६) उ.फा.रात्रौ ल.३
तिथि १२ शुक्रे (६.११.२६) हस्त नक्षत्रे रात्रौ ल.३

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ७ सोमे (१६.११.२६) भद्रा रात्रि १२।३ वादनात्पूर्व श्रवणे ल.५

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि २ गुरौ (२६.११.२६) मृगशिरायां

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ५ सोमे (१४.१२.२६) धन.रात्रौ ल.५

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि १२ सोमे (४.१.२७) अनुराधायां

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (८.१.२७) उ.षा.रात्रौ ल.५,६

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि५बुधे (२७.१.२७)हस्त नक्षत्रे रात्रौ ल.६

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि २ सोमे (८.२.२७) शतभि.रात्रौ ल.६
तिथि ४ बुधे (१०.२.२७) रात्रि १२।४ वादनात्परं उ.भा.
तिथि ९ सोमे (१५.२.२७) रिक्ता सायं ६।२६ वादनात्परं रोहिण्यां मृगभे

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२२.२.२७) रात्रौ उ.फा.ल.७
तिथि ११ बुधे (३.३.२७) रात्रि ११।१ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायां
तिथि ११ गुरौ (४.३.२७) उ.षा. रात्रौ ल.८
तिथि १२ शुक्रे (५.३.२७) श्रवणे रात्रौ ल.८

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि १० गुरौ (१.४.२७) रात्रि ११।४२ वादनात्परे श्रवणे
तिथि ११ शुक्रे (२.४.२७) श्रवणे धनिष्ठायां रात्रौ ल.८

चौल केशान्त मुण्डन मुहूर्त्ता

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरौ (२३.४.२६) पुनर्वसौ ल.२,३
तिथि १३बुधे (२९.४.२६) हस्त नक्षत्रे ल.३
तिथि १५ शुक्रे (१.५.२६) भद्रा दिवा ८।५४ वादनात्परं स्वात्यां ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (४.५.२६) दिवा ८।१५ वादनात्परं ज्येष्ठायां ल.३
तिथि ९ सोमे (११.५.२६) रिक्ता दिवा १०।१३ वादनात्परं शतभिषायां
तिथि १२ गुरौ (१४.५.२६) रेवत्यां ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (१७.६.२६) पुनर्वसौ ल.४,६
तिथि १० बुधे (२४.६.२६) चित्रायां ल.३,६
तिथि ११ गुरौ (२५.६.२६) भद्रा दिवा ८।४१ वादनात्पूर्व स्वात्यां ल.३ वा ४

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि ९ गुरौ (९.७.२६) रिक्ता प्रात: ५।३५ वादनात्परं अश्विन्यां ल.४ वॉ.६

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि ७ शुक्रे (१५.१.२७) भद्रा दिवा ८।५१ वादनात्पूर्व रेवत्याम्
तिथि १३ बुधे (२०.१.२७) दिवा २।८ वादनात्पूर्व मृगशिरायां

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ५ बुधे (२७.१.२७) हस्त नक्षत्रे ल.२
तिथि ६ गुरौ (२८.१.२७) भद्रा दिवा ८।३७ वादनात्पूर्व चित्रायां ल.११
तिथि ७ शुक्रे (२९.१.२७) स्वात्यां ल.११
तिथि १०सोमे (१.२.२७)भद्रा दिवा १०।४१ वादनात्परं ज्येष्ठायां ल.२

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ गुरौ (११.२.२७) रेवत्यां ल.११,२
तिथि ६शुक्रे (१२.२.२७) अश्विन्यां ल.११,२
तिथि १२ गुरौ (१८.२.२७) पुनर्वसौ ल.१२

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ गुरौ (२५.२.२७) चित्रायां ल.२
तिथि ६ शुक्रे (२६.२.२७) स्वात्यां
तिथि १२ शुक्रे (५.३.२७) श्रवणे

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (१०.३.२७) दिवा १०।१६ वादनात्परं रेवत्यां ल.२ वा ३
तिथि ३ गुरौ (११.३.२७) रेवत्यां-अश्विन्यां ल.२ वा ३

उपनयन व्रतबन्ध मुहूर्त्ताः (जनेऊ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि २ शुक्रे (२०.३.२६)रेवत्यां ल.३(वि.कुं.)
तिथि ९ शुक्रे (२७.३.२६) रिक्ता दिवा १२।२ वादनात्परं पुनर्वसौ ल.३ (वि.कु.)
तिथि ११ रवौ (२९.३.२६) भद्रा दिवा ८।३२ वादनात्परं श्लेषायां ल.३(वि.कु.)

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ५/६बुधे (२२.४.२६) आर्द्रायाम् ल.३
तिथि ११ सोमे (२७.४.२६) भद्रा दिवा ८।९ वादनात्पूर्व पूर्वाफाल्गुन्यां ल.२
तिथि १५ शुक्रे (१.५.२६) भद्रा दिवा८।५४ वादनात्परं स्वात्यां ल.३ (ति.दा.)

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ रवौ (३.५.२६) प्रात: ५।४४ वादनात्परं अनुराधायां ल.२ वा ४
तिथि ३ सोमे (४.५.२६) दिवा ८।१५ वादनम् यावत् अनुराधायां ल.२ वा ३
तिथि ५ बुधे (६.५.२६) मूले ल.३ वा ४
तिथि ५ गुरौ (७.५.२६) पूर्वाषाढ़ायाम् ल.३
तिथि ११ बुधे (१३.५.२६) उत्तराभाद्रपदे आवश्यके ल.३ वा ४
तिथि१२गुरौ (१४.५.२६)रेवत्यां आवश्यके ल.२

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (१७.६.२६) पुनर्वसौ ल.६
तिथि ५ शुक्रे (१९.६.२६) श्लेषायां ल.४,६
तिथि ११ गुरौ (२५.६.२६) रोगबाण दिवा ७।१५ वादनात्परं भद्रा दिवा ८।४१ वादनातपूर्व स्वात्यां ल.४

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (१.७.२६) दिवा ६।३३ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् ल.६
तिथि २ गुरौ (२.७.२६) उ.षा.श्रवणे ल.६

आषाढ़ शुक्ल पक्ष (previous column continues)

तिथि ५ रवौ (५.७.२६) दिवा ९।५० वादनात्पूर्व शतभिषायां ल.४
तिथि ९ गुरौ (९.७.२६) रिक्ता प्रात: ५।३५ वादनात्परं अश्विन्यां आवश्यके ल.४वा ६

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ५ बुधे(२७.१.२७) हस्त नक्षत्रे ल.११,२

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि १ रवौ (७.२.२७) धनिष्ठायां ल.२
तिथि २ सोमे (८.२.२७) शतभिषायां ल.२
तिथि ५ गुरौ (११.२.२७) रेवत्यां ल.११,२
तिथि ६ शुक्रे (१२.२.२७)अश्विन्या ल.११,२
तिथि ११ बुधे (१७.२.२७) भद्रा दिवा २।१ वादनात्परं आर्द्रायाम् ल.३
तिथि १२गुरौ (१८.२.२७) पुनर्वसु ल.१२,२

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२२.२.२७) पूर्वाफाल्गुन्यां रोगबाण दिवा १२।४० वादनात्परं ल.३
तिथि ५ गुरौ (२५.२.२७) चित्रायां ल.१,२

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (१०.३.२७) उ.भाद्रपदे ल.३
तिथि ३ गुरौ (११.३.२७) रेवत्यां ल.१२
तिथि ६रवौ(१४.३.२७)दिवा१०।४८ वादनात्परं सप्तम्यां रोहिण्यां ल.२ वा ३(ति.दा.)
तिथि ७ सोमे (१५.३.२७) भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्व रोहिण्यां ल.१२

कर्णवेध (नासिका छेदन) मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १३ बुधे (१५.४.२६) दिवा १।६ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ५/६बुधे (२२.४.२६) आर्द्रायाम् ल.३
तिथि ७ गुरौ (२३.४.२६) पुनर्वसौ ल.२,३
तिथि १३बुधे (२९.४.२६) हस्त नक्षत्रे ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (४.५.२६) दिवा ८।१५ वादनम् यावत् अनुराधायां
तिथि ५ गुरौ (७.५.२६) दिवा ३।४७ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम्
तिथि ६ शुक्रे (८.५.२६) भद्रा रात्रि ८।५७ वादनात्परं श्रवणे
तिथि ११ बुधे (१३.५.२६) उ.भा.ल.३,४
तिथि १२ गुरौ (१४.५.२६) रेवत्यां ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (१७.६.२६) पुनर्वसौ ल.४,६
तिथि १० बुधे (२४.६.२६) चित्रायां ल.३,६
तिथि १२ शुक्रे (२६.६.२६) रात्रि ८।२८ वादनात्परं अनुराधायां

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि ८ बुधे (८.७.२६) रेवत्यां
तिथि ९ गुरौ (९.७.२६) रिक्ता प्रात: ५।३५ वादनात्परं अश्विन्यां लग्न ४ वा ६

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (१५.७.२६) पुष्ये

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १० गुरौ (३.१२.२६) भद्रा दिवा २।२३वादनातपूर्व उ.फा. हस्त नक्षत्रे
तिथि ११ शुक्रे (४.१२.२६) हस्त नक्षत्रे

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ५ सोमे (१४.१२.२६) धनिष्ठायां ल.९

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ५ बुधे (२७.१.२७) हस्त नक्षत्रे ल.२
तिथि ६ गुरौ (२८.१.२७) चित्रायां भद्रा दिवा ८।३७ वादनात्पूर्व लग्नं ११

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ गुरौ (११.२.२७) रेवत्यां ल.११वा२
तिथि ६ शुक्रे(१२.२.२७) अश्विन्यां ल.११,२
तिथि ११ बुधे (१७.२.२७) भद्रा दिवा २।१ वादनात्परं आर्द्रायां लग्नं ३
तिथि १२ गुरौ (१८.२.२७) पुनर्वसौ लग्नं१२
तिथि १३ शुक्रे (१९.२.२७) रिक्ता दिवा ९।१५ वादनात्पूर्व पुष्य नक्षत्रे।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ गुरौ (२५.२.२७) चित्रायां ल.२
तिथि १२ शुक्रे (५.३.२७) श्रवणे

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (१०.३.२७) उ.भा.ल.२वा३
तिथि ३ गुरौ (११.३.२७) रेवत्यां ल.२वा३

गृहारम्भ मुहूर्त्ताः

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ११ सोमे (२७/२८.४.२६) उ.फा. रात्रि शेष ३।५६ वादनात्परं ल.१२
तिथि १३ बुधे (२९.४.२६) हस्त नक्षत्रे ल.३ (भू.सु.)
तिथि १५ शुक्रे (१.५.२६) भद्रा दिवा ८।५४ वादनात्परं स्वात्यां ल.३

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि १२ सोमे (२४.८.२६) रात्रि ९।१२ वादनात्परं उ.षा. नक्षत्रे (भू.सु.)
तिथि १४ गुरौ (२७.८.२६) रिक्ता भद्रा रात्रि ८।४४ वादनात्परं धनिष्ठायां
तिथि १५ शुक्रे (२८.८.२६) शतभि.ल.५

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (२०.११.२६) भद्रा दिवा २।१३ वादनात्पूर्व उ.भा. ल.९
तिथि १२शनौ (२१.११.२६) रेवत्यां ल.८,९

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे(२५.११.२६) रोहिण्यां ल.८,११
तिथि २ गुरौ(२६.११.२६) मृगशि.ल.८,११

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ७ बुधे (१६.१२.२६) दिवा ९।५४ वादनम् यावत् शतभिषायां अग्निबाण:

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ९ सोमे (१५.२.२७) रिक्ता ६।२६ वादनात्परं रोहिणी ल.गोधूलि
तिथि १२ गुरौ (१८.२.२७) सायं ६।५३ वादनात्परे पुष्ये ल.गोधूलि
तिथि १३ शुक्रे (१९.२.२७) रिक्ता दिवा ९।१५ वादनात्पूर्व ल.११

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२२.२.२७) दिवा १।२१ वादनात्परं उ.फा. नक्षत्रे ल.३वा गोधूलि
तिथि ५ गुरौ (२५.२.२७) चित्रायां ल.२
तिथि ११ बुधे (३.३.२७) रात्रि ११।१ वादनात्परं उ.षा. ल.११

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १३ बुधे (१५.४.२६) दिवा १।६ वादनात्परं उ.भा. पदे लग्नं गोधूलि:

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि १३ बुधे (२९.४.२६) हस्त नक्षत्रे ल.३ (भू.सु.)

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ११ बुधे(१३.५.२६) उ.भा.ल.२वा३
तिथि १२ गुरौ (१४.५.२६) रेवत्यां ल.२वा ३ दिवा ९।१६ वादनात्पूर्व

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १० बुधे (२४.६.२६) चित्रायां ल.३वा६
तिथि १२ शुक्रे (२६.६.२६) रात्रि ८।२८ वादनात्परं अनुराधायां ल.११
तिथि १३ शनौ (२७.६.२६) अनुराधायां ल.३ वा ६

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि९ सोमे (१५.२.२७)रिक्ता सायं ६।२६ वादनात्परं रोहिण्यां-मृगभे लग्नं गोधूलि:
तिथि १२ गुरौ (१८.२.२७) सायं ६।५३ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे लग्नं गोधूलि:
तिथि १३ शुक्रे (१९.२.२७) दिवा ९।१५ वादनात्पूर्व पुष्य लक्षत्रे ल.११

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि १ गुरौ (४.३.२७) उ.षा.ल.१२वा२

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ७ सोमे (१५.३.२७) भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्व रोहिण्यां ल.१२

जीर्णादि गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः

नोट- पुराने मकान को तोड़कर बने नये घर तथा फ्लैट इत्यादि में प्रवेश के लिये नूतन गृहप्रवेश के मुहूर्त तो शुभ हैं ही साथ में श्रावण कार्तिक, मार्गशीर्ष में जीर्णादि गृहप्रवेश के मुहूर्त में प्रवेश किया जा सकता है।

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि ९ शुक्रे (७.८.२६) दिवा ४।३५ वादनात्परं रोहिण्यां अग्निबाण:
तिथि १० शनौ (८.८.२६) भद्रा दिवा १०।५१ वादनात्परं रोहिण्यां ल.८ वा मृगभे लग्नं गोधूलि:

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि ५ सोमे (१७.८.२६) चित्रायां ल.६
तिथि ७ बुधे (१९.८.२६) दिवा ९।१७ वादनम् यावत् स्वात्यां ल.६
तिथि १२ सोमे (२४.८.२६) रात्रि ९।१२ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् च.शु.

कार्तिक कृष्ण पक्ष

ति.११ गुरौ (५.११.२६) उ.फा.ल.८वा९
तिथि १२ शुक्रे (६.११.२६) हस्त नक्षत्रे ल.८ वा ९
तिथि १३ शनौ (७.११.२६) भद्रा-रिक्ता दिवा १०।४६ वादनात्पूर्व चित्रायां ल.८

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शनौ (१४.११.२६) सायं ६।३८ वादनात्परं उ.षाढ़ायाम् ल.२
तिथि ११ शुक्रे (२०.११.२६) भद्रा दिवा २।१३ वादनात्पूर्व उत्तराभाद्रपदे ल.९
तिथि१२ शनौ(२१.११.२६) रेवत्यां ल.८,९

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि ९ बुधे (२.१२.२६) रात्रि २।४८ वादनात्परं उ.फाल्गुन्यां ल.७ वा ८
तिथि १० गुरौ (३.१२.२६)भद्रा दिवा २।२३ वादनात्पूर्व उ.फा.-हस्त नक्षत्रे ल.८वा ११
तिथि ११ शुक्रे (४.१२.२६) हस्त चित्रायां ल.८ वा गोधूलि
तिथि १२ शनौ(५.१२.२६)चित्रायां ल.८,११

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि५सोमे (१४.१२.२६) धनिष्ठायां ल.९
तिथि ७ बुधे (१६.१२.२६) दिवा ९।५४ वादनम् यावत् शतभिषायां अग्निबाण:

सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशय-वाटिका (बगीचा) आरम्भ मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १३ बुधे (१५.४.२६) दिवा १।६ वादनात्परं उ.भा. ल.गोधूलि

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ३ सोमे (२०.४.२६) दिवा ७।३६ वादनात्परं रोहिण्यां ल.३
तिथि ७ गुरौ (२३.४.२६) पुनर्वसौ ल.२,३
तिथि ८ शुक्रे (२४.४.२६) भद्रा दिवा १२।२२ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे ल.५वा६
तिथि १३बुधे (२९.४.२६)हस्त नक्षत्रे ल.३
तिथि १५ शुक्रे (१.५.२६) भद्रा दिवा ८।५४ वादनात्परं स्वात्यां ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ रवौ (३.५.२६) प्रात: ५।४४ वादनात्परं अनुराधायां ल.२ वा ३
तिथि ३ सोमे (४.५.२६) दिवा ८।१५ वादनम् यावत् ल.२ वा ३
तिथि ५ गुरौ (७.५.२६) दिवा ३।४७ वादनात्परं उ.षाढ़ायां
तिथि ११ बुधे (१३.५.२६) उ.भा. ल.२वा३
तिथि १२ गुरौ (१४.५.२६) रेवत्यां ल.२वा३

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (१७.६.२६) पुनर्वसौ ल.६
तिथि ८ सोमे (२२.६.२६) भद्रा दिवा ७।३९ वादनात्परं उ.फा. ल.३ वा ६
तिथि १० बुधे (२४.६.२६) चित्रायां स्वात्यां ल.३ वा ६
तिथि ११ गुरौ (२५.६.२६) भद्रा दिवा ८।४१ वादनात्पूर्व स्वात्यां

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (१.७.२६) दिवा ६।३३ वादनात्परं उ.षा.
तिथि ८ बुधे (८.७.२६) रेवत्यां

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १३ बुधे (२०.१.२७) दिवा २।८ वादनात्पूर्व मृगशिरायां ल.११
तिथि १५ शुक्रे (२२.१.२७) भद्रा दिवा ७।२० वादनात्परं पुनर्वसु पुष्ये ल.२

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ६ गुरौ (२८.१.२७) भद्रा दिवा ८।३७ वादनात्पूर्व चित्रायां ल.११
तिथि ७ शुक्रे (२९.१.२७) स्वात्यां ल.११,२

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि २ सोमे (८.२.२७) शतभिषायां ल.२
तिथि ५ गुरौ (११.२.२७) रेवत्यां ल.११,२
तिथि १२गुरौ (१८.२.२७) पुनर्वसौ ल.१२,२

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२२.२.२७) दिवा १।२१ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां ल.३
तिथि ५ गुरौ (२५.२.२७) चित्रायां ल.२
तिथि ११ गुरौ (४.३.२७) उ.षा.ल.१२व२

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (१०.३.२७) उ.भाद्रपदे ल.३
तिथि ६ रवौ (१४.३.२७) दिवा १०।४८ वादनात्परं रोहिण्यां
तिथि ७ सोमे (१५.३.२७) भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्व रोहिण्यां ल.१२

मधुमेह रोग एवं उसकी चिकित्सा-व्यवस्था

प्रस्तुति-प्रो.जे.के.ओझा, काशी हिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी।

मधुमेह अथवा डायबिटीज स्वयं कोई रोग नहीं है, अपितु कई रोगों की उत्पत्ति का कारण अवश्य है। मेह का अर्थ वर्षा या जल त्याग से है, अर्थात् जिस रोग में मधु के समान (मधुर-कषाय) रस वाला मूत्र त्याग होता है उस रोग को मधुमेह कहते हैं। मधुमेह रोगी के शरीर से (मधु एवं ओज जो रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र का सार है) मूत्ररूप में शरीर से बाहर निकल जाता है जिसके कारण ...हीण हो जाता है तथा शरीर निस्तेज एवं दुर्बल प्रतीत होने लगता है। आयुर्वेद के महान ग्रन्थ "चरक संहिता" में इसका उल्लेख है।

कारण-अनुवांशिक कारण में माता-पिता अथवा रक्त सम्बन्धी के मधुमेही होने से सन्तान में यह रोग हो सकता है फिर भी यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। अनुवांशिकी रोगी में मधुमेह के लक्षण कम उम्र में ही प्रकट होने लगते हैं एवं तीव्रता से बढ़ते हैं।

आहार-विहार-मुख्यरूप से मधुमेह का सम्बन्ध आहार-विहार अर्थात् खाने-पीने रहन-सहन, दिनचर्या पर निर्भर करता है। जैसे-चावल, आलू, शकरकन्द, रस ...या बचपन से चाकलेट, टाफी, मिश्री, मिष्ठान, पिपरमिन्ट की गोलियाँ है। शक्कर, ...सम्पति भी प्रमुख है। मांसाहारियों की अपेक्षा शाकाहारी जनो में मधुमेह कम होता ... अव्यवस्थित दिनचर्या से मधुमेह रोग के बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है।

स्थूलता-आहार (डाईट) एवं मोटापा का आपस में गहरा रिश्ता है। मोटे लोगो में ८०% मधुमेह रोग पाया जाता है। उसका कारण अधिक वसायुक्त भोजन, शर्करा ... का सेवन चर्बी के रूप में परिवर्तित होकर मोटापा में वृद्धि करता है। शर्करा को ... शरीर में परिवर्तित करना अग्न्याशय से उत्पन्न इन्सुलिन के कारण होता रहता है ... शरीर में उदर, नितम्ब, जंघा, छाती में दिखाई देता है। मधुमेह रोगी ३ प्रकार के होते हैं-१.स्थूल एवं बलवान २.दुर्बल ३.बालमुधमेही। यह रोग प्रायः सम्पन्न किन्तु आलसी लोगो में ज्यादा होता है। बैठकर कार्य करने वाले में भी इस रोग की सम्भावना अधिक रहती है। प्रायः लेटकर जीवन-यापन करने से मधुमेह होता है। आयु की दृष्टि से प्रायः ३५ से ४५ वर्ष के व्यक्ति में प्रायः मधुमेह की संख्या अधिक होती है। स्त्रियो में पुरुषों की अपेक्षा मधुमेह कम पाया जाता है। ७०-८० वर्ष की आयु वालो में मधुमेह किंचित ही होता है।

चिकित्सा-व्यवस्था-आहार प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग हो सकता है शर्करा, ... के सेवन पर यथेष्ट नियंत्रण रखें। शक्कर की जगह गुड़ का सेवन अपेक्षाकृत कम शर्करा उत्पन्न करता है। मोटा अनाज, शाक-सब्जी, भूना हुआ आहार का पर्याप्त सेवन किया जा सकता है। सत्तू सर्वोत्तम है। अनाज में जौ-चना का सेवन पर्याप्त मात्रा में कर सकते है। नियमित भोजन में निम्न तालिका के अनुसार खाद्य पदार्थ ग्रहण किया जाना उत्तम होगा। पका चावल ७५ ग्राम, रोटी, चपाती २० ग्राम, इडली-... ब्रेड २०-३० ग्राम (२ब्रेड), डोसा-१ मध्यम आकार का, बिस्कुट ३ पीस। दाल ... में से एक-राजमा २५ ग्राम, काला मूंग २५ ग्राम, लाल चना २५ ग्राम, मसूर ... २५ ग्राम। दूध-गाय का दूध १५० मि.लीटर, भैंस का ९० ग्राम, मक्खन मिला ... ३०मि.ली., मट्ठा ७५० मि.ली., चीज ३०ग्राम, दधि गाय की ३० ग्राम, फल ... कोई एक संतरा १ मध्यम, १ सेव मध्यम, केला-१ आम ५० ग्राम, तरबूज ३०० ग्राम, पपीता २०० ग्राम, अंगूर ७५ ग्राम, मटर दाना ९० ग्राम अनन्नास ९० ग्राम, नारियल पानी २०० मि.ली. अमरूद १०० ग्राम।

व्यायाम-व्यायाम करने से पहले निश्चित करें कि शरीर एवं मन व्यायाम योग्य ... टहलनें अथवा व्यायाम करते समय कसा हुआ जूता न पहनें। घाव न हो इसका ध्यान रखें। १. तेज गति से चलना, साईकिल चलाना, एक जगह खड़े होकर उछलना, दौड़ना, तैरना, टेनिस खेलना व्यायाम की समय सीमा ३०-४५ मिनट। प्रारम्भ में १०-१५ मिनट से शुरु कर धीरे-धीरे बढ़ायें। कार्यालय में कार्य करने वाले अपने वाहन को दूर खड़ा करें एवं उस दूरी को पैदल तय करें।

सामान्य औषधि-चिकित्सक की सलाह से ही दवा लें। वैसे सामान्य रूप से ... नीम चूर्ण काफी फायदेमन्द होगा। मेथी का चूर्ण ५० ग्राम, चिरायता का चूर्ण ५० ग्राम, दालचीनी ५० ग्राम, १०० ग्राम, बिजयसार चूर्ण ५० ग्राम, गुड़्चा चूर्ण ५० ग्राम, शिलाजीत २ रत्ती सबको मिलाकर मात्रा के अनुसार प्रतिदिन सेवन करने से निश्चित लाभ होगा। कोई नशा न करें।

ज्योतिष की दृष्टि से मधुमेह-शुक्र ग्रह मधुमेह रोग का कारण होता है। अष्टमभाव गत शुक्र यदि पाप ग्रहो द्वारा देखा जाता हो तो मधुमेह रोग हो सकता है। इसको अष्टमेश से भी देखा जा सकता है।

अष्टम स्थान गते शुक्रे पापग्रह निरीक्षिते।
वातरोगात् क्षयाद्वाऽपि प्रमेहाद्वामृतिर्वदेत्।

परामर्श-७ रत्ती, असमर्थता में २ रत्ती का वज्रमणि (हीरा) शुक्रवार मृगशीर्ष नक्षत्र में धारण करना चाहिए। उपरत्न-चांदी में जड़ी हुयी मोती।

जड़ी-विच्छोल की जड़ सफेद कपड़े में बाँधकर दाहिनी भुजा में धारण करें। प्रत्येक शुक्रवार को, दूध, दही खीर का दान करें।

पञ्चांग परिचय

भारतीय गणितानुसार प्रधान रूप से पाँच प्रकार की गणना होती है- सौर, चान्द्र, सायन, नक्षत्र और बार्हस्पत्य। जितने समय में मेषादि बारहों राशियों में सूर्य भोग करें उसे सौर वर्ष जितने दिन में मेषादि प्रत्येक राशि का भोग करें उसको सौर मास तथा जितने काल में प्रत्येक राशि का एक-एक अंश भोग करे उसे सौर दिन कहते है। जिस दिन में चन्द्रमा सूर्य एक राशि में हो वह अमावस्या तिथि कहलाती है। एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक के समय को चान्द्रमास कहते है। एक इसका तीसवाँ भाग चान्द्र दिन या एक तिथिमान कहलाता है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदयों के बीच को सावन दिन कहते हैं। नाक्षत्र का अर्थ है नक्षत्र सम्बन्धी, यह समय नाक्षत्री ६० घड़ी के तुल्य है। एक वर्ष ३६५ दिन १५ घटी ३० पल २२।। विपल का होता है। **तिथि, नक्षत्र, वार, योग और करण नामक पाँच मुख्य विषयों का निश्चय जिससे किया जाता है उसे पञ्चांग पंजिका कहते है।** सूर्योदय सब स्थानों में एक समय नहीं होता है। पूरब के स्थानों में पहले और पश्चिम के स्थानों में पीछे सूर्योदय होता है। इसलिये भिन्न-भिन्न स्थानों में भेद होना स्वाभाविक है। पर भिन्न-भिन्न देश में लौकिक कार्यो में भारी भ्रम होना स्वाभाविक है। इसलिए यह नियम बना दिया कि सब स्थान में वार की प्रवृत्ति उस समय से मानी जाय जिस समय उज्जैन में प्रातःकाल ६ बजता है।

दिनमान-सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिनमान और सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहते हैं। सूर्य की गति और दक्षिण के स्थानों के भेद के कारण इनके मानों में भिन्नता रहती है। जब सायन सूर्य मेष पर जाता है तब सब जगह रात्रि और दिन बराबर होते है। जब सायन सूर्य कर्क पर जाता है तो उत्तर अक्षांश में दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। जब सायन सूर्य तुला पर जाता है तब रात सबसे बड़ी और दिन सबसे छोटा होता है। किन्तु दक्षिण अक्षांश में इसका विपरीत होता है।

इस पञ्चांग में दिन मान सूर्योदय सूर्यास्त आदि सब सूर्य घड़ी के अनुसार दिये गये हैं। शुद्ध इष्ट काल के लिये रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का अन्तर संस्कार आवश्यक है। प्रत्येक पक्ष में रेलवे घड़ी का दैनिक अन्तर दिया गया है। पण्डितगण धन-ऋण देख लेवें। पञ्चांग में दिये हुए सूर्य घटी में धन-ऋण संस्कार कर देंगे तो रेलवे घटी का स्टेण्डर्ड समय हो जायेगा।

तिथि-जिस समय सूर्य और चन्द्रमा एक सीध में होते हैं अर्थात् जिस समय दोनों के भोग्यांश समान होते हैं, उस समय अमावस्या का अन्त होता है। चन्द्रमा की गति तीव्र होती है, इसलिए अमावस्या के उपरान्त वह आगे हो जाता है। प्रत्येक १२ अंश आगे होने पर एक तिथि बढ़ती जाती है। जब चन्द्रमा सूर्य के १२x१५=१८० अंश आगे हो जाता है तब १५ वीं तिथि पूर्णिमा का अन्त होता है। १६ वीं तिथि अथवा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा लगती, जब फिर अमावस होती है तब ३० तिथियां बीत चुकती है। इसलिए अमावस की जगह ३० का अंक लिखा जाता है।

तिथिक्षय और तिथिवृद्धि-सूर्य चन्द्रमा की गतियां सदा समान नहीं रहती। कभी सूर्य मन्द या तीव्र होता है उसी तरह चन्द्रमा भी कभी अधिक गति से कभी मन्द गति से चलता है। इसी कारण तिथियों का भी मान सदा समान नहीं होता। तिथि का मान अधिक से अधिक ६५ घटी के लगभग और कम से कम ५४ घटी के लगभग होता है परन्तु एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय सदैव कल्पित ६० घटी ही होता है। इसलिए एक दिन में किसी समय तिथि बदल जाती है।

कभी-कभी दो तिथियाँ एक ही बार में पूरी होती है, और वार के समाप्त होने के पहले तीसरी तिथि लग जाती है। ऐसी दशा में उस वार के सूर्योदय काल में जो तिथि विद्यमान रहती है वहीं मानी जाती है। अगले वार तीसरी तिथि होती है। दूसरी का मान पञ्चांग में पहली तिथि के नीचे दिया रहता है। परन्तुं लौकिक व्यवाहर में नही मानी जाती है। **ऐसी तिथि को क्षय तिथि या अधम कहते हैं।** प्रायः कभी-कभी एक ही तिथि दो सूर्योदय काल में विद्यमान रहती है। ऐसी दशा में वह तिथि दो बार मानी जाती है। **इसी को तिथि वृद्धि कहते हैं।** इन सब कारणों से कभी १६ दिन, कभी १५ दिन और कभी १४ दिन का पक्ष होता है। कई वर्षो के बाद १३ दिन का भी पक्ष हो जाता है जो जगत केलिये अनिष्ट कर होता है। शुक्लपक्ष में इसका प्रभाव विशेष रूप से पाया गया है।

करण-आधी तिथि जितने समय में बीतती है उसको करण कहते हैं। यह कुल ११ हैं। इसके नाम ये हैं- वब, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुन, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न।

नक्षत्र-तारों के बीच पश्चिम से पूरब की ओर खिसकता हुआ जिस मार्ग से सूर्य साल भर में चक्कर लगाता हुआ दीख पड़ता है उसको क्रान्तिवृत्त कहते हैं इसके आसपास चन्द्रमा भी अपना चक्कर लगाता है जो मध्यम मान से २९ दिन १९ घटी १८ पल और १२ विपल में पूरा होता है। इस मार्ग के २७ वें भाग को नक्षत्र कहते हैं। इसका मान १३ अंश २० कला का होता है।

गोल अयन-यदि आकाश गोल के दो भाग इस प्रकार किये जायँ कि एक भाग के मध्य में आकाश का उत्तरी ध्रुव हो, और दूसरे भाग के मध्य में दक्षिणी ध्रुव हो तो पहले को उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहते हैं। सायन मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या-ये छः राशियाँ उत्तर गोल में हैं। सायन तुला, वृश्चिक, धनु मकर, मीन - ये छः राशियाँ दक्षिण गोल में हैं।

एक वर्ष में दो अयन होते हैं-उत्तरायण और दक्षिणायन। सायन मकर संक्रान्ति से उत्तरायण आरम्भहोता है और सायन मिथुन की समाप्ति तक रहता है। सायन कर्क संक्रान्ति से लेकर सायन धनु के अन्त तक दक्षिणायन सूर्य कहलाता है। उत्तरायण में दिन क्रम से बढ़ता है और दक्षिणायन में रात्रि क्रम से बढ़ती है।

अहर्गण-किसी निश्चित काल से किसी अन्त काल तक जितने अहोरात्र होते हैं उस संख्या को अहर्गण कहते हैं। साधारण कलियुग के आदि से अहर्गण की संख्या गिनी जाती है। सूर्य सिद्धान्त में सृष्ट यादि से अहर्गण गणना विधि है। ग्रह लाघव की गणित शक १४४२ से चलती है। इसके अहर्गण के रूप की ११ वर्ष के पश्चात् पुनरावृत्ति होती है। तदनुसार सं.२०३२ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को अहर्गण १८०८ हुआ।

योग-अश्विनी नक्षत्र के आदि बिन्दु से सूर्य और चन्द्रमा जितने अंशों की दूरी हों उसको एक जगह लिखकर जोड़ने और ४०/३ से भाग देने से लब्धि बीते हुए योग और आगे आनेवाला वर्तमान योग होता है। कुल २७ योग होते हैं-१.विष्कुम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान, ४. सौभाग्य, ५.शोभन, ६.अतिगण्ड, ७.सुकर्मा, ८.धृति, ९.शूल, १०.गण्ड, ११.वृद्धि, १२.ध्रुव, १३.व्याघात, १४.हर्षण, १५.वज्र, १६.सिद्धि, १७.व्यतीपात, १८.वरीयान्, १९.परिघ, २०.शिव, २१.सिद्ध, २२.साध्य, २३.शुभ, २४.शुक्ल, २५.ब्रह्म, २६.ऐन्द्र, २७.वैधृति। योग के भोग्यकाल समान नहीं होते और तिथि नक्षत्रों की तरह इनमें भी क्षय-वृद्धि होती है।

अथारिष्टशान्तये महामृत्युञ्जयवैदिकमन्त्रजपविधिः।।

आचम्य प्राणानायम्य, शान्तिपाठं पठित्वा सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा।। संकल्पः।। अमुकमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरोत्पन्नोत्पत्स्यमानाऽखिलारिष्ट निवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादाद्दीर्घायुष्यसततारोग्यतावाप्तये महामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।। **ऋष्यादिन्यासः।।** वामदेवकहोलवसिष्ठऋषयः मूर्ध्नि।। पंक्तिर्गायित्री अनुष्टुपछन्दांसि वक्त्रे।। सदाशिवमहामृत्युञ्जय रुद्र देवतायै नमः हृदि।। ही शक्तयें नमो लिंगे।। श्रीबीजाय नमः पादयोः।। इति ऋष्यादिन्यासः।। ॐ हौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिं पृष्टि वर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ।। ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठऋषयः पंक्ति गायत्र्युष्णिगनुष्टुपछन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रोदेवता हीं शक्तिः श्री बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थं जपे विनियोगः।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे, ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनं, ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायै वौषट्।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां ही हौं कवचाय हुं।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय, ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट।। ॐ हौं ॐ जूं सः भुर्भवः स्वः मामृतात ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्वलज्वालाय मां रक्षरक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडङ्गन्यासः।।

त्र्यम्बकं शिरसि।। यजामहे भ्रुवोः।। सुगन्धिं नेत्रयोः।। पुष्टि वर्द्धनं मुखे।। उर्व्वारुकं गण्डयोः।। इव हृदये।। बन्धनात् जठरे।। मृत्योर्लिङ्गे।। मुक्षीय उर्वोः।। मा जान्वोः।। अमृतात् पादयोः।। इति पदन्यासः।। मूलेनव्यापकं कृत्वाध्यानं कुर्यात्। **अथ ध्यानम्।** हस्ताम्भोजयुगस्थं कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयंशिरः। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भोकरौ। अक्षस्रग्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषोत्रतनुभजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।। चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजंसुरपतिपीयूषपात्रंवहद्धस्ताब्जेनदधत्सुदिव्यममलं हास्यास्यपङ्केरुहम्।। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।२।। **इति ध्यात्वा।।** मानसोपचारैः संपूज्य ॐलं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।। ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि।। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। मंत्रं जपेत्।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनं उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ।। ततोजपानन्तरं देवदक्षिणकरेजपं समर्पयेत्।। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः।।१।। मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।२।। **अर्पणम्**-अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम।। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेनमन्त्रं तुत्र्यंबकम्।। जपसांगतासिद्धयर्थं यथाकामनाद्रव्येणतद्दशांशदुग्धाज्यसंसिक्तापामार्गसमिद्भिर्होमं तद्दशांशः मार्जनम्।। तद्दशाशंतर्पणम्।। तद्दशाशंब्राह्मणभोजनं कारयेत्।। इति।।

।। अथारिष्टशान्तये शताक्षरागायत्रीमन्त्रजपविधिः।।

ॐ अस्य श्रीशताक्षरगायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवसिष्ठऋषयो गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुपछन्दांसि सावित्री जातवेदस्त्र्यम्बका देवताः गायत्र्यक्षराणि बीजानि त्रिष्टुबक्षराणि शक्तयः अरिष्टशान्तये जपे विनियोगः। विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठ ऋषिभ्योनमः शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे।। सवितृजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः हृदये।। गायत्र्यक्षराणि बीजानि गुह्ये।। त्रिष्टुबक्षराणि शक्तये नमः पादयोः।।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः ॐ धियो यो नः प्रचोदयात, शिरसे स्वाहा।। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतोनिदाहतिवेदः। शिखायैवोषट्। ॐ स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वनावेवसिन्धुदुरितात्यग्निः कवचाय हूँ। ॐ त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिपुष्टि वर्द्धनं नेत्रत्रयायवौषट्। ॐ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्।। अथ ध्यानम्।। स्मर्त्तव्याखिलोकवर्त्ति सततं यज्जंगमस्थावरम्। व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिद्धयति।। यदा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं घृत्वा च यद्गीयते तद्वत्तस्थिति सिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः।।१।। एवं ध्यात्वाशताक्षरां भावयेत्।। अथहोमार्थसताक्षरागायत्रीमन्त्रः।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतोनिदहातिवेदः। ॐ स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेर्वसिन्धुदुरितात्यग्निः त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्ध्वारुकमिवबन्धनांन्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।।

नवग्रहाणां जपार्थ वैदिकमन्त्राः।। सूर्यस्य।।

ॐ आकृष्णेन रजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।। हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो यातिभुवनानि पश्यन्।। **चन्द्रस्य** ॐ इमन्देवाऽअसपत्नठं सुबध्वं महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। इमममुष्यैपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाठं राजा।। **भौमस्य**।। ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पत्तिः पृथिव्याऽअयम्। अपाठं रेताठं सि जिन्वति।। **बुधस्य**।। उद्बुध्यस्वाग्गनेप्रतिजा गृहीत्वमिष्टापूर्त्तेसठं सृजेथामयञ्च।। अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत्त।। **गुरोः**।। ॐ बृहस्पतेऽतियदर्योऽअहाद्युमांद्वभातिक्रतुमज्जनेषु।। यदीदयच्छवसऽऋतप्रजाततंदस्मा-सुद्रविणंधेहिचित्रम्। **शुक्रस्य**।। ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रंपयः सोमं प्रजापतिः।। ऋतेनसत्यमिन्द्रियं व्रिपानठं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधुः।। **शनेः**।। ॐ शं नोदेवीरभिष्टयेआपाभवन्तुपीतये शय्योरभिस्रवन्तु नः।। **राहोः**।। ॐ कयानश्चित्रऽआभूवदूतीसदावृधः सखा।। कयाशचिष्ठ यावृता।। **केतोः**।। ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे समुषदिभ रजायथाः।। इति।।

अथ वशिष्ठकल्पोक्तमृतसंजीवनीमन्त्रः

ओं हौं जूँ सः ओं भूर्भुवः स्वः ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ओं स्वः भुवः भूः ओं सः जूँ हौं ओं।

पुराणोक्तमृत्युञ्जयमन्त्रः

ॐ मृत्युञ्जयाय रुद्राय, नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय, महादेवाय ते नमः ॐ।

अथ सारिणीतीदृष्टानयनम्

द्रष्टाविहीनदृश्यस्य ग्राह्यं राश्यंशतः फलम्। कलादिकं-गुणगणं होराप्तं तेन संस्कृतम्। धनर्ण-रीत्या तत्स्पष्टं फलग्राह्यहिदृक्फलम्।

अथात्र त्रिराशिपाः

ल.२	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा	र.	शु.	श.	शु.	गु.	सो.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	सो.
रात्रौ	गु.	सो.	बु.	मं.	र.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	सो.

अथ होराचक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	अं.
५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	१५
सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	१५

अथ द्रेष्काण चक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	अं.
१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१०
५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	२०
९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	३०

अथ त्रिशांशचक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	रा.
५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ पं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	अं. स्वा.
५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	अं. स्वा.
८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	अं. स्वा.
७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	अं. स्वा.
५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	अं. स्वा.

द्वादशाक्षरो मृत्युञ्जय मन्त्रः

ॐ जूँ सः पालय पालय सः जूँ ॐ।

(स्वयं के लिए-करना हो तो पालय के पूर्व **माम्** जोड़े दूसरे के लिए करना हो तो **उसका नाम** जोड़े)।

अथ होड़ाचक्रं वरकन्ययोर्भस्य-मेलापकविचारोपयोगीदम्

नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठ	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
अक्षर:	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.इ. उ.ए.	ओ.वा वी.वू.	वे.वो का.की.	कू.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे हो.डा	डी.डू डे.डो.	मा.मी मू.मे	मो,टा, टी.टू.	टे,टो पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रू.रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	ना.नी नू.ने.	नो.या यी.यू	ये.यो. भा.भी.	भू.धा. फा.ढा.	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी.	दू.थ. झ.ञ.	दे.दो. चा.ची.
राशि:	मेष	मेष	मे.१ वृ.३	वृष	वृ.२ मि.२	मिथुन	मि.३ क.१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं.१ क.३	कन्या	कं.२ तु.२	तुला	तु.३ वृ.१	वृश्चि.	वृश्चि.	धनु	धनु	ध.१ म.३	मकर	म.२ कुं.२	कुम्भ	कुं.३ मी.१	मीन	मीन
वर्णा:	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.
वश्य.	चतु.	चतु.	चतु.	चतु.	चतु.२ न.२	नर	न.३ जल.१	जल	जल	वन	वन	व.१ न.३	नर	नर	नर	न.३ की.१	कीट	कीट	नर	न।। च.३।।	चतु.	च.१।। ज.२।।	ज.२ न.२	नर	न.३ ज.१	जल.	जल.
योनि:	अश्व	गज	मेष	सर्प.	सर्प.	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो.	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग.	मृग.	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
वैरम्	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग.	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ.	श्वान	श्वान	मृग.	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	मं.	मं.	मं.१ शु.३	शु.	शु.२ बु.२	बु.	बु.३ चं.१	चं.	चं.	सूर्य	सूर्य	सू.१ बु.३	बुधः	बु.२ शु.२	शुक्रः	शु.३ मं.१	मं.	मं.	गुरु	गुरु	गुरु १ शनि ३	शनि	शनि	शनि	श.३ गु.१	गुरु	गुरु
गण:	देव	मनु.	राक्ष.	मनु.	देव	मनु.	देव	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु.	मनु.	देव	राक्ष.	देव.	राक्ष.	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु	मनु	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु	मनु	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

ग्रहाणां नैसर्गिकमैत्रीचक्रम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्रः	शनि.	ग्रहाः
चं.मं. गुरु	सूर्यः बुध	सू.चं. गुरु	सूर्यः शुक्रः	सूर्यः चं.मं.	बुधः शनिः	बुध शुक्रः	मित्राणि
बुधः	मं.गु. शु.श.	शुक्र शनिः	मं.गु. शनि	शनि	मंगल. गुरु	गुरु	समाः
शुक्र शनिः	०	बुध	चन्द्रः	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्रः	सूर्य चं.मं.	शत्रवः

नक्षत्रयुजिभचक्रम्

रे. अ. भ. कृ. रो.मृ.	आ. पुन. पु. श्ले. म. पू. फा. उफा. ह. चि. स्वा.वि.अनु.	ज्ये. मू. पू. षा. उषा. श्र. ध. श. पूभा. उ.भा.
पूर्वाभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ९
पतिः श्रेष्ठ	द्वयोः सुप्रीतिः	कन्या श्रेष्ठ

१ वर्णगुणज्ञानाय चक्रम् । वरः

कन्या: वर्णा:	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुण। वरः

कन्या: वश्यः	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्प	२	१	१	०	१
नर	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	०	१	०	२

६ गुणगुणाः वरः

कन्या: गणाः	देव	मनुष्य	रा.
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

३ तारागुण। वरः

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुण । वरः

ग्रहाः (कन्या)	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्रः	५	५	४	१	४	।।	।।
मंगल	५	४	५	।।	५	३	।।
बुध	४	१	।।	५	।।	५	४
गुरु	५	४	५	।।	५	।।	३
शुक्रः	०	।।	३	५	।।	५	५
शनि	०	।।	।।	४	३	५	५

अथोद्वाहलग्नेरेखा प्रदग्रहाः

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।

सू.श.रा.के. ३।११।६।८ मं. ३।६।११ चं.२।३।११ बु.वृ.१।२।३।४।५।६।९।१०।११ शु.१।२।४।५।९।१० ।११ उक्तस्थानस्यग्रहांकान् संयोज्यविवाहलग्ने ग्रहबलविभाज्या। लग्नेशनबलवेशो १।४।७।१०।११ स्थानेषुदोषसमूहं नाशयतच।

४ योनिगुण। वरः

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	३	३	१	१	०	४	३	३	२	३	२	१	२
गो	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	२	१	२	२	४

अयाष्टौ वर्गास्तद्दोषाश्च

७अ.	५क.	५च.	५ट.	५त.	५प.	४य	४श.	वर्गा
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष	स्वामिन

वैधव्यदोषपरिहारः - लग्नाद्विधांवा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वामदनाधिपश्च। द्यूनिस्थितो हन्त्यपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषाङ्‌नाख्यम्।। केन्द्रकोणे शुभाढयश्चेन्त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपेतथा।।

७. राशिकूटस्य गुणबोधकचक्रम्। वरः

राशय	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथु.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कं.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कु.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

८ नाड़ीकूटस्य गुणचक्रम् वरस्य

कन्या: नाड़ी	आ.	म.	अं.
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

अथ गुणानामैक्येन ग्राहाग्राह्यविचारः

गुणैः षोड़र्शभिनिन्द्यंमध्यमं विंशतिस्तयाश्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूतमोतमम्।। सद्भकूटप्रीतिज्ञे-यादुष्ट कूटे नचान्यथा। निन्द्यंगुणैरविंशतिभिर्मध्यं वाणाधिकैः स्मृतम्। ऊर्ध्वंच पंचविंशत्या श्रेष्ठं श्रेष्ठतरं ततः।।

विवाहेरविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्

रविः	चन्द्रः	गुरु	ग्रहाः
३।६ १०।११	३।६।७ १०।११	२।५।७ ९।११	शुभ स्थानानि
१।२ ५।७।९	१।२ ५।९	१।३ १०।६	पूज्य स्थानानि
४।८ १२	४।८ १२	४ ८।१२	निन्दित स्थानानि

द्विपदादिभानांबोधकचक्रम्

मानव द्विपद	चतुष्पद	जलचर	कीट
मि.कं. तुला	मेष वृष सिंह	कर्क कुम्भ मीन	वृश्चि.
धनु पूर्वार्द्धे	ध.उतरा म.पूर्वार्द्ध	मकर उत्तरार्द्धे	

अथ सामान्य विवाह कृत्यम्

(वर-कन्या कुण्डली मेलापक व्यवस्था) वशिष्ठ ऋषि के अनुसार "ऋणत्रयं-देवऋणं पितृऋणमृषिऋणं को उतारने के लिये विवाह ही माध्यम है **"कश्चिद् गृहाश्रम समो न परोऽस्ति धर्मः सोऽपि स्थितः सुगुण वृत्त युताङ्गनासु। उद्वाहलग्नवशतोगुणवृत्तलब्धिस्तासां तथा विध सुलग्न मतः प्रवच्मि।।"** गृहस्थाश्रम से बढ़कर कोई धर्म नही है एवं उसकी नींव विवाह से ही पड़ती है, अतः अलंकारादिकों से वर-कन्या का पूजन कर विचारवान् विवेकी वर को कन्या का दान ही विवाह अथवा ब्राह्म विवाह है। इससे उत्पन्न सन्तान पूर्व की २१ पीढ़ी तक को पवित्र करती है। अतः सर्वप्रथम ज्योतिषी की पूजा कर प्रश्न पूछना चाहिए। **"आदौ सम्पूज्य रत्नादिमिरथ गणक. वेदयेत्स्वस्थचित्तं।"**

विवाह मेलापक में विचारणीय विषय

धर्मशास्त्र, कुल परम्परा एवं लोकरीति से सम्पन्न विवाह ही सार्थक एवं सिद्धिप्रद होता है तथा वैवाहिक जीवन सुखमय व्यतीत होता है। विवाह के लिये वर-कन्या के गोत्र को एक नहीं होना चाहिए। गोत्र और प्रवरों की संख्या अधिक है। इनसे वंश परम्परा के अवान्तर भेदों से बहुत से कुल उत्पन्न हो गये हैं अतः कोई सीमा बनानी पड़ेगी, जो विचारणीय है। वैसे तो वर कन्या मेलापक की कई विधियाँ है किन्तु मुख्यरूप से दो ही शास्त्र सम्मत एवं व्यावहारिक हैं-१. **नाक्षत्र मेलापक** और २.**ग्रह मेलापक**। इनमे भी नक्षत्र मेलापक प्रधान है। दक्षिण भारत में दशविध मेलापक प्रचलित है। उत्तर भारत में अष्टविध मेलापक का प्राविधान है, ये है-१.वर्ण २.वश्य ३.तारा ४.योनि ५.ग्रहमैत्री ६.गणमैत्री ७.भकूट ८.नाड़ी। इन आठो कूट में प्राप्त अंको को जोड़ने पर गुण बनते है जो पञ्चाङ्ग में दिये गये चक्र से ज्ञात किया जा सकता है। कुल गुण ३६ होते हैं। अष्ट विध मेलापक में वर-कन्या की नाड़ी का विचार प्रमुखता से करने का निर्देश आचार्यों ने बताया है। वस्तुतः नाड़ी का सम्बन्ध शरीर संरचना के आवश्यक अवयवों से है जिसको हम वैज्ञानिक रूप में जेनेटिक जीन्स या डी.एन.ए. भी कह सकते हैं। **वर-कन्या की एक नाड़ी सर्वथा वर्जित है।** वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक हो किन्तु राशि भिन्न हो तथा राशि एक ही हो किन्तु नक्षत्र भिन्न हो एवं नक्षत्र एक, राशि एक होने पर नक्षत्र के चरणों में अन्तर हो जाने पर भी नाड़ी दोष नहीं होता-**"राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोःस्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव। नाड़ी दोषो नोगणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पाद भेदे शुभं स्यात्।** उपरोक्त परिस्थिति में नाड़ी एवं गण दोनो ही का दोष नहीं माना गया है। तत्पश्चात् ग्रह मैत्री अर्थात् वर-कन्या के राशि स्वामीयो में परस्पर मैत्री एवं शत्रुता का विचार भी प्रमुख है। भकूट से तात्पर्य वर कन्या के राशियों का परस्पर सम्बन्ध से है। ग्रह मैत्री एवं भकूट दोनों में से एक का मिलना आवश्यक है।-**'मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ द्वन्द्वस्यापि स्याद् गणानां न दोषः। खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापिदुष्टंभकूटं।** राशियों के नवांशो के आधिपतियो में भी मैत्री होने पर गण दोष का परिहार हो जाता है। ग्रह मैत्री का सम्बन्ध पति-पत्नी के पारस्परिक सामञ्जस्य से है अतः इसको महत्व दिया जाना चाहिए। **नाड़ी दोष में मध्य नाड़ी का दोष सबसे गम्भीर प्रकृति** का है। नाड़ी दोष के परिहार में यदि वर कन्या की एक ही नाड़ी हो किन्तु उनके जन्म नक्षत्र के चरणों में परस्पर वेध न हो तो नाड़ी दोष कम हो जाता है। चक्रतः स्पष्ट है- **"आद्यांशेन चतुर्थांशेन चतुर्थांशेनचादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्।। एवं भांशव्यधो येषां जायते वरकन्ययोः। तेषां मृत्युन सन्देहः शेषांशाःस्वल्पदोषदाः।।**

१	२	३	४
४	३	२	१

नाड़ीदोष का परिहार–रोहिण्यार्द्रामृगेंद्राणांपुष्य श्रवणपौष्णाभम्। अहिर्वुर्ध्यर्क्षमेतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते। अर्थात् रोहिणी, आर्द्रा, मृग.,विशाखा,पुष्य, श्रवण, रेवती, उ.भा.। इन नक्षत्रों में नाड़ी दोष का विचार नहीं किया जाता। ***वृहद्दैवज्ञरंजन पृष्ठ-२१२***

नाड़ीदोष न होने तथा ग्रहमैत्री अथवा भकूट शुद्ध होने पर अन्य दोष अपेक्षाकृत स्वयं ही कम हो जाते है। १८ से २० गुण का मेलापक सामान्य, २० से २५ गुण का मेलापक मध्यम तथा इसके ऊपर के गुणमेलापक उत्तम श्रेणी के माने गये है।

कन्यायाः वैधव्यादिदोषविचारः वा मंगलीक योग

आजकल इसी को मंगला- मंगली योग किंवा दोष कहा जाने लगा है। वस्तुतः यह मंगलीक योग है, दोष नही। लग्ने **व्यये च पाताले जामित्रेचाष्टमें कुजे। कन्याभर्तृविनाशाय भर्त्ता पत्नी-विनाशकृत्।** इदं लग्नचन्द्राभ्यां वरकन्ययोः जन्मकुण्डल्यां विचार्यम्। एवं यदि कन्याकुण्डल्यां लग्नाद्वा चन्द्रात् (१।४।७।८।१२) स्थानेषु कश्चित् पापग्रहों भावेश-त्वेन स्थितस्तदाप्यनिष्ट करः। सप्तमेशोऽष्टमषष्ठ रिष्फेषु गतोऽनिष्टः अथ तेषां वरकुण्डल्यां (१।४।७।८।१२) स्थानानामन्यतमं स्थाने शनिभौमोवा अन्यः कश्चित्क्रूरग्रहस्तिष्ठे त्तदा विवाहः शोभनः। उक्तं च- जामित्रे च यदा सौरिलग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्। कन्यायास्सप्तमभावनाथ-शुक्रादि शुभग्रहाणां शुभस्थानस्थित्याऽस्याः सौभाग्यादियोगः दीर्घायुर्योगश्च विलोक्नीयः। एकं द्वयोः ग्रहसाम्येऽथवा वरस्य ग्रहाधिक्यं मेलापकः शोभनो नान्यथा। शशांक पञ्चाङ्ग शुचौ सौम्ये चैव विवाहभे राज्ञो गोधूलिके लग्ने खड्गोद्वाहः प्रशस्यते।।१।। अयोद्वाहान्ते मण्डपोद्वासनं। युग्मे घस्रे षष्ठहीने च पञ्च सप्ताहे कार्यं शुभ वारे।। इति।।

जातकोक्तसूत्रात् कन्या वैधव्यविषाख्यादियोगज्ञानम्। लग्नाच्चन्द्रादन्यतमतः पापाः सप्तमेऽष्टमेवा विधवा।।१।। भौमे राहौ सप्तमेऽऽष्टमे व्यये वा विधवा।।२।। द्यूने राहौ कुलदोषदा दुःखार्ता।।३।। लग्नेन्दु पापान्तरगोशुभैरदृष्टो कुलद्वयघ्नी।।४।। द्युनेऽङ्गे पापे विवाहोत्तरं सप्तमाब्दे विधवा।।५।। षष्ठेऽष्टमे चन्द्रेऽष्टमाब्देरन्डा।।६।। सप्तमें रन्ध्रेशे पापदृष्टनवोडा रण्डा।।७।। षष्ठाष्टमेशो षष्ठगतो व्यये पापस्तदापि विधवा।।८।। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा मृतवत्सा वा।।९।। कुजेऽष्टमे कुल्टा मन्देऽष्टमे पतिरोगवान्।।१०।। सूर्येऽष्टमे पापयुक्ता भवति।।११।। रन्ध्रे राहौ कुलद्वयघ्नी।।१२।। लग्नतुर्यांष्टमान्त्यासंस्थाः पापास्तदा पतित्यक्तापरासक्ता च भवति।।१३।। सप्तमेशोष्टमेतस्याः सप्तमे निधनाधिपः। पापाश्रयता बाल वैधव्यं लभते ध्रुवम्। सप्ताष्टमपती षष्ठे व्यये वा पापपीड़ितौ। तदा वैधव्यमाप्नोतिनारी नैवात्र संशयः। मन्दाश्लेषा द्वितीयायां जाता विषाख्या।।१४।। सूर्यवारुणद्वादश्यां जातविषाख्या।। कुजविशाखासप्तम्यां जाता विषाख्या।।१६।। पापाङ्गं सशुभोपापावरिगौ जाता विषाख्या।।१७।। पुत्रेऽर्के मन्देऽङ्गे भौमेऽङ्गे विषाख्या।। अथ विषाख्या योगस्यापवादमाहलग्नादिन्दोवा यदि जन्मकाले शुभ ग्रहों वा मदनाधिपश्च। द्यूने स्थितोहन्त्यनपत्यदोषं च विषाङ्गनाख्यम्।।१९।। भौमतुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभद प्रोक्तः चिरायुपुत्रपौत्रदः।।२०।।

अथ मंगलीकयोग वैधव्य योग परिहारः

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्यतस्यास्ति वृद्धिः। पापैरेवं तस्य भावस्य हातिर्विदिष्टत्या पृच्छतां जन्मतो वा।' स्वस्वामि-सौम्येरीक्षितं चेत्सप्तमस्थानं भवति यदा तद्भावसुखं वाच्यम्। केचित्तु स्त्रीणां महत्यारिष्ट योगे भर्तुश्च स्वल्पारिष्ट योगे तत्परिहारमाहुः। इति भट्टोत्पलोक्तेः। इसके अतिरिक्त मंगलीक योग के लिये निम्नलिखित परिहार वचन प्राप्त होते है। **१. भौम तुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभदः प्रोक्तः चिरायु पुत्र पौत्रदः।।** वर-कन्या की लग्न कुण्डली, चन्द्रकुण्डली अथवा प्रश्न कुण्डली में मंगल या पाप ग्रह के समतुल्य भावों में मंगल या अन्य पापग्रह रहने पर परस्पर विवाह शुभफलकारक होता है। २. वर-कन्या के १,४,७,८,१२ वें भाव में शनि से मंगलीक योग स्वयं समाप्त हो जाता है। **'शनि भौमोऽथवा कश्चितपापो वातादृशो भवेत।तष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाशकृत। ३. कुजजीव समायुक्तो युक्तो वा कुज चन्द्रमाः। चन्द्रः केन्द्रगतो वापि तस्य दोषो न मङ्गली।।** मंगल गुरु एक साथ हो अथवा मंगल चन्द्रमा का योग हो वा चन्द्रमा केन्द्र (१,४,७,१०) स्थान में हो तो मंगलीक होने का दोष कट जाता है। **४. न मंगली चन्द्र मृगौ द्वितीये न मङ्गली पश्यति जीवयस्यः। न मंगली चन्द्रगतश्च केन्द्रे न मंङ्गली मङ्गल राहुयोग।।** चन्द्रमा शुक्र दूसरे स्थान में हो, अथवा मंगल पर बृहस्पति की दृष्टि हो अथवा मंगल राहु के एक साथ होने पर भी मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है। ५. इसके अतिरिक्त वर-कन्या के जन्माङ्ग में मंगल शत्रुक्षेत्री (मिथुन-कन्या) अथवा नीच (कर्क) का हो तो भी मंगलीक दोष नहीं होता। ६. गुणाधिक्य २५ गुण से अधिक का मेलापक हो जाने पर मंगलीक योग शिथिल हो जाता है। **'गुणाधिक्ये भौम दोषं न विद्यते।'** इति।

कुण्डली मिलाने की रीति

फलित ग्रन्थों के द्वारा स्त्री-नाशक या पति-नाशक,योग प्रसिद्ध है। उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है।

कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश मे पापग्रह का होना प्रायः पतिनाशक या पत्नीनाशक योग होता है, इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते है। यह पण्डितों का अनुभव है कि सबसे अधिक दोषकारक मंगल, उससे कम बाकी पापग्रह होते है।

इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय सप्तम भावों में भी पाप योग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम अष्टम भावों में भी पाप योग होना अधिक अनिष्ट कर है। द्वितीय अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश को सप्तम में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धक योग प्रायः वैधव्य सूचक भी होते है। एकादश या पंचम स्थान में विशेष पाप योग वैधव्य सूचक होता है। इन योगो के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु सन्तान और भाग्य योग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्न लग्न से या लग्न से स्त्री की कुण्डली में छठें या सातवें मंगल होतो भी वैधव्यकारक योग होता है।

यदि कन्या को प्रबल वैधव्य योग होतो ब्रह्मविवाह, कुम्भ, विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवी वर के साथ विवाह किया जाय तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता। परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ सप्तम, नवम, अष्टम द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्ट दोष होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना अच्छा नहीं होता। ज्योतिष के फलित शास्त्र में दो ही वस्तु को अधिक प्रधानता है। (१) लग्न और (२) चन्द्रमा इनमें लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन कहते है। प्रेम मन से होता है, शरीर से नही। अतएव जन्मराशि के मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्मनाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ा गोचर, विचार मंगल-कृत्य इत्यादि कार्यो में जन्म नाम की ही प्रधानता है। जन्म नाम न रहने पर प्रसिद्ध नामसे गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हों तो अन्तिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है नाम हो तो मेलापक प्रसिद्ध नाम से और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म नाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम औरद दूसरे का जन्म नाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र में हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।

चैत्र अयनांशानयनाय एकादिगुणकाः।।

१ गुणेतराः		१० गुणेतराः।।			
१	०	५०	१०	८	२२
२	१	४०	२०	१६	४४
३	२	३१	३०	२५	७
४	३	२१	४०	३३	२९
५	४	११	५०	४१	५२
६	५	१	६०	५०	१४
७	५	५१	७०	५८	३६
८	६	४२	८०	६६	५९
९	७	३२	९०	७५	२२
०	क.	वि.	१००	८३	४३

अस्मिन्वर्षस्फुटायनभागे - प्रत्यब्दिक-गतियोगादग्रिम-वर्षादयनभागा भवन्ति। शके १८०० वर्षस्फुटायनांशाः २२।८।३३ अतोऽग्रेष्टे च।।

अथ काश्यां निरयणसायनादिलग्नमानानि लंकोदयाश्च

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशय
३ ४१	४ १३	५ ४	७ ४२	५ ४५	५ ३५	५ ३५	५ ४५	५ ४२	५ ४	४ १३	३ ४१	सा.घ.
४ ५	४ ५१।	५ ३।।	५ ४४।।	५ ३७।।	५ ३५	५ ४२।।	५ ४२	५ १३।।	४ २४।।	३ ३९	३ ४१	नि.घ.
२२१	२५३	३०४	३४५	३४५	३३५	३३५	३४५	३४२	३०४	२५३	२२१	पलात्मकं
२७८	२९९	३२३	२९९	२७८	२७८	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	लंकोदय

गणनागुणैक्यबोधकचक्रम्। वरायनक्षत्राणि। (कन्या नक्षत्राणिपार्श्वे)

कन्या	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	अश्वि.	भरणी	कृति.१	कृति.३	रोहिणी	मृग.२	मृग.२	आर्द्रा४	पुन.३	पुन.१	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	हस्त	चित्रा२	चित्रा२	स्वाती	विशा.३	विशा.१	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा.।।	पूषा३।।	उ.१	उ.३	श्र.१।।	श्र.२।।	धनि.२	धनि.२	शतभि.	पू.भा.३	पू.भा.१	उ.भा.	रेवती
मेष	अ.	२८	३३	२८।।	१८।।	२१।।	२२।।	२६	१७	१८	२२।।	३१।।	२७	२०।।	२६	१७।।	११	९	१३	२२।।	२६।।	२२।।	१९।।	२६।।	१५	१३	२६	२७	२४।।	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४।।	२४।।	२६
	भ.	३४	२८	२९	१९	२२।।	१३।।	१७	२६	२६	३०।।	२३।।	२४।।	२१	१९	२८	२१।।	२०	६	१४।।	२९।।	२२।।	१९।।	१७।।	१९।।	२०	१९	२०	२७	२८।।	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२।।	१६।।	२८
	कृ.१	२७।।	२७।।	२८	१६।।	९	१५।।	१९	२०	२१	२५।।	२६।।	२३।।	१७।।	२१	२२	१५।।	१५।।	१८।।	२७।।	१५।।	१९।।	१६।।	२०।।	२६।।	२४।।	१८	१९	१४	१५।।	११।।	१०।।	२५	२५	२७	१९।।	१७।।	१९।।	११।।
वृष	कृ.३	१८।।	१८।।	१९	२८	१९	२५।।	१६।।	१७।।	१८।।	२२	२३	२०	१९।।	२३	२४	२१	२१	२३।।	२२।।	१०।।	१४।।	२१।।	२५।।	३१।।	२०	१२।।	१३।।	९।।	१४	११	१०	२२।।	२९।।	३१	२३।।	२०	२२	१४
	रो.	२३।।	२३।।	१०	१९	२८	३६	२७	२३।।	२३।।	२७	२८	१३	१२।।	२६।।	२८	२५	२६	२०	१९	१५।।	९।।	१६।।	३०।।	२४।।	१४	१९	२०	११।।	१७	१९	१८	२०	२६	२४।।	३०।।	२७	२६	१९
	मृ.२	२३।।	२३।।	१८।।	२८।।	३४	२८	२०	२५	२३।।	२६	२०	२२	२१।।	१७।।	२५।।	२३।।	२७	१३	१२	२५।।	१७।।	२३।।	२२।।	२५।।	१५	१२	११	१८	२१	२४।।	२४।।	१३	१९	२७	२९।।	२६।।	१७	२७
मिथुन	मृ.२	२७	१८	२१	१८।।	२६।।	२०	२८	३३	३१।।	१९।।	१२	१५।।	२४	२०।।	२८।।	३०।।	३४	२१	१४	२७	१९।।	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०।।	२५	२५	१२	१३	२१	२३।।	२७।।	१७	२७
	आ.	१९	२७	२१	१८।।	२४।।	२६	३४	२८	२५	१३	२०।।	१३।।	२३।।	२९।।	२२।।	२४।।	२४।।	२७	२०	२७	२०	१३।।	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२।।	२२।।	२२।।	१७	२०	११	१६	१९	२७	२७
	पुन.३	१९	२६	२३	२०।।	२३।।	२४।।	३२।।	२४	२८	१६	२३	१६।।	२२।।	२७।।	२१।।	२३।।	२४।।	२५।।	१८।।	२७	२१	१३।।	२०।।	५	१३	२७	२६	२७	२१।।	२२।।	२३।।	१७।।	१८।।	११	१७	१९।।	२७।।	२८
कर्क	पुन.१	२१।।	२८	२५।।	२०।।	२४	२५	१९	१०।।	१४।।	२८	३५	२८।।	१५।।	२०	१४।।	१७	१८	२०।।	२०	२७	२०	१९	२६	१०।।	८	२१	२०।।	२१।।	२६।।	२५	२७	२१	१२।।	७	११	१७	२५	२५।।
	पुष्य	३०।।	२१।।	२६।।	२३	२४	१७	१०	१८	२१।।	३५	२८	३०	१८।।	१४।।	२३।।	२६	२७	१२	११।।	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११।।	२२।।	२६	२४	२५	१३	४।।	१४।।	१८	२४	१८	२७
	श्लेषा	२५	२३।।	२२।।	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८।।	२८।।	२८	१५	१५।।	१७।।	२०।।	२०।।	२६	२५।।	११।।	१६।।	१५।।	२०	२६	२२।।	१६	१७।।	८।।	१२	१३	१३	२७	१८।।	१८।।	१२।।	१८।।	२०	१२
सिंह	म	२१	२१	१७।।	१८।।	११।।	१९।।	२२।।	२२।।	२१।।	१६।।	१८।।	१६	२८	३०	२६।।	१६।।	१६।।	२२।।	२५।।	११।।	१७।।	२४।।	२६।।	३४	२४	२०	२१	११।।	५।।	५।।	४।।	१८।।	२४।।	२५।।	१८।।	१७।।	१८।।	१२
	पू.फा.	२७	१९	२१	२२	२५।।	१७।।	२०।।	२८।।	२७।।	२२।।	१६।।	१६।।	३०	२८	३४	२४	२२।।	८।।	११।।	२५।।	१९।।	२६।।	२४।।	२४।।	१९	१८	१९	२७	२१	१९।।	१८।।	४।।	११।।	१९।।	२४।।	२३।।	१६।।	२४
	उ.फा.१	१८।।	२७	२२	२३	२७	२५।।	२८।।	२१।।	२१।।	१६।।	२५।।	१८।।	२६।।	३४	२८	१८	१६।।	१४।।	१७।।	२६।।	१७।।	२४।।	३०।।	१९।।	१०।।	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११।।	१८।।	१२।।	१५।।	१५।।	२६।।	२४।।
कन्या	उ.फा.३	१३	२१।।	१६।।	२१	२५	२३।।	३०।।	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२१।।	१७।।	२५	१९	२८	२५।।	२४।।	१६।।	२५।।	१६।।	१८	२७।।	१३	१५।।	२९।।	२८।।	२९।।	२६	२५	२५	१६।।	१६।।	१०।।	१४।।	१८	२९	२७
	हस्त	१०	२०	१६।।	२१	२६	२६	३३	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२२	१७।।	२२।।	१७	२६	२८	२७	१९	२६।।	१७।।	१९।।	२६	१२	१४	२७	२६	२७।।।	२३	२४	२४	१९	१९	९।।	१४।।	१९	२७	२७
	चि.२	१३	६	१९	२५।।	२०	१२	१९	२६	२४।।	२०।।	१२।।	२६।।	२३।।	९।।	१५।।	२४।।	२७	२८	२०	१९	२६।।	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७।।	१९	१९	१८	१८	२४	१८।।	२२	१०।।	२१
तुला	चि.२	२२।।	१५।।	२८।।	२३।।	२०	१२	१३	२०	१८।।	२०	१२	२६	२५।।	१०	१७।।	१७।।	२०	२१	२८	२७	३४।।	२४।।	७।।	२१।।	२८	१४	१३	२१	२५।।	२७।।	२७	२६	२०	२६	२०।।	१५	.४	१३
	स्वा.	२७।।	२९।।	१७।।	१२।।	१६।।	२७	२७	२६	२६।।	२८	२८	१५।।	१३।।	२५।।	२५।।	२५।।	२७।।	२१	२८	२८	२०	१०	२३।।	१८।।	२३	२७	२६	१८	२२।।	२३।।	२३।।	२७	२१	२०	२५	१९।।	२०	१२।।
	वि.३	२२।।	२२।।	२०।।	१५।।	१०।।	१८।।	१९।।	२१	२१	२२।।	२१।।	१९	१७।।	१९।।	१८।।	१७।।	१८।।	२७।।	३४।।	१८	२८	१८	१७	२१।।	२८	२२	२१	१३	१७।।	१७।।	१७।।	३२।।	२६।।	२६	२२	१६।।	१३।।	५
वृश्चिक	वि.१	१६।।	१६।।	१४।।	१९।।	१४।।	२२।।	१३	१४।।	१४।।	१९	१८	१५।।	२१।।	२३।।	२१।।	१८	१९	२८	२३।।	८।।	१७	२८	२७	३१।।	२३।।	१७।।	१६।।	९।।	१२	१२	१२	२७	२७	२६।।	२२।।	२१	१८	९।।
	अ	२४।।	१४।।	१९।।	२४।।	२७।।	२०।।	११	१६	२१।।	२६।।	१८	२१	२४।।	२०।।	२९।।	२६	२७	१२	७।।	२२।।	१७	२८	२८	३१	१६।।	१४।।	१४।।	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४।।	२४	१८	२७
	ज्ये	१२	१८।।	२४।।	२९।।	२२।।	२२।।	१३	३	६	१०।।	२०	२६	३१	२३।।	१६।।	१३	१२	२५।।	२०।।	१६।।	२०।।	३१।।	३०	२८	१५	१७।।	१७।।	१७।।	२०	२०	२०	२५	२५	१९	११	९।।	२१	२१
धनु	मू	१२	२०	२४।।	१९	१३	१४	२१	१५	१२	८।।	१७।।	२४	२५	१९	९।।	१३	१३	२६।।	२७	२१	२७	२४।।	१६।।	१६	२८	२८	२७	२५।।	१५।।	१५।।	१५।।	२१।।	२८	२१।।	१५।।	१६।।	२५।।	२७
	पू.।।	२६	१९	१८	१२।।	१९	११	१९	२७	२७	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२५	२८।।	२७	१२	१२	२७	२०	१६।।	१८।।	१८।।	२८	२८	२७	३३	२३	२३।।	२३।।	८।।	१६।।	२३।।	३१।।	३२।।	२३।।	३२।।
	पू.३।।	२७	२०	१९	१३।।	२०	१२	१८	२६	२६	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२७	२७	२६	११	११	२६	१९	१८।।	१८।।	१९।।	२७।।	२७।।	२८	३५	२४	२४	२३।।	८।।	१५।।	२२	२९।।	३२।।	२३।।	३२।।
	उ.१	२५।।	२७	१४	८।।	११।।	१८	२४	२६	२६	२३।।	२४।।	९।।	११।।	२७	२८	२८।।	२७।।	२०	२०	१९	१२	११।।	२५।।	१९।।	२५।।	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५।।	२२।।	२२।।	२८।।	३१।।	३२।।	२३।।
मकर	उ.३	२८	२९।।	१६।।	१४	१७	२२।।	२०।।	२२।।	२२।।	२७	२८	१३	६।।	२२	२३	२६	२५	१७।।	२४।।	२३।।	१६।।	१४।।	२८।।	२२	१६।।	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५।।	१७।।	१७।।	२३।।	३०।।	३२।।	२३।।
	श्र.१।।	२८	२७	१४।।	१२	१८	२७	२४	२१।।	२१।।	२७	२५	१५	५।।	१९।।	२०	२४	२५	१९	२६	२३।।	१६।।	१४	२८	२३	१७।।	२३।।	२४।।	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८।।	२३।।	३१।।	३०।।	२२।।
	श्र.२।।	२७	२६	१३।।	१०	१७	२६	२३।।	२१	२३।।	२८	२६	१५	६।।	१८।।	२०।।	२३।।	२४।।	१८।।	२५।।	२३	१६	१४	२८	२२	१६	२३	२५।।	१५	२४	२७	२८	३०	२०।।	१८	२३	२९।।	३१।।	२४।।
	ध.२	२०।।	१०।।	२६	२३।।	२०	१२	८।।	१७।।	१७।।	२२	१३	२८	१८।।	५।।	१२।।	१६	१७।।	१६।।	२४	२६	३०	२८	१४	२७	२१	९	९।।	१६।।	२५।।	२८	२८	२८	१८।।	२३।।	२१	२६।।	२५।।	२२।।
कुम्भ	ध.२	२०	११	२६	३०।।	२७।।	१९	१०	२०	१९	१४	५	२०	२५।।	११।।	१९।।	१७।।	२१	१८	१९	२२	२५।।	२८	१२	२६	२९।।	१७।।	१६।।	२३।।	१८।।	२१	१८।।	२०	२८	३३	२८।।	१८।।	७	२४।।
	श.	१५	२१	२८	३२।।	२५।।	२५	१८	१०	१३	७।।	१५	२०	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	८।।	२६	२६	१९	२६	२६।।	२१	१९।।	२२।।	२४।।	२३।।	२३।।	१८।।	१८।।	१८।।	२५	३३	२८	१९	९	१७	१६।।
	पू.भा.३	१८	२५	२०	२४।।	३१।।	.३१	२४।।	१७	१७	१३।।	२०।।	१४	१९।।	२५।।	१६।।	१५।।	१७।।	१८।।	१९।।	२८	२१	२१।।	२७।।	१२	१५।।	३१।।	३०।।	२९।।	२४।।	२५।।	२५।।	२०।।	२७।।	१९	२८	१८	२३	२०।।
मीन	पू.१	१४।।	२१।।	१६।।	१९	२६	२६	२५।।	१८	१८	१८	२५।।	१८।।	१६।।	२२।।	१४।।	१६।।	१८।।	१९।।	१२।।	१९।।	१४	२१	२७	११।।	१५	३१	३१।।	३०।।	२८।।	२९।।	३०।।	२५।।	१७	७।।	१६।।	२८	३३	३०।।
	उ.भा.	२४।।	१५।।	१८।।	२१	२५	१७	१६।।	२५।।	२७	२६	१९	२०	१७।।	१५।।	२५।।	२७।।	२६	९।।	५	१९।।	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२।।	३१।।	२९।।	२८।।	२९।।	१४।।	६	१६।।	२१।।	३३	२८	३४
	रेवती	२५	२४।।	११।।	१४	१७	२६	२५।।	२४	२५।।	२४।।।	२७	१३	१२	२२	२२	२४	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	५।।	१२।।	२७	२२	२७	३०।।	३०	२१	१९	२०	२२।।	२२।।	१४	१६	१८	२९।।	३३	२८

अथ ग्रहाणा होमार्थ समिधाः-अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथपिप्पलः।। औदुम्बराः शमीदुर्वाकुशाश्चसमिधः क्रमादिति।।१।। **अथग्रहाणां होमप्रमाणम्।।** एकैकस्याष्टशतकमष्टाविंशति रेव वा।। होतव्या मधुसर्पिभ्यां सहस्रम् चाष्ट संयुतम्।। इति।।२।। **सन्ततिप्रदमन्त्रो।** देवकीसुतगोविन्दवासुदेवजगत्पते देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः।। कौशल्या शुशुभे तेन पुत्रणामिततेजसा। यथा वरेणदेवानामदितिवज्रपाणिना।।३।। सपादलक्षजपः।। तिलपायसघृतदशांशहवनं तद्दशांशतर्पणम्। तद्दशांशब्राह्मणभोजनम्।।४।। **जन्मराशिनामराश्योः प्रधानता निर्णीयते। विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यहारके। नामभाच्चिन्तयेत्सर्वंयदि जन्म न ज्ञायतते यदा।।५।।** अन्योप्यावश्यककार्यं विशेषोवृहस्पतिनाभिहितः।। मासप्रयुक्तकार्येषु मूढत्वं गुरुशुक्रयोः। न दोषकृन्मलमास गुर्वादित्यादिकं तथा इति। शुभाछिक्काः भोजने। शयने दाने। आसने। वामे। पृष्ठे । पूर्वे। औषध सेवने। अध्ययने। बीजवापे एषु सत्।।६।।

।। अथ गोचराद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलस्य शमनाय प्रत्येकग्रहाणांदानवस्तूनि।।

सूर्यदानम्	चन्द्रदानम्	भौमदानम्	बुधदानम्	गुरुदानम्	शुक्रदानम्	शनिदानम्	राहुदानम्	केतुदानम्
माणिक्य	वंशपात्र	विद्रुम,पृथ्वी	कांस्यपात्र	पीत धान्य	श्वेत चन्दन	नीलम,तिल	सप्तधान्य	कम्बलकस्तूरी
गोधूम,गुड़	श्वेत चावल	मसूर,द्विदल	हरित वस्त्र	पीतवस्त्र,सुवर्ण	श्वेत चावल	माषान्न, तेल	माषान्नहेमनाग	माषान्न
सवत्सागो	श्वेत वस्त्र	गोधूम	गजदन्त,घृत	घृत,पीतपुष्प	श्वेत चित्रवस्त्र	कृष्ण वस्त्र	नीलवस्त्र,गोमेद	वैदूर्यमणि
कमलपुष्प	श्वेत चन्दन	रक्त वृषभ	मुद्गान्न पन्ना	पीतफलं	श्वेत पुष्प	कुल्थी,लोहा	कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प
नूतन गृह	श्वेत पुष्प	गुड़,रक्तचंदन	सुवर्ण,दासी	पुखराज	रजत,हीरा	महिषी वा	खड्ग तिल	तिल तैल
रक्त चन्दन	चाँदी, रजत	रक्तवस्त्र	सर्वपुष्प, रत्न	हरिद्रा अश्व	घृत सुवर्ण	कृष्णधेनु	तैल, लोह	रत्न सुवर्ण
रक्त वस्त्र	वृषभ, घृत	रक्त पुष्प	कपूर,शंख	पुस्तक मधु	श्वेताश्व दधि	कृष्णपुष्प	शूर्पकम्बल	लोहा,बकरा
सुवर्णताम्र	शंख,दधि	सुवर्ण,ताम्र	अनेक फल	लवण शर्करा	सुगंधद्रव्याणि	उपानह	सतिलताम्रपात्र	शस्त्र
केशर,मूंगा	मोती कपूर	केशर,कस्तूरी	षट्रसभोजन	भूमि छत्र	शर्करा, गौ	कस्तूरी,सुवर्ण	सुवर्ण रत्न	सप्त धान्य
वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा.	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा
ज.सं.७०००	ज.सं.११०००	ज.सं.१००००	ज.सं.९०००	ज.सं.१९०००	ज.सं.१६०००	ज.सं.२३०००	ज.सं.१८०००	ज.सं.१७०००

अथ योगिनीदशाकृतारिष्टशमनाय जपार्थं मंगलादीनां मन्त्राः

मंगलामन्त्रः	अथ पिंगलामन्त्रः	धान्यामन्त्रः	अथभ्रामरी मन्त्रः	भद्रिका मन्त्रः	उल्का मन्त्रः	सिद्धामन्त्रः	संकटामन्त्रः
ॐ ह्रीं मंगले	ॐग्लौंपिंगले वैरिका	ॐश्रीधनदे	ॐभ्रामरिजगतामधी	ॐ भद्रिके	ॐउल्के	ॐह्रीं सिद्धे	ॐ ह्रीं संकटे
मंगलायै	रिणिप्रसीदफट्	धान्यै	श्वरीभ्रामरीक्लीं	भद्रदेहिअभद्रं	रोगंनाशय	मे सर्वमानसं	मम रोगं
स्वाहा	स्वाहा	स्वाहा	स्वाहा	नाशय स्वाहा	जृम्भयस्वाहा	साधय स्वाहा	नाशय स्वाहा

अथात्रग्रहाणामेकर्क्ष भोगफलसमयादिज्ञानम्

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	राहुः केतुः	ग्रहाः
मा.१	दि.२।	मा.१।।	मा.१	मा.१३	मा.१	मा.३०	मा.१८	एकर्क्षभोग
आदौ	अन्त्ये	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फल समय
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गन्तव्यराशे प्राक्फलदा

अथ सर्वग्रहाणां दोषापनुत्तये सामान्यौषधयः

सर्षप	देवदारु	हरिद्रा	लोध्र	सरपुंखा	कुष्ठ	तोयदक
धनलावा	वरियरा	लजारु	नागरमोथा	कंगुनी		

एतैस्सवारिभिः स्नानंरोकंदानपुरस्सरम्। एतत्सामान्यत् सर्वग्रहपीडोपशांतये।।१।। यथासिद्धौषधैः रोगाः शम्यते, युमंत्रतीभयम्। तथा स्नान विधानेनग्रहदोषः प्रणश्यति।

अथात्रषड्भानि

जन्म	१	मृत्युभयः
कर्म	१०	कर्मनाशः
संघात	१६	बन्धुनाशः
समुदायः	१८	सुखनाशः
विनाशः	२४	देहनाशः
मानसः	२५	मनस्तापः

ग्रहाणां धारणमणयः

रवि	माणिक्यम्	विद्रुमम्
सोम	मोती	चाँदी
मंगल	मूंगा	मूंगा
बुध	पन्ना	सोना
गुरु	पुष्पराग	मोती
शुक्र	वज्र	चाँदी
शनि	नीलम	लोहा
राहु	गोमेद	लाजावर्त
केतु	वैदूर्य	लाजावर्त

अथात्र मासि जनिमेरविवासरादौ फलम्।

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
गम	सुभो-	वह्नि	सम्म	वस्त्र	सौ-	दुःखम्
नम्	ज्यम्	भयम्	ति.	लाभः	ख्यम्	

एकस्मिन्नेकोष्ठयत्मकेयन्त्रे मणिन्यासक्रमः

ऐशात्यां	पूर्वे	आग्नेय
बुधपत्रा	शुक्र हीरा	चन्द्रमोती
उत्तर	मध्ये	दक्षिणे
वृ.पुष्पराज	सूर्यमाणिक	मं.मुंगा
वायव्ये	पश्चिमे	नैऋत्ये
केतु वैदूर्य	शनिनीलम्	राहुगोमेद

आवश्यकेऽनिष्ट तिथ्यादौ दानम्

तिथौ	वारे	न.	करणे	योगे
तण्डु	रत्नं	गौ.	धान्यम्	सुवर्ण
चन्द्र	भद्रां	ता.	ब्राह्मण दत्वा	
शंख	धान्य	लवणं	तत्कर्म कार्यम्	

मुद्रादानम्

वर्षपत्रे
चावल
सुवर्ण
कांस्य
पात्र
घृत
पीतवस्त्र
वर्ण
दक्षिणा

ग्रहाणांतन्त्रसारोक्तमन्त्राः

ग्रहाः	मन्त्राः
रवि	ॐ घृणिः सूर्याय नमः
सोम	ॐ सों सोमाय नमः
मंगल	ॐ अं अङ्गारकाय नमः
बुध	ॐ बुं बुधाय नमः
गुरु	ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र	ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि	ॐ शं शनैश्चराय नमः
राहु	ॐ रां राहवे नमः
केतु	ॐ कें केतवे नमः

अथ स्त्रीणामाद्यरजोदर्शने श्रेष्ठ मासपक्षतिथ्यादयः।

तत्र श्रेष्ठ पक्ष मासा	वैशाखे फाल्गुने माघे मार्गशीर्षे ज्येष्ठे श्रावणाश्विने।। एषुसितेपक्षे चोत्तमम्। श्वेतवस्त्रे श्रेष्ठोऽयम्।। नान्याम्बरे।।
तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५। एतासु तिथिषुसत्। परन्तु तत्र कृष्ण पक्षस्यदशमीयावन्मध्यमम्।। तदुपरिकुलटात्वं स्यात्।।
वाराः	चन्द्र।। बुध।। गुरु।। शुक्र।। एषां वारे प्रशस्तम्।।
शुभ नक्षत्राणि	अश्वि.मृ.श.ध.रे.चि.अनु.ह.श्रवण पुष्य, उतरा ३, रो.एषु भेषु शुभः।। मृ.पुनर्व,म.वि.कृ.एषु मध्यमं परेष्वसत्।। दिवादुर्योगभद्रादिरहिते श्रेष्ठं न रात्रौ।
शुभ लग्नानि	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्याङ्गेषु सद्भिर्दृष्टे सत्युत्तमम्।। तत्र विवाहवद्ग्रहसंस्थाऽपि विचार्य्या इति।।

अथ रजोदर्शने निषिद्धसमयमाह

अष्टम्यां द्वादशीषष्ठ्योरिक्तदर्शेऽथसंक्रमे।।
भद्रा निद्रा व्यतीपाते ग्रहणे रुजि वैधृतौ।।१।।
परतात गृहे मार्गे कुदेशे कृष्णवाससि।।
प्राग्रजोदर्शने नेष्टं शान्त्या तु शुभदं भवेत्।।२।।
प्रागुक्तं विलयं यान्ति रजोदर्शनसंभवाः।।३।।

अथ ऋतुमत्याः स्नानमुहूर्त्तस्य विचारः

ह.स्वा.अश्वि.मृ. अनु.ध.रो.उत्तरा ३ ज्ये. एषुभेषु शुभतियौ। सद्वारे।। सत्तनो स्नाया-दृतुमती नारी।

अथ गर्भाधानमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्र त्रिविधं गण्डान्तम्। जन्मताराम्। मृ. म. अश्वि. रे.। ग्रहणदिनम्। व्यतिपातवैधृति- श्राद्धदिनम्। दिवा परिघार्द्धं उत्पातहतभम्। जन्मराशितोषष्ठाष्टमं पापग्रहस्य भवनम्। भद्रा पर्वदिनं ४।६।९।१४ तिथिषु संध्यायाम् सू. मं. श. वासरान्। रजोदर्शनाच्चतुर्थ-रात्रिपर्यन्तं न शुभः। उत्तरा ३, म, ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श., एषु भेषु लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैः। लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः। सू. मं. वृ. दृष्टलग्ने विषमराशिनवांशके चन्द्रे शुभम्। युग्म (६।८।१०।१२) रात्रौ चोत्तमं गर्भाधानम्। चि., पुन., पुष्य., अश्वि., एतद्भेषु मध्यम स्यादिति।।

अथास्यशान्तिः कल्पोक्तः

घृतदूर्वातिलाक्षतैर - ष्टोत्तरशतं जुहुयादिति। स्वर्णगोभूदानं - च विस्तर-स्त्वत्रनिबन्धेभ्य।। इति।।

अथ गर्भादशमासानामधिपाः

१	२	३	४	५	६	मासाः
शु.	मं.	वृ.	सू.	सो.	श.	पतयः
७		८		९	१०	मासाः
बु.	गर्भलग्नपति			सो.	सू.	पतयः

अथ गर्भसंस्कारे विशेषमाह

स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति-विवाहगर्भ संस्कारयोरितर-कर्मसु भर्तुरेव इति।

अथ जातकर्मानन्तरकृत्यम्

जन्मलग्नंनिरीक्ष्य-तत्रस्थग्रहदोष परिहाराय ग्रहदानं जपं वा कुर्यात्। जातमात्रस्य मूलोत्पन्नस्य मुखमालोक्य स्नायादिति।।

अथ पुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्त्तः

तत्र गर्भतोद्वितीये तृतीये वा मासिपुंसवनंकर्मविधेयं।। षष्ठे वाष्टमेमासि मासाधिपतौसबलेसतिसीमन्तोन्नयनं प्रशस्तम्।। नात्रशुक्रेज्ययोर्मूढत्वदोषः।।

सद्वाराः	सू.मं.वृ. एषां वारे मतान्तरेण ज्ञेन्दुशुक्राणां वारे वा दम्पत्यो श्चन्द्रताराशुद्धौ सत्यां पुंसवनसीमन्तसंस्कारौ भवतः।।
सद्भानि	मृ. पुष्य, मू. श्रवण.पुनर्व., हस्त. रे. रो. उतरा ३ एतद्भेषु पुंजन्मभं विना सीमन्तोन्नयनं पुंसवनञ्च प्रशस्तम्।।
सत्तिथय	१।२।३।५।७।१०।११।१३ एतासु तिथिषु सिते। तिथि १० यावत् कृष्णे चोत्तमः परन्तु पूर्वाह्न एव कार्यो नापराह्ने।।
साङ्ग-लग्न शुद्धिः	संस्कारद्वयं पुंभस्याङ्गे पुंभांशे च श्रेष्ठम्। तत्रलग्नात् १।४।५।७।९।१० एषु शुभैः।३।६।११। एषु पापैश्चोत्तमः। चन्द्रे १।६।८।११ वर्जिते श्रेष्ठः। ४।८।१२ पाप एकोप्यसत्।

अथ सूतिकायाः सूतीगृहप्रवेशमुहूर्त्तस्य विचारः

रो. मृ. पुष्य. स्वा. श. पुनर्व. ह. ध. अनु. चि. अश्वि. उ.३ श्र. एषु भेषु।। शुभवासरे।। सतिथौ रिक्ता षष्ठ्यष्ट मीवर्जिते।। शुभाङ्गे।। लग्नतः केन्द्रेषु शुभेषु।। ३।६।११ पापेषु।। शुभांशे सत्युत्तमः।।
श्रुत्वा जातं पितापुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत्।। एतच्च रात्रावपि कर्तव्यम् श्राद्धादिकं हेम्रा कर्तव्यम्।। तत्कालाभावे सूतकान्तेऽपि कर्तव्यम्।।

तत्कालातिक्रमणे जातकर्मणि विचारः

सत्तिथय	१।२।३।५।६।७।१०।।११।१२।१३ एतासु तिथिषु व्यतिपातसंक्रान्ति-भद्रादिदोषरहितासु श्रेष्ठम्।
सद्वाराः	चन्द्रबुधगुरुशुक्राणां वारे। जन्माहात् प्रथम एकादशद्वादशदिने चोत्तमः।।
सद्भानि	मृ.,रे.,चि.,अनु.,उत्तरा ३, रो. पुनर्व., स्वा., ध., श्र., श., ह., पुष्य, अश्वि., एषु सत्तनौ चायं श्रेष्ठः।।

स्तनपानमुहूर्त्तस्य विचारः

उतरा ३, रो. अश्वि., रे., पुष्य, पुनर्व., अनु., ह., चि., मृ., ध., श्र., श., एषु भेषु शुभवासरे।। शुभतियौ। स्थिराङ्गे स्तनपानं प्रशस्तं स्यादिति।।
अथ सूतकापथ्यम्।। अन्नप्राशनोक्तभे तिथौ च दुर्योगादिरहिते श्रेष्ठम्।

बालस्यादौ दुग्धपानसमयश्च

ई.४	पू.१	आ.६	एकत्रिंशद्दिने चैव पयः शंखेन पाययेत्। अन्नप्राशन नक्षत्रदिवसोदयराशिषु।। इन्द्रवायु-यमशूलहस्तिनां बर्हिषात्रवणरक्षसा क्रमात्।। अर्द्धयाममनुवासरादितोदिक्षु संभ्रमति योगिनीचरा।।
उ.७	चरयोगिनी	३ द.	
रवा.	५ प.	८ नै.	

अथ चैत्रादि १२ मासानां नामानि

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	मासाः
वैकु	जना	उपे	यज्ञ	वासु	त्रिवि	योगी	पुंडरी	कृष्ण	अन	अच्यु	चक्र	नामा
ण्ठ	र्दनः	न्द्रः	पुरुष	देवः	क्रमः	शः	काक्षः		न्तः	तः	धरः	नि

अथ खट्वारोहणमुहूर्त्तस्य विचारः।। जन्माहात् १०।१२।१६।२२ एषु दिवसेषु। मृ.रे.चि.अनु.उत्तरा.३, रो., ह. अश्वि., पुष्य, अभि.,एषु भेषु।। शुभाहे।। रिक्तामारहितोतिथौ प्राक्शीर्ष बालकं तत्र विन्यसेत्।

अथ सूतिकाक्वाथौषधिभक्षणमुहूर्त्तज्ञानम्।। हस्त., अश्विनी, पुष्य, अभि., मृ., अनु., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., भानि। ३।६।९।१२ लग्ने। सू.चं.बृ.शु. वाराः। लग्नात् ७।८।१२ शुद्धेषु। रिक्ताऽमा रहिते तिथौ। पुंलग्ने पूर्णेन्दुयुते श्रेष्ठः। जन्मराशौ न रसभक्षणम्।

सूतिस्नानमुहूर्त्तस्य विचारः।। रे., उ.३, रो., ह., स्वा., अश्वि., अनु., एषु भेषु रवि, भौम, गुरु, दिवसेषु १।२।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु सत्। आर्द्रा. पुन. पु. श्र. म. भ. वि. कृ. मू. चि. एषु भेषु बुधशनिवारयोः ४।६।८।९।१२।१४ तिथिषु न सत् एतद्भिन्नतिथिनक्षत्रवारेषु मध्यमम्।

अथ भूम्युपदेशनमुहूर्त्तविचारः

तत्रादौ पृथ्वीवराहञ्चाभि पूज्य भौमबले पञ्चमे मासि कार्यम्।। उ.३, रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य, अभि. एतद्भेषु। रिक्तामारहिततिथौ।। स्थिरभस्याङ्गे।। शुभवासरे च।। बालकस्य कटिस्थले कटिसूत्रं बध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।। तत्र मन्त्राः।। रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगते शुभे।। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रियेति।। अथात्रैव बालाग्रे इमानि स्थापयेत्।। वस्त्रं।। शस्त्रं।। पुस्तकं।। लेखनीं।। स्वर्णं।। रौप्यं।। एषु एतद्बालो गृहणाति तैराजीविनी वृत्तिः प्रतिष्ठा च भवेत्।।

अथ निष्क्रमणमुहूर्त्तज्ञानम्। जन्मतश्चतुर्थे मासे यात्रोक्तसमयेऽर्कमितेहि वा सत्।

अथ नामकरणमुहूर्त्तस्य विचारः

सूतकान्ते नामकरणं कर्त्तव्यं स्वकुलोचितं।। बृहस्पतिः।। द्वादशे दिवसे वापि जन्मतो दिवसे शुभे।। षोडशे विंशतौ चैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात्।।

भानि	मृ., रे., चि., अनु., उ.३., रो., ह., अश्वि., पुन., अभि., स्वा.,पु.,श्र., ध., श., नक्षत्रेषु।
वाराः	चं. बु., बृ. शु. एषां वारे नामकर्महितम्।
तिथयः	१।२।३।५।७।११।१२।१३ तिथौ भद्रारहिते सत्युत्तमम्।
शुद्ध लं.	२।५।८।११ एतद्भस्याङ्गेऽष्टमशुद्धौशुद्धलग्ने शुभांशे चोत्तमम्।
लग्न शुद्धिश्च	लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैर्लग्नात् ३।५।११ पापैश्चोत्तमः।। लग्नात् ६।८।१२ सर्वे न शुभाः।। चन्द्रताराबले पितृपुत्रयोः।। दिवापूर्वाह्णे एव कर्तव्यं। मध्याह्ने मध्यमं तदग्रे न सत्।।

व्यतिपात - संक्रान्त्यमावैधृतिग्रहणाह - श्राद्धाह - पक्षच्छिद्ररिक्तापूर्णा शकुनोकिंस्तुघ्नाविष्टि - करणादीन्वर्जयित्वोक्त - तिथ्यादीनामकर्मविहितम्।। अथ विहित-कालातिक्रमे सतीदं गुरुशुक्रयोरस्तादिदोषरहिते सौम्यायने कार्यम्।। नान्यथेति।

अथान्नप्राशनमुहूर्त्तज्ञानाय चक्रमिदम्

तत्र बालानां षण्मासादारभ्य सममासेषु। कन्यकानां पञ्चममासादारभ्य विषममासेषु कार्यम्।। मासगणनासौरेणान्नप्राशनं परिमितिर्ज्ञेया।।

सद्भानि	रो. उत्तरा ३ मृ. रे. वि. अनु. ह. पुष्य. अश्वि. अभि. पुन. श्र. ध. स्वा. श. एषु भेषु शुभः।। अन्नसप्तशलाकविद्धं ग्रहणभं त्याज्यम्।
तिथयः	२।३।५।७।१०।१३।१५ सत् अन्येषु समः। वाराः चं. बु. वृ. शु.

एषां वारे श्रेष्ठः।। नान्यस्मिन्नह्नि। लग्नानि २।३।४।५।६।७।१०।११ एषु जन्माङ्गभयोर्मृत्युभस्याङ्ग तदंशकञ्च हित्वा प्रशस्तम्, नान्यलग्ने।

अथ प्रथमादिमासेषु बालकानां दन्तजननफलबोधकचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मासाः
स्वयं नाशः	कनिष्ठ भ्रातृ नाशः	भगिनी नाशः	मातृ नाशः	ज्येष्ठ भ्रातृ नाशः	सुभोगम्	तातात्सुखं	पुष्टता	लक्ष्मी	सौख्यं	सौख्यं	धन संपत्ति	फलानि

अथ जनौसदनो वोध्यं स्वपित्रादिहा। तदर्थ शान्तिविधेया इति।।

अथ जलपूजनमुहूर्त्तविचारः।। तत्र सूतिकायाः मासपूर्तौ सत्यां शुक्रे ज्योरस्ते चैत्रपौषयोर्मासे तथाधिकमासे जलं न पूजयेत्।। श्र., पुष्य., पुन., मृ., ह., मू., अनु. एषु भेषु विरिक्ते तिथौ।। चं.बु.गु. एषां वारे शुभम्।।

अथ कर्णवेधमुहूर्त्तज्ञानाय चक्रमिदम्

तत्र जन्माहात् १२।१६ दिने।। ततः ६।७।८ मासि।। ततः विषमवर्षे कर्णवेधः शुभः। चैत्रपौषावामाजन्म-मासचातुर्मास्यारिक्ता अमासमवर्षजन्मतारां हित्वा प्रशस्तः कर्णवेध इति।।

सत्तिथयः	१।२।३।५।७।१०।१२।१३।१५ एतत्तिथौ सिते।। कृष्णे च ति. १० यावत् शुभः।।
वाराः	चं.बु.बृ.शु एषां वारे भद्रारहिते सत्युत्तमः।।
सद्भानि	पुनर्वसु., अश्वि., ह., पुष्य., अभि., मृ., चि., अनु., रे.,श्र., ध., एतद्भेषु चन्द्रबले सति प्रशस्तः।।
शु.ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नेस्वंशेषु च सत्।।
लग्न शुद्धिः	लग्नादष्टमभवनेसंशुद्धे।। लग्नात् १।३।४।५।७।९।१०।११ एषुशुभैः तथा ३।६।११ एषुपापैश्चोत्तमः।। लग्नस्थे गुरौकर्णवेधः शुभावहः।।

अथ चौल मुहूर्त्तस्य बोधकार्थमिदं चक्रम्। तत्र वर्षत्रयाद्विषमवर्षे जन्मतः विचैत्रोद्गमने भानौ चोत्तमम् मनुना प्रथमवर्षेऽपि सदुक्तम् चौलम्।।

साद्भानि	ज्ये.,मृ., रे., चि., ह., अश्वि., पुष्य., अभि., स्वा., पुनर्वसु., श्र., ध., श., एषु चन्द्रतारानुकूले सति शुभः।।
वाराः	चं. बु. गु. शु. एतद्वारेषु भद्रादिदोषरहिते श्रेष्ठम्।।
सत्तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथौ सत्।। परन्तु पूर्वाह्नो।।
शु.ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नांशे श्रेष्ठोऽयम्।।

अथाक्षरारम्भमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्रोत्तरायणे रवौ। पञ्चमेब्दे गणेशविष्णुसरस्वती लक्ष्मीकुलदेवान्नत्वा सविधि सम्पूज्य च शिशोर्नूतनाक्षरलेखनारम्भः कार्यः।

तिथयः	२।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु दुर्योगादिरहितासु शुभः।।
वाराः	चं.बु. गुरु शुक्र एषां वारेषु। शुक्लपक्षे चाक्षरारम्भः शुभः।।
भानिः	अश्वि.आर्द्रा,पुनर्व,पुष्य.,ह.,चि.,स्वा.अनु.,श्र.,रे.,एषु भेषु शुभः।।
लग्न शुद्धिः	२।३।६।९।१२ एतद्भस्याङ्गेतंदशेचोत्तमः।। अत्राष्टमशुद्धेकुम्भां शकंविनोत्तमः।। जीवे बुध शुक्रे लग्ने खेटबलाढ्ये श्रेष्ठोऽयम्।।

अथ विद्यारम्भमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्रादौ अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सौम्यायने रवौ आश्विने कन्यार्के बुधप्राबल्ये

सद्वाराः	बु.सू.बृ.शु. एतद्वारेषु शुभः। गणेशवाग्देवतामभ्यर्च्य कार्यः।।
सद्भानि	अश्वि.पुष्य.आ.अनु.मृ. पुन. ह. चि. स्वा. श्र. ध. मू. पू.३. श्लेषा सत्
सत्तिथय	२।३।५।६।१०।११।१२ एषुसिते।। ति.५ यावत्कृष्णेचोत्तमः एषु सत्
साऽङ्ग लग्न शुद्धिः	२।३।६।९।१२ एतद्भस्याङ्गेशुभः।। लग्नादष्टमे सर्वेग्रहाः नेष्टाः। लग्नात १।२।४।५।७।९।१०।११ एषु शुभैः ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमा अधीतिः।इति।।

अथ व्रतबन्धमुहूर्त्तबोधकचक्रमिदम्

तत्रगुरुशुक्रयोर्वृद्धत्वास्तशिशुत्वकालंविनोत्तरायणे रवौ मघादि ५ मासेषु शुभः।। परन्त्वर्केन्दुगुरुशुद्धिवशेन। चैत्रे सति मीनार्के ब्राह्मणानां व्रतं सत्।।

सद्भानि	अश्वि,ह. पुष्य. उत्तरा ३ रो. ऽश्ले. स्वा. पुन. ध. श्र.. श. मू. चि. मृ. अनु. पूर्वा ३. रेव. आर्द्रा. एतद्वेधरहितेषु सत्।। परन्तुनापराह्ने।
तिथयः	२।३।५।१०।११।१२ एतासु शुक्ले २।३।५ कृष्णे तिथिसु चोत्तमः। केचन्मते ७।१३
सद्वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रारुवाणादिदोषरहिते सत्युत्तमः।।
लग्न शुद्धि-ज्ञान माह	त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रोद्विघूनादिकत्रिभः।। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्था लाभेसर्वे-व्रतेशुभाः।।१।। चं.सु.बृ. लग्नेशोलग्रात ६।८ नशुभाः।। चन्द्रशुक्रौ लग्नात १२ निंद्यौ। ११।५।८ पापाः न शुभाः। ६।८।१२ सौम्या न शुभाः ।। ३।६।११ पापाः शुभदा। पूर्णेन्दु वृषकर्कगतोलग्नेश्रेष्ठोऽन्यथान।। लग्नेऽर्कशुभः।। चन्द्रांशं विनेति।।

अथ दीक्षाग्रहणमुहूर्त्तस्य बोधकचक्रमिदम्

मासः	चै. वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. फा. एतन्मासेषुशुभमधिमासे।।
भानिः	अश्वि. रो. उ.३ पू.३ चि. अनु. पुष्य. स्वा. पुन. मू. श्र. ध. श. एषु सत्।।
वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम्।।
तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१२ एतासु तिथिषु श्रेष्ठं कृष्णेयावत्पंचमीसत्।।
शुद्धलग्नं	२।३।४।५।६।७।९।१२ एतद्भस्याङ्गेषुचंद्रतारानुकूलेसति शुभम्।
लग्न शुद्धिश्च	लग्नात् ३।६।११ एषु पापैः १।४।५।७।९।१० एषु शुभैश्चोत्तमम्। अष्टम्यां संक्रान्तौ रविचन्द्रोपरागेनोत्तमम्। गुरुशुक्रयोरुदये श्रेष्ठम्।

अथ द्वादशस्थचन्द्रफलम्। पाणिग्रहे स्त्रीसुरतोभिषेकेयात्राव्रतबन्धने च।। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वं प्रोक्तः शुभोद्वादशो हिमांशुः ।इति।।

षोडशसंस्काराः।।- गर्भाधानमतश्च पुंसवनकं सीमन्तजाताभिषे। नामाख्यं सहनिष्क्रमणे च तथाऽन्नप्राशनं कर्म च।। चूड़ाख्योव्रतबन्धको -ऽप्यथचतुर्वेद-व्रतानां पुनः। केशान्तः सविसर्गकः परिणयः स्यात् षोडशीकर्मणाम्।। ब्रह्म-क्षत्रियविट् शूद्रा वर्णास्त्वाद्यस्त्रयोद्विजः।। निषेकादिश्म-शानान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रिया।। शूद्रोऽप्येवंविधः कार्यो विना मन्त्रेण संस्कृतः।। स्त्रीणां चौलान्तसंस्कारान् प्रकुर्वीत ह्यमन्त्रकाद। पुंस्त्रियोरुभयोरत्र विवाहः स्याद्यथाविधिः।।

अथ विवाहमुहूर्तस्य विचारः

स्त्रीणामष्टमवर्षातस्त्रि अतः परं सम वर्षे नृणां विषमवर्षेषु। विवाहसमये स्त्रीणां नृणां क्रमेण गुर्वर्कः सबली। तद्दिने उभयोश्चन्द्रबलं विवाहः शुभाः प्रोक्तः।
सद्वारा- शु. चं. बु. वारेषु श्रेष्ठ। सत्तिथयः- रिक्ता (४।९।१४) मावर्जयित्वा सर्वासु तिथिषु श्रेष्ठः। सद्भानि-मृग, ह., अनु. म. रो. उत्तरा ३ स्वा. रेवती मूल एषु भेषु वेधादिदोषरहितेषु शुभः।।
लग्नानिः- लग्नात् ३।६।११ एषु स्थानेषु भौमः २।३।११ स्थानेषु चन्द्रः ७।८।१२ एषु स्थानेष्वतिरिक्तस्थानेषु बुधगुरु ३।६।७।१२।८ एतद्भिन्नस्थानेषु शुक्रः शुभः। वर्गोत्तमांशश्च शुभदः स्यात्।

अथ वधू प्रवेश मुहूर्तस्य विचार

विवाहादूर्ध्वं वध्वाः प्रथम भर्तृगृहे प्रवेशो वधूप्रवेशः स च विवाहदिवसात् २।३।४।५।६।९।१०।१२।१४।१६ दिवसेषु शुभः अतः ऊर्ध्वं विषममासवर्षेषु पञ्चवर्षात्परं स्वेच्छया।।
सद्वाराः- चं.बृ.शु.बु. दुष्टयोगादिरहितेषु शुभा सत्तिथयः १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ एषु भद्रादिदोषरहितेषु शुभः।
साङ्गलग्नशुद्धिः- २।३।५।६।८।९।११।१२ एतद्भस्यांगे शुभः। लग्नात् १।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभः। १।६।११ स्थानेषु शुभः ३।६।११ स्थानेषु पापाः चतुर्थाष्टमशुद्धौ निशिप्रवेशः शुभः।

अन्याधानमुहूर्तस्य विचारः- तथोत्तरायणे रवौ स्वशाखेशगुरु सितानामुदये चोत्तमः।

सद्वारा - सू. चं. बु. गु. श. एषु. वारेषु, भद्रादिदोषरहितेषूत्तम्। सत्तिथयः २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथयः शुभाः।

सद्भानि- वि. कृ. रो. ज्ये. मृ. रे. उत्तरा ३ पुष्य एषु भेषु चन्द्रतारानुकूले सति शुभः। न्यूनाधिकमासे न कार्यः।

सल्लग्नानि - १।२।३।५।६।७।८।९ एतद्भस्य नवांशो चोत्तमः लग्नशुद्धिः त्रिकोणोपचये केन्द्रे सूर्यजीवकुजेन्दुषु। शेषे चोपचये शुद्धरन्ध्रेअन्याधानं चोत्तमम् चन्द्रलग्नेन शुभः। रव्यारेन्दुशुक्रेज्य न नीचे नास्तंगते वारिगेहे वर्धिते चेत्तदोत्तमः धनुलग्ने जीवयुते वा मेषगे भौमे ८।१० गते वा ३।६।११ गतेषु सूर्य चन्द्र शनि राहु एषामन्यतमे चक्रभेदे सत्युतमः!

अथ वृक्षारोपणस्य मन्त्रमप्याह - ओम् वसुधेति च शीतेतिपुण्यदेति वरदेति च।। नमस्ते सुभगे देविद्रुमोऽयं त्वयि रोप्यते।

अथ राज्याभिषेकमुहूर्त्तस्य विचार-

तथोत्तरायणे रवौ गुर्वीन्दु शुक्रदृश्ये यथा भौमार्कलग्नेशदशमेशवायेचेदुत्तमः परन्तु अधिमासे, चैत्रे रात्रौ भौमे न शुभदः।

सद्वारा- सू. चं. बु. वृ. शु. एषु वारेषु चन्द्रबले कुयोगादिरहिते सति शुभदः।

सत्तिथय- १।२।३।५।७।८।१०।१२।१३।१५ एषु भद्रादिदोषरहिते शुभः।

सद्भानि- ज्ये. श्र. ह.अश्वि. पुष्य. मृ. रे. अनु. उत्तरा ३, रो. एषु शुभः।

सल्लग्नानि- २।३।५।६।७।८।११।१२ एतद्भस्यांशे वा जन्मराशि वा उपचये लग्ने सद्ग्रहेक्षिते शोभनः जन्मांगयोमृत्युराशौ लग्ने नेष्टः।

लग्नशुद्धि- लग्नाद् पापस्त्रिषष्ठायगतैः शुभः। लग्नाच्छुभग्रह केन्द्रे त्रिकोणायधनत्रिसस्थितैः शुभः मित्र क्षेत्र गतैः खेटैश्चेच्छुभः अस्तंगतेनीचारि शत्रु गृहे च न सत्। पञ्चदुष्ट ग्रहैश्चेदुत्तमोऽयम्।

अथ भर्तृ गृहात्पितृगेहगमनमुहूर्त्तस्य विचारः- दारुणोग्रभिन्नेषु भेषु शनिसूर्यभौमभिन्नवारेषु सत्तिथौ कुयोगादिभद्रादिदोषरहिते शुभलग्नेशुभः।

अथ कोष्ठादौ धान्यस्थापनमुहूर्त्तस्यात्र विचार- मृ. पुन. रे, अनु. श्र. ध. अश्वि. पुष्य रो. ध. उ. एषु भेषु सत्तिथौ सू. चं. गु. शु. वारेषु।। अथ निष्कासनधान्यानां। उ. ३, रो. ध. श. एषुभेषुसद्वारे शुभांगे सत्तिथौचप्रशस्तः।

अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठमुहूर्तस्य विचार- तत्रोत्तरायणे भानौ जीवेन्दुशुक्रे दृश्ये सिते पक्षे चोत्तमा प्रतिष्ठा।

सद्वारा- सू. चं. बु. गु. शु. एषु. वारेषु शुभः।

सत्तिथय- १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ एतासु तिथिषु भद्रादिदोषरहितासु शुभदः।

सद्भानि- मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३, रो. एषु भेषु चन्द्रतारानुकूलेषु सत्सु शुभः। अथवा यस्य देवस्य प्रतिष्ठ कर्तुमिष्ट स्तस्य तत्स्वामिनोक्तकाले तिथौ च प्रशस्तः।

लग्नशुद्धि- २।३।५।६।।९।११।१२ एतद्भस्यांगांशे शुभः चरांगे अशुभः। लग्नात् १।२।४।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभैः ३।८।११ सेन्दुभिः पापैश्चातीवोत्तमः पंचाष्टखेटादृष्टलग्नं इष्टग्रहे शुभांशे श्रेष्ठम्।।

अथ वापीकूपतड़ागादीनामारम्भः मुहूर्तस्य विचारः तद्वारा- चं. बु. बृ. शु. एषु वारेषूत्तमम्।

तिथयः- १।२।३।५।७।८।१०।१२।१५ एतत्तिथिषु शुभः। सद्भानि ह, अनु. रो. उत्तरा ३, घ. श. रे पुष्य, मृ. पूषा एतद्भेषु स्वस्वचक्रशुद्धिसत्यां शुभे मासिगुरुसितयोरस्तादि-दोषभद्रादिदुर्योगरहिते दिने शुभः।

लग्नशुद्धि- लग्ने जीवज्ञऽथवा दुर्बलक्रूरं शुक्रे चापि मेषूरणस्थे। आप्येचन्द्रे सूर्यतोयश्रयाणामारम्भाः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम्।

अथचौलमुहूर्त्तस्य बोधकचक्रम्।

तत्रविशेषः - ऋतुमत्याः सूतिकायाः सुनोश्चौलादिना च सूनोर्मातरि गर्भिण्यां चूड़ाकर्म न कारयेत्। पञ्चमाब्दाद्चोर्ध्वं तु गर्भिण्यापि कारयेत्। तत्र जन्मतो द्वित्रिपंचोन्मितेऽब्दे स्वचराशे कुत्रचित्प्रथमवर्षेऽपि भवेत्। विचैत्रोदगयने भानोः तत्रापि ३ वर्षे श्रेष्ठ ५।७ वर्षे मध्यम ९।११ अधमस्मृतम, **सत्तिथयः-**२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथिपर्वोनादिषु शुभं लग्नशुद्धि - २।३।४।।७।।९।१२ एतद्भस्य लग्नांशे शोभनम्। तत्रापिजन्मांगभात् मृत्युभं विनालग्नात् १।२।४।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभः ३।६।११ पापस्तधा ६।८।१२ स्थानातिरिक्त स्थानेष्विन्दो शुक्ररहिताष्टमभवने शुद्धे सत्युत्तमः। **सद्भानि -**मू. रे. ह. उ. ३ रो. पुनर्व. स्वा. अश्वि. नक्षत्रेषु सत्तनो चायं श्रेष्ठः।

द्विरागमन मुहूर्त्त- स च विवाहतो द्वितीयवारं भर्तृगृहे गमो द्विरागमः विषमाब्दमासयोः मेषवृश्चिककुम्भराशौ रवौसति शुक्लपक्षे वरस्य गुरुभान्वोः प्राबल्ये, गुरुशुक्रयोरस्तादिदोषस्य वध्वा सम्मुखदक्षिणयोः शुक्रकृतदोषस्यचाभावे सत्युत्तमः सद्वाराः - चं. बु. वृ. शु. एषु वारेषु दुर्योगादिरहितेषु शुभः। सद्भानि- ह. अश्वि. पुष्य, उत्तरा ३, रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मृ. रे. चि. अनु. एषुभेषु चन्द्रतारानुकूलेसति शोभनः लग्नशुद्धि लग्नात् ३।६।११ एषु स्थानेषु गुरौ १।४।७।१० स्थानेषु भृगो शुभलग्ने शोभनः।

अथ नूतनवध्वाः पाककर्ममुहूर्त

मृगोत्तरातिष्यकुशात्पाक श्रुतित्रये ब्रह्म दुर्द्रैव पौष्णम्। शुभे तिथो शुभांगे च प्रकुर्यान्नवधूनूतनपाककर्म।।१।। स्थिरे लग्ने सुखे शुद्धं सप्तमे च वलान्विते रन्ध्रे खेटविहीने न नवोढा पाकमाचरेत्।।२।।

व्यवसायमुहूर्त्तः-नक्षत्राणि- मृ. रे. चि. अनु. उत्तरात्रयं रो. ह. पुष्य अभि। तिथय- १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ ३०। वाराः- रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। लग्नानि-कुम्भेतराणि सर्वाणि शुभानि। शुक्रचन्द्रग्रहो लग्ने शुभदौ। ८, १२ स्थानगाः पापाः न शुभदाः २, १० ११ स्थानेषु शुभग्रहा शुभदाः।।

अथ क्षेमार्थ शान्तिमुहूर्त्तविचार- मू. ह. अश्वि. पुष्य उत्तरा ३, रो. रे. स्वा. श्र. आश्ले. ध. शः पुन. अनु. म. एषु शुभांगे वारे सप्तमी, सितेज्यरस्तादि दोषरहिते आवश्यके व्रतं शुभदः। लग्नात् विधौ ४ स्थे १० रवौ, १ लग्ने जीवे, ८।९ पापरहिते वाराः।

हलप्रवहणमुहूर्त्त - नक्षत्राणि - मू. वि. स्वा. पुन. म. ध. श. उ३ रो. मृ. रे. चि. अनु. हस्त. आर्द्रा पुष्य. अभि।वाराः- शनि रवि विहाय सर्वे शुभः। तिथयः- ४, ६, ९, १४, ३० विहाय सर्वे शुभाः चन्द्रोदयः। चन्द्र मकर मीन कर्क नवांशेसु पापग्रहा निर्बलाः सिंह कुम्भ, मेष मकर तुलाराशि लग्नानि।

बीजवपनमुहूर्त्तः - नक्षत्राणि- मू. म. स्वा. ध. उ.३ रो. मृ. चि. रे. अनु. ह. पुण्य. अश्वि. एषु भेषु। वाराः- सोम, बुध, गुरु, शुक्रः। तिथय- ४, ६, ९, १४, ३० विहाय सर्वे शुभाः।

कणमर्दन मुहूर्त्त -अनु. अ. भ. रे. पू. फा. ज्ये. रोहिणी, कृत्तिका, एषु भेषु सत्तिथौ, सद्वारे शुभांगे चोत्तमम्।

यात्रामुहूर्त्त-शुभनक्षत्राणि- अश्विनी मृ. पुन. पुष्य ह. अनु. श्र. ध. रे. मध्यमनक्षत्राणि- रो. उ.३, ज्ये. पू.३, श.। शुभतिथयः- भद्रा रहिता २, ५, ७, १०, ११, १३ तथा कृष्णपक्षे प्रतिपदा विशेष - कुम्भराशौ कुम्भनवांशके वा कदापि यात्रा न कर्त्तव्या। शुभलग्ने १, ४, ५, ६, ९, १० स्थानेषु शुभग्रहाः शुभदाः ३, ६, १०, ११ स्थानेषु पापग्रहा शुभाः अशुभ लग्ने १, ६, ८, १२ चन्द्रः। दशमे शनिः, शुभः सप्तमे शुक्रः ७, २, ६, ८ स्थानेषु लग्नेशः।

ध्रुवस्थिर-संज्ञकनक्षत्राणि - उ.३ रो. भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्। तत्र स्थिरं बीजगेह शान्तारामादि सिद्धये। तीनों उत्तरा रोहिणी हस्त और रविवार के नक्षत्र दिन योग से ध्रुव वा स्थिर संज्ञा होती है। इसमें स्थिर कार्य करना बीज बोना, गृह बनाना शान्ति करना बगीचा लगाना आदि कार्य करना शुभ फलदायक होता है।

चल-संज्ञक नक्षत्राणि-स्वात्यादित्ये श्रुते स्त्रीणिचन्द्रश्चापि चरंचलं। तस्मिनगजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम्।। स्वाती पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठ, शतभिषा और सोमवार इनका चर और चल नाम है। इन नक्षत्रों में घोड़ा आदि पर चढ़ना बगीचे में जाना शुभद होता है।

क्रूरोग्र नक्षत्राणि-पूर्वात्रयं याम्य मघे उग्र क्रूर कुजस्तथा। तस्मिन् घाताग्नि शाठ् यानि विषशस्त्रादि सिद्धयति। तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और मंगलवार इनका नाम उग्र और क्रूर है। इनमें शठता, घात, विष, शस्त्र, अग्निकार्य करने में सफलता मिलती है।

मिश्र-साधारण संज्ञक नक्षत्राणि-विशाखाग्नेयभे सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम्। तत्राग्नि कार्यमिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्धयति। विशाखा कृतिका और बुधवार इनका नाम मिश्र और साधारण है। इसमें अग्निकार्य और साँड़ छोड़ना शुभद है।

क्षिप्रं लघु सज्ञक नक्षत्राणि-हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघुगुरुस्तथा। तस्मिन्पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम्।।हस्त, अश्वनी पुष्य, अभिजित् और गुरुवार इसका क्षिप्र और लघु नाम है। इसमें व्यवसाय करना रतिज्ञान, भूषणनिर्माण और रत्न धारण और चित्रण कला कार्यारम्भ होने का मुहूर्त्त होता है।

मृदु-मैत्रसंज्ञक नक्षत्राणि

मृगान्त्य चित्रा मित्रर्क्षं मृदुमैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बर क्रीडा मित्र कार्यं विभूषणम्।

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार इनको मृदु मैत्र कहते हैं। इनमें गीत, कपड़ा, क्रीड़ा मित्र-कार्य और भूषण बनवाना शुभ है।

तीक्ष्ण-दारुण संज्ञक नक्षत्राणि

मूलेन्द्रार्द्राहिनं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम्।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम्।।

मूल, ज्येष्ठ, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार दारुण है। इनका नाम तीक्ष्ण और दारुण है। इनमें अभिचारघात, भेद पशुदमन आदि तीक्ष्ण कार्य सफल होते

तात्कालिक करणवशेन संक्रान्तीनां वाहनादिज्ञानाय चक्रम्।

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प	नाग.	किंस्तुः
स्थिति	निवि	उपवि.	ऊर्ध्वं	सुप्त	निविष्ट	निवि	निविष्ट	ऊर्ध्वं	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्वं
तत्फलं	सम	मध्यम	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समहर्घ	महर्घ	महर्घ	समहर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	श्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवा.	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
तत्फलं	भीतिः	भयम्	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीतं	हरित	पांडु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कंबल	नग्न	धनाय
उपव.	श्वेत	रक्तं	चित्र	पीत	नील	कंबल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वल्कल	वेणव
आयुधं	बन्दूक	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	शस्त्र	बाण
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष	पक्वान्न	दुग्ध	दधि	चित्रान्न	गुड़	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	मृतिका	गौरी	महावर	ओतु.	हरिद्रा	कज्जल	अगर	कपूर
जातय	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण सं.
पुष्प	पुन्नाग	जाती	वकुल	केतकी	विल्व	अर्क	दूर्वा	कमल	वेला	पाटल	जपा
भो.पा.	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लोह	खप्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	वज्र	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पीत	हरित	भूर्जप.	सित	पांडु	नील	कृष्ण	चर्म	वल्कल	धूम्र
स्नान	गंगा	यमुना	सरस्व	मन्दा	नर्मदा	कृष्णा	गोदा	भार्गो.	तुंगा	कावेरी	कृष्णा
वय	बालं	कुमार	गतायुः	युवा	प्रौढ़ा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	अन्ध्या	पुत्रार्थि	प्र.वा.

अथ संक्रान्तिवाहनादीनां दुष्ट फलं तदाह - वाहनान्नायुधाहारदीनां वृत्युपजीविनाम्। विनाशः स्याच्च संक्रान्तेर्वस्त्रादीनां महर्घता।। स्थितिनिविष्ट सुप्तानां तथा ज्ञेयं विनाशनम्।।२।।

मासेषुशून्यतिथ्यादि ज्ञानाय चक्रमिदं शुभे न सत्।

चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मार्ग	पौष	माघ.	फा.	मासा
९	१२	कृ.१४	कृ.६	३	१	१०	कृ.५	७	४	कृ.५	कृ.४	शू.ति.प.
८	१२	शु.१३	शु.७	२	२	११	शु.१४	८	५	शु.६	शु.३	शू.ति.प.
अश्वि. रोहि.	चि. स्वा.	उ.षा. पुष्य	पू.फा. ध.	उ.षा. श्र.	श. रे.	पू.भा.	कृ. म.	वि. वि.	आर्द्रा अश्वि.ह.	श्र. मू.	भ. ज्ये.	शून्यन-क्षत्राणि
कृ.११	मी.१२	वृ.२	मि.३	मे.१	कं.६	वृ.८	तु.७	ध.९	क.४	म.१०	सिं.५	राशयः

काष्ठसंचयचक्रमर्कभात्।			अश्वचक्रमर्कभात्			शिविकाचक्रमर्कभात्			सफलंभद्रांगचक्रम्		
			स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि
अधः	६	पाकसुरसः	शीर्षे	५	सुखम्	पूर्वे	५	शुभम्	मुखे	५	कार्यहानिः
शीर्षे	२	शवदाहः	पृष्ठे	१०	लाभदः	दक्षिणे	५	पीड़ा	कण्ठे	१	पीड़नं
मध्ये	४	सर्पभयम्	पुच्छे	२	स्त्री.नाश	पश्चिमे	५	भयम्	वक्षसि	१०	द्रव्यहानिः
पूर्वे	४	मित्रागमः	पादे	४	रणेभंग	उत्तरे	५	रोगः	नाभौ	४	कलहः
दक्षिणे	४	रोगभयम्	उदरे	५	अश्वनाशः	मौ.लौ.	३	सुखम्	कटयां	६	अर्थनाशः
पश्चिमे	४	क्वाथादिः	मुखे	२	अर्थलाभः	दंडयोः	४	शुभम्	पुच्छे	३	शुभम्
उत्तरे	४	सुखम्									

अथवारदोषशमनार्थदानमाह-भानुस्ताम्बुलदानादपहरतिनृणांवैकृतंवासरोत्थं। सोमः श्रीखण्डदानादवनिबरसुतो भोजनात् पुष्पदानात्।। सौम्यः शुक्रस्यमन्त्रीहारहरनमनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रैः तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयो ब्रह्महत्यां परे च।।१।। इति।।

त्रिधाशान्तिः ज्योतिः प्रकाशे।।- यथोक्तमौषधीस्नानं ग्रहविप्रार्चनं तथा।। ग्रहानुद्दिश्यहोमा वत्रिधा शांतिर्बुधै स्मृताः।।१।। श्रीपतिः।। देवब्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचः सम्पादनात्प्रत्यहं, साधूनामपि भाषणाद्युतिरवेच्छ्रेयः कथाकर्णनात्।। होमादध्वरदर्शनाच्छुभमनोमावाज्जहान्तो न कुर्वन्ति कदाचिदेवपुरुषस्येव ग्रहाः पीडनम्।।२।। इति।।

अथ दिनमानस्य १६ कलांश मुहूर्तादिज्ञानम्।

सूर्य	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
१४	९	३	८	६	४	१	दुष्टक्षण
	१२	४		१२	६	२	
१४	१२	१०	८	६	४	२ दि.	कुलिका
१३	११	९	७	५	३	१ रा.	कुलिका
६	४	२	१४	१२	१०	८	कंटकक्षण
८	६	४	२	१४	१२	१९	कालवेला
७	१३	३	९	१५	५	११	अर्धयाम
८	१४	४	१०	१६	६	१२	
१०	८	६	४	१३	१४	१२	यमघंट

अत्रदोषफलमाह - वशिष्ठः।

नियनं प्रहरार्धे तु निः स्वत्वं यमघंटके।
कुलिके सर्वनाशः स्याद्रात्रावेते न दोष भाक्।।

विजोप्तिचक्र राहुभादिनभाचक्रम्		
८	सूर्य	अशुभम्
३	बुध	शुभम्
४	शुक्र	अशुभम्
३	रवि	शुभम्
१	सोम	अशुभम्
३	मंगल	शुभम्
१	वृह.	अशुभम्
३	राहु	शुभम्
४	केतु	अशुभम्

गजचक्रमर्कभात्		
स्थान	नं.	फलानि
शीर्षे	३	लक्ष्मी
कण्ठे	३	श्रीलाभः
मुखे	२	मरणम्
हृदि	३	सुखम्
अग्रपादे	४	व्याधिः
पृष्ठपादे	४	भीतिः
पुच्छे	४	मृतिः
पृष्ठे	४	व्याधिः

द्वारचक्रमर्कभात्	
नं.	फलानि
४	राज्यलाभः
२	हानिः
४	धनप्राप्ति
२	भयम्
४	मृत्युभयम्
२	मृत्यु
४	द्रव्यप्राप्तिः
२	शोकभयम्
२	धनलाभः

प्रयोगारम्भार्कभात्			नौकाचक्रंसूर्यभुक्तभात्			शनिचक्रंशनिभात्		
स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि
शीर्षे	३	हानिः	स्तनाग्रे	३	अशुभम्	मुखे	१	अर्थनाश
मुखे	४	सिद्धिः	मध्ये	६	शुभम्	द.भुजे	४	सुजयप्राप्ति
कण्ठे	३	मृत्युः	मुखे	३	अशुभम्	अङ्गे	६	भ्रमणम्
हस्ते	४	शत्रुभयम्	हृदि	३	अशुभम्	वा.भुजे.	४	रोगभयम्
हृदये	३	इष्टाप्तिः	पृष्ठे	१	अशुभम्	हृदये	५	श्रियागमः
उदरे	३	हानिः	अग्रे	३	अशुभम्	मस्तके	३	राज्यलाभ
कट्यां	३	इष्टाप्तिः	मुखाग्रे	३	अशुभम्	नेत्रे	२	सौख्यं
चरणे	४	धनप्राप्ति	मध्ये	३	शुभम्	गुह्ये	२	मृत्युभयं

मासदशानयनम् - गतवर्षसंख्यायां द्वादशगुणां विधाय तत्र जन्मवर्षसंख्या संयोज्यद्विहीनां तां नवभि भक्ते शेषेदशा नायको भवति।। वर्षमुद्दादशायां द्वादशो भागः मासदशाकालः।

शनिचक्रम् - द. कर. ४ - रोगः। पादयुगल ६ लाभ। वाम, ४ गमनम्। ज्वर, ५ दरिद्रता। ३- लाभम्। द. नेत्र वा. नेत्र १ - सौभाग्यम् गुदा. ९ अल्प मृत्युः।

जलाशयारम्भमुहूर्त्तः मानि। ह. अनु. रे.उत्तरा ३ ध. श. म. रो. पुष्य, मृ. पू.षा. गुरुसितयोरस्तादि दोषरहिते चं. बु. बृ. शु. वारे च रिक्तोन तिथौ शुभः। लग्नेजीवेज्ञेऽथवा दुर्बलैश्च क्रूरैः शुक्रेवापिमेषूरणस्थे। आप्ये चन्द्रे सर्वतोयाश्रयाणाम्मारम्भाः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम्।

अग्नि वास

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि ह्निवासः। सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च।।

तद्चक्रम्

शेषः	अग्निवासः	फलः
१	स्वर्गे	प्राणनाशः
२	पाताले	धननाशः
३,०	मर्त्ये	सुखः

विशेष-शुक्ल प्रतिपदा से तिथि गिने तथा एक जोड़े, रविवार से दिन गिने पुनः दोनो को जोड़कर चार का भाग दे बचे शेष के अनुसार फल होगा।

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां १२ भावस्थ ग्रहफलानि

भावाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र ५	रिपुः ६	जाया ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः अगदः	वक्ता रोगीधनी	सुखी विक्रमी	असुखी सोद्विग्नः	निरस्व असुतः	बलवान् शत्रुजितः	स्त्रीजितः खलः	नेत्ररोगी अल्पायुः	सुवीर्य सुखभाक्	सुखशौर्य भाक्	बहुधन वान्	व्यंगः पतितः
चन्द्रः	सुरूपः अन्धः	कुटुम्बी धनी	हिंस्र सात्विकः	ससुखी सुशीलः	धनी पुत्रवान्	अल्पायुः बहुशत्रुः	ईर्ष्यस्तीव्र मदः	रोग पीडितः	सौभाग्यः धनीच	धर्मार्थ शौर्ययुतं	ख्यातः सुलाभः	अंगहीनः हिंस्र
भौमः	क्रूरः व्रणी	कोपी कुटिलः	विक्रमी- सुधीः	विसुखः पीडितः	असुतः दरिद्रः	अरिजितः सुखी	दाराजित रणर्सचः	अल्पपुत्रः रोगी	पापरतः दुर्मनोरथः	सुखैश्वर्य- वान्	बहुधनी सुखी	जातिभ्रष्टः दारहा.
बुधः	विद्वान् सुखी	धनी गुणी	दुर्जनः अरिमर्दनः	पंडितः सुखी	मन्त्री असुतः	अशत्रुः विशीलः	धर्मज्ञः सुकीर्ति	सद्गुणी धनी	पुत्रार्थः सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	यशस्वी धनी	अज्ञः पतितः
गुरु	चिरायुः विद्वान्	सुवाक् धनी	कृपणः पापी	सुखी धनी	धीमान् प्रतापी	अशत्रुः कामी	पितृतोऽधिकः	नीचः अल्पायुः	तपस्वी पुत्रवान्	सधनः सुकृतः	सलाभः पुत्रप्राप्तः	खलः दरिद्रः
शुक्रः	सुकामी सुखी	धनी सु-वाक्यं	पापी कृपणः	सुखी सुधीः	सुखी धीमान्	रोगी अशत्रुः	कलह प्रियः	नीचः दीर्घायुः	प्रतापी तपस्वी	सुधनी मानवान्	सुमतिः सलाभः	खलः बंधुनाशः
शनिः	आलसी रोगी	वक्तारः गोधनी	मति विक्रमवान्	विसुखः दुःखी	दरिद्री विपुत्रः	शत्रुजित सुखी	स्त्रीजित दुःखी	नेत्ररोगी अल्पपुत्रः	सुतीर्थ सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	प्रभूत धनवान्	दुखीः पतितः
राहुः	सुकामी रोगी	अधमः विरोधी	सुधी विक्रमी	असुखी मातृहानि	कुमित्रः दुर्भगः	सबलः श्रीयुत	सप्रमेह दुराचारी	रोगी गतायुः	सबलः दैन्ययुक्तः	सुखी मानी	धनीअपुत्र ख्यातः	कष्टः पतितः
केतुः	गतायुः सकामः	खलः धनहानिः	शूरः पराक्रमी	मातृहानि दुःखी	असुत मूर्खः	धनी सवांध्यः	प्रमेह रोगी	क्लेशयुक्तः व्रणी	पापी दुर्भगः	श्रेष्ठपितृ हानिः	सधनः पराक्रमी	दुर्जनः पतितः
गुलिका	रोगार्तः सम्बन्धीः	क्रोधी विषयी	विशोदरः अशोकः	रोगी पापकृत	स्वल्पपुत्रः अल्पायु	रिपुहन्ता विनादी	कुदारः कृतघ्नः	चिन्तित दुःखी	पापकृत निर्दयी	सुखी विमानः	सुधनी विपुत्रः	हीनांग नीचरताः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां १२ भावस्थग्रहाणां फलजातकोक्तम्।

स्त्री:	तनु १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र ५	रिपुः ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	विधवा सक्रोधा	दरिद्रा दुखार्ता	सुत धनान्विता	दरिद्रा सुपीड़ा	नष्टा- त्मजा	सुख धनाढ्या	सर्वसुख विमुक्ता	विधवा दुःखार्ता	धन धर्मा- न्विता	सुकर्म- रता	सुलाभा बहुपुत्रा	सरोगा विधवा
चन्द्रः	अल्पा- युषी	बहुधन पुत्रान्विता	सुखार्थ युक्ता	सुभागार्थ युक्ता	सुपुत्रा संसुता	सरोगा विधवा	पतिप्रिया सुदेहा च	रोगादिता कुनेत्रा	सुख पुत्रा- न्विता	धनधर्म युक्ता	भव्य विधिज्ञा	हीनांगी व्ययाढ्या
भौमः	विधवा दुःखार्ता	बन्ध्या सरोगा	सहज- विरहिता	दुःखार्ता विधवा	अपुत्रा कुसंगना	रोगादि रहिता	विधवा कुलटा	विध्वा रोगार्ता	विधर्मा दुःखिनी	कुकर्मरता कुपुत्रा	नृपादर्थ लाभा	खला रुजार्ता
बुधः	सौभाग्य वृद्धिः	धनाढ्या सतीच	धनाढ्या पुत्रवती	सुखगृहा- न्विता	श्रीकान्ति युक्ता	गतायुषा सकोपा	विदग्धा पतिव्रता	कृतघ्ना भीतियुता	सुभगा- युधर्मा	सत्कर्म वृद्धियुता	सुलाभा पतिव्रता	कृशांगा सुपुत्रा
गुरु	सती सुभगा	वित्तसौ भाग्ययुक्ता	सहजा- न्विता	सौख्यार्थ युक्ता	साध्वी सगुणा	वृहत्पदा सत्यहोत्री	सौभाग्य कीर्तियुता	सरोगा विशीला	कृतज्ञा पुत्राढया	साध्वी शुभगा	सुपुत्रा सुरूपा	सरुजा सुव्यथा
शुक्रः	सुमुखी पतिव्रता	धनी सुवाक्या	धनाढय परहन्त्री	सुख कीर्तियुक्ता	सुख सुतान्विता	विसुखा दरिद्रा	पतिव्रता शास्त्ररता	विसुखा प्रमत्ता	धर्मपरा सुभगा	सुकर्मार्थ युक्ता	पुत्रार्थ लाभयुक्ता	सुव्यया दुःखार्ता
शनिः	बन्ध्या दरिद्रा	निर्धना दुखयुक्ता	सुभगा सुदत्ता	हृद्रोगार्ता बन्ध्या	विपुत्रा विसुखा	सगुणा सुभगा	विधवा सरोगा	विधवा दुःखिता	बन्ध्या शोकार्ता	पापरता सधवा	सुलाभा सुपुत्रा	रोगार्ता शुद्धश्च
राहुः केतुः	पुत्रदा दुःखार्ता	दरिद्री दुःखार्ता	सवित्ता रोगाढया	रोगार्त मातृहा	सुतार्थ- रहिता	निरोगार्थ युक्ता	सदुःखा विधवा	सदुःखिता विधवा	वन्ध्या शोकार्ता	कुकर्म- रता	निरोगी सुभगाः	खला सरोगी

अथ संक्रान्तिवाहनादीनां दृष्टफलं तदाह- वाहनावपुषहारादीनां मृत्यूपजीविनाम्। विनाशः स्याच्चरसंक्रान्तेर्वसादीनां महर्घता।। स्थितिर्विष्ट सुप्तान तथा ज्ञेयं विनाशनम्।।२।।

नक्षत्राणां स्वामिशुभाऽशुभादिविशेषसंज्ञा।

नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभः	जातयः	संज्ञाः	मुखम्	घ.उ.ने.	यात्रादोहदम्
अश्विनी	अश्विकु.	शुभम्	वैश्यः	ल.क्षि.	तिर्यक्	५०	तिलतण्डुल
भरणी	यमः	नाशकः	चाण्डालः	क्रू.उग्र.	अधः	२४	साक्षतमाषः
कृतिका	वह्नि	अशुभम्	ब्राह्मणः	मि.सा.	अधः	३०	माषः
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभम्	शूद्रः	ध्रु.स्थिर	ऊर्ध्वः	४०	गव्यम्
मृगशिरा	चन्द्रः	शुभम्	कृषकः	मृदुमै.	तिर्यक्	१४	गोघृतम्
आर्द्रा	शिवः	अशुभम्	क्रूरजातिः	ती.दा.	ऊर्ध्व.	२१	दुग्धम्
पुनर्वसु	अदितिः	शुभम्	वैश्यः	चर.च.	तिर्यक्	३०	हरिणमांसम्
पुष्य	गुरु	शुभम्	क्षत्रियः	ल.क्षि.	ऊर्ध्वः	२०	मृगारक्तम्
श्लेषा	सर्पः	अशुभम्	चाण्डालः	ती.दा.	अधः	३२	पायसम्
मघा	पितरः	शोकदः	शूद्रः	क्रू.उग्र.	अधः	३०	चाषमांसम्
पू.फा.	भगः	अशुभम्	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	अधः	२०	मृगमांसम्
उ.फा.	अर्यमा	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर	ऊर्ध्वः	१८	शशकमांसम्
हस्त	सूर्यः	शुभम्	वैश्यः	ल.क्षि.	तिर्यक्	२१	साठी
चित्रा	त्वष्टा	शुभम्	कृषकः	मृ.मै.	तिर्यक्	२०	प्रियंगु
स्वाती	वायुः	शुभम्	क्रूरजातिः	चं.च.	तिर्यक्	१४	अपूपम्
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभम्	चाण्डालः	मि.सा.	अधः	१४	नानापक्षिणः
अनुराधा	मित्रः	शुभम्	शूद्रः	मृ.मै.	तिर्यक्	१०	सत्फलम्
ज्येष्ठ	इन्द्रः	शुभम्	कृषकः	दा.ती.	तिर्यक्	१४	कूर्ममांसम्
मूल	राक्षसः	क्षयः	क्रूराजातिः	दा.ती.	अधः	५६	सारिकमांसम्
पू.षा.	जलम्	धनहानिः	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	अधः	२४	गोधिकामांसम्
उ.षा.	विश्वदे.	हानिः	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर	ऊर्ध्वः	२०	शल्यमांसम्
श्रवण	विष्णु	वृद्धिः	चाण्डालः	च.च.	ऊर्ध्वः	१०	कृशरान्न
घनिष्ठ	वसवः	शुभम्	कृषकः	च.घ.	ऊर्ध्वः	१०	मुद्गमोदकम्
शतभिषा	वरुणः	शुभम्	क्रूरजातिः	च.च.	ऊर्ध्वः	१८	यवपिष्टम्
पू.भा.	अजैकच.	अशुभम्	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	ऊर्ध्वः	१६	मत्स्यान्नम्
उ.भा.	अहिर्बु.	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर.	ऊर्ध्वः	२४	चित्रान्नम्
रेवती	पू.षा.	शुभम्	शूद्रः	मृ.मै.	तिर्यक्	२०	दध्योदनम्

नष्ट वस्तुज्ञानाय सुलोचनादिसंज्ञा

नक्षत्र	संज्ञा	दि.	लाभाऽलाभ	ता.	स्वरूपाणि
अश्विनी	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	अश्वमुख
भरणी	मध्य	प.	दूरेश्रवण	३	योनिस्वरूपम्
कृत्तिका	सुलो.	उ.	अलाभ	६	छुरकाकृतिः
रोहिणी	अन्ध.	पू.	शीघ्रलाभ	५	शकट वत्
मृगशिरा	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	मृगास्य
आर्द्रा	मध्य	प.	दूरेश्रवण	१	मणिसदृशम्
पुनर्वसु	सुलो.	उ.	अलाभ	४	गृहसदृशम्
पुष्य	अन्ध.	पू.	शीघ्रलाभ	३	बाणाकृतिः
आश्लेषा	मन्द	द.	यत्न लाभ	५	चक्राकारम्
मघा	मध्य	प.	दूरेश्रवण	५	गृहसदृशम्
पू.फा.	सुलो.	उ.	अलाभ	२	मञ्चकाकृतिः
उ.फा.	अन्ध	पू.	शीघ्र लाभ	२	खट्वाकारम्
हस्त	मन्द	द.	यत्न लाभ	५	हस्ताकारम्
चित्रा	मध्य	प.	दूरे श्रवण	१	मौक्तिकम्
स्वाती	सुलो	उ.	अलाभ	१	प्रवालाकारम्
विशाखा	अन्ध	पू.	शीघ्र लाभ	४	तोरणसमम्
अनुराधा	मन्द	द.	यत्न लाभ	४	बलिसदृशम्
ज्येष्ठा	मध्य	प.	दूरेश्रवण	३	कुण्डलाकृतिः
मूल	सुलो.	उ.	अलाभ	११	सिंहपुच्छवत्
पू.षा.	अन्ध	पू.	शीघ्र लाभ	२	गजदन्तम्
उ.षा.	मन्द	द.	यत्न लाभ	२	विमानसदृशम्
श्रवण	सुलोच.	प.	अलाभ	३	मञ्चकसदृशम्
धनिष्ठा	अन्ध	उ.	शीघ्रलाभ	४	मृदङ्गाकृतिः
शतभिषा	मन्द	पू.	यत्नलाभ	१०	वर्तुलम्
पू.भा.	मध्य	द.	यत्न लाभ	२	मञ्चकारम्
उ.भा.	सुलो.	प.	दूरे श्रवण	२	युग्मसदृशम्
रेवती	अन्ध	उ.	अ.लाभ	३२	मर्दलाकारम्

नक्षत्रस्य पादवशाच्चकष्टविलोकनचक्रम् ज्वरादि रोगोत्पत्तौ नक्षत्रस्य पादवशादत्र दिनसंख्या

दि.सं.	दानानि	१च	२च	३च	४च	जपार्थमन्त्राः
दि.९	भोजन	९	११	१०	२०	मृत्युञ्जयमन्त्रजपः
दि.११	गोऽन्नादि	०	८०	४०	११	यमायत्वेतिमन्त्रः
दि.९	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निमूर्धेतिमन्त्रः
दि.७	घृतदान	७	९	१८	३०	ब्रह्मयज्ञेतिमन्त्रः
मा.१	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेतिमन्त्रः
मृतिः	गोदान	०	१८	०	०	नमस्तेरुद्रमन्त्रः
दि.७	पित्तल	७	१५	२	२१	अदितिर्द्यौमन्त्रः
दि.७	तैलान्न	७	७	१०	२१	बृहस्पतेतिमन्त्रः
मृतिः	गोऽजानि	०	७	४१	०	नमोस्तुसर्पेतिमन्त्रः
दि.२०	वस्त्राज्य	१५	७	१७	२०	पितृभ्यइतिमन्त्रः
मृतिः	भोजन	०	१५	०	३०	भगप्रणेतिमन्त्रः
दि.७	अन्नदान	७	१४	७	६०	अर्यमर्णमन्त्रः
दि.१५	तिलदान	११	१७	१५	०	उदुयंजातवमन्त्रः
दि.११	दुग्धदान	११	९	९	१६	त्वष्टातुर्येतिमन्त्रः
मृतिः	गो-घृत	६०	१७	३०	०	वायोरग्रेतिमन्त्रः
दि.१५	गो-स्वर्ण	१५	०	४	१३	इन्द्राग्निरितिमन्त्रः
स्थिरः	गो-घृत	६०	१२	३६	६०	नमोमित्रेतिमन्त्रः
मृतिः	तिलदानं	५९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रेतिमन्त्रः
दि.९	रोप्योपान	०	९	१५	६	मातापुत्रेतिमन्त्रः
मृतिः	गोमुक्ता	०	१५	२५	१०	आपोधर्मेतिमन्त्रः
मास१	भोजन	३०	२४	२६	१६	विश्वदेवेतिमन्त्रः
दि.११	श्रीफल	६०	२४	६	९	विष्णोरराटेतिमन्त्रः
दि.१५	अश्वान्न	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेतिमन्त्रः
दि.११	भोजनान्न	०	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेतिमन्त्रः
मृतिः	भोजन	०	१२	२१	१८	अजैकचरणोक्तमन्त्रः
दि.७	अन्नदान	६०	१	९	१५	अहिर्बुध्नेतिमन्त्रः
स्थिरः	वृषभदान	१८	१९	१९	२०	पूषान्तव्रतेतिमन्त्रः

अथ रोगार्त्तस्येष्टकालवशाद्बाधाज्ञानम्।

तिथिवारञ्च नक्षत्रं लग्नयामञ्च संयुतम्। वसुभिस्तु हरेद्भागं शेषे बाधा नियोजयेत्।। हये ७ ऽग्नौ ३ देवबाधा स्यात् पितरौ नेत्रदन्तिनः २।८ षट् चतुर्थे।। ६।४ मृतबाधा ग्रहाणामेकपञ्चके १।५।। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवमरणं वदेत्।। रामवाणरसाष्टौ च नन्दरुद्रश्च (३।५।६।८।९।११) जीवति। एक १ पक्षौ २ युगा ४ सप्तदशा, ७।१० अर्को १२ नात्र जीवति।। अन्यदपि राजमार्त्तण्डे।। वारर्क्षञ्चतिथिदिशा परिमिति संयोज्य नागैर्भजेल्लब्धांकेनफलं च नाग ८ नयने २ दीर्घ पितृर्नान्यथा।। सप्ते राममिते ३ सुरस्य विदित मर्के ६ च वेदं ४ तथा। प्रेतस्यापि च खेचरस्य विदितं चन्द्रे १ वाणाधिकं ५।। लब्धांकं त्रि ३ गुणं तथा वसुयुतं वेदेन गुण्यन्ततः। सप्तान्येष्वधिकं यथा विधुमितं कौल्यञ्च दोषं वदेत् साम्यं वन्यभवं च राज कुलजं स्याच्छत्रुजं पंक्तिजं शून्यं व्योमभवं तथास्य विविधोपायश्च शान्तिं वदेत्। कौल्यं होमद्विजार्चनैः शुभकरं वाच्यं चतुष्काणके। होमे वन्यभवे तिथिवरभवेभोज्यश्च वस्त्रेण वा।। राज्ये तीर्थ पदे तथाप्यरिकृतेशक्तिक्रियादानतो गायत्री जपतोहि पंक्ति विषये आकाशजा दीपतः।। **सर्पदशने भेषजम्**।। गोमूत्रेनरमूत्रेर्वापुराणेन घृतेन वा। हरिद्रापानमात्रेण विषं हन्ति चराचरम्।। दशवर्षात्परं सर्पिः पुराणमिति कथ्यते। गोक्षीरे रजनीक्वाथं पिवेत्सर्वविषापहम्।।

सप्तमांश चक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.	अं.
१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	४ १७ ८
२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	८ [illegible]
३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	१२ [illegible]
४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	१७ [illegible]
५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	२१ [illegible]
६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ शु.	२५ [illegible]
७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	३० ०

अथात्र नवांशचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.	क.
मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	३	२०
शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	६	४०
बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	१०	०
सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	१३	२०
र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	१६	४०
बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	२०	०
शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	२३	२०
मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु	श.	मं.	र.	शु	श.	२६	४०
गु.	बु.	बु.	गु.	गु	बु.	बु	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	३०	०

द्वादशांश चक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.	अं.	कं.
मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	२	३०
शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	५	०
बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	७	३०
सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	१०	०
र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	१२	३०
बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	१५	०
शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	१७	३०
मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	२०	०
गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	२२	३०
श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	२५	०
श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	२७	३०
गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	३०	०

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ चैत्र शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं याम्यगोलः। बसन्तऋतुः।
दिनांक २० मार्च - २ अप्रैल सन् २०२६ ई.। (रा.फाल्गुन २९ - चैत्र १२)

दि.मा. घ.	प.	चैत्र शु. ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२९	५५	२	शुक्र.	५४	२५	रात	३	४७	रेवती	५४	२१	रात	३	४५	ब्रह्म	४३	४७	रात	११	३२	बा	२५	३८	को	५४	२५	श्रीवत्स	२०	१७	६	२९	मेष	५४	२१	६	१	५	५९	०	२४	११	५	६	३३	५९	३९	+	६	७	३४	मेषराशिः रात ३।४५ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। चन्द्र दर्शनम् मु.३० समताकरम्। याम्य श्रृंगम् महर्घताकरम्। ब्रह्मचारिणीदेवी, ज्येष्ठगौरीदर्शनपूजनञ्च। सिन्धारा द्वितीया २। सर्वाथाऽमृतसिद्धियोगो(क)
२९	५८	३	शनि.	४९	३१	रात	१	४८	अश्विनी	५१	१७	रात	२	३१	ऐन्द्र	३७	५	रात	८	५०	ते	२१	५८	गर	४९	३१	सौम्य	२१	१८	७	३०				६	०	६	०	०	१	११	६	६	१२	५९	३६	+	६	८	४०	मु.सव्वाल १० हिजरी सन् १४४७। इदुल फितर (ईद)। चन्द्रघण्टादेवी सौभाग्यगौरी दर्शनपूजनञ्च। सरहुल (बिहार)। सौभाग्य सुन्दरी ३ व्रतम्, मनोरथ तृतीया ३। मन्वादिः ३। अरुन्धती व्रत ३ गणगौरी व्रतम्३(ख)
३०	०	४	रवि.	४४	९	रात	११	४०	भरणी	४७	४०	रात	१	४	वैधृति	२९	५४	सायं	५	५८	व	१६	५०	वि	४४	९	कालदण्ड	२२	१९	८	१				६	०	६	०	उ+	२२	११	७	५	४८	५९	३४	+	५	९	४६	भद्रा १६।५० (दि.१२।४४) उ. ४४।९ (रा.११।४०) या. (स्वर्ग)। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। कुष्माण्डादेवी श्रृंगारगौरीयात्रादर्शनम् ४। स्कन्दमाता, विशालाक्षी गौरी यात्रादर्शनम्। पुष्पाञ्जली ४(जैन)।(ग)
३०	४	५	सोम	३८	१८	रात	९	१८	कृत्तिका	४३	४१	रात	११	२७	विष्कुंभ	२२	२१	दिन	२	५५	बव	११	१३	बा	३८	१८	स्थिर	२३	२०	९	२	वृष	१	४०	५	५९	६	१	०	४६	११	८	५	२२	५९	३२	+	५	१०	५६	वृषराशिः प्रातः ६।३९ वादने। स्कन्द माता, विशालाक्षी गौरी यात्रा दर्शनम् ५। श्रीपंचमी ५। श्रीरामराज्य महोत्सवः। मीनावतारः ५ कल्पादिः ५ लक्ष्मी पूजनम्। "शुक्लायामथपञ्चम्यां चैत्रेमासिशुभानना। श्रीब्रह्मलोकान्मानुष्यं(घ)
३०	७	६	मंगल	३२	१८	सायं	६	५४	रोहिणी	३९	३१	रात	९	४७	प्रीति	१४	३९	दिन	११	५१	को	५	१८	ते/गर	३२/५९	१४/१८	मातंग	२४	२१	१०	३				५	५९	६	१	१	१०	११	९	४	५४	५९	२९	+	५	१२	४	कात्यायनी देवी ललितागौरी दर्शनपूजनञ्च। श्रीस्कन्दषष्ठी रवि षष्ठी ६ व्रतम् (चैती छठ) (बिहार-झारखण्ड)। श्रीस्कन्ददमनकोत्सवः। रवियोगः ३९।३१ (रा.९।४७) या.। द्विपुष्करयोगः ३९।३१ (रा.९।४७) उ.।
३०	११	७	बुध	२६	१९	दिन	४	३०	मृगशिरा	३५	२७	रात	८	९	आयुष्मान/सौभाग्य	६/५२	५१/२१	प्रातः	६/८	४२/३८	व	२६	१९	वि	५३	३२	अमृत	२५	२२	११	४	मिथुन	७	२९	५	५८	६	२	१	३३	११	१०	४	२३	५९	२७	+	४	१	६	मिथुनराशिः दिवा ८।५८ वादने। भद्रा २६।१९ (दि.४।३०) उ. ५३।३२ (रा.३।२३) या. (स्वर्ग)। कालरात्रि भवानी गौरी यात्रा दर्शनम् पूजनञ्च। सूर्य सप्तमी सूर्यपूजाश्च ७। मोदन व्रतम् ७। नाम सप्तमी ७। अन्नपूर्णा(ङ)
३०	१५	८	गुरु	२०	४६	दिन	२	१५	आर्द्रा	३१	३४	सायं	६	३५	शोभन	५१	४९	रात	२	४१	बव	२०	४६	बा	४८	१	काण	२६	२३	१२	५				५	५७	६	३	१	५७	११	११	३	५०	५९	२५	+	४	२	१	महाष्टमी ८ व्रतम्। महागौरीदेवी-मंगलागौरी यात्रा दर्शनम् पूजनञ्च। महानिशा (नवमी पूजा)। भवान्युत्पत्तिः। इयञ्चाष्टमी नवमी विद्धाग्राह्यां। ब्रह्मवैवर्ते। अन्नपूर्णापरिक्रमा २०।४६ (दि.२।१५) यावत्।(च)
३०	१९	९	शुक्र.	१५	१५	दिन	१२	२	पुनर्वसु	२८	१०	दिन	५	१२	अतिगण्ड	४४	५३	रात	११	५३	को	१५	१५	ते	४२	५१	लुम्बक	२७	२४	१३	६	कर्क	१४	१	५	५६	६	४	२	२०	११	१२	३	१५	५९	२३	+	४	२	४९	कर्कराशिः दिवा ११।३२ वादने। महानवमी ९ व्रतम्। श्रीरामनवमी ९ व्रतम्। सिद्धिदात्री देवी श्रीमहालक्ष्मी गौरीदर्शन पूजनञ्च। यावन्नवमी होमादिकञ्च दिवा १२।२ वादनम् यावत्। तत्पश्चात् नवरात्रव्रत(छ)
३०	२३	१०	शनि.	१०	२८	दिन	१०	६	पुष्य	२५	२३	दिन	४	४	सुकर्मा	३८	३१	रात	९	१९	गर	१०	२८	व	३८	३०	मित्र	२८	२५	१४	७				५	५५	६	५	२	४४	११	१३	२	३८	५९	२०	+	४	३	२९	भद्रा ३८।३० (रा.९।१९) उ. (मर्त्ये)। रवियोगः २५।२३ (दि.४।४) या.। (क)५४।२१ (रा.३।४५) या.।
३०	२६	११	रवि.	६	३३	दिन	८	३२	श्लेषा	२३	३४	दिन	३	२१	धृति	३२	५२	रात	७	४	वि	६	३३	बव	३५	४	वज्र	२९	२६	१५	८	सिंह	२३	३४	५	५५	६	५	३	७	११	१४	१	५८	५९	१८	+	३	४	५	सिंहराशिः दिवा ३।२१ वादने। भद्रा ६।३३ (दि.८।३२) या.। कामदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। श्रीविष्णु दोलोत्सवः सायं दोलाधिरुढ़योः लक्ष्मी नारायण पूजयेत्। यमघंटयोगः २३।३४ (दि.३।२१) उ.।
३०	३१	१२	सोम	३	३५	दिन	७	१९	मघा	२२	३४	दिन	२	५५	शूल	२८	०	दिन	५	५	बा	३	३५	को	३३	३७	ध्वांक्ष	३०	२७	१६	९				५	५३	६	७	३	३१	११	१५	१	१६	५९	१६	+	३	४	३८	सोम प्रदोष व्रत १२ पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। श्री भीमचण्डी विन्ध्याचली देवी दर्शन यात्रा। मदन द्वादशी १२। श्रीविष्णुदमनकोत्सवः १२। रवियोगः २२।३४ (दि.२।५५) उ.। (ज) दमनकारोपणं पूजनञ्च १४ अपराह्ने।
३०	३५	१३	मंगल	१	४०	दिन	६	३२	पूर्वाफा.	२२	४४	दिन	२	५८	गण्ड	२४	४	दिन	३	३०	ते	१	४०	गर	३१	२९	धूम्र	३१	२८	१७	१०	कन्या	३८	५	५	५३	६	७	३	५४	११	१६	०	३२	५९	१४	+	२	५	९	कन्याराशिः रात्रि ९।६ वादने। श्रीमहावीर जयन्ती १३ (जैन)। श्रीअनंग त्रयोदशी १३ व्रतम्। मदन पूजा १३। ⊙ रेवती नक्षत्रे रविः ४०।५० (रा.९।४२)। भौमे-जया सिद्धयोगः १।४० (दि.६।३२) या.। श्रीशिवनृसिंह(ज)
३०	४१	१४	बुध	०	५९	दिन	६	१६	उत्तराफा.	२४	७	दिन	३	३१	वृद्धि	२१	७	दिन	२	१९	व	०	५९	वि	३१	१६	प्रवर्धमान	१	२९	१८	११				५	५२	६	८	४	१७	११	१६	५९	४६	५९	११	+	२	५	३९	भद्रा ०।५९ (दि.६।१६) उ. ३१।१६ (सायं ६।२२) या. (पाताले)। व्रताय पूर्णिमा १५। सर्वार्थसिद्धियोगः २४।७ (दि.३।३१) उ.। सर्वदेवदमनकोत्सवः १५। (झ)(जैन)। श्रीद्वारिकाधीश अन्नकूट (मथुरा) चित्रवस्त्र दानम्।
३०	४६	१५	गुरु	१	३४	दिन	६	२९	हस्त	२६	४९	दिन	४	३५	ध्रुव	१९	१०	दिन	१	३१	बव	१	३४	बा	३२	३३	राक्षस	२	३०	१९	१२	तुला	५८	४६	५	५१	६	९	४	४०	११	१७	५८	५७	५९	९	+	२	+	+	तुलाराशिः रात्रिशेष ५।२१ वादने। स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। चैत्री पूर्णिमा १५। श्रीहनुमज्जयन्ती १५ (दक्षिणात्य)। काश्यां संकटमोचन मन्दिरे संगीत महोत्सवः। मन्वादिः १५। नवपद ओली समाप्तिः(झ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
२ शु.	११	७	४४	२०	१०	१९	२९	३१	४७	८	१०	१४	१५	४७	मा१	४५	२	२०	५१	४	१	२०	११	२२	४१	५१	७४	१८	११	९	४९	५३	७	२६	१०	१३	४०	४७
३ श.	०	१	४०	३४	१०	२०	१६	३९	४७	७	१०	१४	२५	३२	१०	०	२	२०	५२	२४	१	३७	११	२३	५६	९	७४	१३	११	९	५७	१९	७	२७	१०	१३	३७	३६
४ र.	०	१५	४३	२६	१०	२१	३	४६	४७	६	१०	१४	३५	३२	१०	१५	२	२०	५४	१	१	५५	११	२५	१०	२२	७४	१०	११	१०	४	४६	७	२७	१०	१३	३४	२५
५ सो.	०	२९	५१	१४	१०	२१	५०	५२	४७	६	१०	१४	४५	४७	११	३०	२	२०	५५	५६	२	११	११	२६	२४	३२	७४	७	११	१०	१२	१३	७	२९	१०	१३	३१	१४
६ मं.	१	१४	१	३९	१०	२२	३७	५८	४७	४	१०	१४	५७	१७	१४	२८	२	२०	५८	७	२	२५	११	२७	३८	३९	७४	७	११	१०	१९	४२	७	२९	१०	१३	२८	४
७ बु.	१	२८	१०	१९	१०	२३	२५	२	४७	४	१०	१५	११	४५	१९	३१	२	२१	०	३२	२	३६	११	२८	५२	४६	७४	५	११	१०	२७	११	७	२८	१०	१३	२४	५३
८ गु.	२	१२	१७	२४	१०	२४	१२	६	४७	३	१०	१५	३१	१६	२५	४५	२	२१	३	८	२	४५	०	०	६	५१	७४	४	११	१०	३४	३९	७	२६	१०	१३	२१	४२
९ शु.	२	२६	१८	२९	१०	२४	५९	९	४७	१	१०	१५	५७	१	३१	१८	२	२१	५	५३	२	५८	०	१	२०	५५	७४	२	११	१०	४२	५	७	२६	१०	१३	१८	३१
१० श.	३	१०	१८	२२	१०	२५	४६	१०	४७	०	१०	१६	२८	१९	४०	२२	२	२१	८	५१	३	१०	०	२	३४	५७	७४	२	११	१०	४९	३१	७	२६	१०	१३	१५	२०
११ र.	३	२४	०	११	१०	२६	३३	१०	४७	०	१०	१७	८	४१	४६	६	२	२१	१२	१	३	२१	०	३	४८	५९	७४	०	११	१०	५६	५७	७	२५	१०	१३	१२	९
१२ सो.	४	७	३२	५४	१०	२७	२०	१०	४७	०	१०	१७	५४	४७	४८	३३	२	२१	१५	२२	३	३३	०	५	२	५९	७३	५८	११	११	४	२२	७	२५	१०	१३	८	५८
१३ मं.	४	२०	५०	३७	१०	२८	७	१०	४६	५९	१०	१८	४३	२१	५१	४०	२	२१	१८	५५	३	४०	०	६	१६	५७	७३	५५	११	११	११	४७	७	२५	१०	१३	५	४७
१४ बु.	५	३	५४	४१	१०	२८	५४	९	४६	५७	१०	१९	३५	१	५५	४९	२	२१	२२	३५	३	४९	०	७	३०	५२	७३	५३	११	११	१९	१२	७	२२	१०	१३	२	३६
१५ गु.	५	१६	४४	५८	१०	२९	४१	६	४६	५७	१०	२०	३०	५०	५८	११	२	२१	२६	२४	४	१	०	८	४४	४५	७३	५३	११	११	२६	३४	७	२२	१०	१२	५९	२५

फलम्- १९ मार्च गुरुवार से ही संवत् २०८३ शुरु हो चुका है क्योंकि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विगत अमावस्या मे क्षयवती है। **संवत्सर के राजा गुरु हैं।** ब्रह्माजी ने सृष्टि का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था और इसी दिन मत्स्यावतार तथा सतयुग का आरम्भ हुआ था। आज के दिन सूर्योदय के साथ नव संवत्सर का स्वागत करना चाहिए तथा अपने घरों-देवाल्यो को तोरण ध्वजपताका से सुसज्जित करना चाहिए। **पञ्चाङ्ग में लिखे वर्ष फल** को पढ़ना चाहिए तथा पढ़कर सबको सुनाना चाहिए। घर-घर कलश स्थापित कर माता भगवती की विधिवत् पूजा आराधना **दुर्गा सप्तशती** का पाठ किया जायेगा। चैत्र नवरात्र मे भगवती के नौ स्वरूपों के साथ **नौ-गौरी** का भी दर्शन पूजन प्रतिदिन क्रमानुसार किया जायेगा। **चैती छठ २४ मार्च मंगलवार** को मनाई जायेगी। इसको भी डाला छठ के मान-विधान के अनुसार किया जाता है। **महाष्टमी** का व्रत २६ मार्च गुरुवार को किया जायेगा। घर-घर मे की जाने वाली **नवमी पूजा** भी २६ मार्च गुरुवार को की जायेगी। इसे भवानी उत्पत्ति के साथ **बसियऊरा** के रूप मे भी मनाते है। **महानवमी** का मान २७ मार्च शुक्रवार को होगा तथा नवरात्रि की समाप्ति से सम्बन्धित हवन-पूजन नवमी तिथि तक दिन में **१२ बजकर २ मिनट** तक किया जायेगा। तत्पश्चात् पूर्ण नवरात्र व्रत की पारणा भी कर ली जायेगी। **रामावतार की रामनवमी** २७ मार्च शुक्रवार को सर्वत्र विशेषकर रामलला की जन्मस्थली अयोध्या मे विशेष धूम-धाम शास्त्रीय एवं पारम्परिक विधान के अनुसार मनया जायेगी। **'भए प्रकट कृपाला'** की मधुर स्वर लहरी सबकुछ राममय कर देगी। गोस्वामी तुलसीदास ने आज ही के दिन से राम चरित मानस की रचना प्रारम्भ की थी, इसके उपलक्ष्य में **रामचरित मानस जयन्ती** मनाई जायेगी। **कामदा एकादशी व्रत** का मान सबके लिए २९ मार्च रविवार को होगा। **विन्ध्याचली भगवती** की यात्रा एवं दर्शन पूजन ३० मार्च सोम. को किया जायेगा। जैन जगत का सबसे प्रमुख पर्व **श्रीमहावीर जयन्ती** ■

पं.१ चैत्र शुक्ल ८ गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ७४
अयनांशाः २४/१२/२७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१०	१०	२	०	११	१०	४
११	१२	२४	१५	२१	०	१०	१३	१३
३	१७	१२	३१	३	१६	३४	२१	२१
५०	२४	६	१६	८	५१	३९	४२	४२
५९	८५५	४७	२५	२	७४	७	३	३
२५	५	३	४५	४५	४	२६	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-ति.२ शुक्रे पूर्वाभाद्रपदे रात्रि १२।१५ वादने कुम्भराशौ १५ गुरुतः मीने राशि ११।५० वादने। बुधः- कुम्भ- राशौ २ शुक्रतः मार्गी। गुरुः- पुनर्वसु नक्षत्रे मिथुने। शुक्रः-मीन राशौ ७ बुधतः मेष राशौ रात्रि ४।१० वादने। शनिः-३ शनितः उ.भा.३ चरणे रात्रि ७।१० वादने। राहुः-शतभिषा ३चरणे, केतुश्च-पू.फा.१ चरणे। ८गुरुतः राहुः-शतभे २ चरणे केतुश्च-मघा४ चरणे।

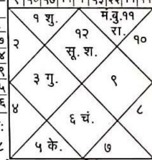
चैत्र शुक्ल — दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ सो. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ सो. घं.	मि.	१३ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	१५ गु. घं.	मि.
मीन	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३६	६	३२	६	२८
मेष	८	५७	८	५३	८	४९	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६
वृष	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३
मिथुन	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२५	१२	२१	१२	१७
कर्क	३	२५	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४
सिंह	५	३९	५	३५	५	३१	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कन्या	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१
तुला	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७
वृश्चिक	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४
धनु	२	३०	२	२६	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९
मकर	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२९	३	२५
कुम्भ	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि २ शुक्रे**–रेवत्यां पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं **उपनयनं ल.३** (वि.कु.), विपणि व्यापारः, हलप्रवहणः बीजवपन, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्र धारणं शय्यासनाद्युपभोग आवेदनपत्र लेखनं, भूमिक्रयः वाहन क्रयः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ३ शनौ**–अश्विन्यां इष्टिका निर्माणं कृष्ण वस्त्रधारणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ४ रवौ**–भरण्यां रोगविमुक्त स्नानं। **तिथि ५ सोमे**–कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं। **तिथि ६ भौमे**–रोहिण्यां लालवस्त्र धारणं पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा सायं ६।५४ वादनात्परं प्रसूति स्नानं रात्रि ९।४७ वादनात्परं मृगभे शल्यकर्म। **तिथि ७ बुधे**–भद्रा दिवा ४।३० वादनात्पूर्व मृगभे पुंसवनं सीमन्तः जातकर्म: नामकरणं अन्नप्राशनं विपणि व्यापारः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं पूर्व दिग् यात्रा दिवा ८।५८ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८ गुरौ**–आर्द्रायाम् मुकदमाकार्य दिवा २।१५ वादनात्परं रिक्तायां रोग विमुक्तस्नानं। **तिथि ९ शुक्रे**–रिक्ता दिवा १२।२ वादनात्परं पुनर्वसौ पुंसवनं सीमन्तः अन्नप्राशनं **वि.कु. उपनयनं ल.३**, गवां क्रया विक्रयः नववस्त्राभूषण धारणं हलप्रवहणं बीजवपनः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं भूमिक्रयः, वाहनक्रयः दिवा ११।३२ वादनात्परं उत्तर दिग् यात्रा पुष्ये जलयन्त्र कर्म। **तिथि १० शनौ**–पुष्ये नीलमरत्न कृष्ण वस्त्र धारणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् यात्रा। **तिथि ११ रवौ**–भद्रा दिवा ८।३२ वादनात्परं **श्लेषायां वि.कु. उपनयनं ल.३** धान्यच्छेदनं जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्यं। **तिथि १२ सोमे**–मघायां कणमर्दनं भूमिक्रयः जलयन्त्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं दिवा २।५५ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां आ.प्रसूति स्नान उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १३ भौमे**–रिक्ता प्रातः ६।३२ वादनात्पूर्व पूर्वाफाल्गुन्यां प्रसूति स्नानं। **तिथि १४ बुधे**–भद्रा सायं ६।२२ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे जातकर्म अन्नप्राशनं, विपणि व्यापारः गवां क्रय विक्रयः वाहनक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगः दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि १५ गुरौ**–हस्त नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरण अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः गवांक्रय विक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः भूमिक्रयः वाहन क्रयः सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं हस्ते दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं।

पं.२ चैत्र शुक्ल १५ गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ८१
अयनांशाः २४/१२/२८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१०	१०	२	०	११	१०	४
१७	१६	२९	२०	२१	८	११	१२	१२
५८	४४	४१	३०	२६	४४	२६	५९	५९
५७	५८	६	५०	२४	४५	३४	२५	२५
५९	७६५	४६	५८	४	७३	७	३	३
९	५०	५७	११	१	५३	२२	११	११



(ख) गौरी दोलोत्सवः। दोलाधिरुढ़योः शिवपार्वत्योः पूजनम्। रवियोगः ५१।१७ (रा.२।३१) उ.। शनिरिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ४९।३१ (रा.१।४८) उ.। (ग) राष्ट्रीय चैत्र मास शाके १९४८ प्रारम्भः। रवियोगः ४७।४० (रा.१।४) या.। (घ) सम्प्राप्ता केशवाज्ञया "पशुपतिश्वर पूजनम्। पुष्पाञ्जलिव्रतारम्भः (जैन)। सर्वार्थसिद्धियोगः ४३।४१ (रा.११।२७) उ.। रवियोगः ४३।४१ (रा.११।२७) उ.। (ङ)परिक्रमा २६।१९ (दि.४।३०) उ.। बलिदानादिकञ्च महानिशा ८। नवपद ओली प्रारम्भः (जैन)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।२७ (रा.८।९) या.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः २६।१९ (दि.४।३०) या.। (च) अशोकाष्टमी ८। अशोक कलिका प्राशनम् ८। पुष्पांजलि व्रत समाप्तिः (जैन)। ब्रह्मपुत्रस्नानम्। हरिद्वारे मनसा देवी दर्शन पूजनञ्च। मेला बहूफोर्ट (जम्मू)। सर्वार्थसिद्धिरवियोगश्च ३१।३४ (रा.६।३५) उ.। (छ) पारणा। श्री रामावतारः ९। मध्याह्ने कर्क लग्ने श्रीराम जन्म महोत्सवः सर्वत्र विशेषतो अयोध्यायाम्, श्रीराम जन्म भूमि राम लला दर्शनम्, सरयू स्नानम्। श्रीरामचरितमानस जयन्ती। स्वामी नारायण जयन्ती ९ (अक्षरधाम)। सर्वार्थसिद्धियोगः २८।१० (दि.५।१२) या.।

■ ३१ मार्च मंगलवार को मनायी जायेगी। व्रत के लिए **पूर्णिमा** का मान **१ अप्रैल** बुधवार को होगा जबकि स्नान-दान की पूर्णिमा **चैत्री पूर्णिमा** सहित श्री **हनुमज्जयन्ती** दक्षिणात्यमत से २ अप्रैल गुरुवार को होगी। काशीस्थ संकट मोचन हनुमान जी के श्री चरणों में संगीत की स्वराञ्जलि प्रस्तुत की जायेगी। **रेवती नक्षत्र** का सूर्य ३१ मार्च मंगलवार को रात ९।४२ बजे से आयेगा। जल में पैदा होने वाली चीजों एवं सुगन्धित द्रव्यों को क्षति पहुँचेगी। चौपायों पशुओं, मूंग, उड़द, लहसुन, सेमल की रुई का भाव तेज चलेगा।

राशिफलम्

मेष-पीड़ा	तुला-शत्रुनाशः
वृष-वित्ताप्तिः	वृश्चिक-दैन्यम्
मिथुन-कर्मसिद्धिः	धनु-रोगं
कर्क-पापवृद्धिः	मकर-सुखं
सिंह-रोग भयं	कुम्भ-हानिः भयम्
कन्या-गमनम्	मीन-स्थान हानिः

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ वैशाख कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं याम्यगोलः मेषार्कतः सौम्यगोलः बसन्त ऋतुः।

दि.३ - १७ अप्रैल सन् २०२६ ई.। (रा. चैत्र १३ - २७)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
३०	५१	१	शुक्र.	३	३२	दिन	७	१५	चित्रा	३०	४३	सायं	६	७	व्याघात	१८	१३	दिन	१	७	को	३	३२	तै	३५	३
३०	५६	२	शनि.	६	३२	दिन	८	२६	स्वाती	३५	३८	रात	८	४	हर्षण	१८	१०	दिन	१	६	गर	६	३२	व	३८	३४
३१	०	३	रवि.	१०	३७	दिन	१०	३	विशाखा	४१	३१	रात	१०	२४	वज्र	१८	५५	दिन	१	२३	वि	१०	३७	बव	४३	२
३१	३	४	सोम.	१५	२७	दिन	११	५८	अनुराधा	४७	५९	रात	१२	५९	सिद्धि	२०	११	दिन	१	५३	बा	१५	२७	को	४८	५
३१	७	५	मंगल	२०	४३	दिन	२	४	ज्येष्ठा	५४	३५	रात	३	३७	व्यतिपात	२१	४७	दिन	२	३१	तै	२०	४३	गर	५३	१९
३१	१०	६	बुध.	२५	५६	दिन	४	८	मूल	६०	०	स	म	स्त	वरीयान	२३	१७	दिन	३	६	व	२५	५६	वि	५८	१६
३१	१२	७	गुरु.	३०	३६	सायं	६	०	मूल	०	५५	प्रातः	६	८	परिघ	२४	२६	दिन	३	३२	बव	३०	३६	वा	६०	०
३१	१४	८	शुक्र.	३४	३४	रात	७	३५	पूर्वाषाढ़ा	६	३५	दिन	८	२३	शिव	२५	१	दिन	३	४५	बा	२	३५	को	३४	३४
३१	१७	९	शनि.	३७	१९	रात	८	४१	उत्तराषाढ़ा	११	२२	दिन	१०	१८	सिद्ध	२४	४७	दिन	३	४०	तै	५	५६	गर	३७	१९
३१	२१	१०	रवि.	३९	१	रात	९	२०	श्रवण	१५	२	दिन	११	४५	साध्य	२३	४१	दिन	३	१३	व	८	६	वि	३९	१
३१	२५	११	सोम	३९	२७	रात	९	३०	धनिष्ठा	१७	२७	दिन	१२	४२	शुभ	२१	३२	दिन	२	२०	बव	१०	१४	वा	३९	२७
३१	३०	१२	मंगल	३८	२६	रात	९	५	शतभिषा	१८	३५	दिन	१	९	शुक्ल	१८	१७	दिन	१	२	को	८	५७	तै	३८	२६
३१	३४	१३	बुध	३६	१५	रात	८	१२	पूर्वाभाद्र.	१८	२९	दिन	१	६	ब्रह्म	१४	१०	दिन	११	२२	गर	७	२१	व	३६	१५
३१	३७	१४	गुरु	३३	२	रात	६	५४	उत्तराभाद्र.	१७	१६	दिन	१२	३५	ऐन्द्र	९	१२	दिन	९	२२	वि	४	३८	श	३३	२
३१	४०	३०	शुक्र	२८	५५	दिन	५	१३	रेवती	१५	१७	दिन	११	४७	वैधृति/विष्कुम्भ	३/५३	२६/३४	प्रातः	७/४	२/२७	च	०	५७	ना/कि	३८/५६	५२/२४

ति.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
१	मुसल	३	१	२०	१३				५	५०	६	१०	५	४	११	१८	५८	६	५९	७	+	२	७	३०	फसली वैशाख मासारम्भः। कच्छपावतारः१। युगादिः १। यावन्मासं प्रपा (पौसरा) धर्मघटादि दानम्, तुलसी पत्रेण श्रीविष्णु पूजनम्। गलन्तिकारम्भः। अश्वत्थ (पीपल) नीम्बमूल(क)
२	सिद्धि	४	२	२१	१४				५	४९	६	११	५	२७	११	१९	५७	१३	५९	५	+	१	८	२५	भद्रा ३८।३४ (रा.९।१५) उ. (पाताले)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।३८ (रा.८।४) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ६।३२ (दि.८।२६) उ. ३५।३८ (रा.८।४) या.। आशा द्वितीया (आसोदूज)।
३	उत्पात	५	३	२२	१५	वृश्चिक	२५	२	५	४८	६	१२	५	५०	११	२०	५६	१८	५९	२	+	१	९	२१	वृश्चिकराशिः दिवा ३।४९ वादने। भद्रा १०।३७ (दि.१०।३) या.। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.९।२१) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्।
४	मानस	६	४	२३	१६				५	४७	६	१३	६	१२	११	२१	५५	२०	५९	०	+	१	१०	१७	अनुसूया जयन्ती ४। सर्वार्थसिद्धियोगः ४७।५९ (रा.१२।५९) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १५।२७ (दि.११।५८) उ. ४७।५९ (रा.१२।५९) या.।
५	मुद्गर	७	५	२४	१७	धनु	५४	३५	५	४७	६	१३	६	३५	११	२२	५४	२०	५८	५८	+	१	११	११	धनुराशिः रात्रि ३।३७ वादने। रवियोगः ५४।३५ (रा.३।३७) उ.। (ख) (दि.४।८) उ.। कुलाकुलगणःदुर्लभसन्धिकर योगः २५।५६ (दि.४।८) या.।
६	ध्वज	८	६	२५	१८				५	४६	६	१४	६	५८	११	२३	५३	१८	५८	५६	+	१	१२	३	भद्रा २५।५६ (दि.४।८) उ. ५८।१६ (रा.श.५।४) या. (पाताले)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः यावद्दिनम्। यात्रायाम् निषिद्धः यमघंट योगः यावद्दिनम्। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः २५।५६(ख)
७	धूम्र	९	७	२६	१९				५	४६	६	१४	७	२०	११	२४	५२	१४	५८	५३	+	०	१२	५०	दोषसंघविनाशकोरवियोगः ०।५५ (प्रातः ६।८) या.।
८	प्रवर्धमान	१०	८	२७	२०	मकर	२२	४७	५	४५	६	१५	७	४२	११	२५	५१	७	५८	५१	-	१	१	३३	मकरराशिः दिवा २।४४ वादने। श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम् पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम्। स्थायी (मुद्दालह) जयद्योगः ६।३५ (दि.८।२३) या.।
९	राक्षस	११	९	२८	२१				५	४५	६	१५	८	५	११	२६	४९	५८	५८	४९	-	१	२	१२	चण्डिका नवमी ९। सर्वार्थसिद्धियोगः ११।२२ (दि.१०।१८) उ.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ३७।१९ (रा.८।४१) या.।
१०	गद	१२	१०	२९	२२	कुंभ	४६	१४	५	४४	६	१६	८	२७	११	२७	४८	४७	५८	४७	-	१	२	४८	कुम्भराशिः रात्रि १२।१४ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा ८।६ (दि.८।५८) उ. ३९।१(रा.९।२०) या. (पाताले)। वैशाखी पर्वः (पंजाब) यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३९।१(रा.९।२०)उ.।
११	शुभ	१३	११	३०	२३				५	४३	६	१७	८	४१	११	२८	४७	३४	५८	४४	-	२	३	२२	वरुथिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती ११। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १७।२७ (दि.१२।४२) या.।
१२	मृत्यु	१४	१२	३१	२४				५	४३	६	१७	९	११	११	२९	४६	१८	५८	४२	-	२	३	५५	⊙सं.अश्विनी नक्षत्रे मेष राशौरविः १४।४० (दि.११।२५)। मु.१५ जघन्या महर्घताकरम्। पूर्वाः पराः १६ घट्यः पुण्याः। यावद्दिनम् पुण्यकालः। मेष संक्रान्तिः, सत्तू संक्रान्तिः सौम्यगोलः। खरमास समाप्तिः।(ग)
१३	पद्म	१५	१३	१	२५	मीन	३	३०	५	४२	६	१८	९	३२	०	०	४५	०	५८	४०	-	२	४	२९	मीनराशिः दिवा ७।६ वादने। भद्रा ३६।१५ (रा.८।१२) उ.(मर्त्ये)। सौर वैशाखमासारम्भः। प्रदोष व्रतम् १३। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। मृत्युवाणः १६।८ दिवा १२।१३ उपरान्त।
१४	छत्र	१६	१४	२	२६				५	४१	६	१९	९	५४	०	१	४३	४०	५८	३७	-	२	५	५	भद्रा ४।३८ (दि.७।३२) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः १७।१६ (दि.१२।३५) उ.। मृत्युवाणः १७।४२ (दिवा १२।४६) यावत्।
३०	श्रीवत्स	१७	१५	३	२७	मेष	१५	१७	५	४०	६	२०	१०	१५	०	२	४२	१७	५८	३५	-	२	+	+	मेषराशिः दिवा ११।४७वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो १५।१७ (दि.११।४७) या.। तदुपरि सर्वार्थसिद्धियोगः। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१३ बुधे–दिवा १।६ वादनात्परं उ.भा. मृत्युवाण-भद्रा व्याप्तिः।

ति.१४ गुरौ–मृत्युवाण दिवा १२।४६ वादनात्परं रेवत्यां रे.६ दिवा लग्नं पञ्चेष्टमात् आ.लग्नं गोधूलिः तत्परं मासान्तः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति	
१ शु.	६	०	१६	३१	११	०	२८	३	४६	५६	१०	२१	२९	१	५८	५३
२ श.	६	१२	३६	४२	११	१	१४	५९	४६	५६	१०	२२	२७	५४	५९	२८
३ र.	६	२४	४६	७	११	२	१	५५	४६	५४	१०	२३	२७	२२	६०	३४
४ सो.	७	६	४८	११	११	२	४८	४९	४६	५३	१०	२४	२७	५६	६२	४१
५ मं.	७	१८	५०	२३	११	३	३५	४२	४६	५३	१०	२५	३०	३७	६६	२९
६ बु.	८	०	५८	३८	११	४	२२	३५	४६	५१	१०	२६	३७	६	७०	३६
७ गु.	८	१३	६	१९	११	५	९	२६	४६	५१	१०	२७	४७	४२	७२	५१
८ शु.	८	२५	१८	२८	११	५	५६	१७	४६	५०	१०	२९	०	३३	७५	११
९ श.	९	७	४१	२३	११	६	४३	७	४६	५०	११	०	१५	५२	७७	१०
१० र.	९	२०	१७	३०	११	७	२९	५७	४६	४८	११	१	३३	२	७८	४२
११ सो.	१०	३	८	१५	११	८	१६	४५	४६	४७	११	२	५१	४४	८०	१६
१२ मं.	१०	१६	१४	२०	११	९	३	३२	४६	४५	११	४	१२	०	८०	५५
१३ बु.	१०	२९	३५	४७	११	९	५०	१७	४६	४०	११	५	३२	५५	८२	२७
१४ गु.	११	१३	१२	२६	११	१०	३६	५७	४६	३६	११	६	५५	२२	८५	८
३० शु.	११	२६	५६	४८	११	११	२३	३३	४६	३१	११	८	२०	३०	८७	३१

ति.वा.	स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ शु.	२	२१	३०	२५	४	१०	०	९	५८	३८	७३	५१	११	११	३३	५६	७	२०	१०	१२	५६	१५
२ श.	२	२१	३४	३५	४	२२	०	११	१२	२९	७३	५०	११	११	४१	१६	७	२०	१०	१२	५३	४
३ र.	२	२१	३८	५७	४	३०	०	१२	२६	११	७३	४७	११	११	४८	३६	७	१६	१०	१२	४९	५३
४ सो.	२	२१	४३	२७	४	३९	०	१३	४०	६	७३	४५	११	११	५५	५२	७	१६	१०	१२	४६	४२
५ मं.	२	२१	४८	६	४	४५	०	१४	५३	५१	७३	४४	११	१२	३	८	७	१४	१०	१२	४३	३१
६ बु.	२	२१	५२	५१	४	५७	०	१६	७	३५	७३	४२	११	१२	१०	२२	७	१४	१०	१२	४०	२०
७ गु.	२	२१	५७	४८	५	७	०	१७	२१	१७	७३	४०	११	१२	१७	३६	७	१४	१०	१२	३७	९
८ शु.	२	२२	२	५५	५	१६	०	१८	३४	५७	७३	३९	११	१२	२४	५०	७	१४	१०	१२	३३	५८
९ श.	२	२२	८	११	५	२६	०	१९	४८	३६	७३	३६	११	१२	३२	४	७	१०	१०	१२	३०	४७
१० र.	२	२२	१३	३७	५	२५	०	२१	२	१२	७३	३४	११	१२	३९	१४	७	१०	१०	१२	२७	३६
११ सो.	२	२२	१९	२	५	३६	०	२२	१५	४६	७३	३२	११	१२	४६	२४	७	९	१०	१२	२४	२५
१२ मं.	२	२२	२४	३८	५	४८	०	२३	२९	१८	७३	३१	११	१२	५३	३३	७	९	१०	१२	२१	१५
१३ बु.	२	२२	३०	२६	५	५६	०	२४	४२	४९	७३	२८	११	१३	०	४२	७	७	१०	१२	१८	४
१४ गु.	२	२२	३६	२२	६	६	०	२५	५६	१७	७३	२५	११	१३	७	४९	७	७	१०	१२	१४	५३
३० शु.	२	२२	४२	२८	६	१७	०	२७	९	४२	७३	२१	११	१३	१४	५६	७	६	१०	१२	११	४२

फलम्-यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन शुक्रवार सामान्यतया शुभफल कारक हैं। महिलाओं को समग्र रूप से सशक्त बनाने के लिए सरकार द्वारा आवश्यक कदम उठाये जायेंगे। वैशाख मास में प्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान नदी या कुंआ बावली, सरोवर अथवा अपने घर पर ही शुद्ध जल से स्नान कर **''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय''** या **'हरे राम हरे राम'** मंत्र का यथा शक्ति जप करके एक बार भोजन करें, चैत्र शुक्ल पूर्णिमा से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा तक ३१ दिन तक ऐसा क्रम बनाये रखने से अनेक प्रकार के रोगों का शमन होता है एवं मनुष्य के पुण्य-प्रभाव में वृद्धि होती है। देव विग्रहों के ऊपर परम्परागत तरीके से जल-निक्षेप **'गलन्तिका कार्य'** प्रारम्भ हो जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी** व्रत का मान ५ अप्रैल रविवार को होगा, चन्द्रोदय रात ९।२१ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **श्री शीतलाष्टमी व्रत** बसियऊरा १० अप्रैल शुक्र. को है। आज के दिन पूर्व रात्रि में की गई माता शीतला की पूजा का बासी प्रसाद ग्रहण करने का पुण्यफलदायक विधान है। **वरुथिनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए १३अप्रैल सोम.को होगा। **अश्विनी नक्षत्र मेष राशि ■**

पं.३ वैशाख कृष्ण ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ८९ अयनांशाः २४/१२/२९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	११	१०	२	०	११	१०	४
२५	२५	५	२९	२२	१८	१२	१२	१२
५७	१८	५६	०	२	३४	२४	३३	३३
७	२८	१७	३३	५५	५७	५०	५८	५८
५८	७२८	४६	७५	५	७३	७	३	३
५९	५३	५०	११	१६	३९	१४	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-पू.भा. मीनराशौ ४ सोमतः उ.भा. रात्रि१२।१० वादने। बुधः-कुम्भे ८ शुक्रे रात्रि १।१५ वादने। गुरुः-पुनर्वसु नक्षत्रे मिथुन राशौ। शुक्रः-मेष राशौ। शनिः-उ.भा.३ चरणे मीनराशौ। ३०शुक्रतः उ.भा.४ चरणे रात्रि १२।५०वादने। राहुः-शतभिषा २ चरणे। केतुश्च-मघा४ चरणे।

वैशाख कृ. दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिथि/वार	१शु. घं.	मि.	२श. घं.	मि.	३र. घं.	मि.	४सो घं.	मि.	५मं. घं.	मि.	६बु. घं.	मि.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	९श. घं.	मि.	१०र. घं.	मि.	११सो. घं.	मि.	१२मं. घं.	मि.	लग्नांत	१३बु. घं.	मि.	१४गु. घं.	मि.	३०शु. घं.	मि.
मीन	६	२४	६	२०	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	मेष	७	१५	७	११	७	७
मेष	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	वृष	९	१२	९	८	९	४
वृष	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	मिथुन	११	२६	११	२२	११	१८
मिथुन	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	३०	कर्क	१	४३	१	३९	१	३५
कर्क	२	३०	२	२६	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	सिंह	३	५७	३	५३	३	४९
सिंह	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	कन्या	६	१०	६	६	६	२
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.	
कन्या	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२२	६	१८	६	१४	तुला	८	२६	८	२२	८	१८
तुला	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	वृश्चिक	१०	४३	१०	३९	१०	३५
वृश्चिक	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	धनु	१२	४८	१२	४४	१२	४०
धनु	१	३५	१	३१	१	२७	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	मकर	२	३४	२	३०	२	२६
मकर	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३८	कुम्भ	४	५	४	१	३	५७
कुम्भ	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१३	४	९	मीन	५	३३	५	२९	५	२५

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शुक्रे**–चित्रायां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रयः नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं औषधि निर्माणं सेवनं च दक्षिण दिग् यात्रा गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ९। **तिथि २ शनौ**–स्वात्यां कृष्णवस्त्रधारणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ३ रवौ**–भद्रा रिक्ताव्याप्तिः। **तिथि ४ सोमे**–रिक्ता दिवा ११।५८ वादनात्परं अनुराधायां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्मः नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः हलप्रवहणं कणमर्दनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः भूमिक्रयः शय्यासनाद्युपभोगः आवेदनपत्र लेखनं उत्तर-पश्चिम दिग् यात्रा रात्रौ **गर्भाधानं लग्नं ९**। **तिथि ५ भौमे**–ज्येष्ठायाम् शस्त्र घटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ६ बुधे**–मूले नामकरणं कणमर्दनं जलयन्त्रकर्म मुकदमा कार्य। **तिथि ७ गुरौ**–प्रातः ६।८ वादनात्परं पूर्वाषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं भूमिक्रयः जलयंत्रकर्म मुकदमा कार्यं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ८ शुक्रे**–दिवा ८।२३ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् आ.प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं विपणिव्यापारः नववस्त्र-भूषण धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः आवेदन पत्र लेखनं औषधि निर्माणं सेवनं च पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ९ शनौ**-रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० रवौ**–भद्रा दिवा ८।५८ वादनात्पूर्वं श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं पुंसवनं सीमन्तः लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं शल्य कर्मः धान्यच्छेदनं कणमर्दनं आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं औषधिसेवनं। **तिथि ११ सोमे**–धनिष्ठायां नामकरणं अन्नप्राशन आभूषण निर्माणं-धारणं, हलप्रवहण बीजवपनं धान्यच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः आवेदन पत्र लेखनं औषधि सेवनं दिवा १२।४२ वादनात्परं शतभिषायां जलयन्त्र कर्म रात्रौ **गर्भाधानं ल.८** पश्चिम दिग् यात्रा यावद्दिनम्। **तिथि १२ भौमे**–दिवा १।९ वादनात्परं पूर्वाभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणः इष्टिका दहनं, पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३बुधे**–दिवा १।६ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे जातकर्म नामकरणः अन्नप्राशनः कन्या नासिकाच्छेदनं भद्रा पूर्व **वरवरणं कन्यावरणं द्विरागमनं ल.गोधूलिः** विपणि व्यापारः दीक्षाग्रहण हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः **गृहप्रवेशः ल.गोधूलि** सर्वदेव प्रतिष्ठा **ल.गोधूलि** सेवारम्भः वाहन क्रयः जलयन्त्रकर्म (पू.भा.), शय्यासनाद्युपभोग पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १४ गुरौ**–रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं **तत्परं मासान्तः।**

पं.४ वैशाख कृष्ण ३० शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ९६ अयनांशाः २४/१२/३०

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
०	११	११	११	२	०	११	१०	४
२	२६	११	८	२२	२७	१३	१२	१२
४२	५६	२३	२०	४२	९	१४	११	११
१७	४८	३३	३०	२८	४२	५६	४२	४२
५८	८२५	४६	८७	६	७३	७	३	३
३५	३०	३१	३१	१७	२१	६	११	११



(क) जलदानम् विद्यारोग्यार्थं तिलक व्रतम्। तैलाभ्यङ्ग दैनिक स्नानम्। **गलन्तिका विशेषः–वसन्त-ग्रीष्मयोर्मध्ये यः पानीयं प्रयच्छति। पले पले सुवर्णस्य फलमाप्नोति मानवः।** तथा च-ॐ **माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातःस्नानेन मे नाथ फलदो भव पापहन्।।** शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ३।३२ (दि.७।१५) या.। **(ग)** बंगलानववर्ष १४३३ प्रारम्भः। **डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती। नेपाली वैशाखारम्भः।** बहाग बिहू (आसाम)। चड़क पूजा (बंगाल)। मेषादि तमिलनाडु। हरिद्वारे काश्यां, प्रयागे संगमे वा सर्वत्र गंगायाम् स्नानम्। ब्रह्मपुत्र नद् स्नानम्। सत्तू व्यंजन-जलकुम्भादि ऋतुफल दानम्। भौमे–जयासिद्धयोगः ३८।२६ (रा.९।५) उ.। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः १८।३५ (दि.१।९) उ. ३८।२६ (रा.९।५) या.। भौमे–जया सिद्धयोगः ३८।२६ (रा.९।५) उ.।

■ की सूर्य संक्रान्ति १४ अप्रैल मंगल. को दिन ११।२५ बजे से आयेगी। यही **सत्तू संक्रान्ति** अथवा **सतुआ संक्रान्ति** है। इसका पुण्यकाल दिन भर रहेगा। सत्तू का दान तथा ऋतु फल पंखा जल पूर्ण घड़े का दान करें। मंगलवार को मेष संक्रान्ति होने से मंगल इस वर्ष के **मंत्री** हुए। इसी के साथ **खरमास समाप्त हो जायेगा** और शुभकार्य के लिए मुहूर्त्त मिलने लगेंगे। **प्रदोष एवं मास शिवरात्रि** का व्रत १५अप्रैल बुधवार को किया जायेगा। स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या १७ अप्रैल शुक्र.को होगी। शुक्रवार की अमावस्या शुभफलकारक है। मंगलवार की मेष संक्रान्ति होने से प्रचण्ड लू के साथ तापमान बढ़ जायेगा।

राशिफल

मेष-	रोगं
वृष-	सुखलाभ
मिथुन-	सुखम्
कर्क-	रोग
सिंह-	पाप बुद्धिः
कन्या-	दौर्बल्यं
तुला-	सुखायं लाभः
वृश्चिक-	रोगं हानिः
धनु-	शत्रु भयं
मकर-	श्रीप्राप्तिः
कुम्भ-	नेत्रकष्टं
मीन-	पीड़ा भयम्

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ वैशाख शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः बसन्त ऋतुः।
दि.१८ अप्रैल - १ मई २०२६ ई.। (रा.चैत्र २८ - वैशाख ११)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
३१	४४	१	शनि	२३	५७	दिन	३	१५	अश्विनी	१२	२३	दिन	१०	३७	प्रीति	५०	०	रात	१	४०	बव	२३	५७	बा	५१	१२	सौम्य	१८	१६	४	२८				५	४०	६	२०	१०	३६	०	३	४०	५२	५८	३३	-	३	७	२९
३१	४७	२	रवि	१८	२६	दिन	१	१	भरणी	८	५०	दिन	९	११	आयुष्यमान	४२	३८	रात	१०	४२	कौ	१८	२६	ते	४५	३	कालदण्ड	१९	१७	५	२९	वृष	२२	५०	५	३९	६	२१	१०	५७	०	४	३९	२५	५८	३१	-	३	८	४०
३१	५०	३	सोम	१२	३४	दिन	१०	४०	कृत्तिका	४	५४	दिन	७	३६	सौभाग्य	३५	०	रात	७	३८	गर	१२	३४	व	३९	३२	स्थिर	२०	१८	६	३०				५	३८	६	२२	११	१८	०	५	३७	५६	५८	२९	-	३	९	५१
३१	५३	४	मंगल	६	३१	दिन	८	१४	रोहिणी / मृगशिरा	० / ५८	४७ / ५२	प्रातः	५ / ४	५७ / ८	शोभन	२७	१६	दिन	४	३३	वि	६	३१	बव	३३	२९	मातंग	२१	१९	७	१	मिथुन	२८	१९	५	३८	६	२२	११	३८	०	६	३६	२५	५८	२६	-	३	१०	५७
३१	५६	५ / ६	बुध.	० / ५८	२७ / १४	प्रातः	५ / ३	४८ / ३०	आर्द्रा	५२	४३	रात	२	४२	अतिगण्ड	१९	४०	दिन	१	२९	वा	०	२७	कौ / ते	२७ / ५८	२१ / १४	मुसल	२२	२०	८	२				५	३७	६	२३	११	५७	०	७	३४	५१	५८	२४	-	४	११	५६
३१	५९	७	गुरु	४९	१६	रात	१	१८	पुनर्वसु	४९	१४	रात	१	१७	सुकर्मा	१२	१८	दिन	१०	३१	गर	२१	४५	व	४९	१६	सिद्धि	२३	२१	९	३	कर्क	३५	७	५	३६	६	२४	१२	१९	०	८	३३	१५	५८	२२	-	४	१२	४७
३२	१	८	शुक्र	४४	३४	रात	११	२६	पुष्य	४६	१७	रात	१२	७	धृति / शूल	५ / ५८	१६ / ३२	प्रातः	७ / ५	४३ / ३२	वि	१६	५५	बव	४४	३४	उत्पात	२४	२२	१०	४				५	३६	६	२४	१२	३९	०	९	३१	३७	५८	२०	-	४	१	३०
३२	५	९	शनि.	४०	२९	रात	९	४७	श्लेषा	४४	१६	रात	११	१७	गण्ड	५३	३	रात	२	४८	बा	१२	३१	कौ	४०	२९	मानस	२५	२३	११	५	सिंह	४४	१६	५	३५	६	२५	१२	५९	०	१०	२९	५७	५८	१८	-	४	२	७
३२	८	१०	रवि.	३७	२७	रात	८	३३	मघा	४३	४	रात	१०	४८	वृद्धि	४८	५	रात	१२	४८	ते	८	५९	गर	३७	२७	मुद्गर	२६	२४	१२	६				५	३४	६	२६	१३	१८	०	११	२८	१५	५८	१६	-	४	२	४०
३२	११	११	सोम	३५	२९	रात	७	४६	पूर्वाफा.	४२	५८	रात	१०	४५	ध्रुव	४३	५९	रात	११	१०	व	६	२८	वि	३५	२९	ध्वज	२७	२५	१३	७	कन्या	५८	१४	५	३४	६	२६	१३	३८	०	१२	२६	३१	५८	१३	-	५	३	११
३२	१४	१२	मंगल	३४	४०	रात	७	२५	उत्तराफा.	४४	४	रात	११	११	व्याघात	४०	५२	रात	९	५४	बव	५	४	बा	३४	४०	धाता	२८	२६	१४	८				५	३३	६	२७	१३	५७	०	१३	२४	४४	५८	११	-	५	३	४१
३२	१८	१३	बुध	३५	६	रात	७	३४	हस्त	४६	२९	रात	१२	८	हर्षण	३८	४५	रात	९	२	कौ	४	५३	ते	३५	६	आनन्द	२९	२७	१५	९				५	३२	६	२८	१४	१६	०	१४	२२	५५	५८	९	-	५	४	१२
३२	२१	१४	गुरु	३७	०	रात	८	२०	चित्रा	५०	७	रात	१	३५	वज्र	३७	४०	रात	८	३६	गर	६	३	व	३७	०	चर	३०	२८	१६	१०	तुला	१८	१८	५	३२	६	२८	१४	३४	०	१५	२१	४	५८	७	-	५	४	४४
३२	२४	१५	शुक्र	३९	५५	रात	९	२९	स्वाती	५४	५३	रात	३	२८	सिद्धि	३७	२७	रात	८	३०	वि	८	२७	बव	३९	५५	गद	१	२९	१७	११				५	३१	६	२९	१४	५३	०	१६	१९	११	५८	५	-	५	५	१९

चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.१५ जघन्या। याम्य श्रृंगम् दुर्भिक्ष महर्घताकरम्। देवदामोदर तिथि (आसाम)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १२।२३ (दि.१०।३७) उ. २३।५७ (दि.३।१५) या.।
वृषराशिः दिवा २।४७ वादने। मु.जिल्काद ११ हिजरी सन् १४४७। श्री परशुराम जयन्ती ३ (प्रदोष व्यापिनी तृतीयायां)। छत्रपति शिवाजी जयन्ती २ (तिथि अनुसारेण)। त्रिपुष्करयोगः(क)
भद्रा ३९।३२ (रा.९।२७) उ. (स्वर्गे)। अक्षय तृतीया ३। अद्यदानेन अक्षय फलम्। त्रेतायुगादिः ३, कल्पादिः ३, हयग्रीव जयन्ती ३। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४व्रतम्। (मध्यान्हे)(ख)
मिथुनराशिः दिवा ४।५८ वादने। भद्रा ६।३१ (दि.८।१४) या.। राष्ट्रीय वैशाख मासारम्भः। रवियोगः ०।४७ (प्रातः ५।५७) या.। (क) ८।५० (दि.९।११) उ. १८।२६ (दि.१।१)या.।
आद्य-जगद् गुरुश्रीशंकराचार्य जयन्ती ५। सूरदास जयन्ती ५। श्रीसोमनाथ प्रतिष्ठा दिवसः। श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती ६। चन्दन षष्ठी ६ (बंगाल)। रवियोगः ५२।४३ (रा.२।४२)या.।(ग)
कर्कराशिः रात्रि ७।३९ वादने। भद्रा ४९।१६ (रा.१।१८) उ. (मर्त्ये)। श्रीगंगा सप्तमी ७। मध्याह्ने गंगोत्पत्तिः सर्वत्र गंगा पूजनम्। कमल सप्तमी ७। शर्करा ७। निम्ब सप्तमी ७।(घ)
भद्रा १६।५५ (दिन १२।२२) या.। श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रतम्, श्रीअन्नपूर्णाष्टी ८ व्रतम्। श्रीबंगलामुखी जयन्ती ८। रवियोगः ४६।१७ (रा.१२।७) उ.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ४४।३४(रा.११।२६)या.।
सिंह राशिः रात्रि ११।१७ वादने। सीता नवमी ९। वैष्णवमतानुसारेण मध्यान्हे जानकी जन्मोत्सवः। रवियोगः यावद्दिनम्। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ४०।२९ (रा.९।४७) या.।(ङ)
दोषसंघ विनाशको रवियोगः ४३।४ (रा.१०।४८) या.। यात्रायाम् निषिद्धः यमघंट योगः ४३।४ (रा.१०।४८) या.। (ङ) पूर्व दिशायाम् बुधास्तः।
कन्याराशिः रात्रि ४।५२ वादने। भद्रा ६।२८ (दि.८।९) उ. ३५।२९ (रा.७।४६) या. (मर्त्ये)। मोहिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।⊙भरणी नक्षत्रे रविः ५५।५४ (रा.३।५६)।
मधु सूदन द्वादशी १२। रुक्मिणी द्वादशी १२। शुभाशुभेत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ३४।४० (रा.७।२५) या.। भौमे-जया सिद्धियोगः ३४।४० (रा.७।२५) उ.। पूर्वदिशायाम् भौमोदयः।
प्रदोष व्रतम् १३। सर्वार्थसिद्धियोगः ४६।२९ (रा.१२।८) या.। दोषसंघविनाशका रवियोगः ४६।२९ (रा.१२।८) उ.।
तुलाराशिः दिवा १२।५१ वादने। भद्रा ३७।० (रा.८।२०) उ. (पाताले)। प्रदोषे श्री नृसिंह चतुर्दशी १४ व्रतम्। सा सूर्यास्तकालव्यापिनी ग्राह्याः। (धर्मसिन्धु) प्रदोषसायं काले नृसिंहावतारः।(च)
भद्रा ८।२७ (दि.८।५४) या.। स्नान-दान-व्रतादौ पूर्णिमा पुण्यतमा १५। बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती १५। कूर्म जयन्ती १५। अद्य जलपूर्ण कुम्भ तिल घृत सुवर्णदानम्। काश्यां(छ)

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.३ सोमे-दिवा ७।३६ वादनात्परं रोहिण्यां रेखा १० दिवा लग्नं २ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१० वा लग्नं गोधूलिः वा ल.७ इष्टाः ५ प्र.व.वि.९।। रात्रि ९।२७ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः।
ति.४ भौमे-भद्रा दिवा ८।१४ वादनात्परं मृगशिरायां रेखा ८ दिवा ल.२ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१० वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ ल.७ इष्टाः ५ प्र.व.वि.९।। वा ल.१० इष्टाः ६ प्र.व.वि.११।। वा ल.११ वा लग्नं १२ पंचेष्टाभावः।
ति.९ शनौ-रात्रि ११।१७ वादनात्परं मघायां रेखा ८ लग्नं १० इष्टाः ६ प्र.व.वि.११।। वा लग्नं ११ वा लग्नं १२ पंचेष्टाभावः।
ति.१० रवौ-मघायां रेखा ८ दिवा लग्नं २ इ.५ प्र.व.वि.१० वा लग्नं३ इ.५ प्र.व.वि.१५ वा लग्नं गोधूलिः वा लग्नं ७ इ.६ प्र.व.वि.१४।।
ति.११ सोमे-रात्रि १०।४५ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां भौमवेधः।
ति.१२ भौमे-उत्तराफाल्गुन्यां भौमवेधः।
ति.१३ बुधे-हस्त नक्षत्रे शनि वेधः।
ति.१४ गुरौ-स्वात्यां भद्रा व्याप्तिः।
ति.१५ शुक्रे-भद्रा दिवा ८।५४ वादनात्परं स्वात्यां रेखा ६ दिवा लग्नं ५ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१३।। वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १० इष्टाः ६ प्र.व.वि.११।। वा लग्नं ११ पंचेष्टाभावः। (रात्रि ३।२८ वादनम् यावत्)।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	श.	०	१०	५२	३३	११	१२	१०	४	४६	२८	११	९	४८	१	९०	४४	२	२२	४८	४५	६	२५	०	२८	२३	३	७३	१७	११	१३	२२	२	७	६	१०	१२	८	३१
२	र.	०	२४	५५	१४	११	१२	५६	३२	४६	२३	११	११	१८	४५	९२	२४	२	२२	५५	१०	६	३३	०	२९	३६	२०	७३	१४	११	१३	२९	८	७	२	१०	१२	५	२०
३	सो.	१	९	३	३९	११	१३	४२	५५	४६	२०	११	१२	५१	९	९३	४३	२	२३	१	४३	६	४१	१	०	४९	३४	७३	९	११	१३	३६	१०	६	५९	१०	१२	२	१०
४	मं.	१	२३	११	२४	११	१४	२९	१५	४६	१७	११	१४	२४	५२	९४	१२	२	२३	८	२४	६	५३	१	२	२	४३	७३	६	११	१३	४३	९	६	५५	१०	११	५८	५९
५	बु.	२	७	९	८	११	१५	१५	३२	४६	१५	११	१५	५९	४	९५	३८	२	२३	१५	१७	७	३	१	३	१५	४९	७३	३	११	१३	५०	४	६	५५	१०	११	५५	४८
७	गु.	२	२१	११	५१	११	१६	१	४७	४६	१२	११	१७	३४	४२	९७	३३	२	२३	२२	२०	७	१४	१	४	२८	५२	७३	०	११	१३	५६	५९	६	५२	१०	११	५२	३७
८	शु.	३	५	७	४४	११	१६	४७	५९	४६	१०	११	१९	१२	१५	९९	४६	२	२३	२९	३४	७	२५	१	५	४१	५२	७२	५६	११	१४	३	५१	६	५१	१०	११	४९	२६
९	श.	३	१८	५१	९	११	१७	३४	९	४६	६	११	२०	५२	१	१०१	१४	२	२३	३६	५९	७	३८	१	६	५४	४८	७२	५१	११	१४	१०	४२	६	५१	१०	११	४६	१५
१०	र.	४	३	२५	२२	११	१८	२०	१५	४६	५	११	२२	३३	१५	१०३	५३	२	२३	४४	३७	७	४८	१	८	७	३९	७२	४८	११	१४	१७	३३	६	५०	१०	११	४३	४
११	सो	४	१६	४५	३६	११	१९	६	२०	४६	३	११	२४	१७	८	१०५	४४	२	२३	५२	२५	७	५९	१	९	२०	२६	७२	४५	११	१४	२४	२३	६	५०	१०	११	३९	५३
१२	मं.	५	०	५२	४	११	१९	५२	२३	४६	२	११	२६	२	५२	१०८	३७	२	२४	०	२४	८	५	१	१०	३३	१२	७२	४१	११	१४	३१	१३	६	४८	१०	११	३६	४२
१३	बु.	५	१३	४२	५६	११	२०	३८	२५	४६	०	११	२७	५१	२९	११०	२९	२	२४	८	२९	८	२०	१	११	४५	५३	७२	३८	११	१४	३८	१	६	४८	१०	११	३३	३१
१४	गु.	५	२६	२०	१७	११	२१	२४	२५	४६	०	११	२९	४१	५८	११३	५०	२	२४	१६	४९	८	३३	१	१२	५८	३१	७२	३३	११	१४	४४	४९	६	४५	१०	११	३०	२१
१५	श.	६	८	४०	४१	११	२२	१०	२५	४५	५७	०	१	३५	४८	११५	२९	२	२४	२५	२२	८	४३	१	१४	११	४	७२	३१	११	१४	५१	३४	६	४३	१०	११	२७	१०

फलम्–षष्ठी तिथिका क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। शनिवार भरणी नक्षत्र का चन्द्रदर्शन दैनिक उपभोग मे, आने वाली वस्तुओ का भाव चढ़ जायेगा। वर्ष भर मे वैशाख का महीना अत्यन्त शुभफलकारक व पुण्यफल कारक माना जाता है। **भगवान परशुराम** की जयन्ती प्रदोष काल में तृतीया तिथि मिल जाने के कारण **१९ अप्रैल रविवार** को मनायी जायेगी जबकि **अक्षय तृतीया** का पुण्यफलकारी, पवित्र पर्व उदय कालिक तृतीया तिथि **२० अप्रैल सोमवार** को मनायी जायेगी। आज के दिन दिया गया किसी भी प्रकार का दान चाहे वो कम हो या ज्यादा, अक्षय फलकारी होता है। आज के दिन किसी भी प्रकार की सम्पत्ति का खरीदना अथवा संचय करना शुभफलकारी एवं बृद्धिकारी माना जाता है। आज से ही श्री बद्री, केदारनाथ की तीर्थयात्रा प्रारम्भ की जाती है। आद्य जगत गुरु **श्री शंकराचार्यजी की जयन्ती** उदया तिथि पंचमी के अनुसार २२ अप्रैल बुधवार को धार्मिक समारोह एवं परम्परा के अनुसार मनायी जायेगी। क्षयवती षष्ठी तिथि मे **श्री रामानुजाचार्य की जयन्ती** भी २२ अप्रैल बुधवार को ही मानी जायेगी। **श्री गंगा सप्तमी** २३ अप्रैल गुरुवार को है। ऐसा माना जाता है कि आज ही के दिन गंगाजी की उत्पत्ति हुई थी। इसमे मध्याह्न व्यापिनी सप्तमी तिथि ग्रहण की जाती है एवं मध्याह्न मे ही उत्पत्ति से सम्बन्धित उत्सव मनाया जाता है। २५ अप्रैल शनिवार को मध्याह्न व्यापिनी नवमी मे **सीता नवमी** का मान होगा एवं इससे सम्बन्धित उत्सव मनाया जायेगा। **मोहिनी एकादशी** का व्रत २७ अप्रैल सोमवार को सबके लिये होगा। **प्रदोष का व्रत** २९ अप्रैल बुधवार को किया जायेगा। प्रदोषकाल व्यापिनी चतुर्दशी तिथि ३० अप्रैल गुरुवार को **नृसिंह चतुर्दशी** मनायी जायेगी एवं तत्सम्बन्धित लीला उत्सव सम्पन्न होगा। स्नान दान एवं व्रत सहित वैशाखी पूर्णिमा **बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती** १ मई शुक्रवार को होगी। बौद्ध जगत का यह सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व है। आज ही **कूर्म जयन्ती** भी मनायी जायेगी। यह पक्ष कई ■

पं.५ वैशाख शुक्ल ८ शुक्रे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १०३
अयनांशाः २४/१२/३१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	११	२	१	११	१०	४
९	५	१६	१९	२३	५	१४	११	११
३१	७	४७	१२	२९	४१	३	४९	४९
३७	४४	५९	१५	३४	५२	५१	२६	३६
५८	३०	४६	१९	७	७२	६	३	३
२०	५६	१०	४६	२५	५६	५१	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-उ.भा. नक्षत्रे मीन राशौ ७ गुरुतः रेवत्यां रात्रि १।५० वादने। **बुधः**-मीनराशौ १४ गुरुतः मेषराशौ दिवा ९।५ वादने। **गुरुः**-पुनर्वसु नक्षत्रे मिथुन राशौ। **शुक्रः**-मेषराशौ २ रवितः वृष राशौ दिवा १२।३५ वादने। **शनिः**-उ.भा.४ चरणे मीनराशौ। **राहुः**-शतभिषा २ चरणे। **केतुश्च**-मघा ४ चरणे।

वैशाख शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१श. घं.	मि.	२र. घं.	मि.	३सो. घं.	मि.	४मं. घं.	मि.	५बु. घं.	मि.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	९श. घं.	मि.	१०र. घं.	मि.	११सो घं.	मि.	१२मं. घं.	मि.	१३बु. घं.	मि.	१४गु. घं.	मि.	१५शु. घं.	मि.
मेष	७	३	६	५९	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२
वृष	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९
मिथुन	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३
कर्क	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०
सिंह	३	४५	३	४१	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४
कन्या	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
तुला	८	१४	८	१०	८	६	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३२	७	३१	७	२७	७	२३
वृश्चिक	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०
धनु	१२	३६	१२	३२	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५
मकर	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३९	१	३५	१	३१
कुम्भ	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२
मीन	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शनौ**–अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं भरण्यां शस्त्रघटनं, इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि २ रवौ**–भरण्यां इष्टिका दहनं दिवा ९।११ वादनात्परं कृत्तिकायां **वरवरणं कन्या वरणं। तिथि ३ सोमे**–दिवा ७।३६ वादनात्परं रोहिण्यां प्रसूतिस्नानं जातकर्म, अन्नप्राशनं, **उपनयनं ल.३, वर वरणं, कन्या वरणं, वधप्रवेश, द्विरागमनं ल.३**, विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं **चूल्हिका स्थापनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भ ल.३** सेवारम्भः आवेदन पत्र लेखनं नूतनवध्वापाक कर्म दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ४ भौमे**–रिक्ता भद्रा दिवा ८।१४ वादनात्परं मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं शल्यकर्म पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा दिवा ४।५८ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ५।६ बुधे**-आर्द्रायाम्, विद्यारम्भः **अक्षराम्भः ल.३, कर्णवेधः** कन्यानासिकाच्छेदनं **आ.उपनयनं ल.३** (ति.दा.) **चूल्हीकास्थापनं ल.३** मुकदमाकार्य, रात्रि ३।३० वादनात्परं सप्तम्यां पुनर्वसौ **द्विरागमनं। तिथि ७ गुरौ**-पुनर्वसौ पुंसवनं-सीमन्त नामकरणं अन्नप्राशन कर्णविधः, कन्यानासिकाच्छेदनं **चौल मुण्डनं ल.२ वा ३ द्विरागमनं ल.२ वा ३**, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, सर्वदेवप्रतिष्ठा **ल.२ वा ३** पश्चिम दिग् यात्रा रात्रि ७।३९ वादनात्परं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ८ शुक्रे**-भद्रा दिवा १२।२२ वादनात्परं-पुष्य नक्षत्रे जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **वधूप्रवेश, द्विरागमन ल.५ वा ६** विपणिव्यापारः नववस्त्राभूषण धारण हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदन नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः भूमिक्रयः वाहनक्रयः सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयरामसुर प्रतिष्ठा ल.५ वा ६ सेवारम्भ जलयन्त्र कर्म शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखन औषधि निर्माणं सेवनं च दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ९ शनौ**-श्लेषायां रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० रवौ**-मघायां दीक्षाग्रहणं कणमर्दनं जलयन्त्र कर्मः। **तिथि ११ सोमे**-भद्रा दिवा ८।९ वादनात्पूर्व पूर्वाफाल्गुन्यां आ.प्रसूति स्नानं **उपनयनं ल.२** भद्रा रात्रि ७।४६ वादनात्परं **वरवरणं कन्या वरणं** रात्रि १०।४५ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां **गर्भाधानं वधू प्रवेशः**

पं.६ वैशाख शुक्ल १५ शुक्रे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ११०
अयनांशाः २४/१२/३२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	११	०	२	१	११	१०	४
१६	८	२२	१	२४	१४	१४	११	११
१९	४०	१०	३५	२५	११	५१	२७	२७
११	४१	२५	४८	२२	४	३४	१०	१०
५८	४०	४५	११५	८	७२	६	३	३
५	५२	५७	२९	४३	३१	४३	११	११



(ख) श्री बद्री-केदार तीर्थयात्रा दिनम्। काश्यां त्रिलोचन यात्रा। **गौतमेश्वर महादेव** (काशी) जलधरी श्रृंगारारम्भः। गौरी ३। जलकुम्भ छत्र, शर्कराव्यंजनादि दानम्। चन्दनेन श्रीविष्णु पूजनम्। चन्दन श्रृंगार (वृन्दावन)। **वर्षीतप समापन** (जैन), मातंगी जयन्ती, सागरे-तीर्थे वा स्नानम् दानम् महत् फलम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ४।५४ (दि.७।३६) उ.। रवियोगः ४।५४ (दि.७।३६) उ.। **पूर्व दिशायाम् शनि उदयः। (ग)** कुलाकुलगणः दुर्लभ सन्धिकरयोगः ०।२७ (प्रातः ५।४८) उ. ५२।४३ (रा.२।४२) या.। **(घ) बाबू कुँवर सिंह जयन्ती** (बिहार)। सर्वार्थसिद्धियोगः ४९।१४ (रा.१।१८) तदुपरि गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगौ। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४९।१४ (रा.१।१८) या.। **(च)** अवतारो नृसिंहस्य प्रदोष समये द्विजा। रवियोगः ५०।७ (रा.१।३५) या.। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ३७।० (रा.८।२०) उ.। **(छ)** हरिद्वारे तथा च सर्वत्र गंगायाम् स्नानम्। गन्धेश्वरी पूजा (बंगाल)। पुष्करा देवी जयन्ती १५। वैशाख स्नान-यम-नियम संयम समाप्तिः।

■ बड़े महापुरुषों की जयन्ती होने से बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। **भरणी नक्षत्र का सूर्य** २७ अप्रैल सोमवार को रात में ३।५६ बजे से आयेगा। इस पक्ष मे २० अप्रैल, २५ अप्रैल एवं २८ अप्रैल के आसपास आंधी-तूफान तथा बूंदा-बांदी वर्षा के योग बन रहे है। किसी दैवी-प्राकृतिक आपदा की सम्भावना बन रही है।

द्विरागमनं (ति.दा.) ल.९ रात्रि शेष ३।५६ वादनात्परं **गृहारम्भः, गृहप्रवेशः ल.१२। तिथि १२ भौमे**-उत्तराफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं (ति.दा.) लालवस्त्रधारणं पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १३ बुधे**-हस्त नक्षत्रे-जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं ल.३ वरणं, कन्या वरणं वधूप्रवेश द्विरागमनं ल.३**, विपणि व्यापारः, वाहनक्रयः नववस्त्राभूषण धारणं दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, **चूल्हिका स्थापनं**, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः, **गृहारम्भः गृहप्रवेशः ल.३** (मू.सु.) सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भः ल.३, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग आवदेन पत्र लेखनं, औषधि सेवनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १४ गुरौ**-चित्रायां रिक्ता भद्राव्याप्तिः। **तिथि १५ शुक्रे**-भद्रा दिवा ८।५४ वादनात्परं स्वात्यां प्रसूतिस्नानं नामकरणात्रप्राशनं चौलमुण्डन ल.३ (ति.दा.), अक्षरारम्भः विद्यारम्भः **आ.उपनयनं ल.३** वा चि. (ति.दा.), **वरवरणं कन्या वरणं वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.३**, विपणिव्यापारः, नववस्त्राभूषणधारणं **दीक्षाग्रहणं** आभूषण निर्माणं धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं भूमिक्रयः वाहन क्रयः **गृहारम्भः ल.३** सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदनपत्रलेखनं दक्षिण दिग् यात्रा॥

राशिफल

मेष- स्थान परिवर्तनं
वृष- द्रव्यनाशः
मिथुन- वित्ताप्तिः
कर्क- सौख्यं
सिंह- पापवृद्धिः
कन्या- रोग भयम्
तुला- यात्रा हानिः
वृश्चिक- शत्रु पराजित
धनु- अर्थनाशः
मकर- रोगं
कुम्भ- सुख श्रीः
मीन- हानिः भयम्।

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः बसन्त ऋतुः। वृषार्कतः ग्रीष्म ऋतुः।
दि. २ - १६ मई सन् २०२६ ई. । (रा.वैशाख १२ - २६)

दि.मा.		शु.ज्येष्ठ कृ. तिथि							नक्षत्र						योग						करण					
घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
३२	२७	१	शनि.	४३	५५	रात	११	५	विशाखा	६०	०	स	म	स्त	व्यतिपात	३८	५	रात	८	४५	बा	११	५५	को	४३	५५
३२	३०	२	रवि.	४८	४०	रात	१२	५८	विशाखा	०	३५	प्रातः	५	४४	वरीयान	३९	१७	रात	९	१३	तै	१६	१८	गर	४८	४०
३२	३३	३	सोम.	५३	४७	रात	३	०	अनुराधा	६	५४	दिन	८	१५	परिघ	४०	४९	रात	९	४९	व	२१	१३	वि	५३	४७
३२	३६	४	मंगल	५८	५५	रात	५	३	ज्येष्ठा	१३	३१	दिन	१०	५३	शिव	४२	२४	रात	१०	२६	बव	२६	२१	बा	५८	५५
३२	३९	५	बुध.	६०	०	स	म	स्त	मूल	१९	५६	दिन	१	२६	सिद्ध	४३	४२	रात	१०	५७	को	३१	१३	तै	६०	०
३२	४२	५	गुरु.	३	३१	दिन	६	५२	पू.षा.	२५	४७	दिन	३	४७	साध्य	४५	२८	रात	११	१५	तै	३	३१	गर	३४	२१
३२	४५	६	शुक्र.	७	२२	दिन	८	२४	उ.षा.	३०	४६	सायं	५	४५	शुभ	४४	३१	रात	११	१६	व	७	२२	वि	३८	४४
३२	४८	७	शनि.	१०	५	दिन	९	२८	श्रवण	३४	४०	रात	७	१८	शुक्ल	४३	३६	रात	१०	५२	बव	१०	५	बा	४०	५३
३२	५१	८	रवि	११	४१	दिन	१०	६	धनिष्ठा	३७	२१	रात	८	२२	ब्रह्म	४१	४७	रात	१०	९	को	११	४१	तै	४१	५०
३२	५३	९	सोम.	११	५९	दिन	१०	१३	शतभिषा	३८	४७	रात	८	५६	ऐन्द्र	३८	५७	रात	९	०	गर	११	५९	व	४१	२९
३२	५६	१०	मंगल	१०	५८	दिन	९	४८	पूर्वाभा.	३८	५७	रात	९	०	वैधृति	३५	७	रात	७	२८	वि	१०	५८	बव	३९	५०
३२	५९	११	बुध	८	४३	दिन	८	५३	उत्तराभा.	३७	५८	रात	९	३५	विष्कुम्भ	३०	२३	सायं	५	३३	बा	८	४३	को	३७	४
३३	१	१२	गुरु.	५	२५	दिन	७	३४	रेवती	३६	७	रात	७	५१	प्रीति	२४	५१	दिन	३	२१	तै	५	२५	गर	३३	१९
३३	४	१३/१४	शुक्र.	१/५८	१३/५८	प्रातः	५/३	५२/५१	अश्विनी	३३	२२	सायं	६	४४	आयुष्मान	१८	३६	दिन	१२	५०	व	१	१३	वि/श	२८/५४	५/५८
३३	७	३०	शनि	५०	३८	रात	१	३८	भरणी	२९	५८	दिन	५	२२	सौभाग्य	११	४५	दिन	१०	५	च	२२	४८	ना	५०	३८

	औदायिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रा. उ+		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रोदय	
ति.	योग	अं.	फ.	सो.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	शुभ	२	१	१८	१२	वृश्चिक	४४	१०	५	३१	६	२९	१५	११	०	१७	१७	१६	५८	३	-	५	७	१३
२	उत्पात	३	२	१९	१३				५	३०	६	३०	१५	२९	०	१८	१५	१९	५८	१	-	५	८	९
३	मानस	४	३	२०	१४				५	२९	६	३१	१५	४६	०	१९	१३	२०	५७	५९	-	५	९	४
४	मुद्गर	५	४	२१	१५	धनु	१३	३१	५	२९	६	३१	१६	४	०	२०	११	१९	५७	५७	-	५	९	५६
५	ध्वज	६	५	२२	१६				५	२८	६	३२	१६	२१	०	२१	९	१६	५७	५५	-	५	१०	४५
५	धाता	७	६	२३	१७	मकर	४२	२	५	२८	६	३२	१६	३८	०	२२	७	११	५७	५३	-	५	११	२९
६	आनन्द	८	७	२४	१८				५	२७	६	३३	१६	५५	०	२३	५	४	५७	५२	-	५	१२	९
७	स्थिर	९	८	२५	१९				५	२६	६	३४	१७	११	०	२४	२	५६	५७	५०	-	६	१२	४५
८	मातंग	१०	९	२६	२०	कुंभ	६	०	५	२६	६	३४	१७	२७	०	२५	०	४६	५७	४८	-	६	१	१९
९	अमृत	११	१०	२७	२१				५	२५	६	३५	१७	४३	०	२५	५८	३४	५७	४६	-	६	१	५१
१०	काण	१२	११	२८	२२	मीन	२३	५५	५	२५	६	३५	१७	५८	०	२६	५६	२०	५७	४४	-	६	२	२४
११	लुम्बक	१३	१२	२९	२३				५	२४	६	३६	१८	१३	०	२७	५४	४	५७	४२	-	६	२	५८
१२	मित्र	१४	१३	३०	२४	मेष	३६	७	५	२४	६	३६	१८	२८	०	२८	५१	४६	५७	४१	-	६	३	३६
१३/१४	वज्र	१५	१४	३१	२५				५	२३	६	३७	१८	४३	०	२९	४९	२७	५७	३९	-	६	४	१८
३०	ध्वांक्ष	१६	१५	१	२६	वृष	४४	०	५	२३	६	३७	१८	५७	१	०	४७	६	५७	३७	-	६	५	९

वृश्चिकराशिः रात्रि ११।११ वादने। फसली ज्येष्ठमासारम्भः। ज्येष्ठ मासे पिष्टेन ब्रह्ममूर्ति स्थापयित्वा सविधि पूजनेन महत् फलम्। शुभाशुभेत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ४३।५५ (रा.११।५) उ.(क)
देवर्षि नारद जयन्ती २। वीणा वादनं। मृत्युबाणः ४६।४२ (रा.१२।११) उपरान्त। (क) यावद्दिनम्।
भद्रा २१।१३ (दि.१।५८) उ. ५३।४७ (रा.३।०) या. (स्वर्ग)। सर्वार्थसिद्धियोगः ६।५४ (दि.८।१५) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ६।५४ (दि.८।१५) या.। मृत्युबाणः ४८।४८ (रा.१।०) यावत्।
धनुराशिः दिवा १०।५३ वादने। अंगारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.९।५६) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः १३।३१ (दि.१०।५३) या.।(ख)
यात्रायाम् निषिद्धः यमघंटयोगः १९।५६ (दि.१।२६) या.। (ख) ज्येष्ठ भौमः (बड़का मंगल)।
मकरराशिः रात्रि १०।१७ वादने। रविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती ७ (मई)। गुरौ-पूर्णा सिद्धियोगः ३।३१ (दि.६।५२) या.। रवियोगः २५।४७ (दि.३।४७) उ.।
भद्रा ७।२२ (दि.८।२४) उ. ३८।४४ (रा.८।५७) या. (पाताले)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३०।४६ (सा.५।४५) उ.। रवियोगः ३०।४६ (सा.५।४५) या.। शुक्रे-नन्दा सिद्ध योगः ७।२२(दि.८।२४)या.।
सर्वार्थसिद्धियोगः ३४।४० (रा.७।१८) या.। (ङ) ३६।७ (रा.७।५१) या.। वट सावित्री व्रतारम्भः।
कुम्भराशिः दिवा ७।५० वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम् पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम। श्रीत्रिलोकनाथाष्टमी ८ (बंगाल)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ११।४१(ग)
भद्रा ४१।२९ (रा.१०।१) उ. (मर्त्ये)। ⊙ कृत्तिका नक्षत्रे रविः ४३।४० (रा.१०।५३)। (ग) (दि.१०।६) उ. ३७।२१ (रा.८।२२) या.।
मीनराशिः दिवा २।५९ वादने। भद्रा १०।५८ (दि.९।४८) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।५७ (रा.९।०) उ.। (घ) ६।४५ (दि.८।६) उपरान्त।
अचला (अपरा) एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। जलक्रीडा ११ (उड़ीसा)। अपरासेवनाद्राजन्विपाप्मा भवति ध्रुवम्। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ८।४३ (दि.८।५३) उ.। मृत्युबाणः(घ)
मेषराशिः रात्रि ७।५१ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। प्रदोष व्रतम् १२। मृत्युबाणः ९।४० (दि.९।१६) यावत्। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५।२५ (दि.७।३४)उ.(ङ)
भद्रा १।१३ (प्रातः ५।५२) उ. २८।५ (दि.४।३७) या. (स्वर्ग)। ⊙ सं.वृष राशौ रविः ११।३० (दि.९।५९) मु.३० समा समताकरम्। पूर्वाः पराः १६ घट्यः पुण्याः गो, अन्न तिल(च)
वृषराशिः रात्रि १०।५९ वादने। स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। वट सावित्री व्रतम् (बरगदाई) अमावस्या ३०। सौर ज्येष्ठ मासारम्भः। शनैश्चर जयन्ती (शनि(छ)

(च)दानम् गोदावार्याम् गंगायाम् च स्नानम्। ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भः। मासशिवरात्रि व्रतम् १४। सर्वार्थसिद्धियोगः ३३।२२ (सा.६।४४) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः १।१३ (प्रातः ५।५२) उ. ३३।२२ (सा.६।४४) या.। (छ) जयन्ती ३०। मृत्युबाणः १४।० (दि.१०।५९) उ.। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्।

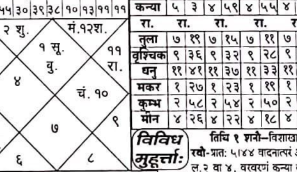
सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति	
१ श.	६	२०	५४	१३	११	२२	५६	२२	४५	५३	०	३	३१	१७	११७	६
२ र.	७	३	८	२८	११	२३	४२	१५	४५	५०	०	५	२८	२३	११८	४९
३ सो.	७	१५	१२	४१	११	२४	२८	५	४५	४७	०	७	२६	१२	१२०	३४
४ मं.	७	२७	१४	३३	११	२५	१३	५२	४५	४४	०	९	२७	४६	१२१	५२
५ बु.	८	९	१७	११	११	२५	५९	३६	४५	४२	०	११	२९	३८	१२२	४५
५ गु.	८	२१	२७	५४	११	२६	४५	१८	४५	४०	०	१३	३२	२३	१२३	३८
६ शु.	९	३	४७	२०	११	२७	३०	५८	४५	३७	०	१५	३६	१	१२४	२१
७ श.	९	१६	२०	४९	११	२८	१६	३५	४५	३३	०	१७	४०	२२	१२५	११
८ र.	९	२९	८	३	११	२९	२	८	४५	३०	०	१९	४५	३३	१२६	३९
९ सो.	१०	१२	११	४७	११	२९	४७	३८	४५	२८	०	२१	५२	१२	१२८	५३
१० मं.	१०	२५	२९	३४	०	०	३३	६	४५	२६	०	२४	१	५	१२९	२०
११ बु.	११	९	१	६	०	१	१८	३२	४५	२५	०	२६	१०	२५	१३०	१२
१२ गु.	११	२२	४३	३८	०	२	३	५७	४५	२२	०	२८	२०	३७	१३१	३३
१३ शु.	०	६	३६	४२	०	२	४९	१९	४५	२०	१	०	३२	१०	१३२	२७
३० श.	०	२०	३६	१५	०	३	३४	३९	४५	१७	१	२	४४	३७	१३२	५०

ति.वा.	स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ श.	२	२४	३४	५	८	५०	१	१५	२३	३५	७२	२९	११	१४	५८	१७	६	४०	१०	११	२४	०
२ र.	२	२४	४२	५५	८	५९	१	१६	३६	४	७२	२८	११	१५	४	५७	६	३८	१०	११	२०	५०
३ सो.	२	२४	५१	५४	९	५	१	१७	४८	३२	७२	२६	११	१५	११	३५	६	३५	१०	११	१७	३९
४ मं.	२	२५	०	५९	९	११	१	१९	०	५८	७२	२२	११	१५	१८	१०	६	३४	१०	११	१४	२८
५ बु.	२	२५	१०	१०	९	१८	१	२०	१३	२०	७२	२०	११	१५	२४	४४	६	३१	१०	११	११	१७
५ गु.	२	२५	१९	२८	९	२५	१	२१	२५	४०	७२	१७	११	१५	३१	१५	६	२६	१०	११	८	६
६ शु.	२	२५	२८	५३	९	३०	१	२२	३७	५७	७२	१५	११	१५	३	४१	६	२२	१०	११	४	५५
७ श.	२	२५	३८	२३	९	३६	१	२३	५०	१२	७२	१२	११	१५	४४	३	६	१७	१०	११	१	४४
८ र.	२	२५	४७	५९	९	३८	१	२५	२	२४	७२	१०	११	१५	५०	२०	६	१३	१०	१०	५८	३३
९ सो.	२	२५	५७	३७	९	४१	१	२६	१४	३४	७२	७	११	१५	५६	३३	६	९	१०	१०	५५	२२
१० मं.	२	२६	७	१८	९	४३	१	२७	२६	४१	७२	६	११	१६	२	४२	६	६	१०	१०	५२	११
११ बु.	२	२६	१७	१	९	४६	१	२८	३८	४७	७२	४	११	१६	८	४८	६	४	१०	१०	४९	०
१२ गु.	२	२६	२६	४७	९	४७	१	२९	५०	५१	७२	१	११	१६	१४	५२	६	३	१०	१०	४५	४९
१३ शु.	२	२६	३६	३४	९	५०	२	१	२	५२	७२	०	११	१६	२०	५५	६	१	१०	१०	४२	३८
३० श.	२	२६	४६	२४	९	५१	२	२	१४	५२	७१	५६	११	१६	२६	५६	५	५९	१०	१०	३९	२७

पं.७ शु.ज्येष्ठ कृष्ण ८ रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ११९
अयनांशाः २४/१२/३३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	११	०	२	१	११	१०	४
२५	२९	२९	१९	२५	२५	१५	१०	१०
०	८	२	४५	४७	२	५०	५८	५८
४६	३	८	३३	५९	२४	२०	३३	३३
५७	७७०	४५	१२६	९	७२	६	३	३
४८	५५	३०	३९	३८	१०	१३	११	११



पं.८ शु.ज्येष्ठ कृ. ३० शनौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १२५
अयनांशाः २४/१२/३४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	०	१	२	२	११	१०	४
०	२०	३	२	२६	२	१६	१०	१०
४७	३६	३४	४४	४६	१४	२६	३९	३९
६	१५	३९	३७	२४	५२	५६	२७	२७
५७	८५०	४५	१३२	९	७१	५	३	३
३७	४१	१७	५०	५१	५६	५९	११	११



शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१श. घं.	मि.	२र. घं.	मि.	३सो. घं.	मि.	४मं. घं.	मि.	५बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु. घं.	मि.	७श. घं.	मि.
मेष	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९
वृष	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३८
मिथुन	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१
कर्क	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९
सिंह	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३१	२	२७	२	२३
कन्या	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
तुला	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५२
वृश्चिक	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१३	९	९
धनु	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४
मकर	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९
कुम्भ	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०
मीन	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८

लग्नांत ति.वा.	८र. घं.	मि.	९सो. घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	३०श. घं.	मि.
मेष	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	वृष	७	१०
वृष	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	मिथुन	९	२४
मिथुन	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३२	९	२८	कर्क	११	४१
कर्क	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	सिंह	१	५५
सिंह	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	कन्या	४	८
कन्या	४	३१	४	२७	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	तुला	६	२४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.	
तुला	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	वृश्चिक	८	४१
वृश्चिक	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	धनु	१०	४६
धनु	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	मकर	१२	३२
मकर	१२	५५	१२	५१	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	कुम्भ	२	३
कुम्भ	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	मीन	३	३१
मीन	३	५४	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	मेष	५	९

फलम्—पंचमी तिथि की वृद्धि हुयी है किन्तु चतुर्दशी तिथि का क्षय भी हो गया है इस प्रकार पक्ष १५ दिन का ही है। पक्ष के तीन शनिवार, शनिवार की अमावस्या बहुत भारी पड़ेगे। अग्निकाण्ड अथवा दैवी, प्राकृतिक घटना, दुर्घटना घटकर धन-जन को क्षति पहुँचावेंगे। बिना किसी वाहन के पूरे ब्रह्माण्ड में विचरण करने वाले तथा देवताओ के आपसी संवाद को पहुँचाने वाले सूचना-प्रौद्योगिकी के आदिगुरु **देवर्षि नारद** की जयन्ती ३ मई रविवार को वीणा वादन के साथ समारोह पूर्वक मनायी जायेगी। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत** ५ मई मंगलवार को **अंगारकी गणेश चतुर्थी** के रूप में मनायी जायेगी। चन्द्रोदय रात ९।५६ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। ज्येष्ठ महीने के मंगलवार को 'बड़का मंगल' के रूप में हनुमान जी का विशेष शृंगार भण्डारा पूजन-दर्शन किया जायेगा। ५ मई को पहला बड़का मंगल पड़ेगा। **श्री शीतलाष्टमी** व्रत का मान १० मई रविवार को होगा। इसमें पूर्व रात्रि में की गयी पूजा के प्रसाद को बासी प्रसाद के रूप में ग्रहण करने का पुण्य फलदायक विधान है। इसे बसियउरा भी कहा जाता है। **अचला अथवा अपरा एकादशी** का व्रत सबके लिये १३ मई बुधवार को है। शास्त्र मे बताया गया है कि जो व्यक्ति सक्षम एवं सामर्थ्यवान होते हुए भी गरीबो एवं असहायों की सेवा, सहायता नही करता है वो पाप का भागी होता है और उसके पाप, इस अचला एकादशी का व्रत करने से कटते हैं। **प्रदोष का व्रत** १४ मई गुरुवार को किया जायेगा। **मास शिवरात्रि व्रत** का मान १५ मई शुक्र. को होगा। **स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या** १६ मई शनि. को होगी। ■

भौमादीनां चारः

भौमः-रेवत्यां मीनराशौ ९ सोमतः अश्विन्यां मेषराशौ दिवा ११।१५वादने। **बुधः**-मेष राशौ १२ गुरुतः वृष राशौ रात्रिं ३।५० वादने। **गुरुः**-पुनर्वसु नक्षत्रे मिथुन राशौ। **शुक्रः**-वृष राशौ१२गुरुतः मिथुने दिवा ८।१०वादने। **शनिः**-उ.भा. ४ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-शतभिषा २ चरणे **केतुश्च**-मघा ४ चरणे।

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ शनौ—विशाखायां- इष्टिकादहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि २ रवौ**-प्रातः ५।४४ वादनात्परं अनुराधायां अक्षरारम्भः विद्यारम्भः उपनयनं ल.२ वा ४, वरवरणं कन्या वरणं, विपणि व्यापारः लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं, शस्त्रधारणं, दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेद पत्र लेखनं, शल्यकर्म सर्वदेवप्रतिष्ठा ल.२ वा ३ सेवारम्भः औषधि निर्माण सेवनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **ति. ३ सोमे**- दिवा ८।१५ वादनम् यावत् अनुराधायां आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशन **कर्णवेध**-कन्या नासिकाच्छेदनं, अक्षरारम्भ विद्यारम्भ **उपनयनं ल.२ वा ३, वरवरणं-कन्यावरण वधूप्रवेश, द्विरागमनं ल.२ वा ३,** विपणिव्यापारः हलप्रवहणं, बीजवपनं कणमर्दनः धान्यस्थापन, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः दिग् शूल विहाय सर्वदिग गमनं दिवा ८।१५ वादनात्परं ज्येष्ठायां **चौलमुण्डनं ल.३। तिथि ४ भौमे**— ज्येष्ठायां रोग विमुक्तस्नानं। **तिथि ५ बुधे—**मूले नामकरणं विद्यारम्भ अक्षरारम्भः **उपनयनं ल.३ वा ४** वरवरणं कन्यावरणं **द्विरागमन ल.३,** हलप्रवहणं बीजवपनं जलयन्त्रकर्म मुकदमाकार्य दिवा १।२६ वादनात्परं पूर्वाषाढ़ायाम् धान्यच्छेदन पूर्वदिग् यात्रा। **तिथि ५ गुरौ**—पूर्वाषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः **उपनयनं ल.३** जलयंत्रकर्म दिवा ३।४७ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् **गर्भाधानरात्रौ ल.९** जातकर्म नामकरणं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं **वरवरणं कन्या वरणं वधूप्रवेशः ल.गोधूलि** विपणिव्यापारः नववस्त्रधारण, **हलप्रवहण**बीजवपनं धान्यच्छेदनं सेवारम्भः आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिकानिर्माणः भूमिक्रयः सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलशयवाटिकारम्भ नूतनबध्वां पाककर्मः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ६ शुक्रे—**भद्रा दिवा ८।२४ वादनात्पूर्व उत्तराषाढ़ायाम जातकर्म नामकरण **वधूप्रवेशः ल.३** विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं हलप्रवहणं, बीजवपनं शस्त्रधारणं आवेदनपत्र लेखनं सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः नूतनबध्वापाककर्म भद्रा रात्रि ८।५७ वादनात्परं श्रवणे **गर्भाधानं ल.९,** अन्नप्राशन **कर्णवेधः वरवरणं कन्यावरणं द्विरागमनं ल.९** दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ७ शनौ**—श्रवणे नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं शस्त्रघटनं, इष्टिका निर्माणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् यात्रा। **तिथि ८ रवौ**—धनिष्ठायां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणः धान्यच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः आवेदन पत्र लेखनं औषधिसेवनं दिवा १०।१६ वादनात्परं रिक्तायां रोग विमुक्तस्नानं रात्रि ८।२२ वादनात्परं शतभिषायां शल्यकर्म (आपरेशन)। **तिथि ९ सोमे**—रिक्ता दिवा १०।१३ वादनात्परं शतभिषायां अन्नप्राशनं **चौलमुण्डनं** आभूषण निर्माणधारण हलप्रवहणं, धान्यरोपणः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः जलयन्त्र कर्म, आवेदन पत्र लेखनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः नूतनवध्वा पाककर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १० भौमे**—पूर्वाभाद्रपदे भद्रा दिवा ९।४८ वादनात्परं पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, इष्टिकादहनं। **तिथि ११ बुधे**—उत्तराभाद्रपदे-**गर्भाधानं रात्रौ ल.९** जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं आ.**उपनयनं ल.३ वा ४, वरवरणं—कन्या** वरणं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारण, हलप्रवहण बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, वाहनक्रयः **चूल्हिकास्थापनं** नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ, सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं, **गृहप्रवेशः ल.२ वा ३** सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः नूतनवध्वा पाककर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ गुरौ**—रेवत्यां—पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नान जातकर्म अन्नप्राशनं, कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं ल.३** अक्षरारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ, **आ.उपनयन ल.२,** वरवरणं कन्यावरणं **वधूप्रवेशः द्विरागमन ल.३** विपणिव्यापारः वाहनक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं, सेवारम्भः शस्त्रधारण शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखन इष्टिका निर्माण भूमिक्रयः **गृहप्रवेशः ल.२ वा ३** (दिवा ९।१६ वादनात्पूर्व) सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १३ शुक्रे**—अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३० शनौ**—भरण्यां मासान्तः।

■ **वट सावित्री (बरगदाई)** का मान-विधान १६ मई शनिवार को होगा। सौभाग्यवती स्त्रियां इस व्रत पूजा को बड़े श्रद्धा एवं विश्वास के साथ करती है। माना जाता है कि **शनि भगवान की उत्पत्ति ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या** को हुयी थी। इस वर्ष **शनिवार को ही ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या** पड़ जाने से शनि ग्रह की शान्ति के लिये आज के दिन शनि भगवान की विशेष रूप से पूजा, अराधना की जायेगी। **कृतिका नक्षत्र** का सूर्य ११ मई सोमवार को रात १०।५३ बजे से आयेगा। शास्त्र जानने वाले विद्वानो को पीड़ा पहुंचेगी। **वृष राशि** की सूर्य संक्रान्ति १५ मई शुक्रवार को दिन ९।५९ बजे से आयेगी। घी, गुड़, तेल के भाव चढ़ जायेंगे जबकि खाद्यान्नों के भाव में नरमी चलेगी। भीषण गर्मी से जनता बेहाल हो जायेगी।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.२ रवौ—प्रातः ५।४४ वादनात्परं अनुराधायां सूर्यवेधः मृत्युबाणश्च। **ति.३ सोमे**-प्रातः८।१५ वादनम् यावत् अनुराधायां मृत्युबाणः। **ति.४ भौमे**-दिवा १०।५३ वादनात्परं मूले रेखा ८ दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.११।। वा ल.११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१५।। वा लग्ने १२ पंचेष्टाभावः।
ति.५ बुधे—दिवा १।२६ वादनम् यावत् मूल नक्षत्रे रेखा ८ दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः।
ति.५ गुरौ—दिवा ३।४७ वादनात्परं उ.षा. रेखा ७ लग्नं ६ पंचेष्टाभावः वा लग्नं ७ इ.५ ग्र.व.वि.१२।। वा लग्नं गोधूलि वा ल.१० इ.६ ग्र.व.वि.११।। वा ११ वा लग्नं १२ पंचेष्टाभावः।
ति.६ शुक्रे-भद्रा दिवा ८।२४ वादनात्पूर्व उत्तराषाढ़ायाम् रेखा ७ दिवा लग्ने पंचेष्टाभाव।
ति.१० भौमे—रात्रि ९।० वादनात्परं उ.भाद्रपदे रेखा ७ लग्नं १० इ.६ ग्र.व.वि.१५।। वा लग्नं ११ इष्टा ६ ग्र.व.वि.१७ वा लग्नं १२ पंचेष्टाभावः।
ति.११ बुधे—उ.भा. दिवा ८।६ वादनात्परं मृत्युबाणः। **ति.१२ गुरौ**—मृत्युबाणः दिवा ९।१६ वादनात्परं रेवत्यां रेखा ७ दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः वा रात्रि ७।५१ वादनम् यावत् लग्नं गोधूलिः। **तत्परं मासान्तः।**

राशिफल

मेष-	धनप्राप्तिः
वृष-	सुखं
मिथुन-	अर्थ लाभ
कर्क-	धनागमः
सिंह-	दुःखम्
कन्या-	धर्माचरणं
तुला-	सुखलाभः
वृश्चिक-	विपत्ति
धनु-	शोकः
मकर-	शत्रुभयं
कुम्भ-	पुत्रोन्नति
मीन-	अर्थागमः

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्म ऋतुः। दि.१७ - ३१ मई - सन् २०२६ ई.। (रा.वैशाख २७ - ज्येष्ठ १०)

दि.मा. घ.	प.	अ.ज्येष्ठ शु. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
३३	९	१	रवि	४४	४१	रात	११	१५	कृत्तिका	२६	७	दिन	३	५०	शोभन अतिगण्ड	४ ५२	३१ २६	प्रातः	७ ४	९ ७	किं	१७	१०	बव	४४	४१
३३	१२	२	सोम.	३८	३३	रात	८	३५	रोहिणी	२२	३	दिन	२	११	सुकर्मा	४९	१८	रात	१	५	बा	११	३७	को	३८	३३
३३	१४	३	मंगल	३२	२४	सायं	६	१९	मृगशिरा	१७	५१	दिन	१२	२९	धृति	४१	४५	रात	१०	३	तै	५	२८	गर व	३२ ५९	२४ २०
३३	१६	४	बुध	२६	३१	दिन	३	५७	आर्द्रा	१३	५१	दिन	१०	५३	शूल	३४	२२	रात	७	६	वि	२६	३१	बव	५३	४७
३३	१८	५	गुरु	२१	३	दिन	१	४५	पुनर्वसु	१०	१५	दिन	९	२६	गण्ड	२७	१८	दिन	४	१५	बा	२१	३	को	४८	३५
३३	२१	६	शुक्र	१६	६	दिन	११	४६	पुष्य	७	११	दिन	८	१२	वृद्धि	२०	४७	दिन	१	३९	तै	१६	६	गर	४३	३९
३३	२३	७	शनि	१२	२	दिन	१०	८	श्लेषा	४	५८	दिन	७	१८	ध्रुव	१४	५४	दिन	११	१७	व	१२	२	वि	४०	२७
३३	२५	८	रवि.	८	५३	दिन	८	५२	मघा	३	३१	दिन	६	४३	व्याघात	९	५१	दिन	९	१५	बव	८	५३	वा	३७	५०
३३	२७	९	सोम.	६	४७	दिन	८	२	पूर्वाफा.	३	११	दिन	६	३५	हर्षण	५	३५	दिन	७	३३	कौ	६	४७	तै	३६	२०
३३	२९	१०	मंगल.	५	५४	दिन	७	४०	उत्तराफा.	४	३	दिन	६	५५	वज्र	२	२०	दिन	६	१४	गर	५	५४	व	३६	६
३३	३१	११	बुध.	६	१९	दिन	७	५०	हस्त	६	८	दिन	७	४५	सिद्धि व्यतीपात	० ५८	५ ५०	प्रातः	५ ४	२० ५२	वि	६	१९	बव	३७	१२
३३	३३	१२	गुरु.	८	५	दिन	८	३१	चित्रा	९	३३	दिन	९	६	वरीयान	५८	३१	रात	४	४२	बा	८	५	कौ	३९	२८
३३	३५	१३	शुक्र.	१०	५१	दिन	९	३७	स्वाती	१४	४	दिन	१०	५५	परिघ	५९	३	रात	४	५४	तै	१०	५१	गर	४२	४९
३३	३६	१४	शनि.	१४	४७	दिन	११	१२	विशाखा	१९	३६	दिन	१	७	शिव	६०	०	स	म	स्त	व	१४	४७	वि	४७	५
३३	३८	१५	रवि.	१९	२३	दिन	१	१	अनुराधा	२५	४६	दिन	३	३४	शिव	०	१४	प्रातः	५	२२	बव	१९	२३	बा	५१	५५

ति.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
१	धूम्र	१७	१६	२	२७				५	२३	६	३७	१९	११	१	१	४४	४३	५७	३६	-	६	+	+	**अधिक ज्येष्ठ मासारम्भ। मलमासारम्भः। पुरुषोत्तम मास आरम्भः।** मलमास पर्यन्तं विल्वपत्रेण शिवार्चनम् देवालये तीर्थे वा ग्रामे-नगरे नगरे भागवत् कथा श्रवणीया। बहुविध शिवार्चनम् पार्थिवार्चनम्। **राजगीर (बिहार(क)**
२	प्रवर्धमान	१८	१७	३	२८	मिथुन	४९	५८	५	२२	६	३८	१९	२४	१	२	४२	१९	५७	३४	-	६	८	४०	**मिथुनराशिः** रात्रि १।२१ वादने। **चन्द्र ◡ दर्शनम्** मु.३० समा समताकरम्। सम श्रृंगम् सुभिक्षं। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।३ (दि.२।११) या. तदुपरि सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो यावद्दिनम्।
३	राक्षस	१९	१८	४	२९				५	२१	६	३९	१९	३८	१	३	३९	५३	५७	३२	-	६	९	४४	भद्रा ५९।२७ (रात्रि शेष ५।८) उ. (स्वर्गे)। **मु.जिलहिज १२ हिजरी सन् १४४७।** भौमे-जया सिद्धयोगः ३२।२४ (सा.६।१९) या.। रवियोगः १७।५१ (दि.१२।२९) उ.।
४	मुसल	२०	१९	५	३०	कर्क	५६	९	५	२१	६	३९	१९	५१	१	४	३७	२५	५७	३१	-	६	१०	४०	**कर्कराशिः** रात्रि ३।४५ वादने। भद्रा २६।३१ (दि.३।५७) या.। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** दोषसंघ विनाशको रवियोगः १३।५१ (दि.१०।५३) या.।
५	सिद्धि	२१	२०	६	३१				५	२०	६	४०	२०	३	१	५	३४	५६	५७	२९	-	६	११	२७	सर्वार्थसिद्धियोगः १०।१५ (दि.९।२६) या. तदुपरि गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १०।१५ (दि.९।२६) या.। गुरौ पूर्णा सिद्धयोगः २१।३। (दि.१।४५) या.। रवियोगः १०।१५ (दि.९।२६)उ.।
६	उत्पात	२२	२१	७	१				५	२०	६	४०	२०	१५	१	६	३२	२४	५७	२८	-	६	१२	७	**राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारम्भः।** दोषसंघविनाशको रवियोगः ७।११ (दि.८।१२) या.। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः १६।६ (दि.११।४६) या.। **पौराणिक अगस्त्यास्तः** २९।१२ (दि.५।१) वादने।
७	मानस	२३	२२	८	२	सिंह	४	५८	५	१९	६	४१	२०	२७	१	७	२९	५२	५७	२६	-	५	१२	४२	**सिंहराशिः** दिवा ७।१८ वादने। भद्रा १२।२ (दि.१०।८) उ. ४०।२७ (रा.९।३०) या. (मर्त्ये)। **पश्चिम दिशायाम् बुधोदयः।**
८	मुद्गर	२४	२३	९	३				५	१९	६	४१	२०	३९	१	८	२७	१८	५७	२५	-	५	१	१४	दोषसंघ विनाशको रवियोगः ३।३१ (दि.६।४३) उ.। यात्रायाम् निषिद्धः यमघंटयोगः ३।३१ (दि.६।४३) या.।
९	ध्वज	२५	२४	१०	४	कन्या	१८	२४	५	१९	६	४१	२०	५०	१	९	२४	४३	५७	२३	-	५	१	४४	**कन्याराशिः** दिवा १२।४१ वादने। ☉ **रोहिणी नक्षत्रे रविः** ३७।२४ (रा.८।७)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ३७।२४ (रा.८।७) उ.।
१०	धाता	२६	२५	११	५				५	१८	६	४२	२१	१	१	१०	२२	६	५७	२२	-	५	२	१४	भद्रा ३६।६ (रा.७।४४) उ. (पाताले)। **श्रीगंगा दशहरा १० व्रतम् । ज्येष्ठे मलमासे सति तत्रैव दशहरा कार्या न तु शुद्धे।** हरतं दश पापानि। वृष लग्ने श्री गंगावतरणम्। **सेतुबन्ध रामेश्वर प्रतिष्ठा दिनम्। गायत्री(ख)**
११	आनन्द	२७	२६	१२	६	तुला	३७	५०	५	१८	६	४२	२१	११	१	११	१९	२७	५७	२०	-	५	२	४६	**तुलाराशिः** रात्रि ८।२६ वादने। भद्रा ६।१९ (दि.७।५०) या.। **पुरुषोत्तमी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः ६।८ (दि.७।४५) या.। रवियोगः ६।८ (दि.७।४५) या.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ६।१९ (दि.७।५०)उ.।
१२	चर	२८	२७	१३	७				५	१७	६	४३	२१	२१	१	१२	१६	४७	५७	१९	-	५	३	२०	**प्रदोष व्रतम् १२।** यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ९।३३ (दि.९।६) उ.। **मु.इदुज्जुहा (बकरीद)।**
१३	गद	२९	२८	१४	८				५	१७	६	४३	२१	३१	१	१३	१४	६	५७	१८	-	५	३	५७	दोषसंघ विनाशको रवियोगः १४।४ (दि.१०।५५) उ.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः १४।४ (दि.१०।५५) उ.।
१४	शुभ	३०	२९	१५	९	वृश्चिक	३	१३	५	१७	६	४३	२१	४०	१	१४	११	२४	५७	१७	-	५	४	३९	**वृश्चिकराशिः** प्रातः ६।३४ वादने। भद्रा १४।४७ (दि.११।१२) उ. ४७।५ (रा.१२।७) या. (स्वर्गे)। **व्रताय पुरुषोत्तमी पूर्णिमा १५।** रवियोगः १९।३६ (दि.१।७) या.। शनि रिक्ता समा योगे सिद्धयोगः १४।१७ (दि.११।१२)या.।
१५	मृत्यु	३१	३०	१६	१०				५	१६	६	४४	२१	४९	१	१५	८	४१	५७	१५	-	५	+	+	**स्नानदानादौ पुरुषोत्तमी पूर्णिमा १५ पुण्यतमा।** यायि (मुद्दई) जयद्योगः २५।४६ (दि.३।३४) या.।

(ख) जयन्ती। काश्यां दशाश्वमेधे-हरिद्वारे वा सर्वत्र गंगायाम् स्नानम् गंगा स्तोत्रस्य पाठ समाप्तिः। काश्यां गौतमेश्वर जलधरी श्रृंगार समाप्तिः। लोक मान्यतानुसारेण **नवतपा प्रारम्भः।** रात्रि ९ वादनात्। रवियोगः यावद्दिनम्।

(क) प्रान्ते) मेलोत्सवः प्रारम्भः। **गोवर्धन धरं वन्दे गोपालं गोप रुपिणीम्। गोकुलोत्सवमीशानं गोविन्दं गोपिका प्रियम्।** इति मन्त्र मलमास पर्यन्तं जपनीयम्। काश्यां दशाश्वमेधे-हरिद्वारे अन्यत्र नद्यां तीर्थे वा नियमित१० दिनानि यावत् स्नानारम्भः। वृद्धि क्रमेण गंगा स्त्रोत्रस्य नित्यपाठारम्भः। ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे प्राप्य प्रतिपदे तिथिम्। दशाश्वमेधके स्नात्वामुच्यते सर्व पातकैः। **काशीखण्डे।** यायि (मुद्दई) जयद् योगः २६।७ (दि.३।५०) उ. ४४।४१ (रा.११।१५) या.।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	र.	१	४	४४	३५	०	४	१९	५६	४५	१५	१	४	५७	२७	१३१	२६	२	२६	५६	१५	९	५३	२	३	२६	४८	७१	५४	११	१६	३२	५५	५	५५	१०	१०	३६	१६
२	सो.	१	१८	५२	५	०	५	५	११	४५	११	१	७	८	५३	१३०	३८	२	२७	६	८	९	५६	२	४	३८	४२	७१	५०	११	१६	३८	५०	५	५२	१०	१०	३३	६
३	मं.	२	३	०	३८	०	५	५०	२२	४५	९	१	९	१९	३१	१२८	२०	२	२७	१६	४	९	५७	२	५	५०	३२	७१	४७	११	१६	४४	४२	५	४९	१०	१०	२९	५५
४	बु.	२	१७	८	२५	०	६	३५	३१	४५	८	१	११	२७	५१	१२५	५५	२	२७	२६	१	९	५९	२	७	२	१९	७१	४५	११	१६	५०	३१	५	४७	१०	१०	२६	४४
५	गु.	३	२	१५	९	०	७	२०	३९	४५	५	१	१३	३३	४६	१२३	३४	२	२७	३६	०	१०	४	२	८	१४	४	७१	४३	११	१६	५६	१८	५	४६	१०	१०	२३	३३
६	शु.	३	१६	११	२७	०	८	५	४४	४५	४	१	१५	३७	२०	१२२	४३	२	२७	४६	४	१०	९	२	९	२५	४७	७१	४०	११	१७	२	४	५	४४	१०	१०	२०	२२
७	श.	३	२९	१७	३१	०	८	५०	४८	४५	२	१	१७	४०	३	१२१	३३	२	२७	५६	१३	१०	१५	२	१०	३७	२७	७१	३८	११	१७	७	४८	५	४०	१०	१०	१७	११
८	र.	४	१२	५४	४९	०	९	३५	५०	४५	०	१	१९	४१	३६	१२१	१	२	२८	६	२८	१०	२४	२	११	४९	५	७१	३५	११	१७	१३	२८	५	३५	१०	१०	१४	०
९	सो.	४	२६	१८	२३	०	१०	२०	५०	४४	५७	१	२१	४२	३७	१२०	३५	२	२८	१६	५२	१०	३१	२	१३	०	४०	७१	३३	११	१७	१९	३	५	३१	१०	१०	१०	४९
१०	मं.	५	९	२६	८	०	११	५	४७	४४	५५	१	२३	४३	१२	१२०	८	२	२८	२७	२३	१०	३७	२	१४	१२	१३	७१	३०	११	१७	२४	३४	५	२५	१०	१०	७	३८
११	बु.	५	२२	१९	४९	०	११	५०	४२	४४	५२	१	२५	४३	२०	११८	३५	२	२८	३८	०	१०	४५	२	१५	२३	४३	७१	२५	११	१७	२९	५९	५	२१	१०	१०	४	२७
१२	गु.	६	४	५९	४	०	१२	३५	३४	४४	५०	१	२७	४१	५५	११७	२२	२	२८	४८	४५	१०	५०	२	१६	३५	८	७१	२१	११	१७	३५	२०	५	१९	१०	१०	१	१६
१३	शु.	६	१८	२५	१७	०	१३	२०	२४	४४	४५	१	२९	३९	१७	११५	४९	२	२८	५९	३५	१०	५६	२	१७	४६	२९	७१	१६	११	१७	४०	३९	५	१६	१०	९	५८	५
१४	श.	७	०	३९	२०	०	१४	५	९	४४	४२	२	१	३५	६	१११	२४	२	२९	१०	३१	११	१	२	१८	५७	४५	७१	१२	११	१७	४५	५५	५	११	१०	९	५५	५५
१५	र.	७	१२	४६	१४	०	१४	४९	५१	४४	३८	२	३	२६	३०	१०६	४१	२	२९	२१	३२	११	८	२	२०	८	५७	७१	६	११	१७	५१	६	५	५	१०	९	५२	४४

फलम्–गणित ज्योतिष के अनुसार जिस महीने में सूर्य की कोई संक्रान्ति नही होती अर्थात एक राशि से सूर्य दूसरी राशि तक नहीं जा पाता उस महीने मे मलमास लग जाता है। वास्तव में सिद्धान्त ज्योतिष के अनुसार सौर मास एवं चान्द्र मास के अन्तर को समायोजित करने के लिए हमारे ऋषियों ने मलमास की व्यवस्था कर रखी है। प्रायः दो वर्ष अर्थात तीसरे वर्ष के अन्तराल पर यह आता है। **जेठ के महीने में इस वर्ष मलमास लग रहा है। १७ मई रविवार से यह मलमास प्रारम्भ** हो रहा है। मलमास का पहला पक्ष अर्थात् अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूरे १५दिन का है। पक्ष के तीन रविवार प्रजा पीड़ा कारक है। भीषण गर्मी पड़ेगी। सोमवार मृगशिरा नक्षत्र का चन्द्र दर्शन मु.३० बाजार भाव स्थिर रखेगा। खाद्यान्नों के भाव में नरमी चलेगी। यद्यपि कि मलमास में कोई महत्वपूर्ण पर्व-त्योहार नहीं पड़ता है किन्तु यदि जेठ के महीने में मलमास लगता है तो **गंगा दशहरा** का प्रसिद्ध पर्व मलमास मे ही मनाया जाता है, ऐसा शास्त्र का विशेष निर्देश है। इसप्रकार गंगा दशहरा से सम्बन्धित प्रतिपदा से दशमी तिथि तक, काशी के दशाश्वमेध, हरिद्वार तथा अन्यत्र गंगा नदी में नित्य गंगा स्नान का क्रम अधिक ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा १७ मई रवि. से प्रारम्भ हो जायेगा। गंगा स्त्रोत का पाठ वृद्धि क्रम से किया जायेगा अर्थात् प्रतिदिन एक पाठ बढ़ाते जाते है। ●

पं.९ अ.ज्येष्ठ शु. ८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १३३ अयनांशाः २४/१२/३५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	१	२	२	११	१०	४
८	१२	९	१९	२८	११	१७	१०	१०
२७	५४	३५	४१	६	४९	१३	१४	१४
१८	४१	५०	३६	२८	४	२८	०	०
५७	८२५	४५	१२१	१०	७१	५	३	३
२५	५१	०	१	२४	३४	३५	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः–अश्विन्यां मेष राशौ १३ गते भरण्यां रात्रि शेषे। बुधः–वृष राशौ १३ शुक्रतः मिथुन राशौ दिवा १।४५वादने। गुरुः–पुनर्वसुनक्षत्रे मिथुन राशौ। शुक्रः–मिथुन राशौ। शनिः–२ सोमतः रेवती नक्षत्रे १ चरणे दिवा ५।१५ वादने। राहुः–१२ गुरुतः शतभिषा १ चरणे। केतुश्च–मघा ३ चरणे।

अ.ज्येष्ठ शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१र. घं.	मि.	२सो घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु. घं.	मि.	७श. घं.	मि.	८र. घं.	मि.	९सो घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	१५र. घं.	मि.
वृष	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११
मिथुन	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३३	८	२९	८	२५
कर्क	११	३७	११	३३	११	२९	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२
सिंह	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६
कन्या	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२१	३	१७	३	१३	३	९
तुला	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५
	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृश्चिक	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२
धनु	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७
मकर	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३
कुम्भ	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३२	१	२७	१	२३	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४
मीन	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२
मेष	५	५	५	१	४	५७	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ रवौ**–कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं, इष्टिकादहनं दिवा ३।५० वादनात्परं रोहिण्यां प्रसूतिस्नानं लालवस्त्र धारणं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ सोमे**–रोहिण्यां गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ९ आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यारोपणं, वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग, आवेदन पत्रलेखनं, औषधि निर्माणं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ३ भौमे**–मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं शल्य (आपरेशन) कर्म पश्चिम दिग् दिवा १२।२९ वादनात्परं आर्द्रायां शस्त्र घटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ४ बुधे**–रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं दिवा ३।५७ वादनात्परं पुनर्वसौ नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ५ गुरौ**–पुनर्वसौ पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपण नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये सेवारम्भः जलयंत्र कर्म शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्रलेखनं, इष्टिका निर्माणं भूमिक्रयः औषधि निर्माणं सेवनं च दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ शुक्रे**–पुष्ये–जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्र आभूषण निर्माणं, धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः जलयंत्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं भूमिक्रयः औषधि निर्माणं सेवनं च पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ७ शनौ**–श्लेषायां मघायां भद्रा दिवा १०।८ वादनात्पूर्वं शस्त्रघटनं इष्टिकादहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ८ रवौ**–प्रातः ६।४३ वादनात्परं ८।५२ वादनात्पूर्व पूर्वाफाल्गुन्यां प्रसूति स्नानं तत्परं रिक्तायाप्तिः। **तिथि ९ सोमे**–रिक्ता दिवा ८।२ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां गर्भाधानं रात्रौ लग्ने ९ आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः आभूषण निर्माण धारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यरोपणं, धान्यस्थापनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः, शय्यासाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं दिवा १२।४१ वादनात्परं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १० भौमे**–उत्तराफाल्गुन्यां हस्त नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लाल वस्त्र धारणं, शल्यकर्म (आपरेशन) हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ११ बुधे**–भद्रा दिवा ७।५० वादनात्परं चित्रा नक्षत्रे जातकर्म नामकरणं, विपणिव्यापारः वृक्षारोपणं, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ गुरौ**–चित्रा–स्वात्यां गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ९ प्रसूतिस्नानं नामकरणं अन्नप्राशन, विपणि व्यापारः नववस्त्रधारण आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन), भूमिक्रय, पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ शुक्रे**–रिक्ता दिवा ९।३७ वादनात्पूर्व स्वात्यां आ. प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं क्रय-विक्रयः नववस्त्रधारणं आभूषण धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं धान्यस्थापन, वृक्षारोपणं आवेदन पत्र लेखनं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १४ शनौ**–रिक्ता–भद्रा व्याप्तिः। **तिथि १५ रवौ**–अनुराधायां प्रसूति स्नानं विपणिव्यापारः नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यस्थापनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं।

पं.१० अ.ज्येष्ठ शु.१५ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १४० अयनांशाः २४/१२/३६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	०	२	२	२	११	१०	४
१५	१२	१४	३	२९	२०	१७	९	९
८	४६	४९	२६	२१	८	५१	५२	५२
४१	१४	५१	३०	३२	५७	६	४४	४४
५७	७२५	४४	१०६	११	७१	५	३	३
१५	१५	३८	४१	८	६	५	११	११



● **गंगा दशहरा** का पुण्य पवित्र पर्व **२६ मई मंगल.** को मनाया जायेगा। आज के दिन गंगा स्नान कर दान-पुण्य करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है तथा दस प्रकार के पाप (तीन कायिक, चार वाचिक एवं ३ मानसिक) सभी कट जाते है। काशी एवं हरिद्वार का गंगा स्नान विशेष पुण्यफलदायक माना गया है। आज ही के दिन भगवान राम ने भगवान शिव की स्थापना **'रामेश्वरम्'** में की थी। आज ही **गायत्री जयन्ती** भी मनाई जायेगी। **पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए २७ मई बुधवार को होगा। **प्रदोष का व्रत २८ मई** गुरु. को किया जायेगा। व्रत के लिए **पुरुषोत्तमी पूर्णिमा ३० मई** शनि. को होगी जबकि **स्नान दान की पुरुषोत्तमी** पुण्यप्रदकारी **पूर्णिमा ३१ मई** रविवार को मनाई जायेगी। **रोहिणी नक्षत्र** का सूर्य २५ मई सोम. को रात्रि ८।७ बजे से आयेगा। सरसो तेल, गुड़, खांड, सुपारी, रुई सूत, सन का भाव तेज चलेगा। ट्रान्सपोर्ट से सम्बन्धित व्यवसाईयों को सरकार के किसी निर्णय से कष्ट पहुँचेगा। २६ मई मंगलवार की रात ९ बजे से **'नवतपा'** लोकमान्यता के अनुसार प्रारम्भ हो जायेगा। भीषण गर्मी पड़ेगी।

राशिफल

मेष-	धनम्
वृष-	स्थान हानिः
मिथुन-	पीड़ा धनम्
कर्क-	चिन्ता
सिंह-	सौख्यं
कन्या-	धनप्राप्तिः
तुला-	रोग
वृश्चिक-	हानिः
धनु-	शत्रु पराजय
मकर-	दैन्यम्
कुम्भ-	लाभ
मीन-	सुखम्

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३३	४०	१	सोम	२४	२७	दिन	३	३	ज्येष्ठा	३२	२०	सायं	६	१२	सिद्ध	१	४७	प्रातः	५	५६	को	२४	२७	ते	५६	५७	पद्म	१	१	१७	११	धनु	३२	२०	५	१६	६	४४	२१	५८	१	१६	५	५६	५७	१४	-	५	७	५१
३३	४१	२	मंगल	२९	२८	दिन	५	२	मूल	३८	५३	रात	८	४८	साध्य	३	२७	दिन	६	३८	गर	२९	२८	व	६०	०	छत्र	२	२	१८	१२				५	१५	६	४५	२२	६	१	१७	३	१०	५७	१३	-	५	८	४१
३३	४३	३	बुध	३४	४	सायं	६	५३	पूर्वाषाढ़ा	४४	५१	रात	११	११	शुभ	४	५२	दिन	७	११	व	१	४६	वि	३४	४	श्रीवत्स	३	३	१९	१३				५	१५	६	४५	२२	१४	१	१८	०	२३	५७	१२	-	४	९	२७
३३	४४	४	गुरु.	३७	५३	रात	८	२४	उत्तराषाढ़ा	५०	५	रात	१	१७	शुक्ल	५	५१	दिन	७	३६	बव	५	५९	बा	३७	५३.	सौम्य	४	४	२०	१४	मकर	१	१०	५	१५	६	४५	२२	२१	१	१८	५७	३५	५७	११	-	४	१०	८
३३	४५	५	शुक्र.	४०	३४	रात	९	२९	श्रवण	५४	१२	रात	२	५६	ब्रह्म	६	८	दिन	७	४३	को	९	१३	ते	४०	३४	धूम्र	५	५	२१	१५				५	१५	६	४५	२२	२८	१	१९	५४	४६	५७	१०	-	४	१०	४५
३३	४७	६	शनि.	४२	११	रात	१०	७	धनिष्ठा	५७	१०	रात	४	७	ऐन्द्र	५	३०	दिन	७	२७	गर	११	२२	व	४२	११	प्रवर्धमान	६	६	२२	१६	कुम्भ	२५	४१	५	१५	६	४५	२२	३५	१	२०	५१	५६	५७	८	-	४	११	१८
३३	४८	७	रवि	४२	२६	रात	१०	१२	शतभिषा	५८	५१	रात	४	४६	वैधृति	३	५५	दिन	६	४८	वि	१२	१८	बव	४२	२६	राक्षस	७	७	२३	१७				५	१४	६	४६	२२	४१	१	२१	४९	४	५७	७	-	३	११	५०
३३	४९	८	सोम.	४१	२४	रात	९	४८	पूर्वाभाद	५९	१८	रात	४	५७	विष्कुम्भ / प्रीति	१ / ५६	५८ / २३	प्रातः	५ / ४	[illegible]	बा	११	५६	को	४१	२४	मुसल	८	८	२४	१८	मीन	४४	१२	५	१४	६	४६	२२	४७	१	२२	४६	११	५७	६	-	३	१२	२२
३३	५०	९	मंगल.	३९	९	रात	८	५४	उत्तराभाद्र	५८	३३	रात	४	३९	आयुष्मान	५३	६	रात	२	२९	ते	१०	१६	गर	३९	९	सिद्धि	९	९	२५	१९				५	१४	६	४६	२२	५३	१	२३	४३	१७	५७	५	-	३	१२	५४
३३	५१	१०	बुध.	३५	५१	रात	७	३४	रेवती	५६	४९	रात	३	५८	सौभाग्य	४७	४३	रात	१२	१९	व	७	२६	वि	३५	५१	उत्पात	१०	१०	२६	२०	मेष	५६	४९	५	१४	६	४६	२२	५८	१	२४	४०	२२	५७	४	-	३	१	२९
३३	५२	११	गुरु.	३१	४१	दिन	५	५४	अश्विनी	५४	१४	रात	२	५६	शोभन	४१	३९	रात	९	५४	बव	३	४६	बा / कौ	३१ / ५०	[illegible]	मानस	११	११	२७	२१				५	१४	६	४६	२३	२	१	२५	३७	२६	५७	३	-	३	२	८
३३	५३	१२	शुक्र.	२६	३८	दिन	३	५२	भरणी	५०	५६	रात	१	३५	अतिगण्ड	३४	५५	रात	७	११	ते	२६	३८	गर	५३	५०	मुद्गर	१२	१२	२८	२२				५	१३	६	४७	२३	६	१	२६	३४	२९	५७	२	-	३	२	५३
३३	५४	१३	शनि.	२१	१	दिन	१	३७	कृत्तिका	४७	९	रात	१२	५	सुकर्मा	२७	४४	दिन	४	१८	व	२१	१	वि	४८	२	ध्वज	१३	१३	२९	२३	वृष	४	५९	५	१३	६	४७	२३	११	१	२७	३१	३१	५७	१	-	२	३	४७
३३	५४	१४	रवि.	१५	३	दिन	११	१४	रोहिणी	४३	४	रात	१०	२७	धृति	२०	१८	दिन	१	२०	श	१५	३	च	४१	५८	धाता	१४	१४	३०	२४				५	१३	६	४७	२३	१४	१	२८	२८	३२	५७	०	-	२	४	५०
३३	५५	३०	सोम.	८	५२	दिन	८	४६	मृगशिरा	३८	५१	रात	८	४५	शूल	१२	३८	दिन	१०	१६	ना	८	५२	किं	३५	४७	आनन्द	१५	१५	३१	२५	मिथुन	१०	५८	५	१३	६	४७	२३	१७	१	२९	२५	३२	५७	०	-	२	+	+

धनुराशिः सायं ६।१२ वादने। न कुर्यादधिकेमासे काम्यं कर्म कदाचन। स्मृत्यन्तर।
भौमे जया सिद्धयोगः २९।२८ (दि.५।२) उ.।
भद्रा १।४६ (प्रातः ५।५७) उ. ३४।४ (सा.६।५३) या. (पाताले)। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.९।२७) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्।
मकरराशिः प्रातः ५।४३ वादने। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३७।५३ (रा.८।२४) उ. ५०।५ (रा.१।१७) या.। गुरो-पूर्णा सिद्धयोगः ३७।५३ (रा.८।२४) उ.।
सर्वार्थसिद्धियोगः ५४।१२ (रा.२।५६) या.। दोषसंघविनाशको रवियोगः ५४।१२ (रा.२।५६) उ.। शुक्र-नन्दा सिद्धयोगः ४०।३४ (रा.९।२९) उ.।
कुम्भराशिः दिवा ३।३१ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा ४२।११ (रा.१०।७) उ. (मर्त्ये)। दोषसंघविनाशको रवियोगः ५७।१० (रा.४।७) या.। शुभाशुभ द्वय गुण्यकरः द्विपुष्करयोगः ४२।११ (रा.१०।७) उ. ५७।१०(रा.४।७)या.।
भद्रा १२।१८ (दि.१०।७) या.। भानु सप्तमी पर्वः सूर्य ग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय।
मीनराशिः रात्रि १०।५५ वादने। ⊙ मृगशिरा (मृगदाह) नक्षत्रे रविः ३५।३० (रा.७।२६)।
सर्वार्थसिद्धियोगः ५८।३३ (रा.४।३९) या.।
मेषराशिः रात्रि ३।५८ वादने। पंचक (पचखा) समाप्ति। भद्रा ७।२६ (दि.८।१२) उ. ३५।५१ (रा.७।३४) या. (मर्त्ये)।
पुरुषोत्तमी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ५४।१४ (रा.२।५६) या.।
प्रदोष व्रतम् १२ (पुरुषोत्तमी)।
वृषराशिः दिवा ७।१३ वादने। भद्रा २१।१ (दि.१।३७) उ. ४८।२ (रा.१२।२६) या. (स्वर्ग)। पुरुषोत्तमी मास शिवरात्रि व्रतम् १३। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ ४७।९ (रा.१२।५) उ.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः २१।१(दि.१।३७)उ.।
श्राद्धादौ अमा ३०।
मिथुनराशि दिवा ९।३६ वादने। स्नानदानादौ पुरुषोत्तमी अमावस्या ३० पुण्यतमा। ⊙सं.मिथुन राशौ रविः ३६।४८ (रा.७।५६)। मु.३० समा समताकरम्। पूर्वाः १६ घट्यः पुण्याः। वस्त्र अन्नदानम् मन्दाकिन्यां स्नानम्।(क)

(क) अधिक मास मलमास समाप्तिः दिवा ८।४६ वादनं। सोमवती अमावस्या (पुरुषोत्तमी) ३० पुण्यतमा। अश्वत्थ मूले प्रणिधाय विष्णु सम्पूज्य सम्यग्विधिोपचारैः। प्रदक्षिणाभोद्य फलादिद्रव्यैःर्विर्भिविधेया पति सौख्य वृद्धयैः इति मन्त्रेण अश्वत्थ मूलस्य (पीपल) १०८ परिक्रमा कार्य। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगी ३८।५१ (रा.८।४५) या.। शुभ वारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ सो	७	२४	४२	३१	०	१५	३४	२९	४४	३५	२	५	१३	११	१०१	२८	२	२९	३२	४०	११	१५	२	२१	२०	३	७१	०	११	१७	५६	११	५	१	१०	९	४९	३३
२ मं.	८	६	४४	१५	०	१६	१९	४	४४	३१	२	६	५४	३९	९७	२०	२	२९	४४	५५	११	२०	२	२२	३१	३	७०	५५	११	१८	१	१२	४	५६	१०	९	४६	२२
३ बु.	८	१८	५२	३	०	१७	३	३५	४४	२५	२	८	३१	५९	९२	३६	२	२९	५५	१५	११	२८	२	२३	४१	५८	७०	५०	११	१८	६	८	४	५२	१०	९	४३	११
४ गु.	८	२९	४९	४७	०	१७	४८	०	४४	२१	२	१०	४	३५	९०	२६	३	०	६	४३	११	३१	२	२४	५२	४८	७०	४४	११	१८	११	०	४	४६	१०	९	४०	०
५ शु.	९	१२	३२	१८	०	१८	३२	२१	४४	१६	२	११	३५	१	८७	४४	३	०	१८	१४	११	३६	२	२६	३	३२	७०	३९	११	१८	१५	४६	४	४१	१०	९	३६	५०
६ श.	९	२५	४	४६	०	१९	१६	३७	४४	१२	२	१३	२	४५	८५	२३	३	०	२९	५०	११	४२	२	२७	१४	११	७०	३३	११	१८	२०	२७	४	३७	१०	९	३३	३९
७ र.	१०	८	४	२२	०	२०	०	४९	४४	७	२	१४	२८	८	८२	५३	३	०	४१	३२	११	४७	२	२८	२४	४४	७०	२५	११	१८	२५	४	४	३२	१०	९	३०	२८
८ सो.	१०	२१	१९	२०	०	२०	४४	५६	४४	३	२	१५	५१	१	८०	३१	३	०	५३	१९	११	५०	२	२९	३५	९	७०	२०	११	१८	२९	३८	४	२८	१०	९	२७	१७
९ मं.	११	४	४८	४१	०	२१	२८	५९	४३	५८	२	१७	११	३२	७८	५४	३	१	५	९	११	५२	३	०	४५	२९	७०	१४	११	१८	३४	४	४	२५	१०	९	२४	६
१० बु.	११	१८	२९	३६	०	२२	१२	५७	४३	५४	२	१८	३०	२६	७५	२७	३	१	१७	१	११	५५	३	१	५५	४३	७०	९	११	१८	३८	२९	४	२१	१०	९	२०	५५
११ गु.	०	२	१९	१४	०	२२	५६	५१	४३	५०	२	१९	४५	५३	७२	४०	३	१	२८	५६	११	५७	३	३	५	५२	७०	२	११	१८	४२	५०	४	१८	१०	९	१७	४४
१२ शु.	०	१६	१२	५८	०	२३	४०	४१	४३	४५	२	२०	५८	३३	७०	४८	३	१	४०	५३	१२	०	३	४	१५	५४	६९	५५	११	१८	४७	८	४	१४	१०	९	१४	३३
१३ श.	०	२९	२०	१६	०	२४	२४	२६	४३	४१	२	२२	९	२१	६७	३७	३	१	५२	५३	१२	२	३	५	२५	४९	६९	४९	११	१८	५१	२२	४	११	१०	९	११	२२
१४ र.	१	१४	२८	९	०	२५	८	७	४३	३८	२	२३	१६	५८	६४	२८	३	२	४	५५	१२	५	३	६	३५	३८	६९	४४	११	१८	५५	३३	४	७	१०	९	८	११
३० सो	१	२८	३६	११	०	२५	५१	४५	४३	३५	२	२४	२१	२६	६०	३५	३	२	१७	०	१२	१०	३	७	४५	२२	६९	३९	११	१८	५९	४०	४	१	१०	९	५	०

फलम्—पुरुषोत्तम मास, अधिक मास अथवा **मल-मास** जो भी कहें; का दूसरा पखवारा अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पूरे १५ दिन का है। मलमास पूरी तरह से धार्मिक कार्यों एवं भगवान के कथा-श्रवण तथा पुण्य कार्यों के लिये सुरक्षित एवं आरक्षित है। जगह-जगह धार्मिक संस्थाओं सामाजिक संस्थाओं एवं व्यक्तिगत रूप से भी धर्मप्राण जनताजनार्दन **श्रीमद्भागवत, शिव पुराण, रामायण**, यज्ञ इत्यादि का आयोजन कर, पूरे देश के वातावरण को धार्मिक बना देती है। इस मास में अधिक से अधिक दान पुण्य धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करके पुण्य लाभ करना चाहिये। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी** व्रत का मान ३ जून बुधवार को होगा। चन्द्रोदय रात ९।२७ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। रविवार एवं सप्तमी तिथि के संयोग में **भानु सप्तमी** का पर्व ७ जून को मनाया जायेगा। इसमें किया जाने वाला स्नान-दान सूर्य ग्रहण में किये गये स्नान-दान के बराबर फलदायक माना जाता है। **पुरुषोत्तमी()**

पं.११ अ.ज्येष्ठ कृष्ण ८ सोमे सर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १४८
अयनांशाः २४/१२/३७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	०	२	३	२	११	१०	४
२२	२१	२०	१५	०	२९	१८	९	९
४६	१९	४४	५१	५३	३५	२९	२७	२७
११	२०	५६	१	१९	९	३६	१७	१७
५७	७८८	४४	८०	११	७०	४	३	३
६	२०	३	३१	५०	२०	२८	११	११

कुण्डली: बु.३ शु. | मं.१ | ४ गु. | सू. २ | १२ श. | ५ के. | चं. ११ रा. | ६ | ८ | १० | ७ | ९

भौमादीनां चारः
भौमः-भरण्यां मेष राशौ। **बुधः**-मिथुनराशौ। **गुरुः**-पुनर्वसु मिथुने ३ वुधतःकर्कराशौ दिवा ११।३० वादने। **शुक्रः**-मिथुने ८ सोमतः कर्क राशौ दिवा १।१५ वादने। **शनिः**-रेवती नक्षत्रे १ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-शतभिषा१ चरणे। **केतुश्च**-मघा ३ चरणे।

अ.ज्येष्ठ कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिथि.वा.	१सो घं.	मि.	२मं. घं.	मि.	३बु. घं.	मि.	४गु. घं.	मि.	५शु. घं.	मि.	६श. घं.	मि.	७र. घं.	मि.	८सो. घं.	मि.	९मं. घं.	मि.	१०बु. घं.	मि.	११गु. घं.	मि.	१२शु. घं.	मि.	१३श. घं.	मि.	१४र. घं.	मि.	३०सो. घं.	मि.
वृष	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	११
मिथुन	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३४	७	३०	७	२६
कर्क	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३
सिंह	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७
कन्या	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०
तुला	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृश्चिक	७	३८	७	३४	७	३०	७	२५	७	२२	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३
धनु	९	४३	९	३९	९	३५	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८
मकर	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४२	१०	३८	१०	३४
कुम्भ	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५
मीन	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३
मेष	४	६	४	२	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ सोमे**—ज्येष्ठायां नामकरणं गवां क्रयविक्रयः, कणमर्दनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः। **तिथि २ भौमे**—मूले पुंसवनं सीमन्तः शस्त्र घटनं उग्रकर्माचरण। **तिथि ३ बुधे**—पूर्वाषाढ़ायाम् भद्रा-रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ गुरौ**—रिक्ता रात्रि ८।२४ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ११ जातकर्मः नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्र धारणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ शय्यासनाद्युपभोग आवेदनपत्र लेखनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ५ शुक्रे**—श्रवणे गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ९ वा ११ अन्नप्राशनं क्रय-विक्रयः आभूषण निर्माण-धारणं च हलप्रवहणं धान्यच्छेदनं कणमर्दनं शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ शनौ**—धनिष्ठायां कृष्णवस्त्र धारणं दिवा ३।३१ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ७ रवौ**—भद्रा दिवा १०।७ वादनात्परं शतभिषायां अन्नप्राशन नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः जलयंत्र कर्म आवेदनपत्र लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन), दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८ सोमे**—पूर्वाभाद्रपदे- धान्यरोपणं, धान्यस्थापन जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्य भूमिक्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ९ भौमे**—उ.भा.-रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं रात्रि ८।५४वादनात्परं पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं पश्चिम दिग् यात्रा। **ति.१० बुधे**—भद्रा दिवा ८।१२वादनात्पूर्व*

पं.१२ अ.ज्येष्ठ कृष्ण ३० सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १५५
अयनांशाः २४/१२/३८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	०	२	३	३	११	१०	४
२९	२८	२५	२४	२	७	१८	९	९
२५	३६	५१	२१	१७	४५	५९	५	५
३२	११	४५	२६	०	२२	४०	०	०
५७	८६५	४३	६०	१२	६९	४	३	३
०	३०	३५	३५	१०	३९	१	११	११

कुण्डली: बु. ३ | मं. १ | शु.४ गु. | चं. २ सू. | १२ श. | ५ के. | ११ रा. | ६ | ८ | १० | ७ | ९

() एकादशी व्रत का मान सबके लिये ११ जून गुरुवार को होगा। **प्रदोष** का व्रत १२ जून शुक्रवार को किया जायेगा। भगवान शिव की आराधना के लिये विशेष पुण्यफलकारी पुरुषोत्तमी **मास शिवरात्रि** व्रत पूजन १३ जून शनिवार को होगा। श्राद्ध के लिये **अमावस्या** का मान १४ जून रविवार को होगा। सोमवार की अमावस्या **पुरुषोत्तमी सोमवती अमावस्या** के रूप में १५ जून को मिल रही है इसमें सौभाग्यवती स्त्रियाँ पीपल-वृक्ष की जड़ में भगवान विष्णु का निवास मानते हुए विधिवत पूजा-अर्चना करती है तथा विहित मंत्र (अश्वत्थ मूले प्रणिधाय विष्णुं....) का जप करते हुए पीपल वृक्ष की १०८ परिक्रमा करती हैं। **मृगशिरा नक्षत्र का सूर्य ८** जून सोमवार को रात ७।२६ बजे से आयेगा। इसे **मृगडाह** भी कहते हैं और यह उमसभरी चिपचिपाती गर्मी के लिये अपने आप में प्रसिद्ध है। **मिथुन राशि की सूर्यसंक्रान्ति पक्षान्त १५** जून सोमवार को रात ७।५६ बजे से आवेगी। पक्ष के तीन सोमवार व सोमवार की संक्रान्ति शुभफलकारक है तथा मानसून पूर्व वर्षा होने के योग भी प्राप्त हो रहे हैं। **१५ जून सोमवार को मलमास समाप्त हो जायेगा।**

* रेवत्यां जातकर्म नामकरण अन्नप्राशनं विपणि व्यापारः क्रय-विक्रयः नववस्त्रधारणं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोग पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ गुरौ**—अश्विन्यां प्रसूति स्नानं जातकर्म विपणि व्यापारः क्रयविक्रयः नववस्त्रधारणं हलप्रवहण बीजवपनं सेवारम्भ शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ शुक्रे**—भरण्यां मुकदमा कार्य शय्यासनाद्युपभोगं धान्यच्छेदनं। **तिथि १३ शनौ**—भद्रा दिवा १।३७ वादनात्पूर्व कृत्तिकायां इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरण। **तिथि १४ रवौ**—रोहिण्यां रोग विमुक्त स्नानं **तत्परं मासान्तः।**

राशिफल

मेष-	पीड़ा
वृष-	रोगं
मिथुन-	लाभः
कर्क-	शोकं
सिंह-	रोगं
कन्या-	पापबुद्धिः
तुला-	धनहानिः
वृश्चिक-	सुखार्थलाभः
धनु-	रोगं हानिः
मकर-	शत्रुभयं
कुम्भ-	श्रीप्राप्तिः
मीन-	नेत्रकष्टं

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मऋतुः। दि.१६ - २९ जून सन् २०२६ ई.। (रा.ज्येष्ठ २६ -आषाढ़ ८)

दि.मा.		शु.ज्ये.शु.	तिथि					नक्षत्र						योग						करण						औदायिक	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रां. उ +		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रास्त	
घ.	प.	ति. वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३३	५५	१ मंगल	५	९	प्रातः			आर्द्रा	३४	४८	रात	७	८	शूल			प्रातः			बव	२	४२	[illegible]			चर	१६	१६	१	२६				५	१३	६	४७	२३	१९	२	०	२२	३२	५६	५९	-	१	८	२५
३३	५६	३ बुध	५१	८	रात	१	४०	पुनर्वसु	३१	५	दिन	५	३९	ध्रुव	५०	३२	रात	१	२५	तै	२२	३४	गर	५१	८	गद	१७	१७	२	२७	कर्क	१७	०	५	१३	६	४७	२३	२२	२	१	१९	३१	५६	५९	-	१	९	१८
३३	५६	४ गुरु.	४६	०	रात	११	४०	पुष्य	२७	५२	दिन	४	२२	व्याघात	४३	५४	रात	१०	४७	व	१८	३८	वि	४६	०	शुभ	१८	१८	३	२८				५	१३	६	४७	२३	२३	२	२	१६	३०	५६	५८	-	१	१०	२
३३	५६	५ शुक्र.	४१	५६	रात	९	५९	श्लेषा	२५	२४	दिन	३	२३	हर्षण	३७	५८	रात	८	२४	बव	१४	२	बा	४१	५६	मृत्यु	१९	१९	४	२९	सिंह	२५	२४	५	१३	६	४७	२३	२५	२	३	१३	२८	५६	५८	-	१	१०	४०
३३	५७	६ शनि.	३८	३८	रात	८	४०	मघा	२३	४५	दिन	२	४३	वज्र	३२	४४	सायं	६	१८	को	१०	१७	तै	३८	३८	पद्म	२०	२०	५	३०				५	१३	६	४७	२३	२६	२	४	१०	२६	५६	५८	-	१	११	१४
३३	५७	७ रवि	३६	४७	रात	७	५६	पूर्वाफा.	२३	८	दिन	२	२८	सिद्धि	२८	२०	दिन	४	३३	गर	७	४२	व	३६	४७	छत्र	२१	२१	६	३१	कन्या	३८	१७	५	१३	६	४७	२३	२६	२	५	७	२४	५६	५७	-	१	११	४५
३३	५७	८ सोम.	३५	२४	रात	७	२३	उत्तरा.	२३	४३	दिन	२	४२	व्यतिपात	२४	५४	दिन	३	११	वि	६	५	बव	३५	२४	श्रीवत्स	२२	२२	७	१				५	१३	६	४७	२३	२६	२	६	४	२१	५६	५७	-	०	१२	१६
३३	५७	९ मंगल.	३५	४०	रात	७	२९	हस्त	२५	४३	दिन	३	२५	वरीयान	२२	३०	दिन	२	१३	बा	५	३२	को	३५	४०	सौम्य	२३	२३	८	२	तुला	५७	४	५	१३	६	४७	२३	२५	२	७	१	१८	५६	५६	-	०	१२	४७
३३	५७	१० बुध.	३७	२०	रात	८	९	चित्रा	२८	३७	दिन	४	४०	परिघ	२१	७	दिन	१	४०	तै	६	३०	गर	३७	२०	कालदण्ड	२४	२४	९	३				५	१३	६	४७	२३	२५	२	७	५८	१४	५६	५६	-	०	१	२०
३३	५६	११ गुरु.	४०	२	रात	९	१४	स्वाती	३२	५२	सायं	६	२२	शिव	२०	३७	दिन	१	२८	व	८	४१	वि	४०	२	स्थिर	२५	२५	१०	४				५	१३	६	४७	२३	२४	२	८	५५	१०	५६	५६	+	१	१	५७
३३	५६	१२ शुक्र.	४३	५०	रात	१०	४५	विशाखा	३८	८	रात	८	२८	सिद्ध	२१	२	दिन	१	३८	बव	११	५६	बा	४३	५०	मातंग	२६	२६	११	५	वृश्चिक	२१	४९	५	१३	६	४७	२३	२३	२	९	५२	६	५६	५५	+	१	२	३७
३३	५६	१३ शनि.	४८	२२	रात	१२	३४	अनुराधा	४४	११	रात	१०	५३	साध्य	२२	६	दिन	२	३	को	१६	६	तै	४८	२२	अमृत	२७	२७	१२	६				५	१३	६	४७	२३	१९	२	१०	४९	१	५६	५५	+	१	३	२२
३३	५५	१४ रवि.	५३	२४	रात	२	३५	ज्येष्ठा	५०	४४	रात	१	३१	शुभ	२३	३९	दिन	२	४१	गर	२०	५३	व	५३	२४	काण	२८	२८	१३	७	धनु	५०	४४	५	१३	६	४७	२३	१९	२	११	४५	५६	५६	५५	+	२	४	११
३३	५५	१५ सोम.	५८	२३	रात	४	३४	मूल	५७	१४	रात	४	७	शुक्ल	२५	२०	दिन	३	२१	वि	२५	५४	बव	५८	२३	लुम्बक	२९	२९	१४	८				५	१३	६	४७	२३	१६	२	१२	४२	५१	५६	५५	+	२	५	५

- चन्द्र ☽ दर्शनम् मु.१५ महर्घता करम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। **करवीर १ व्रतम्। सोपपदा २ वेदारम्भानध्यायः। सौर आषाढ़ मासारम्भः। ज्येष्ठ भौमः (बड़का मंगल)**।(क)
- **कर्कराशिः** दिवा १२।१ वादने। **मु.मुहर्रम १ हिजरी सन् १४४८। रम्भातृतीया ३। महाराणा प्रताप जयन्ती ३।** राजस्थाने विशेषतो प्रचलितं। मेला हल्दी घाटी (राजस्थान)।**(ख)**
- भद्रा १८।३८ (दि.१२।४०) उ. ४६।७ (रा.११।४०) या. (मर्त्ये)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** गुरु अर्जुनदेव बलिदान दिवस ४। उमा चतुर्थी ४ (बंगाल-उड़ीसा)। गुरु(ग)
- **सिंहराशिः** दिवा ३।२३ वादने। **श्रुति पंचमी ५** (जैन)। महादेव विवाह (उड़ीसा)। रवियोगः २५।२४ (दि.३।२३) उ.। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ४१।५६ (रा.९।५९) उ.।
- **स्कन्द षष्ठी ६ व्रतम्। अरण्य षष्ठी। शीतला षष्ठी** (उड़ीसा)। रवियोगः २३।४५ (दि.२।४३) या.। (ख) रवियोगः ३१।५ (दि.५।३९) उ.।
- **कन्याराशिः** रात्रि ८।३२ वादने। भद्रा ३६।४७ (रा.७।५६) उ. (पाताले)। भानु सप्तमी पर्वः सूर्यग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। सर्वार्थसिद्धियोगः २३।८ (दि.२।२८) उ.। शुभाशुभंत्रय(घ)
- भद्रा ६।५ (दि.७।३९) या.। **श्री दुर्गाष्टमी ८ व्रतम्।** अष्टम्यां शुक्ला देव्याः पूजनम्। धूमावती जयन्ती ८। **मेलाक्षीर भवानी (कश्मीर)। ⊙ आर्द्रा नक्षत्रे रविः ३८।६ (रा.८।२७)।(ङ)**
- **तुलाराशिः** रात्रि शेष ४।३ वादने। उमाब्रह्माणि पूजा व्रतम् च नवम्यां। **महेश नवमी ९ (माहेश्वरी समाज)। ज्येष्ठ भौमः (बड़का मंगल)।** रवियोगः २५।३१ (दि.३।२५) उ.।
- दोषसंघ विनाशको रवियोगः यावद्दिनम्। (ग) पुष्य सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ २७।५२ (दि.४।२२) या.। रवियोगः २७।५२ (दि.४।२२) या.।
- भद्रा ८।४१ (दि.८।४१) उ. ४०।२ (रा.९।१४) या. (पाताले)। **निर्जला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। इयमेव भीमसेनी एकाददशी।** शालिग्राम पूजनोत्सवः। **काशी विश्वेश्वराय(च)**
- **वृश्चिकराशिः** दिवा १।५७ वादने। चम्पक द्वादशी १२ (उड़ीसा, बंगाल)। **मेला खाटू श्याम** (राजस्थान)। **सुपार्श्वनाथ जयन्ती १२।** मृत्युबाणः ८।३० दि.८।३७) उ.। **आर्द्रा(छ)**
- **शनि प्रदोष व्रतम् १३।** पुत्रार्थिर्भिविधेयम्। दक्षिणात्य वटसावित्री व्रतारम्भः दिनत्रयं यावत्। मृत्युबाणः ११।३६ (दि.९।५१) या.। रवियोग ४४।११ (रा.१०।५३) उ.।
- **धनुराशिः** रात्रि १।३१ वादने। भद्रा ५३।२४ (रा.२।३५) उ. (पाताले)। रवियोगः ५०।४४ (रा.१।३१) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५०।४४ (रा.१।३१) उ.।
- भद्रा २५।५४ (दि.३।३५) या.। **स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। संत कबीर जयन्ती १५।** मन्वादिः १५। जलयात्रा १५। **भगवान जगन्नाथ जलाभिषेक स्नानम् च।(ज)**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ मं.	२	१२	४४	१६	०	२६	३५	२०	४३	३३	२	२५	२२	१	५४	२४	३	२	२९	१०	१२	११	३	८	५५	१	६९	३५	११	१९	३	४१	३	५५	१०	९	१	५०
३ बु.	२	२६	४८	३७	०	२७	१८	५३	४३	३०	२	२६	१६	२५	५१	११	३	२	४१	२१	१२	१४	३	१०	४	३६	६९	३१	११	१९	७	३६	३	५०	१०	८	५८	३९
४ गु.	३	१०	४४	५१	०	२८	२	२३	४३	२६	२	२७	७	३६	४७	२४	३	२	५३	३५	१२	१९	३	११	१४	७	६९	२५	११	१९	११	२६	३	४७	१०	८	५५	२८
५ शु.	३	२४	३४	२८	०	२८	४५	४९	४३	२१	२	२७	५५	०	४२	३३	३	३	०	५८	१२	२२	३	१२	२३	३२	६९	१८	११	१९	१५	१३	३	४२	१०	८	५२	१७
६ श.	४	८	३४	१५	०	२९	२९	१०	४३	१७	२	२८	३७	३३	३९	३६	३	३	१८	१६	१२	२५	३	१३	३२	५०	६९	१२	११	१९	१८	५५	३	३७	१०	८	४९	६
७ र.	४	२२	२	६	१	०	१२	२७	४३	१४	२	२९	१७	९	३५	३१	३	३	३०	४१	१२	२७	३	१४	४२	२	६९	२५	११	१९	२२	३२	३	३१	१०	८	४५	५५
८ सो.	५	५	१४	४३	१	०	५५	४१	४३	१०	२	२९	५२	४०	३०	४८	३	३	४३	८	१२	३०	३	१५	५१	७	६८	५८	११	१९	२६	३	३	२७	१०	८	४२	४४
९ मं.	५	१८	१२	५०	१	१	३८	५१	४३	७	३	०	२३	२८	२५	५३	३	३	५५	३८	१२	३२	३	१७	०	५	६८	५०	११	१९	२९	३०	३	२२	१०	८	३९	३३
१० बु.	६	०	५५	४	१	२	२१	५८	४३	५	३	०	४९	२१	२१	२९	३	४	८	१०	१२	३५	३	१८	८	५५	६८	४६	११	१९	३२	५२	३	१८	१०	८	३६	२२
११ गु.	६	१३	२३	११	१	३	५	३	४३	१	३	१	१०	५०	१८	३२	३	४	२०	४५	१२	३६	३	१९	१७	४१	६८	४०	११	१९	३६	१०	३	१५	१०	८	३३	११
१२ शु.	६	२५	४३	१९	१	३	४८	४	४२	५८	३	१	२९	२२	१६	३९	३	४	३३	२१	१२	४०	३	२०	२६	२१	६८	३२	११	१९	३९	२५	३	१०	१०	८	३०	०
१३ श.	७	७	५१	९	१	४	३१	२	४२	५४	३	१	४६	१	१३	२६	३	४	४६	१	१२	४३	३	२१	३४	५३	६८	२५	११	१९	४२	३५	३	६	१०	८	२६	५०
१४ र.	७	१९	५३	१४	१	५	१३	५६	४२	५२	३	१	५९	२७	६	१६	३	४	५८	४४	१२	४५	३	२२	४३	१८	६८	१३	११	१९	४५	४१	३	१	१०	८	२३	३९
१५ सो	८	१	५५	३	१	५	५६	४८	४२	४९	३	२	५	४३	३व.	१२	३	५	११	२९	१२	४६	३	२३	५१	३१	६८	४	११	१९	४८	४२	२	५२	१०	८	२०	२८

पं.१३ शु.ज्येष्ठ शुक्ल८ सोमे सर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १६२ अयनांशाः २४/१२/३९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	२	३	३	११	१०	४
६	५	०	२९	३	१५	१९	८	८
४	१४	५५	५२	४३	५१	२६	४२	४२
२१	४३	४९	४०	८	७	३	४४	४४
५६	७९६	४३	३०	१२	६८	३	३	३
५७	३७	१०	४८	३०	५८	२७	११	११



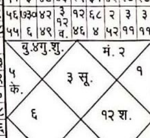
दैनिक लग्न सारिणी

आषाढ़ कृष्ण

लग्नांत ति.वा.	१ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ सो. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	१५ सो घं.	मि.
मिथुन	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३५	६	३१
कर्क	९	३९	९	३५	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८
सिंह	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२
कन्या	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५
तुला	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१
वृश्चिक	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
धनु	८	४४	८	४०	८	३६	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३
मकर	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४३	९	३९
कुम्भ	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१८	११	१४	११	१०
मीन	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८
मेष	३	७	३	३	२	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६
वृष	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३

पं.१४ शु.ज्येष्ठ शु.१५ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १६९ अयनांशाः २४/१२/४०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	१	३	३	३	११	१०	४
१२	१	५	२	५	२३	१९	८	८
४२	५५	५६	५	११	५१	४८	२०	२०
५१	३	४८	४३	२९	३१	४२	२८	२८
५६	७३७	४२	३ १२	१२	६८	२	३	३
५५	६	४९	व.	४६	४	५२	११	११



विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १/२ भौमे**–आर्द्रायाम् पुंसवन-सीमन्तः उग्रकर्माचरणं। **तिथि ३ बुधे**–पुनर्वसौ जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डलं ल.४ वा ६**, अक्षरारम्भः विद्यारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः **उपनयनं ल.६**, विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रय नववस्त्राभूषण धारणं, हलप्रवहणं बीजवपन, शय्यासनाद्युपभोगं, सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भ शिल्पविद्यारम्भः औषधिसेवनं सायं ५।३९ वादनात्परं पुष्ये सर्वदिग् गमनं। **तिथि ४ गुरौ**–पुष्ये रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ५ शुक्रे**–श्लेषायां विद्यारम्भः **उपनयनं ल.४ वा ६** जलयंत्रकर्म मुकदमाकार्य भूमिक्रयः दिवा ३।२३ वादनात्परं मघायां–**वरवरणं कन्या वरणं, वधूप्रवेश ल.३ वा ६** धान्यच्छेदनं कणमर्दनं, शय्यासनाद्युपभोग। **तिथि ६ शनौ**–मघायां-इष्टिका दहनं पूर्वाफाल्गुन्यां शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरण। **तिथि ७ रवौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नानं विद्यारम्भः जलयन्त्रकर्म **इष्टिका दहनं दिवा २।२८** वादनात्परं भद्रा रात्रि ७।५६ वादनात्पूर्व उत्तराफाल्गुन्यां **वरवरण–कन्यां** वरणं विपणिव्यापारः लालवस्त्रधारण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शस्त्रधारण, आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ८ सोमे**–भद्रा दिवा ७।३९ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां हस्त नक्षत्रे आ.प्रसूति स्नानं जातकर्मः नामकरणं **वरवरणः कन्यावरणं वधूप्रवेशः ल.३ वा ६** वाहनक्रयः आभूषण निर्माण धारणं च धान्यच्छेदन, कणमर्दन धान्यरोपणं वृक्षारोपण नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं **सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भ** औषधिसेवनं औषधि निर्माण दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ९ भौमे**–हस्त नक्षत्रे रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १० बुधे**–चित्रायां स्वात्यां गर्भाधानं रात्रौ लग्नं १२, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं ल.३ वा ६** अक्षरारम्भः विद्यारम्भ, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, **वरवरणं–कन्या वरणं**, विपणिव्यापारः वाहन क्रयः नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं **सर्वदेवप्रतिष्ठाः जलाशयवाटिकारम्भः गृहप्रवेशः ल.३ वा ६** पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ गुरौ**–भद्रा दिवा ८।४१ वादनात्पूर्व स्वात्यां प्रसूति स्नानं नामकरणम् अन्नप्राशनं **चौलमुण्डनं ल.३ वा ४**, अक्षरारम्भः विद्यारम्भः रोग बाण दिवा ७।१५ वादनात्परं अत्यावश्यके **उपनयनं ल.४ वरवरणं कन्यावरण वधूप्रवेश ल.३** नववस्त्राभूषणधारण हलप्रवहणं धान्यच्छेदनं आवेदन पत्र लेखनं भूमिक्रयः सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ शुक्रे**–विशाखायां गवां क्रयविक्रयः नववस्त्रधारणं हलप्रवहण धान्यरोपणं शस्त्रधारण भूमिक्रयः रात्रि ८।२८ वादनात्परं **अनुराधायां गर्भाधानं** आ.प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदन, **वरवरणं-कन्यावरणं वधूप्रवेशः ल.११** विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं चूल्हीस्थापनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः आवेदनपत्र लेखनं **गृहप्रवेशः ल.११, सर्वदेवप्रतिष्ठा** दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि १३ शनौ**–अनुराधायां नीलमादि रत्न कृष्णवस्त्रधारणं **गृहप्रवेशः ल.३ वा ६** दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १४ रवौ**–ज्येष्ठायां रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १५ सोमे**–भद्रा दिवा २।३५ वादनात्परं मूले नामकरणं **वधूप्रवेशः लग्नं गोधूलिः** हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यरोपणं वृक्षारोपणं जलयन्त्र कर्म भूमिक्रयः उत्तर दिग् यात्रा।

(क) यमघंट योग ३४।४८ (रा.७।८) या.। शुभाशुभंत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ३४।४८ (रा.७।८) उ. ५४।० (रा.३।५४) या.। **(घ)** गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः २३।८ (दि.२।२८) उ. ३६।४७ (रा.७।५६) या.। (ङ) स्त्री-स्त्री, चं.सूर्य योगौ खर वाहनं, सौम्या नाड़ी तदीशो गुरुः सुवृष्टियोगः। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३५।२४ (रा.७।२३) उ.। **(च) कलशयात्रा। अद्य** शर्करा युतं जल कुम्भ धेनुदानम्। **दानमन्त्र–देव देव हृषीकेश संसारार्णव तारकः। उदकुम्भ प्रदानेन यास्यामिहरिमन्दिरम्।** रुक्मिणी विवाह (उड़ीसा)। देवविवाहः। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३२।५२ (सा.६।२२) या.। रवियोगः ३२।५२ (सा.६।२२) या.। **(छ) नक्षत्रे २ चरणे रविः** दिन ८।३७ वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।८ (रा.८।२८) उ. स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ३८।८ (रा.८।२८) या.। **मु.पर्व मुहर्रम (ताजिया)। (ज) देव स्नान पूर्णिमा १५** (उड़ीसा-काशी)। विल्वात्रिरात्रारम्भः। **दक्षिणात्य वट सावित्री व्रतम् १५। आर्द्रा ३ चरणे रविः** रात्रि ११।२० वादने।

फलम्–मलमास समाप्त हो चुका है इसीलिये विवाह आदि शुभ कार्य शुरु हो जायेंगे। पक्षारम्भ में ही द्वितीया तिथि का क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। मंगलवार आर्द्रा नक्षत्र का चन्द्रदर्शन मादक द्रव्यों में तेजी लायेगा। अग्निकाण्ड की कुछ बड़ी घटनायें घट सकती हैं। दैनिक उपभोग में आने वाली वस्तुएं जैसे दूध, घी, छेना, पनीर, फल, सब्जी का भाव बहुत तेज हो जायेगा। क्षत्रिय कुलशिरोमणि एवं भारतीय इतिहास के गौरव पुरुष **महाराणा प्रताप** की जयन्ती १७ जून बुधवार को होगी। हल्दी घाटी का मेला एवं उत्सव सजेगा। २१ जून को रविवार सप्तमी तिथि के संयोग में **भानु सप्तमी** का पर्वयोग मिल रहा है। इसमें किया गया स्नान-दान, सूर्य ग्रहण में किये गये स्नान-दान के बराबर माना जाता है। वर्ष भर की सब से कठिन एवं महत्वपूर्ण **निर्जला एकादशी व्रत** का मान २५ जून गुरुवार को सबके लिये होगा। इसी को **भीमसेनी एकादशी** भी कहते हैं। आज के दिन काशी की प्रसिद्ध **कलश-यात्रा**, दशाश्वमेध गंगा घाट से निकलकर काशी विश्वनाथ भोले बाबा के दरबार तक जायेगी और कलश में संचित देशभर की पवित्र नदियों के जल से बाबा का अभिषेक किया जायेगा। पुत्र की कामना से **शनि-प्रदोष** व्रत २७ जून को होगा। **स्नान-दान एवं व्रत** सहित ज्येष्ठी पूर्णिमा २९ जून सोमवार को होगी। **सन्त कबीर की जयन्ती** विविध समारोह एवं शोभायात्रा के साथ मनाई जायेगी। आज ही **जगन्नाथ भगवान** का जलाभिषेक भी किया जायेगा। इसे स्नान पूर्णिमा भी कहते हैं। अत्यधिक स्नान कर लेने से जगन्नाथ ● प्रभु बीमार पड़ जाते हैं। **आर्द्रा नक्षत्र** का सूर्य २२ जून सोमवार को रात ८।२७ बजे से आवेगा। इसमें सामान्यतया अच्छी वर्षा होने के योग प्राप्त हो रहे हैं। खेती का कार्य प्रारम्भ करने लायक वर्षा हो जायेगी। जून के अन्तिम दिनों तथा जुलाई के प्रारम्भ में अच्छी वर्षा होगी। गुड़, खांड, चावल भूसी वाले अन्न, कपूर, चन्दन, हल्दी सोंठ, चांदी में तेजी चलेगी।

भौमादीनां चारः

भौमः-१ भौमतः कृत्तिकायां दिवा ८।० वादने ६ शनितः वृषराशौ रात्रि ८।४५ वादने। **बुधः**-मिथुने ८ सोमतः कर्कराशौ दिवा १२।१० वादने। **१५ सोमतः वक्री। गुरुः**-पुनर्वसु कर्के ६ शनितः पुष्य नक्षत्रे दिवा १०।४५ वादने। **शुक्रः**-कर्कराशौ। **शनिः**-रेवती १ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-शतभिषा२ चरणे। **केतुश्च**-मघा ३ चरणे।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.५ शुक्रे–दिवा ३।२३ वादनात्परं मघायां रेखा ७ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (भौ.दा.) वा लग्नं २ पंचेष्टाभावः। **ति.६ शनौ**–मघायां रेखा ७ दिवा २।४३ वादनम् यावत् दिवा लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ (भौ.दा.)। **ति.७ रवौ**-दिवा २।२८ वादनात्परं उ.फा. रेखा ७ दिवा लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा भद्रा रात्रि ७।५६ वादनात्पूर्वं लग्नं गोधूलिः। **ति.८ सोमे**–भद्रा दिवा ७।३९ वादनात्परं उ.फा. व्यतिपातः दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः दिवा २।४२ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे रेखा ८ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ ल.१ इ.५ ग्र.व. वि.१२ वा लग्नं २ पंचेष्टाभावः। **ति.९ भौमे**–दिवा ३।३५ वादनम् यावत् हस्त नक्षत्रे रेखा ८ दिवा लग्नं ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५। **ति.१० बुधे**–दिवा ४।४० वादनात्परं स्वात्यां राहुवेध रेखा ८ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (चन्द्र.दा.) वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं २ पंचेष्टाभावः। **ति.११ गुरौ**–भद्रा दिवा ८।४१ वादनात्पूर्वं स्वात्यां राहुवेध रेखा ८ दिवा लग्ने पंचेष्टाभाव। **ति.१२ शुक्रे**–रात्रि ८।२८ वादनात्परं अनुराधायां मृत्युबाणः। **ति.१३ शनौ**–मृत्युबाण दिवा ९।५१ वादनात्परं अनुराधायां रेखा ७ दिवा लग्नं ५ इ.५ ग्र.व.वि.१३(श.दा.) वा दिवा ल.६ इष्टाः५ ग्र.व.वि.१३।।(श.दा.) वा दिवा लग्नं७ इ.६ ग्र.व.वि.१५ (भौ.दा.) वा लग्नं गोधूलिः (रात्रि १०।५३ वादनम् यावत्)। **ति.१४ रवौ**-रात्रि १।३१ वादनात्परं मूल नक्षत्रे रेखा ७ लग्नं १ इष्टाः५ ग्र.व.वि.१२ (श.दा.) रात्रि२।३५ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः। **ति.१५ सोमे**–भद्रा दिवा ३।३५ वादनात्परं मूल नक्षत्रे रेखा ७ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (श.दा.)।

राशिफल

मेष-	श्रीप्राप्ति
वृष-	हानि भयम्
मिथुन-	स्थान हानिः
कर्क-	पीड़ा भयम्
सिंह-	सौख्यं
कन्या-	पापवृद्धिः
तुला-	रोगभयम्
वृश्चिक-	गमनम्
धनु-	रिपुनाशः
मकर-	दैन्यम्
कुम्भ-	रोगं
मीन-	सुखम्

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ आषाढ़ कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मऋतुः। दि.३० जून - १४ जुलाई सन् २०२६ ई.। (रा.आषाढ़ ९ - २३)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि ति.	वार	तिथि घ.	तिथि प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आंदायिका योगा
३३	५४	१	मंगल.	६०	०	स	म	स्त	पूर्वाषाढ़ा	६०	०	स	म	स्त	ब्रह्म	२६	४८	दिन	३	५६	बा	३०	४७	कौ	६०	०	मित्र
३३	५३	१	बुध.	२	५७	दिन	६	२४	पूर्वाषाढ़ा	३	२०	दिन	६	३३	ऐन्द्र	२७	५५	दिन	४	२३	कौ	२	५७	तै	३४	५३	श्रीवत्स
३३	५३	२	गुरु.	६	४८	दिन	७	५६	उत्तराषाढ़ा	८	४४	दिन	८	४३	वैधृति	२८	१८	दिन	४	३३	गर	६	४८	व	३८	९	सौम्य
३३	५२	३	शुक्र.	९	३१	दिन	९	२	श्रवण	१३	६	दिन	१०	२८	विष्कुम्भ	२७	४६	दिन	४	२०	वि	९	३१	बव	४०	२१	धूम्र
३३	५१	४	शनि.	११	११	दिन	९	४२	धनिष्ठा	१६	२०	दिन	११	४६	प्रीति	२६	२४	दिन	३	४८	बा	११	११	कौ	४१	२०	प्रवर्धमान
३३	५०	५	रवि.	११	२९	दिन	९	५०	शतभिषा	१८	१७	दिन	१२	३३	आयुष्मान	२३	५८	दिन	२	५०	तै	११	२९	गर	४०	५९	राक्षस
३३	४९	६	सोम	१०	३०	दिन	९	२६	पूर्वाभाद	१८	५८	दिन	१२	४९	सौभाग्य	२०	३२	दिन	१	२७	व	१०	३०	वि	३९	२३	मुसल
३३	४८	७	मंगल	८	१७	दिन	८	३३	उत्तराभाद्र	१८	२७	दिन	१२	३७	शोभन	१६	७	दिन	११	४१	बव	८	१७	बा	३६	४०	सिद्धि
३३	४६	८	बुध	५	४	दिन	७	१७	रेवती	१६	५२	दिन	१२	०	अतिगण्ड	१०	५२	दिन	९	३६	कौ	५	४	तै	३२	२७	उत्पात
३३	४५	९/१०	गुरु	०/५०	५०/०	प्रातः	५/३	३५/३५	अश्विनी	१४	३२	दिन	११	४	सुकर्मा/धृति	४/५३	५०/२३	प्रातः	७/४	१३/३४	गर	०	५०	व/वि	२७/५०	५०/०	मानस
३३	४४	११	शुक्र	५०	१६	रात	१	२१	भरणी	११	२२	दिन	९	४८	शूल	५१	९	रात	१	४३	बव	२२	३८	बा	५०	१६	मुद्गर
३३	४३	१२	शनि	४४	१७	रात	११	५८	कृत्तिका	७	४०	दिन	८	१९	गण्ड	४३	४४	रात	१०	४४	कौ	१७	१६	तै	४४	१७	ध्वज
३३	४१	१३	रवि	३८	७	रात	८	३१	रोहिणी/मृगशिरा	३/५०	५०/५०	प्रातः	६/५	४२/२	वृद्धि	२६	८	रात	७	४३	गर	११	१२	व	३८	७	धाता
३३	४०	१४	सोम	३१	५३	सायं	६	१	आर्द्रा	५५	१८	रात	३	२३	ध्रुव	२८	२८	दिन	४	३९	वि	५	०	श/च	३१/५८	५३/५१	कालदण्ड
३३	३८	३०	मंगल	२५	५१	दिन	३	३६	पुनर्वसु	५१	२८	रात	१	५१	व्याघात	२१	०	दिन	१	४०	ना	२५	५१	किं	५३	३	स्थिर

ति.	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं.	घं.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
१	३०	१	१५	९				५	१३	६	४७	२३	१३	२	१३	३९	४६	५६	५४	+	२	७	२५	फसली आषाढ़ मासारम्भः। गुरु हर गोविन्द सिंह जयन्ती १। 'आषाढ़मासे प्रथमे च पक्षेनिरभ्र दृष्टे रवि मण्डले च। विद्युन्नगर्जेत्यथनेवमेघोमासद्वयं तत्र न वर्षणम् स्यात्।'
१	१	२	१६	१०	मकर	१९	४१	५	१३	६	४७	२३	९	२	१४	३६	४०	५६	५४	+	२	८	७	मकरराशिः दिवा १।१५ वादने। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः २।५७ (दि.६।२४) उ.।
२	२	३	१७	११				५	१३	६	४७	२३	५	२	१५	३३	३४	५६	५४	+	२	८	४५	भद्रा ३८।१९ (रा.८।२९) उ. (पाताले)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ६।४८ (दि.७।५६) उ. ८।४४ (दि.८।४३) या.। **पश्चिम दिशायाम् बुधास्तः।**
३	३	४	१८	१२	कुम्भ	४४	४३	५	१४	६	४६	२३	१	२	१६	३०	२८	५६	५४	+	२	९	२०	**कुम्भराशिः** रात्रि ११।७ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा ९।३१ (दि.९।२) या.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदये (रा.९।२०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगः(क)
४	४	५	१९	१३				५	१४	६	४६	२२	५६	२	१७	२७	२२	५६	५४	+	२	९	५२	शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ११।११ (दि.९।४२) या.। **(ख)** स्त्री-पुं चन्द्र-सूर्य योगौ, जम्बुक वाहनं सौम्या नाड़ी तदीशो गुरुः सुवृष्टियोगः। रवियोगः १८।५८ (दि.१२।४९) या.।
५	५	६	२०	१४				५	१४	६	४६	२२	५१	२	१८	२४	१६	५६	५४	+	३	१०	२३	मृत्युबाणः ३८।१० (रात्रि ८।३०) उपरान्त। दोषसंघविनाशको रवियोगः १८।१७ (दि.१२।३३) उ.।
६	६	७	२१	१५	मीन	३	४७	५	१४	६	४६	२२	४५	२	१९	२१	१०	५६	५४	+	३	१०	५४	**मीन राशिः** दिवा ६।४९ वादने। भद्रा १०।३० (दि.९।२६) उ. ३९।२३ (रा.८।५१) या. (मर्त्ये)। मृत्युबाणः ४१।२५ (रा.९।४८) यावत्।◎**पुनर्वसु** नक्षत्रे रविः ४१।२५ (रा.९।४८)।**(ख)**
७	७	८	२२	१६				५	१४	६	४६	२२	३९	२	२०	१८	४	५६	५४	+	३	११	२७	सर्वार्थसिद्धियोगः १८।२७ (दि.१२।३७) या.। दोषसंघविनाशको रवियोगः १८।२७ (दि.१२।३७) उ.। भौमे-जया सिद्धयोगः ८।१७ (दि.८।३३) उ.। **(ग)** दिवा ९।५१ वादने।
८	८	९	२३	१७	मेष	१६	५२	५	१५	६	४५	२२	३३	२	२१	१४	५८	५६	५५	+	३	१२	३	**मेषराशिः** दिन १२।० वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। **श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्** पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम् **(बसियउरा-बसोढ़ा)। बुधाष्टमी पर्वः** सूर्यग्रहण सन्निभयम् स्नानदानाय।
९/१०	९	१०	२४	१८				५	१५	६	४५	२२	२६	२	२२	११	५३	५६	५५	+	३	१२	४४	भद्रा २७।५५ (दि.४।२५) उ. ५५।० (रा.३।३५) या. (स्वर्गे)। सर्वार्थसिद्धियोगः १४।३२ (दि.११।४) या.। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ०।५० (प्रातः ५।३५) उ. ५५।० (रा.३।३५) या.।
११	१०	११	२५	१९	वृष	२५	२६	५	१५	६	४५	२२	१९	२	२३	८	४८	५६	५५	+	३	१	३२	**वृषराशिः** दिवा ३।२५ वादने। **योगिनी एकादशी ११ व्रतम् स्मार्तानाम्।** कुष्ठादिरोग निवृत्ति कामनया। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ५०।१६ (दि.१।२१) या.। **पुनर्वसु नक्षत्रे २ चरणे रविः(ग)**
१२	११	१२	२६	२०				५	१५	६	४५	२२	११	२	२४	५	४३	५६	५५	+	३	२	२९	**वैष्णवानामेकादशी व्रतम्।** सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ ७।४० (दि.८।१९) उ.। शुभाशुभेत्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ७।४० (दि.८।१९) या.। **(घ)** दिवा ११।८ वादने।
१३	१२	१३	२७	२१	मिथुन	२९	४३	५	१६	६	४६	२२	३	२	२५	२	३८	५६	५५	+	३	३	३५	**मिथुनराशिः** सायं ५।१९ वादने। भद्रा ३८।७ (रा.८।३१) उ. (स्वर्गे)। **प्रदोष व्रतम् १३। मास शिवरात्रि व्रतम् १३।** यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३।३५ (प्रातः ६।४२) या.। **गुरु वृद्धत्वारम्भः(घ)**
१४	१३	१४	२८	२२				५	१६	६	४६	२१	५५	२	२५	५९	३४	५६	५६	+	४	४	४६	भद्रा ५।० (दि.७।१६) या.। **पुनर्वसु नक्षत्रे ३ चरणे रविः** रात्रि ९।४८ वादने। **(ङ)** समाः। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्।
३०	१४	१५	२९	२३	कर्क	३७	२५	५	१६	६	४६	२१	४६	२	२६	५६	३०	५६	५६	+	४	+	+	**कर्कराशिः** रात्रि ८।१४ वादने। **स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। भौमवती अमावस्या ३०।** अमायाञ्च यदावारो भवेद् भूमि सुतस्यवै। गंगायाम् यदि लभ्येत् कोटि सूर्यग्रहे**(ङ)**

(क) १३।६ (दि.१०।२८) या.। **आर्द्रा नक्षत्रे ४ चरणे रविः** दिवा ९।१५ वादने। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ९।३१ (दि.९।२) उ. १३।६ (दि.१०।२८) या.।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१ बुधे–प्रातः ६।३३ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् रेखा ८ दिवा लग्नं ७ इष्टाः६ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं गोधूलिः (वैधृतिः) वा रात्रौ लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (श.दा.) वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (श.दा.) वा लग्नं२ पंचेष्टाभावः। **ति.२ गुरौ**–दिवा ८।४३ वादनम् यावत् उत्तराषाढ़ायाम् रेखा ८ दिवा लग्नं ४ इष्टाः५ ग्र.व.वि.१० (चन्द्र.दा.)।
ति.६ सोमे-मृत्युबाण रात्रि ९।४८ वादनात्परं उ.भा. रेखा ९ लग्नं १ इ.५ ग्र.व.वि.१२(चं.श.दा.) वा ल.२ इष्टाः५ ग्र.व.वि.१३।।(भौ.दा.)।
ति.७ भौमे–उत्तराभाद्रपदे रेखा ९ दिवा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व. वि.१० वा दिवा १२।३७ वादनात्परं रेवत्यां रेखा ८ शनि युतिः दिवा लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (भौ.दा.) वा लग्नं गोधूलिः वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।।
ति.८ बुधे–रेवत्यां रेखा ८ दिवा लग्नं ४ इ.५ ग्र.व.वि.१० वा दिवा लग्नं ५ पंचेष्टाभाव।
ति.१२ शनौ–दिवा ८।१९ वादनात्परं रोहिण्यां रेखा ७ भौमयुतिः दिवा लग्नं ७ इष्टाः५ ग्र.व.वि.१० (भौ.च.दा.) वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं १२ इ.५ ग्र.व.वि.१३ (श.दा.)वा लग्नं इ.६ ग्र.व.वि.१७ (श.दा.) वा ल.२ पंचेष्टाभाव।
ति.१३ रवौ–रोहिण्यां-मृगशिरायां **गुरु वृद्धत्वारम्भः। तत्परं सल्लग्नाभावः।**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	मं.	८	१४	३	३६	१	६	३९	३७	४२	४६	३	२	२	३१	५	२५	३	५	२४	१५	१२	४८	३	२४	५९	३५	६७	५८	११	१९	५१	३४	२	४५	१०	८	१७	१८
१	बु.	८	२६	११	१८	१	७	२२	२३	४२	४२	३	१	५७	६	७	३५	३	५	३७	३	१२	५१	३	२६	७	३३	६७	५३	११	१९	५४	१९	२	४०	१०	८	१४	७
२	गु.	९	८	२६	४१	१	८	५	५	४२	३९	३	१	४९	३१	१०	४१	३	५	४९	५४	१२	५३	३	२७	१५	२६	६७	४५	११	१९	५६	५९	२	३३	१०	८	१०	५६
३	शु.	९	२०	५४	२८	१	८	४७	४४	४२	३५	३	१	३८	५०	१४	४९	३	६	२	४७	१२	५४	३	२८	२३	११	६७	३८	११	१९	५९	३२	२	२७	१०	८	७	४५
४	श.	१०	३	३५	११	१	९	३०	१९	४२	३०	३	१	२४	१	१९	२५	३	६	१५	४१	१२	५७	३	२९	३०	४९	६७	३५	११	२०	१	५९	२	२१	१०	८	४	३४
५	र.	१०	१६	३१	५०	१	१०	१२	४९	४२	२६	३	१	४	३६	२४	३०	३	६	२८	३८	१२	५९	४	०	३८	२४	६७	२७	११	२०	४	२०	२	१४	१०	८	१	२३
६	सो	१०	२९	१३	४३	१	१०	५५	१५	४२	२१	३	०	४०	६	२८	२२	३	६	४१	३७	१३	०	४	१	४५	५१	६७	२२	११	२०	६	३४	२	६	१०	७	५८	१२
७	मं.	११	१२	३९	१४	१	११	३७	३६	४२	१८	३	०	११	४४	३०	५०	३	६	५४	३७	१३	२	४	२	५३	१३	६७	१८	११	२०	८	४०	२	०	१०	७	५५	१
८	बु.	११	२६	१७	४२	१	१२	१९	५४	४२	१५	२	२९	४०	५४	३३	५८	३	७	७	३९	१३	३	४	४	०	३१	६७	१३	११	२०	१०	४०	१	५५	१०	७	५१	५०
९	गु.	०	१०	५	२९	१	१३	२	९	४२	११	२	२९	६	५६	३५	१६	३	७	२०	४२	१३	५	४	५	७	४४	६७	०	११	२०	१२	३५	१	४९	१०	७	४८	३९
११	शु.	०	२४	३	४४	१	१३	४४	२०	४२	७	२	२८	३१	४०	३७	३५	३	७	३३	४७	१३	६	४	६	१४	५४	६६	५१	११	२०	१४	२४	१	४५	१०	७	४५	२८
१२	श.	१	८	७	१५	१	१४	२६	२७	४२	२	२	२७	५४	५	४०	२८	३	७	४६	५३	१३	९	४	७	२१	३५	६६	३९	११	२०	१६	९	१	४०	१०	७	४२	१७
१३	र.	१	२२	१५	४०	१	१५	८	२९	४१	५९	२	२७	१३	३७	४१	४०	३	८	०	२	१३	१०	४	८	२८	१४	६६	२६	११	२०	१७	४९	१	३४	१०	७	३९	६
१४	सो.	२	७	२३	३१	१	१५	५०	२८	४१	५५	२	२६	३१	५७	४२	१५	३	८	१३	१२	१३	१०	४	९	३४	४०	६६	१४	११	२०	१९	२३	१	२६	१०	७	३५	५५
३०	मं.	२	२१	२९	५	१	१६	३२	२३	४१	५०	२	२५	४९	४२	३७	२५	३	८	२६	२२	१३	१२	४	१०	४०	५८	६६	२	११	२०	२०	४९	१	२१	१०	७	३२	४४

पं.१५ आषाढ़ कृष्ण ८ बुधे सर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १७८ अयनांशाः २४/१२/४१

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	१	२	३	४	११	१०	४
२१	२६	१२	२९	७	४	२०	७	७
१४	१७	१९	४०	७	०	१०	५१	५१
५८	४२	५४	५४	३९	३१	४०	५०	५०
५६	८२०	४२	३३	१३	६७	१	३	३
५५	५५	१५	५८व	३	१३	५५	११	११



आषाढ़ कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१मं. घं.	मि.	१बु. घं.	मि.	२गु. घं.	मि.	३शु. घं.	मि.	४श. घं.	मि.	५र. घं.	मि.	६सो. घं.	मि.	७मं. घं.	मि.	८बु. घं.	मि.	९गु. घं.	मि.	११शु. घं.	मि.	१२श. घं.	मि.	१३र. घं.	मि.	१४सो. घं.	मि.	३०मं. घं.	मि.
मिथुन	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	४०	५	३६	५	३२
कर्क	८	४४	८	४०	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९
सिंह	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३
कन्या	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६
तुला	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२
वृश्चिक	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
धनु	७	४९	७	४५	७	४१	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४
मकर	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४८	८	४४	८	४०
कुम्भ	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११
मीन	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९
मेष	२	१२	२	८	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७
वृष	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४

पं.१६ आषाढ़ कृष्ण ३० भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १८४ अयनांशाः २४/१२/४२

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
२	२	१	२	३	४	११	१०	४
२६	२१	१६	२५	८	१०	२०	७	७
५६	२९	३२	४९	२६	४०	२०	३२	३२
३०	५	२३	४२	२२	५४	४९	४४	४४
५६	०८८	४१	३७	१३	६६	१	३	३
५६	४९	५०	२५व	१२	२	२१	११	११



फलम्–ऐसा माना गया है कि आषाढ़ का महीना चढ़ते ही बादल-बदली, विद्युत गर्जना हो जानी चाहिए अन्यथा दो मास तक वर्षा का अभाव रहता है। प्रतिपदा तिथि की वृद्धि हो गई है तथा दशमी तिथि का क्षय भी हुआ है इस प्रकार पक्ष १५दिन का है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी** व्रत का मान ३ जुलाई शुक्रवार को है **चन्द्रोदय रात ९।२० बजे** चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **श्री शीतलाष्टमी** का व्रत ८ जुलाई बुधवार को है। आज पूर्व रात्रि में की गई माता शीतला की पूजा का बसियउरा प्रसाद ग्रहण करने का पुण्यफलदायक विधान है। इसलिए इसे लोक भाषा में **बसियउरा** भी कहते हैं। **बुधवार एवं अष्टमी** तिथि के संयोग में **बुधाष्टमी** का पर्व ८ जुलाई को मनाया जायेगा। आज के दिन किया जाने वाला स्नान दान सूर्य ग्रहण में किये गये स्नान-दान के बराबर फलकारक माना गया है। **योगिनी एकादशी व्रत** का मान स्मार्त-गृहस्थों के लिए १० जुलाई शुक्रवार को होगा जबकि **वैष्णवजन ११** जुलाई शनिवार को इस एकादशी का व्रत करेंगें। इस एकादशी का व्रत रखकर भगवान पुण्डरीकाक्ष का विधिवत पूजन कर उनके ऊपर चढ़ाये गये जल से शरीर का मार्जन किया जाय तो कुष्ठादि जैसे असाध्य चर्म रोगों का भी शमन होता है। इसका उल्लेख मार्कण्डेय ऋषि ने हेममाली कुबेर से सम्बन्धित कथा में बताया है। **प्रदोष का व्रत** १२ जुलाई रविवार को ■ किया जायेगा। **मास शिवरात्रि** का व्रत भी १२ जुलाई रविवार को ही किया जायेगा। **स्नान-दान एवं श्राद्ध** सहित **भौमवती अमावस्या** १४ जुलाई को होगी आज के दिन का गंगास्नान करोड़ो सूर्य ग्रहण में किए गये स्नान-दान के बराबर माना जाता है। **पुनर्वसु नक्षत्र** का सूर्य ६ जुलाई सोमवार को रात ९।४८ बजे से आयेगा और बहुत अच्छी वर्षा होने के योग मिल रहे हैं। पक्षारम्भ २ जुलाई के आसपास भी अच्छी वर्षा होगी तथा जुलाई के दूसरे सप्ताह में १०-१२ जुलाई के आसपास भी वृष्टि होने के योग मिल रहे हैं। १५ जुलाई के आसान्न भी पानी का अच्छा योग है।

भौमादीनां चारः

भौमः-कृत्तिकायां वृष राशौ ४ शनितः रोहिण्यां रात्रि ७।४५ वादने। **बुधः**-(वक्री) कर्क राशौ ७ भौमतः वक्रगत्या मिथुने दिवा ४।५० वादने। **गुरुः**-पुष्य नक्षत्रे कर्क राशौ। **शुक्रः**-कर्क राशौ ४ शनितः सिंह राशौ सायं ५।३० वादने। **शनिः**-रेवती १ चरणे ३ शुक्रतः रेवती २ चरणे दिवा ८।३० वादने। **राहुः**-शतभिषा १ चरणे। **केतुश्च**-मघा ३ चरणे।

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ भौमे–पूर्वाषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं इष्टिका दहनं। **तिथि १ बुधे**–दिवा ६।३३ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **उपनयनं ल.६ वरवरणं कन्यावरणं** विपणिव्यापारः वाहनक्रयः नववस्त्र धारणं चूल्हीस्थापन वृक्षारोपण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं **सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः** नूतनवध्वापाककर्म पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ गुरौ**–उत्तराषाढ़ायाम् श्रवणे भद्रा रात्रि ८।२९ वादनात्पूर्व पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन, **उपनयनं ल.६ वरवरण** कन्यावरणं (श्रवणे) **वधूप्रवेशः ल.६** विपणिः व्यापारःनववस्त्र धारणं, वाहनक्रयः हलप्रवहणं-बीजवपनं धान्यच्छेदन कणमर्दनं **चूल्हीस्थापनं** (उ.षा.) वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं शल्यकर्म (आपरेशन), **नूतन बध्वा** पाककर्म, औषधिसेवनं श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३ शुक्रे**–भद्रा दिवा ९।२ वादनात्परं श्रवणे धनिष्ठायां रिक्ताव्याप्तिः। **तिथि ४ शनौ**–रिक्ता दिवा ९।४२ वादनात्परं धनिष्ठाशतभिषायां कृष्ण वस्त्रधारण, शस्त्रघटनं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ५ रवौ**–दिवा ९।५० वादनात्पूर्व शतभिषायां **उपनयनं ल.४** दिवा १२।३३ वादनात्परं **पूर्वाभाद्रपदे** पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः **वरवरणं कन्यावरणं** जलयन्त्र कर्म मुकदमाकार्य, इष्टिकादहनं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ६ सोमे**–भद्रा दिवा ९।२६ वादनात्पूर्व पूर्वाभाद्रपदे विद्यारम्भः जलयंत्रकर्म भद्रा रात्रि ८।५९ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे **गर्भाधानं** जातकर्म नामकरण अन्नप्राशनं **वरवरणं कन्यावरण वधूप्रवेशः**, विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग, आवेदनपत्र लेखनं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ७ भौमे**–उत्तराभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८ बुधे**–रेवत्या जातकर्म अन्नप्राशन कर्णविध कन्यानासिकाच्छेदन (ति.दा.) अक्षरारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः **वरवरणं कन्यावरणं** विपणि व्यापारः गवां क्रय विक्रयः नववस्त्राभूषण धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपण नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं **सर्वदेव प्रतिष्ठा दिवा** ७।१७ वादनात्परं रिक्ताः। **तिथि ९ गुरौ**–रिक्ता प्रातः ५।३५ वादनात्परं अश्विन्यां प्रसूति स्नानं जातकर्मः अन्नप्राशन **कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं चौलमुण्डनं ल.४ वा ६** अक्षरारम्भः विद्यारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः आ.**उपनयनं ल.४** वा ६, वधूप्रवेशः ल.६ विपणिव्यापारः वाहनक्रयः हलप्रवहण बीजवपनं, वृक्षारोपणं सेवारम्भ, शस्त्रधारण शय्यासनाद्युपभोगं दत्तक पुत्र ग्रहण आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन) अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ११ शुक्रे**–भरण्यां धान्यच्छेदनं शय्यासनाद्युपभोगं मुकदमाकार्य दिवा ९।४८ वादनात्परं कृत्तिकायां **वरवरणं कन्यावरणं। तिथि १२ शनौ**–दिवा ८।१९ वादनात्परं रोहिण्यां नीलमादिरत्नकृष्ण वस्त्रधारणं विपणिव्यापारः इष्टिका निर्माण दक्षिणदिग् यात्रा। **तिथि १३ रवौ**–रोहिण्यां मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं, आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म (आपरेशन) पूर्व दिग् यात्रा सायं (५।९) वादनम् यावत्। **तिथि १४ सोमे**–आर्द्रायाम् रिक्ता **तत्परं मासान्तः।**

राशिफल

- **मेष-** धनहानिः
- **वृष-** पीड़ा भयम्
- **मिथुन-** रोगं शोकं
- **कर्क-** सुख प्राप्तिः
- **सिंह-** सुखं
- **कन्या-** रोगभयम्
- **तुला-** पापबुद्धिः
- **वृश्चिक-** धनहानिः
- **धनु-** सुखार्थलाभः
- **मकर-** रोगं हानिः
- **कुम्भ-** शत्रुभयं
- **मीन-** सुखं श्री प्राप्तिः

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ आषाढ़ शुक्ल पक्षः॥

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्म ऋतुः। कर्कार्कतः याम्यगोलः वर्षा ऋतुः।
दिनांक १५ - २९ जुलाई सन् २०२६ ई.। (रा.आषाढ़ २४ - श्रावण ७)

पश्चिमायां गुरु अस्तः १५ जुलाई २०२६ ई.

दि.मा. घ.	प.	आषाढ़ शु. ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. ३+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
३३	३६	१	बुध.	२०	१५	दिन	१	२३	पुष्य	४८	६	रात	१२	३१	हर्षण	१४	०	दिन	१०	५३	बव	२०	१५	बा	४७	४१	मातंग	१५	१६	३०	२४				५	१७	६	४३	२१	३७	२	२७	५३	२७	५६	५७	+	४	७	५२	चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। **गुप्तनवरात्रारम्भः**। बुध-भद्रा सिद्धयोगः २०।१५ (दि.१।२३) उ.। **पश्चिम दिशायाम् गुर्वस्तः** दिवा ११।८ वादने।
३३	३५	२	गुरु.	१५	८	दिन	११	२०	श्लेषा	४५	२३	रात	११	२६	वज्र	७	५	दिन	८	७	कौ	१५	८	तै	४२	३०	अमृत	१६	१७	३१	२५	सिंह	४५	२३	५	१७	६	४३	२१	२८	२	२८	५०	२४	५६	५८	+	४	८	३४	**सिंहराशिः** रात्रि ११।२६ वादने। **मु.सफर २ हिजरी सन् १४४८। रथयात्रा २।** श्रीराम (जगन्नाथ) कृष्ण बलराम-सुभद्रा रथोत्सवः सर्वत्र विशेषतो जगन्नाथपुर्याम्। काश्यां, श्रीधाम वृन्दावन तथा सर्वत्र रथारुण जगन्नाथ(क)
३३	३३	३	शुक्र.	१०	५२	दिन	९	३८	मघा	४३	३३	रात	१०	४२	सिद्धि / व्यतिपात	०/५८	५९/३०	प्रातः	५/३	४३/३१	गर	१०	५२	व	३९	१०	काण	१७	१८	३२	२६				५	१७	६	४३	२१	१८	२	२९	४७	२२	५६	५८	+	४	९	१०	भद्रा ३९।१० (रा.८।५७) उ. (मर्त्ये)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्**।⊙ **पुनर्वसु ४ चरणे कर्कराशौ रविः** १३।५१ (दि.१०।५०) मु.३० समा समताकरम्। **अयनं संक्रान्ति** पूर्वाः पराः २० घट्यः पुण्यकालः(ख)
३३	३१	४	शनि	७	२९	दिन	८	१८	पूर्वाफा.	४२	४२	रात	१०	२३	वरीयान	५१	०	रात	१	४२	वि	७	२९	बव	३६	१९	लुम्बक	१८	१९	१	२७	कन्या	५७	४६	५	१८	६	४२	२१	८	३	०	४४	२०	५६	५९	+	४	९	४४	**कन्याराशिः** रात्रि ४।२४ वादने। भद्रा ७।२९ (दि.८।१८) या.। **सौर श्रावण मासारम्भः**। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ७।२९ (दि.८।१८) या.। (ग) यायि (मुहूर्त) जयद् योगः ४।३ (दि.६।५६) उ. ४४।२९ (रा.११।७)या.।
३३	२९	५	रवि	५	९	दिन	७	२२	उत्तराफा.	४२	५८	रात	१०	२९	परिघ	४७	२३	रात	१२	१५	वा	५	९	कौ	३४	३६	मित्र	१९	२०	२	२८				५	१८	६	४२	२०	५८	३	१	४१	१९	५६	५९	+	४	१०	१५	सर्वार्थसिद्धियोगः ४२।५८ (रा.१०।२९) या. तदुपरि रवि हस्त सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ। रवियोगः ४२।५८ (रा.१०।२९) या.। यायि (मुहूर्त) जयद् योगः ५।९ (दि.७।२२) या.। (घ) ४।१० (दि.६।५९) उ.।
३३	२७	६	सोम	४	३	दिन	६	५६	हस्त	४४	२९	रात	११	७	शिव	४४	४६	रात	११	१३	तै	४	३	गर	३४	६	वज्र	२०	२१	३	२९				५	१९	६	४१	२०	४७	३	२	३८	१८	५६	५९	+	४	१०	४७	**श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रतम्**। कार्तिकेय पूजनम्। **कर्दम षष्ठी ६** (बंगाल)।⊙ **पुष्य नक्षत्रे रविः** ४४।३० (रा.११।७)। स्त्री-स्त्री, चन्द्र–सूर्य योगौ मूषक वाहनं सौम्यानाड़ी तदीशोगुरुः मेघाडम्बरेण वायुवेगेन सामान्य वृष्टिः।(ग)
३३	२५	७	मंगल	४	१०	दिन	६	५९	चित्रा	४७	१७	रात	१२	१४	सिद्ध	४३	९	रात	१०	३५	व	४	१०	वि	३४	५६	ध्वांक्ष	२१	२२	४	३०	तुला	१५	५३	५	१९	६	४१	२०	३६	३	३	३५	१७	५७	०	+	४	११	२०	**तुलाराशिः** दिवा ११।४० वादने। भद्रा ४।१० (दि.६।५९) उ. ३४।५६ (रा.७।१७) या. (पाताले)। विवस्वान्व्रत सप्तमी ७। सूर्य पूजनम्। शुभाशुभे द्वय गुण्यकरः द्विपुष्करयोगः ४।१० (दि.६।५९) या.। भौम-जया सिद्धयोगः(घ)
३३	२३	८	बुध.	५	४३	दिन	७	३६	स्वाती	५१	१४	रात	१	४९	साध्य	४२	३०	रात	१०	१९	बव	५	४३	बा	३७	०	धूम्र	२२	२३	५	३१				५	१९	६	४१	२०	२४	३	४	३२	१७	५७	०	+	४	११	५५	**महिषघ्नी व्रतं ८** (देवी भागवत)। **बुधाष्टमी पर्वः** सूर्य ग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। रवियोगः ५१।१४ (रा.१।४९) उ.। **पूर्वदिशायाम् बुधोदयः**। (ङ) यावद्दिनम्। शुक्रे–नन्दा सिद्धयोगः १२।२ (दि.१०।९) उ.।
३३	२१	९	गुरु	८	१७	दिन	८	३९	विशाखा	५५	१८	रात	३	२७	शुभ	४२	४३	रात	१०	२५	कौ	८	१७	तै	४०	९	प्रवर्धमान	२३	२४	६	१	वृश्चिक	३९	१७	५	२०	६	४०	२०	१२	३	५	२९	१७	५७	१	+	४	१२	३५	**वृश्चिकराशिः** रात्रि ९।३ वादने। **कन्दर्प नवमी ९**। भड्डली नवमी ९। ऐन्द्री पूजन ९ (भविष्योत्तर पुराण।) रवियोगः यावद्दिनम्। गुरौ पूर्णा सिद्धयोगः ८।१७ (दि.८।३९) उ.। **राष्ट्रीय श्रावण मासारम्भः**। सर्वार्थसिद्धियोगः(ङ)
३३	१९	१०	शुक्र.	१२	२	दिन	१०	९	अनुराधा	६०	०	स	म	स्त	शुक्ल	४३	४१	रात	१०	४९	गर	१२	२	व	४४	१६	राक्षस	२४	२५	७	२				५	२०	६	४०	२०	०	३	६	२६	१८	५७	२	+	४	१	१८	भद्रा ४४।१६ (रा.११।२) उ. (स्वर्गे)। **गिरिजा पूजा १०**। मन्वादिः १०। सोपपदा १० वेदारम्भानध्यायः। **आशा दशमी १०। उल्टारथ-पुर्नयात्रा १०** (पुरी-उड़ीसा)। **पुष्य २ चरणे रविः** दिवा ११।३० वादने।
३३	१६	११	शनि.	१६	३१	दिन	११	५७	अनुराधा	२	११	दिन	६	१३	ब्रह्म	४५	६	रात	११	२४	वि	१६	३१	बव	४९	०	अमृत	२५	२६	८	३				५	२१	६	३९	१९	४७	३	७	२३	२०	५७	३	+	४	२	६	भद्रा १६।३१ (दि.११।५७) या.। **श्रीहरिशयनी एकादशी ११ व्रतम सर्वेषाम्**। रात्रौ श्री विष्णु पूजनम् शयनोत्सवःच। **चातुर्मास्य व्रतारम्भः**। अत्र सोपवासं निशिघटोपरि श्रीहेमवासुदेव पूजनम् पर दिने दानम् च। यायि(च)
३३	१४	१२	रवि.	२१	२९	दिन	१	५७	ज्येष्ठ	८	३६	दिन	८	४७	ऐन्द्र	४६	४४	रात	१२	२	वा	२१	२९	कौ	५४	१	काण	२६	२७	९	४	धनु	८	३६	५	२१	६	३९	१९	३५	३	८	२०	२४	५७	४	+	४	२	५८	**धनुराशिः** दिवा ८।४७ वादने। **प्रदोष व्रतम् १२**। चातुर्मासयमनियम संयमारम्भः। **शाक् त्याग व्रतारम्भः**। वामन पूजा यज्ञ फल प्राप्ति हेतवः। **वासुदेव द्वादशी १२**। सर्वार्थसिद्धियोगः ८।३६ (दि.८।४७)उ.।
३३	१२	१३	सोम.	२६	३४	दिन	४	०	मूल	१५	११	दिन	११	२६	वैधृति	४८	१५	रात	१२	४०	तै	२६	३४	गर	५८	५२	लुम्बक	२७	२८	१०	५				५	२२	६	३८	१९	२२	३	९	१७	२८	५७	५	+	४	३	५३	दोषसंघ विनाशको रवियोगः १५।११ (दि.११।२६) उ.। **पुष्य नक्षत्रे ३ चरणे रविः** रात्रि १०।३४ वादने। **(च)** (मुहूर्त) जयद् योगः २।११ (दि.६।१३) या.। (छ) २१।२० (दि.१।५४) या.।
३३	९	१४	मंगल	३१	११	सायं	५	५०	पूर्वाषढ़ा	२१	२०	दिन	१	५४	विष्कुम्भ	४९	२४	रात	१	८	व	३१	११	वि	६०	०	मित्र	२८	२९	११	६	मकर	३७	४४	५	२२	६	३८	१९	८	३	१०	१४	३३	५७	६	+	४	४	५०	**मकरराशिः** रात्रि ८।२८ वादने। भद्रा ३१।११ (सा.५।५०) उ. (पाताले)। **शिवशयन चतुर्दशी १४** (उड़ीसा)। **अम्बिका व्रत १४**। चौमासी १४ (जैन)। रवियोगः २१।२० (दि.१।५४) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः(छ)
३३	७	१५	बुध.	३५	५	रात	७	२५	उत्तराषाढ़ा	२६	५८	दिन	४	१०	प्रीति	४९	५४	रात	१	२१	वि	३	८	बव	३५	५	वज्र	२९	३०	१२	७				५	२३	६	३७	१८	५४	३	११	११	३९	५७	७	+	४	+	+	भद्रा ३।८ (दि.६।३८) या.। **स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। गुरु पूर्णिमा १५। व्यास पूर्णिमा १५। गुरु व्यासयोः पूजनम्। कोकिला व्रतम् १५।** कोकिला रुपी शिवायाः प्रत्यहं पूजनम्। श्रीशिवशयनोत्सवः।(ज)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	बु.	३	५	२२	१८	१	१७	१४	१३	४१	४५	२	२५	१२	१७	३७	०	३	८	३९	३४	१३	१२	४	११	४६	५६	६५	५४	११	२०	२२	१०	१	१४	१०	७	२९	३३
२	गु.	३	१९	१४	४६	१	१७	५५	५८	४१	४१	२	२४	३५	१७	३५	२४	३	८	५२	४६	१३	१२	४	१२	५२	५०	६५	४६	११	२०	२३	२४	१	९	१०	७	२६	२२
३	शु.	४	२	५६	१६	१	१८	३७	३९	४१	३८	२	२३	५९	५३	३२	३३	३	९	५	५८	१३	१३	४	१३	५८	३६	६५	३६	११	२०	२४	३३	१	३	१०	७	२३	११
४	श.	४	१७	२६	३१	१	१९	१९	१७	४१	३४	२	२३	२७	२०	२७	१९	३	९	१९	११	१३	१३	४	१५	४	१२	६५	२४	११	२०	२५	३६	०	५६	१०	७	२०	०
५	र.	५	०	४३	११	१	२०	०	५१	४१	३०	२	२३	०	१	२३	३४	३	९	३२	२४	१३	१३	४	१६	९	३६	६५	१०	११	२०	२६	३२	०	५०	१०	७	१६	५०
६	सो.	५	१३	४५	४४	१	२०	४२	२१	४१	२७	२	२२	३६	२७	१८	४२	३	९	४५	३७	१३	१५	४	१७	१४	४६	६४	५२	११	२०	२७	२२	०	४३	१०	७	१३	३९
७	म.	५	२६	३१	१६	१	२१	२३	४८	४१	२२	२	२२	१७	४५	१२	५	३	९	५८	५२	१३	१५	४	१८	१९	३८	६४	४२	११	२०	२८	५	०	३७	१०	७	१०	२८
८	बु.	६	९	३	३८	१	२२	५	११	४१	१८	२	२२	५	४०	७	४५	३	१०	१२	७	१३	१५	४	१९	२४	२०	६४	३५	११	२०	२८	४२	०	३१	१०	७	७	१७
९	गु.	६	२१	३५	१४	१	२२	४६	२९	४१	१२	२	२१	५७	५५	मा. ४	५५	३	१०	२५	२२	१३	१६	४	२०	२८	५५	६४	२०	११	२०	२९	१३	०	२६	१०	७	४	६
१०	शु.	७	३	३५	४१	१	२३	२७	४१	४१	७	२	२२	२	५०	८	३७	३	१०	३८	३७	१३	१६	४	२१	३३	१५	६४	७	११	२०	२९	३९	०	२२	१०	७	१	५५
११	श.	७	१६	३५	१५	१	२४	८	४८	४१	१	२	२२	११	२७	१०	४४	३	१०	५१	५३	१३	१६	४	२२	३७	२२	६३	५१	११	२०	३०	१	०	१४	१०	६	५८	४४
१२	र.	७	२८	३८	५०	१	२४	४९	४९	४०	५७	२	२२	२२	११	१३	२९	३	११	५	९	१३	१६	४	२३	४१	१३	६३	४०	११	२०	३०	१५	०	व.६	१०	६	५५	३३
१३	सो.	८	१०	३८	१९	१	२५	३०	४६	४०	५२	२	२२	३५	४०	१८	४२	३	११	१८	२५	१३	१६	४	२४	४४	५३	६३	२८	११	२०	३०	९	०	११	१०	६	५२	२२
१४	मं.	८	२२	४६	३४	१	२६	११	३८	४०	४८	२	२२	५४	२२	२३	९	३	११	३१	४१	१३	१६	४	२५	४८	२१	६३	१४	११	२०	२९	५८	०	१७	१०	६	४९	११
१५	बु.	९	४	५७	२०	१	२६	५२	२६	४०	४५	२	२३	२७	३१	३०	३३	३	११	४४	५७	१३	१८	४	२६	५१	३५	६३	२	११	२०	२९	४१	०	२१	१०	६	४६	०

पं.१७ आषाढ़ शुक्ल ८ बुधे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १९२
अयनांशाः २४/१२/४३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	१	२	३	४	११	१०	४
४	९	२२	२२	१०	१९	२०	७	७
३२	३	५	५	१२	२४	२८	७	७
१७	३८	११	४०	७	२०	४२	१७	१७
५७	७५३	४१	७व	१३	६४	०	३	३
०	४८	१८	४५	१५	३५	३१	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-रोहिण्यां वृष राशौ ९ गुरुतः मृगशिरायां रात्रि १०।५ वादने। **बुधः**-(वक्री) मिथुने ९ गुरुतः मार्गी। **गुरुः**-पुष्य नक्षत्रे कर्क राशौ। **शुक्रः**-सिंहराशौ। **शनिः**-रेवती २ चरणे १२ रवितः वक्री। **राहुः**-शतभिषायां १ चरणे केतुश्च-मघा ३ चरणे।

आषाढ़ शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६ सो. घं.	मि.	७ मं. घं.	मि.	८ बु. घं.	मि.	९ गु. घं.	मि.	१० शु. घं.	मि.	११ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ सो. घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	१५ बु. घं.	मि.
मिथुन	५	२६	५	२२	५	१८	कर्क	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०
कर्क	७	४५	७	४१	७	३८	सिंह	९	४७	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४
सिंह	९	५९	९	५५	९	५१	कन्या	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७
कन्या	१२	१२	१२	८	१२	४	तुला	२	१६	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३
तुला	२	२८	२	२४	२	२०	वृश्चिक	४	३३	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०
वृश्चिक	४	४५	४	४१	४	३७	धनु	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
धनु	६	५०	६	४६	६	४३	मकर	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४९	७	४५	७	४१
मकर	८	३६	८	३२	८	२८	कुम्भ	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२
कुम्भ	१०	७	१०	३	९	५९	मीन	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०
मीन	११	३५	११	३१	११	२७	मेष	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८
मेष	१	१३	१	९	१	६	वृष	२	५८	२	५४	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५
वृष	३	१०	३	६	३	२	मिथुन	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ बुधे–पुष्ये-जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशनं कन्यानासिकाच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः वाहनक्रयः नवरत्नाभूषणधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणः नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः जलयन्त्रकर्म शय्यासनाद्युपभोग, नूतनवध्वा पाककर्म औषधि-सेवनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ गुरौ**–श्लेषायां जलयंत्रकर्म भूमिक्रयः। **तिथि ३ शुक्रे**–रिक्ता दिवा ९।३८ वादनात्पूर्व मघायां जलयन्त्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं भूमिक्रयः। **तिथि ४ शनौ**–रिक्ता भद्रा दिवा ८।१८ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां शस्त्रघटनं, उग्रकर्माचरणं। **तिथि ५ रवौ**–उत्तराफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नान विपणिव्यापारः लालवस्त्र धारणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं औषधि सेवनं पूर्व-दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ६ सोमे**–हस्त नक्षत्रे गर्भाधानं रात्रौ १२ आ.प्रसूतिस्नानं जातकर्म, नामकरणं अन्नप्राशनं वाहनक्रयः आभूषण निर्माण धारणं च दिवा ६।५६ वादनात्परं हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं कृषारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग, आवेदनपत्र लेखनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ७ भौमे**–भद्रा दिवा ६।५९ वादनात्पूर्व चित्रायाः लालवस्त्रधारणं पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा दिवा ११।४० वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८ बुधे**–रिक्ता दिवा ७।३६ वादनात्पूर्व स्वात्यां नामकरणं अन्नप्राशनं क्रय विक्रयः विपणिव्यापार नववस्त्रधारणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ९ गुरौ**–रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं रिक्तोत्तरे दिवा ८।३९ वादनात्परं विशाखायां नववस्त्रधारण हलप्रवहणं, शस्त्रधारण भूमिक्रयः। **तिथि १० शुक्रे**–अनुराधायां भद्रा रात्रि ११।२ वादनात्पूर्व गर्भाधानं आ.प्रसूति स्नान जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः वाहनक्रयः नववस्त्रभूषण धारण हलप्रवहण, बीजवपनं कृषारोपण सेवारम्भः शस्त्रधारण शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन लेखनं भूमिक्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ११ शनौ**–भद्रा दिवा ११।५७ वादनात्परं ज्येष्ठायां शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १२ रवौ**–ज्येष्ठायां शल्यकर्म (आपरेशन) दिवा ८।४७ वादनात्पर मूले पुंसवनं सीमन्त नामकरण जलयन्त्र कर्म, मुकदमाकार्य पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १३ सोमे**–मूले नामकरण हलप्रवहण बीजवपनं कणनर्दनं, धान्यरोपण, जलयन्त्र कर्म दिवा ११।२६ वादनात्परं पूर्वाषाढ़ायाम् आ.प्रसूति स्नान उत्तरदिग् यात्रा। दिवा ४।० वादनात्परं रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १४ भौमे**–रिक्ता-भद्रा व्याप्तिः। **तिथि १५ बुधे**–भद्रा दिवा ६।३८ वादनात्पर उत्तराषाढ़ायाम् गर्भाधानं रात्रौ लग्ने १२, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन, विपणिव्यापार नववस्त्र धारणं आभूषण निर्माण धारणं हलप्रवहण बीजवपनं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोग, पूर्व दिग् यात्रा दिवा ४।१० वादनात्परं श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं।

पं.१८ आषाढ़ शुक्ल१५ बुधे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः १९९
अयनांशाः २४/१२/४४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	१	२	३	४	११	१०	४
११	४	२६	२३	११	२६	२०	६	६
११	५७	५२	१७	४४	५१	२९	४६	४६
३९	२०	२६	३१	५७	३५	४१	०	०
५७	७३२	४०	३०/३३	१३	६३	०/२१	३	३
७	४४	४५	मा	१८	२	व	११	११



(क) बलराम सुभद्रा पूजनम् रथाकर्षणम् महत् फलम् । उक्तं च-'**रथस्थं ये प्रपश्यन्ति न तेषां जायते त्रिपत्**।' मनोरथ द्वितीया २ (बंगाल)। (ख) अर्थात् यावद्दिनम् पुण्याः। **निरयण याम्यायनं** (दक्षिणायणे सूर्यः)। **वर्षा ऋतु प्रारम्भः। वर्ष विश्वा १८** समर्घता करम्। गंगायाम् मन्दाकिन्यां स्नानम्, गोघृत दानम्। दैत्यानाम् दिनम् देवानां च रात्रिः। **मनसा पूजा प्रारम्भः** (झारखण्ड-बंगाल)। कर्के सूर्ये विधेयम्। कर्के केश निकृन्तनम् वर्ज्यम्। (ज) प्रदोषे शिवपवित्रारोपणम्। नक्त भोजनारम्भः। **आषाढ़ी पूर्णिमा १५**। सायं काले सर्व धान्यानाम् अधिवासनम्। वायुपरीक्षण। गो गोमयेन गृहगोपनम्। आषाढ़ी योगः। **बौद्धधर्म चक्र प्रवर्तन दिवसः** (सारनाथ-काशी)। **मन्वादिः**। कर्णघण्टा (काश्यां) कनखलयोः (हरिद्वारे) स्नानम्। फूल बंगला महोत्सवः समाप्ति (वृन्दावन)।

फलम्–यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। घी, गुड़, खाण्ड, रुई, चाँदी रस पदार्थों में तेजी चलेगी। बुधवार पुष्य नक्षत्र का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव को स्थिर रखेगा। वर्षा के लिये शुभ संकेत। पूरी सृष्टि के पालनकर्ता जगन्नाथ जी के उत्सव आराधना का पर्व **रथयात्रा** का परम पावन पर्व १६ जुलाई गुरुवार को मनाया जायेगा। बीमारी के बाद भगवान जगन्नाथ स्वस्थ होकर भाई बलराम एवं बहन सुभद्रा के साथ रथ पर सवार होकर भ्रमण के लिये निकलते हैं। इस पर्व में ऐसा माना जाता है कि रथारुढ़ भगवान के दर्शन-पूजन करने रथ को खींचने में सहयोग करने वाले पर कोई विपत्ति नहीं आती। **बुधाष्टमी** का पर्वयोग २२ जुलाई बुधवार को बन रहा है। इसमें स्नान-दान का फल सूर्य-ग्रहण के स्नान-दान के बराबर माना जाता है। २५ जुलाई शनि. को **श्री हरिशयनी एकादशी** का व्रत सबके लिये है। सृष्टि के समस्त जीव-जगत के पालनहार श्री हरि विष्णु की विधिवत पूजा अर्चना कर शयन करा दिया जाता है। भगवान की इस योग निद्रा की अवधि चातुर्मास में विवाह मांगलिक कार्य स्थगित हो जाते हैं। साधु-सन्त एक जगह स्थित होकर, भजन कीर्तन, प्रवचन ● इत्यादि धार्मिक कार्य करते हैं। **प्रदोष का व्रत** २६ जुलाई रविवार को किया जायेगा। **स्नान-दान** एवं व्रत सहित **पूर्णिमा** का मान २९ जुलाई बुधवार को होगा तथा गुरु पूजा का पर्व गुरु-पूर्णिमा भी आज ही २९ जुलाई को मनाया जायेगा। आज अपने-अपने धर्म-गुरु, पन्थ-गुरु, मन्त्र-गुरु तथा विद्या देकर आपको किसी भी विधा में ज्ञान देने वाले गुरुजनों को ब्रह्मा-विष्णु-महेश के सदृश मानते हुए अपनी श्रद्धा के अनुसार उनकी पूजा करते हैं तथा उपहार आदि देते हैं। पुराण सहित समस्त धार्मिक ग्रन्थों के रचयिता के रुप में आदि गुरु व्यास-मुनि की पूजा की जायेगी। काशी स्थित व्यास मन्दिर में विशेष रुप से दर्शन-पूजन का विधान है। आज के दिन गाय के गोबर से अपने घरों को गोंठ देने से सर्पो का भय नहीं रहता। **कर्क-** राशि की सूर्य संक्रान्ति १७ जुलाई शुक्र. को दिन में १०।५०बजे से आयेगी और इसी के साथ **सूर्य दक्षिणायन** हो जायेंगे। पुष्य नक्षत्र का सूर्य २० जुलाई रात ११।७ बजे से आयेगा। बादलों के प्रबल घेराव के साथ सामान्य से अच्छी वृष्टि होने के योग मिल रहे हैं।

राशिफल

मेष-	शत्रुभय
वृष-	पुत्रोन्नति
मिथुन-	अर्थागमः
कर्क-	धन प्राप्ति
सिंह-	सुख
कन्या-	धनप्राप्तिः
तुला-	दुःख
वृश्चिक-	धनागमः
धनु-	धर्माचरण
मकर-	सुखलाभः
कुम्भ-	धनप्राप्ति
मीन-	मोन शोक

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ श्रावण कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं सौम्य गोलः वर्षा ऋतुः। दिनांक ३० जुलाई - १२ अगस्त सन् २०२६ ई.। (रा.श्रावण ८-२१)

गुरुउदयः पूर्वदिशायाम् १०-८-२०२६

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
३३	४	१	गुरु.	३७	५५	रात	८	३३	श्रवण	३१	३४	सायं	६	१	आयुष्मान	४९	३१	रात	१	१	बा	६	३०	को	३७	५५	ध्वज	३०	१	१३	८				५	२३	६	३७	१८	४०	३	१२	८	४७	५७	८	+	४	७	२२	**फसली श्रावण मासारम्भः**। 'श्रावणे वर्जयेच्छाकम्।' मासपर्यन्तम् श्रीकाशी विश्वनाथाय नित्य गंगाजल विल्व पत्रार्पणम् पार्थिवार्चनम् च।
३३	२	२	शुक्र.	३९	४३	रात	९	१७	धनिष्ठा	३५	५	रात	७	२६	सौभाग्य	४८	१७	रात	१२	४३	तै	८	४९	गर	३९	४३	धाता	३१	२	१४	९	कुंभ	३	२०	५	२४	६	३६	१८	२५	३	१३	५	५५	५७	९	+	४	७	५५	**कुम्भराशिः** दिवा ६।४४ वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीयायाम् **अशून्यशयन २ व्रतम्।** चन्द्रोदय (रा.७।५५) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। चातुर्मासे विधेयम्। श्रीलक्ष्मी युतं विष्णु पर्यंके पूजनादक्षयदाम्पत्य(क)
३२	५९	३	शनि.	४०	७	रात	९	२७	शतभि	३७	१९	रात	८	२०	शोभन	४६	०	रात	११	४८	व	९	५५	वि	४०	७	आनन्द	१	३	१५	१०				५	२४	६	३६	१८	११	३	१४	३	४	५७	१०	+	४	८	२६	भद्रा ९।५५ (दि.९।२२) उ. ४०।७ (रा.९।२७) या. (मर्त्य)। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ४०।७ (रा.९।२७) उ.। **(ख)** वायुवेगेन स्वल्प वृष्टियोगः। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३७।९ (रा.८।१७) या.।
३२	५६	४	रवि.	३९	१३	रात	९	६	पूर्वाभा.	३८	१४	रात	८	४३	अतिगण्ड	४२	४४	रात	१०	३१	बव	९	४०	बा	३९	१३	चर	२	४	१६	११	मीन	२३	१	५	२५	६	३५	१७	५६	३	१५	०	१४	५७	११	+	४	८	५७	**मीनराशिः** दिवा २।३७ वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।१४ (रा.८।४३) उ.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदय (रा.८।५७) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्।
३२	५४	५	सोम	३७	९	रात	८	१७	उत्तराभा.	३७	५९	रात	८	३७	सुकर्मा	३८	२७	रात	८	४८	को	८	११	तै	३७	९	गद	३	५	१७	१२				५	२५	६	३५	१७	४०	३	१५	५७	२५	५७	१२	+	४	९	२९	**श्रावण सोमवार व्रतम्।** प्रदोष व्रत वदस्य विधिः। सायं उमामहेश्वर पूजनम्। नाग पंचमी (मरुस्थले)। ⦿ **श्लेषा नक्षत्रे रविः** ४५।० (रा.११।२५)। स्त्री-पु., चन्द्र-चन्द्र योगो अश्व वाहनं वह्नि (अग्नि) नाड़ी तदांशा भौम(ख)
३२	५१	६	मंगल.	३३	५८	रात	७	१	रेवती	३६	३७	रात	८	५	धृति	३३	२१	सायं	६	४६	गर	५	३४	व	३३	५८	शुभ	४	६	१८	१३	मेष	३६	३७	५	२६	६	३४	१७	२५	३	१६	५४	३८	५७	१३	+	४	१०	३	**मेषराशिः** रात्रि ८।५ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ३३।५८ (रा.७।१) उ. (मर्त्य-स्वर्ग)। **भौम व्रतम्, दुर्गा यात्रा, हनुमद्दर्शनम्।** भौमाश्विनी सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ३६।३७ (रा.८।५) उ.। रवियोगः ३६।३७ (रा.८।५)उ.।
३२	४८	७	बुध	२९	५२	सायं	५	२३	अश्विनी	३४	२८	रात	७	१३	शूल	२७	२७	दिन	४	२५	वि	१	५५	बव बा	२९ ५७	५२ २४	मृत्यु	५	७	१९	१४				५	२६	६	३४	१७	१०	३	१७	५१	५१	५७	१४	+	४	१०	४१	भद्रा १।५५ (दि.६।१२) या.। **शीतला सप्तमी ७। कालाष्टमी ८** रात्रौ पूजनम्। रवियोगः ३४।२८ (रा.७।१३) या.। बुध-भद्रा सिद्धयोगः २९।५२ (सा.५।२३) या.।
३२	४५	८	गुरु	२४	५६	दिन	३	२४	भरणी	३१	२६	सायं	६	०	गण्ड	२०	५६	दिन	१	४९	को	२४	५६	तै	५२	११	पद्म	६	८	२०	१५	वृष	४५	३२	५	२६	६	३४	१६	५३	३	१८	४९	५	५७	१५	+	४	११	२५	**वृषराशिः** रात्रि ११।३९ वादने। **मंगला गौरी पूजनम्।** मन्वादिः ८। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २४।५६ (दि.३।२४) उ. ३१।२६ (सा.६।०) या.। यमघण्टयोगः ३१।२६ (सा.६।०) उ.।
३२	४३	९	शुक्र.	१९	२५	दिन	१	१३	कृत्तिका	२७	५०	दिन	४	३५	वृद्धि	१३	५१	दिन	१०	५९	गर	१९	२५	व	४६	२७	छत्र	७	९	२१	१६				५	२७	६	३३	१६	३६	३	१९	४६	२०	५७	१७	+	४	१२	१७	भद्रा ४६।२७ (रा.१२।२) उ. (स्वर्ग)। **श्लेषा २ चरणे रविः** दिन ११।१५ वादने। यमघंट योगः २७।५० (दि.४।३५) उ.।
३२	४०	१०	शनि.	१३	२९	दिन	१०	५१	रोहिणी	२३	४८	दिन	२	५८	ध्रुव व्याघात	६ ५२	२७ २२	प्रातः	६ ५	२ ०	वि	१३	२९	बव	४०	२३	श्रीवत्स	८	१०	२२	१७	मिथुन	५१	४२	५	२७	६	३३	१६	१९	३	२०	४३	३७	५७	१९	+	४	१	१७	**मिथुनराशिः** रात्रि २।८ वादने। भद्रा १३।२९ (दि.१०।५१) या.। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो २३।४८ (दि.२।५८) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १३।२९ (दि.१०।५१) उ. २३।४८ (दि.२।५८) या.।
३२	३७	११	रवि.	७	१७	दिन	८	२३	मृगशिरा	१९	३७	दिन	१	१९	हर्षण	५१	७	रात	१	५६	बा	७	१७	को	३४	१२	सौम्य	९	११	२३	१८				५	२८	६	३२	१६	२	३	२१	४०	५६	५७	२०	+	४	२	२४	**कामदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** शुभाशुभे द्वयगुण्यकरः द्विपुष्करयोगः ७।१७ (दि.८।२३) उ. १९।३७ (दि.१।१९) या.।
३२	३४	१२/१३	सोम.	[illegible]	[illegible]	प्रात	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा	१५	२७	दिन	११	४०	वज्र	४३	३४	रात	१०	५४	तै	१	६	गर व	२७ ५४	४८ ३०	कालदण्ड	१०	१२	२४	१९	कर्क	५७	३०	५	२९	६	३१	१५	४५	३	२२	३८	१७	५७	२१	+	४	३	३५	**कर्कराशि** रात्रि ४।२९ वादने। भद्रा ५४।३० (रा.३।४३) उ. (स्वर्ग-मर्त्य)। **पूर्व दिशायाम् गुरु उदयः प्रातः** ७।५२ वादने। **श्रावण सोमवार व्रतम्।** प्रदोष व्रत वदस्य विधिः। सायं उमामहेश्वर पूजनम्। **सोम प्रदोष व्रतम्१२(ग)**
३२	३१	१४	मंगल.	४९	२९	रात	१	१७	पुनर्वसु	११	३१	दिन	१०	५	सिद्धि	३६	१७	रात	८	०	वि	२२	०	श	४९	२९	स्थिर	११	१३	२५	२०				५	२९	६	३१	१५	२८	३	२३	३५	३८	५७	२२	+	४	४	४५	भद्रा २२।० (दि.२।१७) या.। **मासशिवरात्रि व्रतम् १४। भौम व्रतम्, दुर्गा यात्रा, हनुमद्दर्शनम्।** स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ११।३१ (दि.१०।५) उ. ४९।२९ (रा.१।१७) या.।
३२	२८	३०	बुध.	४४	२१	रात	११	१४	पुष्य	८	०	दिन	८	४२	व्यतिपात	२९	२३	सायं	५	१५	च	१६	५५	ना	४४	२१	मातंग	१२	१४	२६	२१				५	३०	६	३०	१५	१०	३	२४	३३	०	५७	२४	+	४	+	+	**स्नानदानश्राद्धादो अमा पुण्यतमा ३०। हरियाली अमावस्या ३०। पिठोरा व्रतम् ३०। मन्वादिः ३०। स्वामी अखण्डानन्द जयन्ती ३०।** शुभ वारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति (वक्री)		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ गु.	९	१७	२३	६	१	२७	३३	११	४०	४१	२	२३	४८	४	३४	४१	३	११	५८	१५	१३	१८	४	२७	५४	३७	६२	५०	११	२०	२९	२०	०	२६	१०	६	४२	५०
२ शु.	९	२९	४९	४१	१	२८	१३	५२	४०	३६	२	२४	२२	४५	४०	३२	३	१२	११	३३	१३	१८	४	२८	५७	२७	६२	४१	११	२०	२८	५४	०	३२	१०	६	३९	३९
३ श.	१०	१२	४२	१४	१	२८	५४	२८	४०	३२	२	२५	३	१७	४८	२४	३	१२	२४	५१	१३	१७	५	०	०	८	६२	२९	११	२०	२८	२२	०	३६	१०	६	३६	२८
४ र.	१०	२५	५१	४०	१	२९	३५	०	४०	२७	२	२५	५१	४१	५५	३४	३	१२	३८	८	१३	१७	५	१	२	३७	६२	९	११	२०	२७	४६	०	४१	१०	६	३३	१७
५ सो.	११	८	१४	३१	२	०	१५	२७	४०	२१	२	२६	४७	१५	६५	२८	३	१२	५१	२५	१३	१७	५	२	४	४६	६१	४०	११	२०	२७	५	०	४५	१०	६	३०	६
६ मं.	११	२१	५०	३७	२	०	५५	४८	४०	१५	२	२७	५२	४३	७८	५६	३	१३	४	४२	१३	१५	५	३	६	२६	६१	२३	११	२०	२६	२०	०	५०	१०	६	२६	५५
७ बु.	०	५	३६	२०	२	१	३६	३	४०	११	२	२९	११	३९	८०	२५	३	१३	१७	५७	१३	१५	५	४	७	४९	६१	९	११	२०	२५	३०	०	५४	१०	६	२३	४४
८ गु.	०	१९	३२	१३	२	२	१६	१४	४०	६	३	०	३१	४	८३	३८	३	१३	३१	१२	१३	१५	५	५	८	५८	६०	५२	११	२०	२४	३६	१	०	१०	६	२०	३३
९ शु.	१	३	३५	४	२	२	५६	२०	४०	०	३	१	५४	४२	८५	४१	३	१३	४४	२७	१३	१४	५	६	९	५०	६०	३६	११	२०	२३	३६	१	७	१०	६	१७	२२
१० श.	१	१७	४३	३८	२	३	३६	२०	३९	५३	३	३	२०	२३	८८	५१	३	१३	५७	४१	१३	१४	५	७	१०	२६	६०	४	११	२०	२२	२९	१	१४	१०	६	१४	११
११ र.	२	१	५३	९	२	४	१६	१३	३९	४८	३	४	४९	१४	९०	२०	३	१४	१०	५५	१३	१२	५	८	१०	३०	५९	४१	११	२०	२१	१५	१	२०	१०	६	११	०
१२ सो.	२	१६	३	२७	२	४	५६	१	३९	४२	३	६	१९	३४	९७	३३	३	१४	२४	७	१३	१२	५	९	१०	११	५९	१८	११	२०	१९	५५	१	२७	१०	६	७	४९
१४ मं.	३	१	११	५	२	५	३५	४३	३९	३८	३	७	५७	७	१००	४०	३	१४	३७	१९	१३	१२	५	१०	९	२९	५९	०	११	२०	१८	२८	१	३२	१०	६	४	३८
३० बु.	३	१५	१३	१९	२	६	१५	२१	३९	३३	३	९	३७	४७	१०५	७	३	१४	५०	३१	१३	१०	५	११	८	२९	५८	४९	११	२०	१६	५६	१	३६	१०	६	१	२७

फलम्–त्रयोदशी तिथि क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। सावन का महीना प्रारम्भ होते ही शिव भक्तों में उल्लास छा जाता है और वे प्रतिदिन विविध प्रकार से भगवान भोले बाबा को जल-बेलपत्र इत्यादि अर्पित करते हैं। काँवरियें केसरिया वस्त्र धारण कर काँवर कन्धे पर लटका कर निकल पड़ते है। प्रमुख तीर्थो से गंगाजल अपने काँवर में स्नान करने के पश्चात भरते है एवं प्रमुख शिव मन्दिरों में उस जल से भगवान शंकर का अभिषेक करते है। **'बोलबम'** का उद्घोष करते हुए सबको आकर्षित करते हैं। प्रत्येक सोमवार को श्रद्धालु व्रत रखकर तथा अन्य विधि से शिवार्चन करते हैं। चातुर्मास में किया जाने वाला **अशून्यशयन** का पहला व्रत चन्द्रदोय व्यापिनी द्वितीया तिथि में ३१ जुलाई शुक्रवार को किया जायेगा एवं चन्द्रोदय रात ७।५५ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। शास्त्र में बताया गया है कि अशून्य शयन का व्रत करने से पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन अक्षुण रहता है अर्थात् व्रती लम्बा दाम्पत्य जीवन प्राप्त करते हैं। सावन का महीना और सदाशिव भोले बाबा का गहरा आपसी नाता है जिसकी व्याख्या विद्वान, साधु-सन्त अपने-अपने अनुसार करते हैं। **संकष्टी श्रीगणेश व्रत** का मान २ अगस्त रविवार को होगा, चन्द्रोदय रा.८।५७ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। सावन के कृष्ण ☐

पं.१९ श्रावण कृ.८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २०७ अयनांशाः २४/१२/४५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	२	३	३	५	११	१०	४
१८	१९	२	०	१३	५	२०	६	६
४९	३२	१६	३१	३१	८	२४	२०	२०
५	१३	१४	४	१२	५८	३६	३३	३३
५७	८४३	४०	८३	१३	६०	१	३	३
१५	१६	६	३८	१५	५२	० व	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः–मृगशिरायां वृषराशौ४ रवितः मिथुने रात्रि ११।४५ वादने। **बुधः**- मिथुन राशौ ७ बुधतः कर्क राशौ रात्रि १२।१० वादने। **गुरु**-पुष्य नक्षत्रे कर्कराशौ। **शुक्रः**-२ शुक्रतः कन्या राशौ रात्रि शेष ५।२०वादने। **शनिः**-(वक्री) रेवती २चरणे। **राहुः**-१ गुरुतः धनिष्ठा ४ चरणे **केतुश्च**-मघा २ चरणे।

श्रावण कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

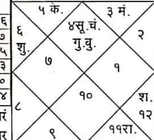
लग्नांत तिथि वा.	१गु. घं.	मि.	२शु. घं.	मि.	३श. घं.	मि.	४र. घं.	मि.	५सो. घं.	मि.	६मं. घं.	मि.	७बु. घं.	मि.	८गु. घं.	मि.	९शु. घं.	मि.	१०श. घं.	मि.	११र. घं.	मि.	१२सो घं.	मि.	१४मं. घं.	मि.	३०बु. घं.	मि.
कर्क	६	४६	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५
सिंह	९	०	८	५६	८	५२	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९
कन्या	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२
तुला	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८
वृश्चिक	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५
धनु	५	५१	५	४७	५	४३	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मकर	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५४	६	५०	६	४६
कुम्भ	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७
मीन	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५
मेष	१२	१४	१२	१०	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३
वृष	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०
मिथुन	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ गुरौ–श्रवणे **गर्भाधानं रात्रौ** लग्नं १२ पुंवसनं सीमन्त धनिष्ठायां प्रसूतिस्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं विपणि व्यापार वाहनक्रयः नववस्त्रधारण हलप्रवहण बीजवपनं, धान्यच्छेदनं कणमर्दन धान्यरोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ शुक्रे**–धनिष्ठायां गर्भाधानं रात्रौ लग्नं १२ आ.प्रसूति स्नानं नामकरण अन्नप्राशन नववस्त्र धारणं आभूषण निर्माणं धारण, हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदन नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ आवेदनपत्र लेखनं औषधि सेवनं, दक्षिणदिग् यात्रा। **तिथि ३ शनौ**–शतभिषायां भद्रा दिवा ९।२२ वादनात्पूर्व कृष्ण वस्त्रधारणं, शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरण। **तिथि ४ रवौ**–पूर्वाभाद्रपदे रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। रिक्ता रात्रि ९।६ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे प्रसूति स्नानं शल्यकर्म (आपरेशन) उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ५ सोमे**–उत्तराभाद्रपदे गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ११ आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः वाहनक्रयः आभूषण निर्माणं धारणं, हलप्रवहण बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, वृक्षारोपण नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ६ भौमे**–भद्रा रात्रि ७।१ वादनात्पूर्व रेवत्यां प्रसूतिस्नानं (ति.दा.) लालवस्त्र धारणं शल्यकर्म रात्रि ८।५१ वादनात्परं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ७ बुधे**–भद्रा दिवा ६।१२ (प्रातः) वादनात्परं अश्विन्यां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापार गवां क्रय विक्रय, हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदन वृक्षारोपणं शय्यासनाद्युपभोग, औषधिनिर्माण सेवनं दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ८ गुरौ**–भरण्यां शय्यासनाद्युपभोगं, मुकदमा कार्यं। **तिथि ९ शुक्रे**–कृत्तिकायां रिक्ता दिवा १।१३ वादनात्परं धान्यच्छेदनं दिवा ४।३५ वादनात्परं रोहिण्यां भद्रा रात्रि १२।२ वादनात्पूर्व गर्भाधानं आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म, अन्नप्राशन, विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यरोपणं, वृक्षारोपणं, सेवारम्भः शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदनपत्र लेखनं **जीर्णादि गृहप्रवेशे अग्निबाणः** पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १० शनौ**–भद्रा दिवा १०।५१ वादनात्परं रोहिण्यां कृष्णवस्त्र धारणं **जीर्णादिगृहप्रवेश ल.८** मृगशिरायां लग्नं गोधूलिः (अग्निवाण दिवा १२।३९ वादनात्परं)। **तिथि ११ रवौ**–मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं विपणिव्यापारः शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन)। **तिथि १२/१३ सोमे**–आर्द्रायाम् धान्यच्छेदनं दिवा ११।४० वादनात्परं पुनर्वसौ नामकरणं अन्नप्राशन विपणिव्यापार आभूषण निर्माणं-धारणं, हलप्रवहणं बीजवपन, शय्यासनाद्युपभोग पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १४ भौमे**–पुनर्वसौ पुष्ये रिक्तायां रोगिविमुक्तस्नानं। **तत्परं मासान्तः।**

पं.२० श्रावण कृ.३० बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २१३ अयनांशाः २४/१२/४५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	२	३	३	५	११	१०	४
२४	१५	६	९	१४	११	२०	६	६
३३	१३	१५	३७	५०	८	१६	१	१
०	१९	२१	४७	३१	२९	५६	२७	२७
५७	८४३	३९	१०५	१३	५८	१ ३६	३	३
२४	२०	३३	७	१०	४९	व	११	११



(क) सुख प्राप्ति हेतवः। **प्रार्थना मन्त्रः**–"पत्नी भर्तृवियोगञ्च भर्ता भार्या समुद्भवम्। नाप्नुवन्ति यथा दुःखं दाम्पत्यानि तथा कुरु।" **पुष्य ४ चरणे रविः** दिवा ११।१२ वादने। **(ग)** पुत्रार्थिभिविधेयम्। श्रावण मासीय सोम प्रदोष व्रतम् अति पुण्यफलप्रदाः **श्लेषा ३ चरणे रविः** रात्रि १०।४० वादने। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १५।२७ (दि.११।४०)उ.।

☐ पक्ष की शीतलासप्तमी ५ अगस्त बुधवार को होगी। **कामदा एकादशी** का व्रत ९ अगस्त रविवार को किया जायेगा। पुत्र की कामना से सावन मास के सोमप्रदोष व्रत का विशेष संयोग १० अगस्त को मिल रहा है। श्रावण मास की **मास शिवरात्रि** का व्रत ११ अगस्त मंगलवार को किया जायेगा। भगवान शिव के अभिषेक-पूजा-अर्चना के लिए इसे विशेष पुण्यफलकारक माना जाता है। **स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या** १२ अगस्त बुधवार को है। श्रावण मास की अमावस्या को **हरियाली अमावस्या** भी कहते हैं। **श्लेषा नक्षत्र का सूर्य** ३ अगस्त सोमवार को रात ११।२५ बजे से आयेगा। इसमें बादल तो खूब आयेगे किन्तु तदनुसार वर्षा कम होगी। १० अगस्त के आसपास अच्छी वृष्टि होने के योग बन रहे हैं। अलसी, तिल, गुड़ एवं मादक द्रव्यों में तेजी आयेगी। शेयर बाजार चमकेगा।

राशिफल

मेष-	रोगभयं
वृष-	सुखम् श्रीः
मिथुन-	भयम्
कर्क-	स्थान हानिः
सिंह-	पीड़ा भयम्
कन्या-	वित्ताप्तिः
तुला-	सौख्यं
वृश्चिक-	पापबुद्धिः
धनु-	रोगं
मकर-	गमनम् हानिः
कुम्भ-	रिपुनाशः
मीन-	दैन्यम्

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ श्रावण शुक्ल पक्षः

यामायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। दिनांक १३ - २८ अगस्त सन् २०२६ ई. (रा.श्रावण २२ - भाद्रपद ६)

दि.मा. घ. प.	श्राव. शु. ति. वार	तिथि घ. प.	दि.	घं. मि.	नक्षत्र	घ. प.	दि.	घं. मि.	योग	घ. प.	दि.	घं. मि.	करण क. घ. प.	क. घ. प.	औदायिका योगा	तारीखें अं. फ. सौ. रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि घ. प.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	र.क्रा. उ+ अं. क.	स्पष्ट सूर्यः रा. अं. क. वि.	गति क. वि.	रे.अं. घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.	
३२ २५	१ गुरु	४० ४	रात	९ ३२	श्लेषा	५ ६	दिन	७ ३२	वरीयान	२३ ६	दिन	२ ४५	किं १२ १३	बव ४० ४	अमृत	१३ १५ २७ २२	सिंह ५ ६	५ ३०	६ ३०	१४ ५२	३ २५ ३० २५	५७ २५	+ ४	७ ८	सिंहराशि दिवा ७।३२ वादने। श्रीविष्णु शिवात्मिकाभिषेकारम्भः। **गुरु बालत्व निवृत्तिः** प्रातः ७।५२ वादने।
३२ २१	२ शुक्र	३६ ३७	रात	८ १०	मघा	३ ५	दिन	६ ४५	परिघ	१७ ३१	दिन	१२ ३२	बा ८ २०	कौ ३६ ३७	काण	१४ १६ २८ २३		५ ३१	६ २९	१४ ३४	३ २६ २७ ५०	५७ २७	+ ३	७ ४०	**चन्द्र ◡ दर्शनम्** मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। **धर्मसम्राट स्वामी करपात्रि जयन्ती २।** श्रृंगार व्रतम २ (सिंधारा)। रोटक व्रतं। श्लेषा ४ चरणे रविः दिवा १०।४५ वादने।
३२ १८	३ शनि	३४ १५	रात	७ १४	पूर्वाफा.	१ ५६	दिन	६ १८	शिव	१२ ४४	दिन	१० ३८	तै ५ २६	गर ३४ १५	लुम्बक	१५ १७ २९ २४	कन्या १६ ५५	५ ३२	६ २८	१४ १५	३ २७ २५ १७	५७ २८	+ ३	८ १२	**कन्याराशिः** दिवा १२।१८ वादने। **मु.रवि-उल-अव्वल ३ हिजरी सन् १४४८। भारतीय स्वतन्त्रता दिवसः।** हरियाली तीज ३। **श्रावणी तीज ३। कजरी तीज ३।** स्वर्ण गौरी व्रतम् ३ टकुराइन जयन्ती सुकृत(क)
३२ १५	४ रवि	३३ ४	सायं	६ ४७	उत्तराफा.	१ ५४	दिन	६ १९	सिद्ध	८ ५२	दिन	९ ६	व ३ ४०	वि ३३ ४	मित्र	१६ १८ ३० २५		५ ३३	६ २७	१३ ५७	३ २८ २२ ४५	५७ ३०	+ २	८ ४५	भद्रा ३।४० (दि.७।१) उ. ३३।४ (सा.६।४७) या. (पाताले)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः १।५४ (दि.६।१९)या.। तदुपरि रवि-हस्त सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगः।
३२ १२	५ सोम	३३ ११	सायं	६ ४९	हस्त	३ ४	दिन	६ ४७	साध्य	६ ०	दिन	७ ५८	बव ३ ७	बा ३३ ११	वज्र	१७ १९ ३१ २६	तुला ३४ १८	५ ३३	६ २७	१३ ३८	३ २९ २० १५	५७ ३१	+ २	९ १८	**तुलाराशिः** रात ७।१६ वादने। **श्रीनागपंचमी ५।** "नागानामानन्दकरी।" भीत्यादौ लिखिता मृण्मयादि नागा पूज्याः। तक्षक पूजा ५। काश्यां नागकूप यात्रा शास्त्र चर्चा च। **श्रावण सोमवार व्रतम्।** प्रदोष व्रत वदस्य विधिः(ख)
३२ ९	६ मंगल	३४ ३७	रात	७ २५	चित्रा	५ ३२	दिन	७ ४७	शुभ	४ ६	दिन	७ १२	कौ ३ ५४	तै ३४ ३७	ध्वांक्ष	१८ २० १ २७		५ ३४	६ २६	१३ १९	४ ० १७ ४६	५७ ३३	+ २	९ ५३	**कल्कि जयन्ती ६।** सायंकाले कल्कि अवतरणोत्सवः। **भौमव्रतम् दुर्गा** यात्रा, हनुमद्दर्शनम्। **सौर भाद्रपदमासारम्भः।** रवियोगः ५।३२ (दि.७।४७) उ.। (ग) ३७।७ (रा.८।२६) या.।
३२ ६	७ बुध.	३७ ७	रात	८ २६	स्वाती	९ १४	दिन	९ १७	शुक्ल	३ १४	दिन	६ ५३	गर ५ ५२	व ३७ ७	धूम्र	१९ २१ २ २८	वृश्चिक ५७ ५३	५ ३५	६ २५	१२ ५९	४ १ १५ १९	५७ ३४	+ २	१० ३१	**वृश्चिकराशिः** रात्रि ४।४४ वादने। भद्रा ३७।७ (रा.८।२६) उ. (पाताले-स्वर्गे)। **शीतला सप्तमी ७। गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती ७। मोक्ष सप्तमी(जैन)।** रवियोगः ९।१४ (दि.९।१७) या.। बुध-भद्रा सिद्धयोगः(ग)
३२ ३	८ गुरु.	४० ५१	रात	९ ५५	विशाखा	१४ ५	दिन	११ १३	ब्रह्म	३ १६	दिन	६ ५३	वि ८ ५९	बव ४० ५१	प्रवर्धमान	२० २२ ३ २९		५ ३५	६ २५	१२ ४०	४ २ १२ ५८	५७ ३६	+ १	११ १३	भद्रा ८।५९ (दि.९।११) या.। **श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रतम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः १४।५ (दि.११।१३) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४०।५१ (रा.९।५५) उ.।
३१ ५९	९ शुक्र.	४५ २०	रात	११ ४४	अनुराधा	१९ ४६	दिन	१ ३०	ऐन्द्र	३ ५८	दिन	७ ११	बा १३ ६	कौ ४५ २०	राक्षस	२१ २३ ४ ३०		५ ३६	६ २४	१२ २०	४ ३ १० ३०	५७ ३८	+ १	१२ १०	**कौमारी व्रतम् ९।** सर्वार्थसिद्धियोगः १९।४६ (दि.१।३०) या.। रवियोगः १९।४६ (दि.१।३०) उ.। मघा नक्षत्रे २ चरणे रविः दि.९।४० वादने। (घ) शाक दानम्। **मघा नक्षत्रे ३ चरणे रविः** रात्रि ८।३० वादने।
३१ ५६	१० शनि.	५० १९	रात	१ ४५	ज्येष्ठा	२६ ४	दिन	४ ३	वैधृति	५ १४	दिन	७ ४३	तै १७ ५०	गर ५० १९	मुसल	२२ २४ ५ ३१	धनु २६ ४	५ ३७	६ २३	१२ ०	४ ४ ८ ७	५७ ३९	+ १	१२ ५०	**धनुराशिः** दिवा ४।३ वादने। दोषसंघ विनाशको रवियोगः यावद्दिनम्। (च) विभिन्न वैदिकानाम स्व परम्परानुसारेण उपाकर्म विधेयम्। मघा ४ चरणे रविः दिवा ८।० वादने।
३१ ५३	११ रवि.	५५ २२	रात	३ ४६	मूल	३२ ३६	सायं	६ ३९	विषकुम्भ	६ ४६	दिन	८ २०	व २२ ५१	वि ५५ २२	सिद्धि	२३ २५ ६ १		५ ३७	६ २३	११ ४०	४ ५ ५ ४६	५७ ४१	+ १	१ ४५	भद्रा २२।५१ (दि.२।४५)उ. ५५।२२ (रा.३।४६)या. (पाताले)। **पुत्रदा एकादशी ११ व्रतम् स्मार्त्तानाम्।** झूलनयात्रा प्रारम्भः। **राष्ट्रीय भाद्रपद मासारम्भः।** सर्वार्थसिद्धियोगः ३२।३६ (सा.६।३९) या.। रवियोगः ३२।३६(सा.६।३९)या.
३१ ४९	१२ सोम.	६० ०	स म	स्त	पूर्वाषाढ़ा	३८ ५५	रात	९ १२	प्रीति	८ १७	दिन	८ ५७	बव २७ ४५	बा ६० ०	उत्पात	२४ २६ ७ २	मकर ५५ २१	५ ३८	६ २२	११ २०	४ ६ ३ २७	५७ ४३	+ १	२ ४१	**मकरराशिः** रात्रि ३।४६ वादने। **वैष्णवानामेकादशी। श्रावण सोमवार व्रतम्।** प्रदोष व्रत वदस्य विधिः सायं उमामाहेश्वर पूजनम्। बुद्ध द्वादशी १२। श्री विष्णुपवित्रारोपणम्। दधित्याग व्रतारम्भः न तु तक्रादीनाम् त्यागः।(घ)
३१ ४६	१२ मंगल	० ८	प्रातः	५ ४२	उत्तराषा.	४४ ३९	रात	११ ३१	आयुष्मान	९ २६	दिन	९ २५	बा ० ८	कौ ३२ ८	मानस	२५ २७ ८ ३		५ ३९	६ २१	१० ५९	४ ७ १ १०	५७ ४५	+ १	३ ३८	**भौम प्रदोष व्रतम् १२** ऋणापकर्णाय श्रेयस्करम्। त्रिपुष्करयोगः ०।८ (प्रातः ५।४२) या.। रवियोगः ४४।३९ (रा.११।३१) उ.। भौमे-जया सिद्ध योग. ०।८ (प्रातः ५।४२) उ.।
३१ ४२	१३ बुध.	४ ९	दिन	६ २०	श्रवण	४९ ३१	रात	१ २८	सौभाग्य	१० ३	दिन	९ ४२	तै ४ ९	गर ३५ ३९	छत्र	२६ २८ ९ ४		५ ४०	६ २०	१० ३८	४ ७ ५८ ५५	५७ ४७	+ ०	४ ३४	रात्रि व्यापिनी चतुर्दश्यां श्रीशिवपवित्रारोपणम्। रवियोगः ४९।३१ (रा.१।२८) या.। **मु.पर्व वारावफात्।** (ङ) दर्शनम् च। गुरौ पूर्णा सिद्धयोगः ७।८ (दि.८।३१) उ.।
३१ ३९	१४ गुरु.	७ ८	दिन	८ ३१	धनिष्ठा	५३ १९	रात	३ ०	शोभन	९ ४८	दिन	९ ३५	व ७ ८	वि ३८ ५	श्रीवत्स	२७ २९ १० ५	कुम्भ २१ २४	५ ४०	६ २०	१० १७	४ ८ ५६ ४२	५७ ४८	- ०	५ ३०	**कुम्भराशिः** दिवा २।१४ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा ७।८ (दि.८।३१) उ. ३८।५ (रा.८।५४) या. (पाताले-मर्त्ये)। **व्रताय पूर्णिमा १५।** हयग्रीव जयन्ती १५। सायंकाले काश्यां मदैनी स्थित मन्दिरे पूजनम्(ङ)
३१ ३६	१५ शुक्र.	९ ३	दिन	९ १८	शतभिषा	५५ ४९	रात	४ १	अतिगण्ड	८ ४५	दिन	९ ११	बव ९ ३	बा ३९ १९	सौम्य	२८ ३० ११ ६		५ ४१	६ १९	९ ५६	४ ९ ५४ ३०	५७ ५०	- ०	+ +	**स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। रक्षाबन्धनम् यावद्दिनम्। श्रावणी उपाकर्मः। संस्कृत दिवसः।** रात्रेदेव पवित्रारोपणम्। झूलन यात्रा समाप्तिः। अमरनाथ यात्रा दर्शन पूजनञ्च। ऋषि तर्पणम्। आणम् (करल)।(च)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा. अं. क. वि.	स्पष्ट मंगल रा. अं. क. वि.	गति	स्पष्ट बुध रा. अं. क. वि.	गति	स्पष्ट गुरु रा. अं. क. वि.	गति	स्पष्ट शुक्र रा. अं. क. वि.	गति	स्पष्ट शनि रा. अं. क. वि.	गति वक्री	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.
१ गु.	३ २९ ८ १७	२ ६ ५४ ५४	३९ २८	३ ११ २२ ५४	१०७ २६	३ १५ ३ ४१	१३ १०	५ १२ ७ १८	५८ २४	११ २० १५ २०	१ ४१	१० ५ ५८ १७
२ शु.	४ १२ ५२ ४१	२ ७ ३४ २२	३९ २२	३ १३ १० २०	११० ४५	३ १५ १६ ५१	१३ १०	५ १३ ५ ४२	५८ ०	११ २० १३ ३९	१ ४६	१० ५ ५५ ६
३ श.	४ २६ २४ ६	२ ८ १३ ४४	३९ १७	३ १५ १ ५	११२ ३५	३ १५ ३० १	१३ ८	५ १४ ३ ४२	५७ ३९	११ २० ११ ५३	१ ५०	१० ५ ५१ ५५
४ र.	५ ९ ४४ १८	२ ८ ५३ १	३९ १३	३ १६ ५३ ४०	११५ ३१	३ १५ ४३ ९	१३ ८	५ १५ १ २१	५७ ११	११ २० १० ३	१ ५५	१० ५ ४८ ४४
५ सो.	५ २२ ५२ ३६	२ ९ ३२ १४	३९ १०	३ १८ ४९ १	११६ ३३	३ १५ ५६ १७	१३ ८	५ १५ ५८ ३२	५६ ४२	११ २० ८ ८	२ २	१० ५ ४५ ३३
६ मं.	६ ५ ४२ १९	२ १० ११ २४	३९ ७	३ २० ४५ ३४	११९ १५	३ १६ ९ २५	१३ ५	५ १६ ५५ १४	५६ १०	११ २० ६ ६	२ ९	१० ५ ४२ २२
७ बु.	६ १८ १९ २८	२ १० ५० ३१	३९ ६	३ २२ ४४ ४९	१२० ४१	३ १६ २२ ३०	१३ ५	५ १७ ५१ २४	५५ ५१	११ २० ३ ५७	२ १५	१० ५ ३९ ११
८ गु.	७ ० ५१ १२	२ ११ २९ ३७	३९ ४	३ २४ ४५ ३०	१२१ २५	३ १६ ३५ ३५	१३ ५	५ १८ ४७ १५	५५ ३४	११ २० १ ४२	२ २०	१० ५ ३६ ०
९ शु.	७ १३ ३ ३५	२ १२ ८ ४१	३९ १	३ २६ ४६ ५५	१२१ ०	३ १६ ४८ ४०	१३ ३	५ १९ ४२ ४९	५५ ५	११ १९ ५९ २२	२ २४	१० ५ ३२ ५०
१० श.	७ २५ ८ ४	२ १२ ४७ ४२	३८ ५७	३ २८ ४७ ५५	१२० ३६	३ १७ १ ४३	१३ ३	५ २० ३७ ५४	५४ ३६	११ १९ ५६ ५८	२ २९	१० ५ २९ ३९
११ र.	८ ७ १० १९	२ १३ २६ ३९	३८ ५३	४ ० ४८ ३१	१२० ५	३ १७ १४ ४६	१३ १	५ २१ ३२ ३०	५४ ३	११ १९ ५४ २९	२ ३४	१० ५ २६ २८
१२ सो.	८ १९ १४ ५३	२ १४ ५ ३२	३८ ५०	४ २ ४८ ३६	११९ ५५	३ १७ २७ ४७	१३ १	५ २२ २६ ३३	५३ ३८	११ १९ ५१ ५५	२ ४०	१० ५ २३ १७
१२ मं.	९ १ २८ ३९	२ १४ ४४ २२	३८ ४८	४ ४ ४८ ३१	११९ २२	३ १७ ४० ४८	१२ ५८	५ २३ २० ११	५३ ०	११ १९ ४९ १५	२ ४३	१० ५ २० ६
१३ बु.	९ १३ ५० ३०	२ १५ २३ १०	३८ ४३	४ ६ ४७ ५३	११९ ०	३ १७ ५३ ४६	१२ ५५	५ २४ १३ ११	५२ ३१	११ १९ ४६ ३२	२ ४८	१० ५ १६ ५५
१४ गु.	९ २६ १४ १५	२ १६ १ ५३	३८ ३९	४ ८ ४६ ५३	११८ ५७	३ १८ ६ ४१	१२ ५३	५ २५ ५ ४२	५१ ४८	११ १९ ४३ ४४	२ ५५	१० ५ १३ ४४
१५ शु.	१० ९ १६ २२	२ १६ ४० ३२	३८ ३३	४ १० ४५ ५०	११७ ३१	३ १८ १९ ३४	१२ ५१	५ २५ ५७ ३०	५० ३०	११ १९ ४० ४९	३ १	१० ५ १० ३३

पं.२१ श्रावण शु.८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २२१ अयनांशाः २४/१२/४६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	२	३	३	५	११	१०	४
२	०	११	२४	१६	१८	२०	५	५
१२	५१	२९	४५	४७	१	[illegible]	३६	३६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०
५७	७८७	३९	१२१	१३	५५	३	३	३
३६	५	४	२९	५	३४	[illegible]	११	११



दैनिक लग्न सारिणी

श्रावण शुक्ल

लग्नांत ति.वा.	१गु. घं. मि.	२शु. घं. मि.	२श. घं. मि.	४र. घं. मि.	५सो. घं. मि.	लग्नांत ति.वा.	६मं. घं. मि.	७बु. घं. मि.	८गु. घं. मि.	९शु. घं. मि.	१०श. घं. मि.	११र. घं. मि.	१२सो. घं. मि.	१२मं. घं. मि.	१३बु. घं. मि.	१४गु. घं. मि.	१५शु. घं. मि.
कर्क	५ ५०	५ ४६	५ ४२	५ ३८	५ ३३	सिंह	७ ४६	७ ४२	७ ३८	७ ३४	७ ३०	७ २६	७ २२	७ १८	७ १४	७ १०	७ ६
सिंह	८ ५	८ १	७ ५७	७ ५३	७ ४९	कन्या	९ ४८	९ ४४	९ ४०	९ ३६	९ ३२	९ २८	९ २४	९ २०	९ १६	९ १२	९ ८
कन्या	१० ८	१० ४	१० ०	९ ५६	९ ५२	तुला	१२ १९	१२ १५	१२ ११	१२ ७	१२ ३	११ ५९	११ ५५	११ ५१	११ ४७	११ ४३	११ ३९
तुला	१२ ३९	१२ ३५	१२ ३१	१२ २७	१२ २३	वृश्चिक	२ ३२	२ २८	२ २४	२ २०	२ १६	२ १२	२ ८	२ ४	२ ०	१ ५६	१ ५२
वृश्चिक	२ ५२	२ ४८	२ ४४	२ ४०	२ ३६	धनु	४ ३७	४ ३३	४ २९	४ २५	४ २१	४ १७	४ १३	४ ९	४ ५	४ १	३ ५७
धनु	४ ५७	४ ५३	४ ४९	४ ४५	४ ४१	मकर	६ २२	६ १८	६ १४	६ १०	६ ६	६ २	५ ५८	५ ५४	५ ५०	५ ४६	५ ४२
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
मकर	६ ४२	६ ३८	६ ३४	६ ३०	६ २६	कुम्भ	७ ५३	७ ४९	७ ४५	७ ४१	७ ३७	७ ३३	७ २९	७ २५	७ २१	७ १७	७ १४
कुम्भ	८ १३	८ ९	८ ५	८ १	७ ५७	मीन	९ २१	९ १७	९ १३	९ ९	९ ५	९ १	८ ५८	८ ५४	८ ५०	८ ४६	८ ४२
मीन	९ ४१	९ ३७	९ ३३	९ २९	९ २५	मेष	११ ०	१० ५६	१० ५२	१० ४८	१० ४४	१० ४०	१० ३६	१० ३२	१० २८	१० २४	१० २०
मेष	११ १९	११ १५	११ ११	११ ८	११ ४	वृष	१२ ५७	१२ ५३	१२ ४९	१२ ४५	१२ ४१	१२ ३७	१२ ३३	१२ २९	१२ २५	१२ २१	१२ १७
वृष	१ १६	१ १२	१ ८	१ ४	१ ०	मिथुन	३ १०	३ ६	३ २	२ ५८	२ ५४	२ ५०	२ ४७	२ ४३	२ ३९	२ ३५	२ ३१
मिथुन	३ ३०	३ २६	३ २२	३ १८	३ १४	कर्क	५ २८	५ २४	५ २०	५ १६	५ १२	५ ८	५ ४	५ ०	४ ५६	४ ५२	४ ४८

पं.२२ श्रावण शु.१५ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २२९ अयनांशाः २४/१२/४७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	२	४	३	५	११	१०	४
९	९	१६	१०	१८	२५	१९	५	५
५४	१६	४०	४५	१९	५७	४०	१०	१०
३०	२२	३२	५०	३४	३०	४९	३३	३३
५७	७६५	३८	११७	१२	५०	३ १ व	३	३
५०	३१	३३	३१	५१	३०	[illegible]	११	११



(क) व्रतम् ३। रवियोगः १।५६ (दि.६।१८) उ.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ३४।१५ (रा.७।१४) उ। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १।५६ (दि.६।१८) उ. ३४।१५ (रा.७।१४) या.। (ख) सायं उमामाहेश्वर पूजनम्।⊙ **मघा नक्षत्रे सिंह राशौ रविः** ४२।० (रा.१०।२१) मु.३० समा समता करम्। पूर्वाः १६ घट्यः पुण्याः। छत्र सुवर्णदानम्। गंगायाम् स्नानम्। **मनसा देवी पूजा समाप्तिः** (बंगाल-झारखण्ड) स्त्री-स्त्री चन्द्र-सूर्य योगी चातक वाहनं वह्नि (अग्नि) नाड़ी तदोशो भौमः स्वल्प वृष्टियोगः। **पूर्व दिशायाम् बुधास्तः।**

● एवं श्रावण शुक्ल सप्तमी को **गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती** १९ अगस्त बुधवार को है। स्मार्त गृहस्थों के लिए **पुत्रदा एकादशी** व्रत का मान २३ अगस्त रविवार को होगा जबकि वैष्णव जन इस एकादशी को २४ अगस्त सोमवार को मानेंगे। ऋण से छुटकारा पाने के लिए **भौम प्रदोष** व्रत २५ अगस्त को किया जायेगा। व्रत के लिए पूर्णिमा २७ अगस्त गुरुवार को होगी। **स्नान-दान** की भाई-बहन के पारस्परिक स्नेह सौहार्द का पुण्य पवित्र पर्व **रक्षा-बन्धन** २८ अगस्त शुक्रवार को मनाया जायेगा। **दिन भर रक्षा बन्धन** को लिए शुभ मुहूर्त है। प्रिय बहने अपने प्रिय भाईयों की कलाई मे राखी बांधेगी तथा भाई अपनी बहनों को स्नेहस्वरूप उपहार देंगे। विप्रजन अपने यजमानों की कलायी में रक्षासूत्र बांधेगें तथा यथोचित दक्षिणा प्राप्त करेंगे। वैदिक ब्राह्मण श्रावणी उपाकर्म करेंगे। संस्कृत दिवस मनाया जायेगा। मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि की सूर्य संक्रान्ति १७ अगस्त सोमवार को रात १०।२१ बजे से आयेगी। इसमें संक्रान्ति लगते ही वर्षा होगी। कुल मिलाकर इस पक्ष में सामान्य वृष्टि की सम्भावना है।

फलम्–घर-घर में ब्राह्मण आचार्यो द्वारा किया जाने वाला रुद्राभिषेक तथा वेद मंत्रो के उच्चारण से पूरा वातावरण धार्मिक एवं पवित्र हो जाता है। द्वादशी तिथि की वृद्धि हो जाने से यह पक्ष १६ दिनका हो गया है। चन्द्र दर्शन का फल सामान्यतया शुभफल कारक है। सनातन धर्म के शलाका पुरुष एवं हिन्दू धर्म को शास्त्र सम्मत स्वरूप में स्थापित करने के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित करने वाले **स्वामी करपात्रि** जी की जयन्ती १४ अगस्त शुक्रवार को मनाई जायेगी। काशी नगरी में सर्वत्र विशेषकर करपात्रि पीठ, मे विशेष आयोजन किए जायेंगे। **हरियाली तीज, कजरी तीज, श्रावणी तीज एवं मधुश्रवा** तृतीया तथा पश्चिमी देशों में विख्यात ठकुराईन जयन्ती स्वर्ण गौरी व्रत १५ अगस्त शनिवार को मनाया जायेगा। **नाग पञ्चमी** का प्रसिद्ध पर्व १७ अगस्त सोमवार को मनाया जायेगा। बल-पौरुष-ज्ञान-तर्क के परीक्षण के साथ नाग (सर्प) जाति की भी पूजा कर महिमा मण्डित करने वाला तथा उनको देवतुल्य मानने वाला यह पर्व सनातन धर्म की उदात्त भाव परम्परा का परिचायक है। काशी के नागकूप पर काशी की शास्त्रार्थ परम्परा के **विद्वत् विमर्श** का आयोजन सम्मान होगा। **कल्कि जयन्ति** १८ अगस्त मंगलवार को होगी। शुक्ल पक्ष की **शीतला सप्तमी** ●

भौमादीनां चारः

भौमः-मिथुन १ गुरुतः आर्द्रायाम् प्रातः। **बुधः**-कर्कराशौ १० शनितः सिंहराशौ रात्रि शेष ५।० वादने। **गुरुः**-पुष्ये कर्कराशौ ८ गुरुतः श्लेषायां दिवा ४।३० वादने। **शुक्र**-कन्या राशौ। **शनिः**-(वक्री) रेवतीर चरणे ८ गुरुतः रेवती १चरणे सायं ६।१० वादने। **राहुः**-धनिष्ठा ४चरणे **केतुश्च**-मघा २ चरणे।

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ गुरौ–श्लेषायां मघायां कणमर्दनं जलयन्त्रकर्म शय्यासनाद्युपभोगं, मुकदमाकार्य, भूमिक्रयः। **तिथि २ शुक्रे**–दिवा ६।४५ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां आ.प्रसूतिस्नानं, दीक्षाग्रहणं कणमर्दनं धान्यस्थापन जलयन्त्रकर्म, मुकदमाकार्य भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ३ शनौ**–दिवा ६।१८ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां कृष्णवस्त्र धारणं इष्टिका निर्माणं दिवा १२।१८ वादनात्परं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ४ रवौ**–रिक्तायां रोग विमुक्त स्नान, रिक्ता-भद्रा सायं ६।४७ वादनात्परं **हस्त नक्षत्रे** पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नान, विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र प्रवालरत्नधारण, धान्यच्छेदन, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ, शस्त्रधारण, दत्तकपुत्रग्रहण आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, औषधिसेवनं शल्यकर्म (आपरेशन), दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ५ सोमे**– हस्त चित्रयो प्रातः ६।४७ वादनात्पूर्व आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन विपणिव्यापारः वाहनक्रयः गवां क्रय विक्रयः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदन, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं चित्रायां **जीर्णादिगृहप्रवेश ल.६**, औषधि निर्माणं, लेखनं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ६ भौमे**–दिवा ७।४७ वादनात्परं स्वात्यां लालवस्त्रधारण रात्रि ७।२५ वादनात्परं सप्तम्यां प्रसूतिस्नानं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ७ बुधे**–दिवा ९।१७ वादनम् यावत् स्वात्यां नामकरणं अन्नप्राशनं, क्रय विक्रयः दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं बीजवपनं **जीर्णादिगृहप्रवेशः ल.६** विशाखायां नूतनवध्वा पाककर्म, पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८ गुरौ**–दिवा ११।१३ वादनात्परं अनुराधायां प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरण अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः नववस्त्रधारण दीक्षाग्रहण हलप्रवहण बीजवपनं वृक्षारोपण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ शस्त्रधारण शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं भूमिक्रयः दिग् शूल निहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ९ शुक्रे**–रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० शनौ**–ज्येष्ठायां शस्त्र घटनं उग्रकर्माचरण। **तिथि ११ रवौ**–भद्रा दिवा २।४५ वादनात्पूर्व मूले पुंसवनं सीमन्त जलयन्त्र कर्म मुकदमाकार्य पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १२ सोमे**–पूर्वाषाढ़ायाम् आ.प्रसूति स्नानं दीक्षाग्रहणं जलयन्त्रकर्मः रात्रि ९।१२ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् गर्भाधानं गृहारम्भे भूमि सुप्त जीर्णादिगृहप्रवेश च.शु. नूतन वध्वा पाककर्म उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १२ भौमे**–त्रयोदश्यां उत्तराषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १३ बुधे**–रिक्ता दिवा ६।२० वादनात्पूर्व श्रवणे पुंसवनं सीमन्तः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १४ गुरौ**–रिक्ता भद्रा रात्रि ८।५४ वादनात्परं धनिष्ठायां गृहारम्भः च.शु.ल.चि. पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १५ शुक्रे**–शतभिषायां–अन्नप्राशनं दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यरोपणं, वृक्षारोपणं वाहनक्रयः नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः जलयंत्रकर्म आवेदन पत्र लेखनं **गृहारम्भः ल.५** नूतनवध्वा पापकर्म औषधि सेवनं।

राशिफल

मेष-	सुख
वृष-	नेत्रकष्ट
मिथुन-	पीड़ा
कर्क-	रोगं
सिंह-	लाभ
कन्या-	शोकः
तुला-	कष्टं
वृश्चिक-	पाप वृद्धिः
धनु-	धन हानिः
मकर-	लाभ
कुम्भ-	रोगं
मीन-	शत्रुभयं

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ भाद्रपद कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। दि.२९ अगस्त - ११ सितम्बर
सन् २०२६ ई. (रा.भाद्रपद ७ - २०)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वार	तिथि घ.	तिथि प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	विवरण
३१	३२	१	शनि.	९	३५	दिन	९	३२	पूर्वाभाद्र.	५७	०	रात	४	३०	सुकर्मा	६	३७	रात	८	२१	कौ	९	३५	तै	३९	१२	कालदण्ड	२९	१	१२	७	मीन	४१	४३	५	४२	६	१८	९	३५	४	१०	५२	२१	५७	५२	-	०	६	५९	मीनराशिः रात्रि १०।२३ वादने। फसली भाद्रपद मासारम्भ। 'भाद्रपदे दधि त्यजेत् न तु तक्रादीनाम् त्यागः।' चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीयायां अशून्यशयन व्रतम् २। चन्द्रोदये (रा.६।५९) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। शुभाशुभे त्रयुगण्यकर:(ख)
३१	२९	२	रवि	८	४९	दिन	९	१४	उत्तराभाद्र	५७	२	रात	४	३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रात	[illegible]	[illegible]	गर	८	४९	व	३७	५१	स्थिर	३०	२	१३	८				५	४२	६	१८	९	१४	४	११	५०	१३	५७	५४	-	०	७	३१	भद्रा ३७।५१ (रा.८।५०) उ. (मर्त्ये)। भीमचण्डी विन्ध्याचली देव्योर्जयन्ती २। कज्जली निमित्तकं रात्रि जागरणम् (रतजग्गा)। सर्वार्थसिद्धियोगः ५७।२ (रा.४।३१) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ८।४९ (दि.९।१४)उ.
३१	२५	३	सोम.	६	५२	दिन	८	२८	रेवती	५५	५४	रात	४	५	गण्ड	५४	२३	सायं	३	२८	वि	६	५२	बव	३५	२०	मातंग	३१	३	१४	९	मेष	५५	५४	५	४३	६	१७	८	५२	४	१२	४८	७	५७	५६	-	१	८	५	मेषराशिः रात्रि ४।५ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ६।५२ (दि.८।२८) या.। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.८।५) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। बहुला चतुर्थी ४ व्रत। कज्जली ३ (कजरी)। (ख)
३१	२२	४/५	मंगल	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	अश्विनी	५३	५४	रात	३	१८	वृद्धि	४८	३६	रात	१	१०	बा	३	४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अमृत	१	४	१५	१०				५	४४	६	१६	८	३१	४	१३	४६	३	५७	५८	-	१	८	४२	रक्षा पंचमी ५ (उड़ीसा)। भ्रातृ पंचमी ५। भौमाश्विनी-सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ५३।५४ (रा.३।१८) या.। (क) त्रिपुष्करयोगः ९।३५ (दि.९।३२) उ. ५७।० (रा.४।३०) या.।
३१	१८	६	बुध	५४	५९	रात	३	४४	भरणी	५१	२	रात	२	९	ध्रुव	४२	९	दिन	१०	३६	गर	२५	२९	व	५४	५९	काण	२	५	१६	११				५	४४	६	१६	८	९	४	१४	४४	१	५८	०	-	२	९	२४	भद्रा ५४।५९ (रा.३।४४) उ. (स्वर्ग)। चन्द्र षष्ठी ६ व्रतम् चन्द्रोदय (रा.९।२४) वादने। चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। हलषष्ठी (ललही छठ) ६ व्रतम्। सर्वार्थसिद्धिः रवियोगश्च ५१।२ (रा.२।९) उ.।
३१	१५	७	गुरु.	४९	३०	रात	१	३३	कृत्तिका	४७	३१	रात	१२	४५	व्याघात	३५	८	दिन	७	४८	वि	२२	१४	बव	४९	३०	लुम्बक	३	६	१७	१२	वृष	५	९	५	४५	६	१५	७	४७	४	१५	४२	१	५८	२	-	३	१०	१३	वृषराशिः दिवा ७।४९ वादने। भद्रा २२।१४ (दि.२।३९) या.। शीतला सप्तमी ७। रवियोगः ४७।३१ (रा.१२।४५) या.। यमघंट योगः ४७।३१ (रा.१२।४५) या.। पूर्वाफाल्गुनी २ चरणे रविः रात्रि शेष ५।४४ वादने।
३१	११	८	शुक्र.	४३	३८	रात	११	१३	रोहिणी	४३	३४	रात	११	१२	हर्षण	२७	४४	दिन	४	५१	वा	१६	३४	कौ	४३	३८	मित्र	४	७	१८	१३				५	४६	६	१४	७	२५	४	१६	४०	४	५८	४	-	३	११	९	श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतम् ८ सर्वेषाम्। कृष्णावतारः ८। चन्द्रोदय (रा.११।९) वादने। अष्टमी कृष्ण पक्षस्य रोहिणी ऋक्ष संयुता। भवेत्प्रोष्ठपदे मासि जयन्ती नाम सा स्मृता। जयन्ती योगे अतीव पुण्यफलप्रदा। दूर्वाष्टमी(ग)
३१	८	९	शनि.	३७	३२	रात	८	४७	मृगशिरा	३९	२४	रात	९	३२	वज्र	२०	८	दिन	१	४९	तै	१०	३५	गर	३७	३२	वज्र	५	८	१९	१४	मिथुन	११	२९	५	४६	६	१४	७	३	४	१७	३८	८	५८	६	-	३	१२	१२	मिथुनराशिः दिवा १०।२२ वादने। गोगा नवमी ९ व्रतम्। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ३७।३२ (रा.८।४७) या.। (ग) ८ व्रतम्। यमघंटयोगः ४३।३४ (रा.११।१२) या.।
३१	४	१०	रवि.	३१	२०	सायं	६	१९	आर्द्रा	३५	१२	रात	७	५२	सिद्धि	१२	२२	दिन	१०	४४	व	४	२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्वांक्ष	६	९	२०	१५				५	४७	६	१३	६	४१	४	१८	३६	१४	५८	८	-	४	१	१९	भद्रा ४।२६ (दि.७।३३) उ. ३१।२० (सा.६।१९) या. (स्वर्ग)।
३१	०	११	सोम.	२५	२१	दिन	३	५६	पुनर्वसु	३१	१०	सायं	६	१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	बा	२५	२१	कौ	५२	३३	धूम्र	७	१०	२१	१६	कर्क	१७	१०	५	४८	६	१२	६	१८	४	१९	३४	२२	५८	१०	-	४	२	२८	कर्कराशिः दिवा १२।४० वादने। जया एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। "अर्जति नाम्ना विख्याता सर्वपाप प्रणाशिनी।" पर्युषण पर्वारम्भः (जैन)। पूर्वाफाल्गुनी ३ चरणे रविः रात्रि ८।२० वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः ३१।१०(घ)
३०	५७	१२	मंगल	१९	४६	दिन	१	४३	पुष्य	२७	३०	दिन	४	४९	परिघ	५०	१४	रात	१	५५	तै	१९	४६	गर	४७	१३	प्रवर्धमान	८	११	२२	१७				५	४९	६	११	५	५६	४	२०	३२	३२	५८	१२	-	४	३	३४	भौम प्रदोष व्रतम् १२। ऋणापकर्णाय श्रेयस्करम्। गोवत्स द्वादशी १२। (बछवारस)। अघोर द्वादशी १२। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः १९।४६ (दि.१।४३) या.।
३०	५३	१३	बुध.	१४	४०	दिन	११	४१	श्लेषा	२४	२६	दिन	३	३५	शिव	४३	४६	रात	११	१९	व	१४	४०	वि	४२	३२	राक्षस	९	१२	२३	१८	सिंह	२४	२६	५	४९	६	११	५	३३	४	२१	३०	४४	५८	१४	-	५	४	३८	सिंहराशिः दिवा ३।३५ वादने। भद्रा १४।४० (दि.११।४१) उ. ४२।३२ (रा.१०।५०) या. (मर्त्ये)। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। (घ) (सा.६।१६) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योग २५।२१ (दि.३।५६) या.।
३०	५०	१४	गुरु.	१०	२५	दिन	१०	०	मघा	२२	१३	दिन	२	४३	सिद्ध	३७	५६	रात	९	०	श	१०	२५	च	३८	४१	मुसल	१०	१३	२४	१९				५	५०	६	१०	५	११	४	२२	२८	५८	५८	१७	-	५	५	३९	श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। अघोर चतुर्दशी १४। अघोराचार्य अवतरणोत्सवः। 'अघः पापात्रक्षति इति अघोरः।' कुशोत्पाटिनी अमावस्या ३०। पूर्वाफाल्गुनी ४ चरणे रविः रात्रि ३।३० वादने। ॐ हूँ फट्कार(ङ)
३०	४६	३०	शुक्र.	६	५८	दिन	८	३८	पूर्वाफा.	२०	४७	दिन	२	१०	साध्य	३२	५७	रात	७	२	ना	६	५८	किं	३५	४८	सिद्धि	११	१४	२५	२०	कन्या	३५	४२	५	५१	६	९	४	४८	४	२३	२७	१५	५८	१९	-	५	+	+	कन्याराशिः रात्रि ८।८ वादने। स्नानदानादौ अमावस्या ३०। पिठौरी अमावस्या ३०।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	श	१०	२२	२२	१७	२	१७	१९	५	३८	२५	४	१२	४३	२१	११६	३५	३	१८	३२	२५	१२	४८	५	२६	४८	०	४९	३५	११	१९	३७	४८	३	६	१०	५	७	२२
२	र.	११	५	४२	३९	२	१७	५७	३०	३८	१९	४	१४	३९	५६	११६	१०	३	१८	४५	१३	१२	४६	५	२७	३७	३५	४८	४१	११	१९	३४	४२	३	१३	१०	५	४	११
३	सो	११	१९	१५	३३	२	१८	३५	४९	३८	१०	४	१६	३६	६	११५	४४	३	१८	५७	५९	१२	४५	५	२८	२६	१९	४८	१०	११	१९	३१	२९	३	२०	१०	५	१	०
४	मं.	०	२	५९	४	२	१९	१३	५९	३८	२	४	१८	३१	५०	११५	९	३	१९	१०	४४	१२	४२	५	२९	१४	२६	४७	५०	११	१९	२८	९	३	२८	१०	४	५७	५०
६	बु.	०	१५	५३	३०	२	१९	५२	१	३७	५५	४	२०	२६	५९	११३	२७	३	१९	२३	२६	१२	३८	६	०	२	१६	४७	७	११	१९	२४	४१	३	३५	१०	४	५४	३९
७	गु.	०	२८	५५	२६	२	२०	२९	५६	३७	५०	४	२२	२०	२६	१११	५०	३	१९	३६	४	१२	३४	६	०	४९	२३	४६	३६	११	१९	२१	६	३	४१	१०	४	५१	२८
८	शु.	१	१३	३	३६	२	२१	७	४६	३७	४३	४	२४	१२	१६	१११	४	३	१९	४८	३८	१२	२९	६	१	३५	५९	४५	४०	११	१९	१७	२५	३	४५	१०	४	४८	१७
९	श.	१	२७	१३	२७	२	२१	४५	२९	३७	३५	४	२६	३	२०	१०९	३३	३	२०	१	७	१२	२५	६	२	२१	३९	४४	५०	११	१९	१३	४०	३	५१	१०	४	४५	६
१०	र.	२	११	२३	५	२	२२	२३	४	३७	२८	४	२७	५२	५३	१०५	४४	३	२०	१३	३२	१२	२१	६	३	६	२९	४३	२९	११	१९	९	४९	४	५६	१०	४	४१	५५
११	सो.	२	२५	३१	५४	२	२३	०	३२	३७	२२	४	२९	३८	३७	१०२	१२	३	२०	२५	५३	१२	१७	६	३	४९	५८	४२	३१	११	१९	५	५३	४	०	१०	४	३८	४४
१२	मं.	३	९	३३	१८	२	२३	३७	५४	३७	१७	५	१	२०	४९	९७	१	३	२०	३८	१०	१२	१५	६	४	३२	२९	४१	२७	११	१९	१	५३	४	५	१०	४	३५	३३
१३	बु.	३	२३	२९	४०	२	२४	१५	११	३७	१५	५	२	५७	५०	९६	४९	३	२०	५०	२५	१२	११	६	५	१३	५६	४०	३५	११	१८	५७	४८	४	८	१०	४	३२	२२
१४	गु.	४	७	१५	२१	२	२४	५२	२६	३७	१०	५	४	३४	३९	९६	२९	३	२१	२	३६	१२	६	६	५	५४	३१	३९	११	११	१८	५३	४०	४	१२	१०	४	२९	११
३०	शु.	४	२१	५३	१९	२	२५	२९	३६	३७	२	५	६	११	८	९६	२०	३	२१	१४	४२	१२	३	६	६	३३	४२	३७	४४	११	१८	४९	२८	४	१५	१०	४	२६	०

फलम्—भादों के महीने में सजाव दही नहीं खाना चाहिये किन्तु मट्ठे का सेवन किया जा सकता है। पंचमी तिथि का क्षय हो गया है जिसके कारण यह पक्ष १४ दिन का है। चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया तिथि में **अशून्य शयन** का व्रत २९ अगस्त शनिवार को किया जायेगा। चन्द्रोदय रात ६।५९ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **भीमचण्डी विन्ध्याचली देवी** की जयन्ती एवं **कजरी का रतजग्गा** ३० अगस्त रविवार को मनाया जायेगा। **कज्जली** का प्रसिद्द पर्व एवं **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी (बहुला चतुर्थी)** व्रत का मान ३१ अगस्त सोमवार को होगा। **चन्द्रोदय** रात ८।५ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। बहुला चतुर्थी में आज के दिन गाय के दूध एवं उससे निर्मित खाद्य सामग्री का सेवन नहीं करना चाहिये। कज्जली के लिये मीरजापुर जनपद एवं समीपस्थ स्थानों में कजरी गायन दंगल अपने पारम्परिक स्वरूप में मनाया जायेगा। पुत्र की दीर्घायु की कामना से **हलषष्ठी (ललही छठ)** का व्रत पूजन २ सितम्बर बुधवार को किया जायेगा। **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** का अति महत्वपूर्ण व्रत-पर्व इस वर्ष **गृहस्थ-वैष्णव** सबके लिये एक ही दिन ४ सित.शुक्र.को होगा।●

पं.२३ भाद्रपद कृष्ण ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २३६
अयनांशाः २४/१२/४८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	२	४	३	६	११	१०	४
१६	१३	२१	२४	१९	१	१९	४	४
४०	३	७	१२	४८	३५	१७	४८	४८
४	३६	४६	१६	३८	५९	२५	१७	१७
५८	८५७	३७	११४	१२	४५	३ ४५	३	३
४	२०	४३	४	२९	४०	व	११	११

६ | गु. ४ | ७ शु. | ५सू. बु. के. | ३ मं. | ८ | २ चं. | ९ | ११रा. | १ | १० | १२श.

भौमादीनां चारः
भौमः—आर्द्रायाम् मिथुने ६ बुधः पुनर्वसौ दिवा ११।१५ वादने। बुधः-सिंहराशौ ११ सोमतः कन्याराशौ दिवा १०।१० वादने। गुरुः-श्लेषायां कर्कराशौ। शुक्रः-कन्यायां ४ भौमतः तुलाराशौ रात्रि २।४५ वादने। शनि-वक्री रेवती १ चरणे। राहुः-धनिष्ठा ४ चरणे केतुश्च-मघा २ चरणे।

भाद्रपद कृष्ण

दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ श. घं.	मि.	२ र. घं.	मि.	३ सो घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	६ बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	१० र. घं.	मि.	११ सो. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	१४ गु. घं.	मि.	३० शु. घं.	मि.
सिंह	७	२	६	५८	६	५४	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११
कन्या	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४
तुला	११	३१	११	२७	११	२३	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०
वृश्चिक	१	४८	१	४४	१	४०	१	३७	१	३२	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५७
धनु	३	५३	३	४९	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२
मकर	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५६	४	५२	४	४८
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कुम्भ	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९
मीन	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७
मेष	१०	१६	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५
वृष	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२
मिथुन	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६
कर्क	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३

विविध मुहूर्ताः तिथि १ शनौ—पूर्वाभाद्रपदे शस्त्र घटनं, इष्टिका दहनं, उग्रकर्माचरणं। **तिथि २ रवौ**—भद्रा रात्रि ८।५० वादनात्पूर्व उत्तराभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूति स्नानं, विपणिव्यापारः लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शस्त्रधारण आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म (आपरेशन) उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ३ सोमे**—रेवत्यां भद्रा-रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४/५ भौमे**—अश्विन्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं दत्तकपुत्रग्रहणं शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ बुधे**—भरण्यां शय्यासनाद्युपभोगं मुकदमा कार्यं। **तिथि ७ गुरौ**—भद्रा दिवा २।३९ वादनात्परं कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं रात्रि १२।४५ वादनात्परं रोहिण्यां गर्भाधानं। **तिथि ८ शुक्रे**—रोहिण्यां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं (ति.दा.) विपणिव्यापारः वाहनक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यरोपणं वृक्षारोपणं शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं, रात्रि ११।१३ वादनात्पूर्व **गर्भाधानं** पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ९ शनौ**—मृगशिरायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १० रवौ**—भद्रा दिवा ७।३३ वादनात्पूर्व आर्द्रायाम् पुंसवनं सीमन्तः मुकदमा कार्यं। **तिथि ११ सोमे**—पुनर्वसौ नामकरणं, अन्नप्राशनं आभूषण धारणं हलप्रवहण बीजवपनं शय्यासनाद्युपभोगं सायं ६।१६ वादनात्परं पुष्ये वाहनक्रयः दिग् शूल वहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ भौमे**—पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः लालवस्त्रप्रवाल रत्नधारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ बुधे**—भद्रा दिवा ११।४१ वादनात्पूर्व श्लेषायां जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्यं। **तिथि १४ गुरौ**—रिक्ता **तत्परं मासान्तः।**

पं.२४ भाद्रपद कृ. ३० शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २४३
अयनांशाः २४/१२/४९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	२	५	३	६	११	१०	४
२३	२१	२५	६	२१	६	१८	४	४
२७	५३	२९	११	१४	३३	४९	२६	२६
१५	१९	३६	८	४२	४२	२८	०	०
५८	८२०	३७	९६	१२	३७	४ १५	३	३
१९	५	२	२०	३	४४	व	११	११

६ बु. | ४ गु. | ७ शु. | ५ चं. सू.के. | मं.३ | ८ | २ | ९ | ११ रा. | १ | १० | १२श.

(ख) गो पूजा ३। तीजड़ी (सिन्धी)। विशालाक्षी यात्रा ३। तीज व्रतः (जैन)। **बहुलायाः**-या पालयन्त्यनाथाश्च परपुत्रान् स्वपुत्रवत्। ता धन्यास्ताः कृतार्थाश्च तास्त्रियोः लोकमातरः इति मंत्रेण गो पूजनम्।⊙ **पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे रविः** ३३।३० (रा.७।७) स्त्री-पु., सूर्य-चन्द्र योगौ, खर वाहनं वह्नि नाड़ी तदीशो भौमः सुवृष्टियोगः। (ङ)इति मन्त्रेण कुशग्रहणम्। **अत्र कुशानयन विधिः**-शुचिर्भूत्वा शुचादेशे स्थित्वा पूर्वोत्तर मुखः। ओंकारेणैवमन्त्रेण कुशान् स्पृष्ट्वा द्विजोत्तमः।' **कुशोत्पाटन मन्त्रः** ओं कुशाग्रे वसते रुद्रकुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान् मे देहि मेदिनी।' इति।

●उदयकालिक अष्टमी तिथि एवं रोहिणी नक्षत्र का संयोग आज ही प्राप्त हो रहा है। इसी को **जयन्ती योग** कहते हैं। **जया एकादशी** व्रत का मान सबके लिये ७ सितम्बर सोमवार को होगा। ऋण से छुटकारा पाने के लिये **भौम-प्रदोष** व्रत ८ सितम्बर को किया जायेगा। **गोवत्स द्वादशी** (बछवारस) ८ सित. मंगल. को है। **मास-शिवरात्रि** का व्रत ९ सितम्बर बुध. को किया जायेगा। **सन्त अघोराचार्य** का अवतरोणत्सव १० सितम्बर गुरुवार को मनाया जायेगा। काशी के क्रीं कुण्ड एवं पड़ाव तथा सबसे बढ़कर **सन्त कीनाराम की जन्मस्थली चंदौली** (वाराणसी) जनपद के रामगढ़ नामक गाँव में विशेष समारोह मनाया जायेगा। **श्राद्ध** के लिये अमावस्या का मान १० सितम्बर गुरुवार को होगा **कुशोत्पाटिनी अमावस्या** १० सितम्बर गुरुवार को होगी। **'ॐ हूँ फटकार'** मन्त्रोचार के साथ उखाढ़ा गया कुश पूजनादि कार्य में वर्षभर प्रयोग में लाया जायेगा। **स्नान-दान की अमावस्या** ११ सितम्बर शुक्र. को होगी। **पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र** का सूर्य ३१ अगस्त सोम. को रात ७।७ बजे से आयेगा। इसमें अच्छी वृष्टि होने के योग मिल रहे हैं। चाँदी, कपड़ा, चावल गेहूँ, सरसों तिल ज्वार, जीरा, घी, एवं मादक द्रव्य में तेजी चलेगी।

राशिफल

मेष-	दैन्यम्
वृष-	रोगं
मिथुन-	सुख श्रीः
कर्क-	भयम्
सिंह-	स्थान हानिः
कन्या-	द्रव्यनाशः
तुला-	वित्ताप्तिः
वृश्चिक-	कर्मसिद्धिः
धनु-	पापबुद्धिः
मकर-	रोगभयं
कुम्भ-	गमनम् हानिः
मीन-	रिपुनाशः

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ भाद्रपद शुक्लपक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। दि.१२ - २६ सितम्बर
सन् २०२६ ई.। (राष्ट्रीय भाद्रपद २१ - अश्विन ४)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	भाद्रपद शु. तिथि ति. वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
३०	४२	१ शनि.	४	३७	दिन	७	४२	उत्तराफा.	२०	२७	दिन	२	२	शुभ	२८	४५	दिन	५	२१	बव	४	३७	वा	३४	२	उत्पात	१२	१५	२६	२१				५	५१	६	९	४	२५	४	२४	२५	३४	५८	२१	-	६	६	४२	चन्द्र◡दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। महत्तमाख्य शिवव्रतम् १। महावीर जन्म वांचन १। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ४।३७ (दि.७।४२) उ. २०।२७ (दि.२।२) या.। यमघंट योगः २०।२७(दि.२।२)उ.।
३०	३९	२ रवि.	३	२६	दिन	७	१४	हस्त	२१	२०	दिन	२	२४	शुक्ल	२५	३५	दिन	४	६	को	३	२६	ते	३३	२६	मानस	१३	१६	२७	२२	तुला	५२	२४	५	५२	६	८	४	२	४	२५	२३	५५	५८	२३	-	६	७	१५	तुलाराशिः रात्रि २।५० वादने। मु.रवि-उस्सानी ४ हिजरी सन् १४४८। श्रीशंकरदेव तिथि २ (आसाम)। वाराहवतारः ३ (अपराह्ने)। रवि-हस्त सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ २१।२० (दि.२।२४) या.। रवियोगः २१।२० (दि.२।२४)उ.।
३०	३५	३ सोम.	३	२३	दिन	७	१४	चित्रा	२३	२७	दिन	३	१६	ब्रह्म	२३	२०	दिन	३	१३	गर	३	२३	व	३४	१२	मुद्गर	१४	१७	२८	२३				५	५३	६	७	३	३९	४	२६	२२	१८	५८	२५	-	६	७	४९	भद्रा ३४।१२ (रा.७।३४) उ. (पाताले)। हरितालिका व्रतम् (तीज) स्त्रीणां नित्यंकाम्यञ्च। बृहद्गौरी व्रतम् ३। गौरी तृतीया ३ (उड़ीसा)। 'आलिभिर्हरितायस्मात् तस्यात् सा हरितालिका।' चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थ्यां ढेलहिया(क)
३०	३२	४ मंगल	५	१	दिन	७	५४	स्वाती	२६	५४	दिन	४	४०	ऐन्द्र	२२	१०	दिन	२	४६	वि	५	१	बव	३६	१७	ध्वज	१५	१८	२९	२४				५	५४	६	६	३	१६	४	२७	२०	४३	५८	२७	-	७	८	२६	भद्रा ५।१ (दि.७।५४) या.। श्री ऋषि पञ्चमी ५ व्रतम्। जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष)। सरस्वती पूजा (उड़ीसा)। सौभाग्य चतुर्थी (बंगाल)। मध्यान्हे सप्तर्षिपूजनम्। स्वर्णमयी प्रतिमा सप्तवर्षाणि सम्पूज्य ब्राह्मणाय निवेदयेत्।(ख)
३०	२८	५ बुध	७	३३	दिन	८	५५	विशाखा	३१	२५	सायं	६	२८	वैधृति	२१	४८	दिन	२	३७	बा	७	३३	को	३९	२५	धाता	१६	१९	३०	२५	वृश्चिक	१५	१८	५	५४	६	६	२	५३	४	२८	१९	१०	५८	३०	-	७	९	७	वृश्चिकराशि दिवा १२।१ वादने। रक्षा पञ्चमी (बंगाल)। गुरु पञ्चमी (उड़ीसा)। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ ३१।२५ (सा.६।२८) उ.। रवियोगः ३१।२५ (सा.६।२८) उ.। सांवत्सरी पञ्चमी (जैन) विविध महोत्सवः।
३०	२४	६ गुरु	११	१७	दिन	१०	२६	अनुराधा	३६	५५	रात	८	४१	विष्कुम्भ	२२	२०	दिन	२	५१	ते	११	१७	गर	४३	३३	आनन्द	१७	२०	३१	२६				५	५५	६	५	२	३०	४	२९	१७	४०	५८	३२	-	७	९	५२	लोलार्क षष्ठी ६ व्रतम्। पुत्रार्थिनाम काश्यां भदैनी स्थित लोलार्क कुण्डे स्नानम् विधेयम्। स्वामी कार्तिकेयदर्शनेन (अद्य) ब्रह्महत्यादि पापैस्तुमुच्यते। सूर्याय अर्घ्यम्। ललिता षष्ठी (गुजरे प्रसिद्धम्)। स्कन्द षष्ठी ६। विश्वकर्मा(ग)
३०	२१	७ शुक्र	१५	४९	दिन	१२	१६	ज्येष्ठा	४३	४	रात	११	१०	प्रीति	२३	२३	दिन	३	१७	व	१५	४९	वि	४८	२१	चर	१८	२१	१	२७	धनु	४३	४	५	५६	६	४	२	७	५	०	१६	१२	५८	३४	-	८	१०	४२	धनुराशिः रात्रि ११।१० वादने। भद्रा १५।४९ (दि.१२।१६) उ. ४८।२१ (रा.१।१६) या. (स्वर्ग-पाताले)। मुक्ता भरण सप्तमी ७। सन्तान पूजा ७। अपराजिता पूजा ७। फल सप्तमी ७। ललिता सप्तमी ७ (बंगाल-उड़ीसा)।(घ)
३०	१७	८ शनि.	२०	५२	दिन	२	१८	मूल	४९	३५	रात	१	४७	आयुष्मान	२४	४७	दिन	३	५२	बव	२०	५२	बा	५३	२७	गद	१९	२२	२	२८				५	५७	६	३	१	४३	५	१	१४	४६	५८	३६	-	८	११	३५	श्रीराधाष्टमी ८ व्रतम् राधारानी महाभिषेकं (वृन्दावन)। काश्यां लक्ष्मी कुण्डे स्नानम् महालक्ष्मी व्रत पूजन काश्यां सोरहिया मेला च प्रारम्भः। षोडष (१६) दिनानि यावत्। मूले ज्येष्ठा देवी विसर्जनम्।
३०	१३	९ रवि.	२६	२	दिन	४	२२	पूर्वाषा.	५६	१	रात	४	२१	सौभाग्य	२६	१६	दिन	४	२७	को	२६	२	ते	५८	२५	शुभ	२०	२३	३	२९				५	५७	६	३	१	२०	५	२	१३	२२	५८	३८	-	८	१२	३०	महारविवार व्रतम्। श्रीचन्द्र नवमी ९ श्रीचन्द्र जयन्ती। नन्दा नवमी ९। अदुःख नवमी ९। तल नवमी (बंगाल-उड़ीसा)। पश्चिम दिशायाम् बुधोदयः। सर्वार्थसिद्धियोगः ५६।१ (रा.४।२१) उ.। रवियोगः यावद्दिनम्।
३०	१०	१० सोम.	३०	४९	सायं	६	१८	उत्तराषा.	६०	०	स	म	स्त	शोभन	२७	२९	दिन	४	५८	गर	३०	४९	व	६०	०	मृत्यु	२१	२४	४	३०	मकर	१२	२९	५	५८	६	२	०	५७	५	३	११	५६	५८	४१	-	९	१	२६	मकरराशिः दिवा १०।५८ वादने। दशावतार १० व्रतम्। रवियोगः यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३०।४९ (सा.६।१८) उ.। उ.फा. ३ चरणे रविः दिवा ९।१० वादने।
३०	६	११ मंगल	३४	५७	रात	७	५८	उत्तराषा.	१	५३	दिन	६	४४	अतिगण्ड	२८	११	दिन	५	१६	व	२	५३	वि	३४	५७	मानस	२२	२५	५	३१				५	५९	६	१	०	३४	५	४	१०	३८	५८	४३	-	९	२	२३	भद्रा २।५३ (दि.७।८) उ. ३४।५७ (रा.७।५८) या. (पाताले)। पद्माएकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। कर्मा एकादशी ११ (बिहार-झारखण्ड)। डोलग्यारस (म.प्र.) ओणम् केरल। जलझूलनी ११। विष्णुश्रृंखल योगः १।५३(दि.६।४४)उ.।
३०	२	१२ बुध.	३८	२	रात	९	१३	श्रवण	६	५८	दिन	८	४७	सुकर्मा	२८	९	दिन	५	१५	बव	६	२९	वा	३८	२	छत्र	२३	२६	६	१	कुम्भ	३८	५८	६	०	६	०	०	१०	५	५	९	२१	५८	४५	-	१०	३	१९	कुम्भराशि रात्रि ९।३५ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। राष्ट्रीय आश्विन मासारम्भः। पारणा एकादशी व्रतस्य दिवा ८।४७ वादनात्परं। श्रावण द्वादशी १२। वामनद्वादशी। वामन जयन्ती १२ मध्यान्हे वामनावतारः।(ङ)
२९	५९	१३ गुरु	४०	५	रात	१०	२	धनिष्ठा	१०	५७	दिन	१०	२३	धृति	२७	१२	दिन	४	५३	को	९	४	ते	४०	५	श्रीवत्स	२४	२७	७	२				६	०	६	०	द०	१२	५	६	८	७	५८	४८	-	१०	४	१५	प्रदोष व्रतम् १३। उ.फा. ४ चरणे रविः सायं ६।५६ वादने। रवियोगः १०।५७ (दि.१०।२३) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १०।५७ (दि.१०।२३) या.।
२९	५५	१४ शुक्र.	४०	४४	रात	१०	१९	शतभिषा	१३	४४	दिन	११	३१	शूल	२५	१७	दिन	४	८	गर	१०	२५	व	४०	४४	सौम्य	२५	२८	८	३	मीन	५९	५६	६	१	५	५९	०	३६	५	७	६	५६	५८	५०	-	१०	५	१२	मीनराशिः रात्रि शेष ५।५९ वादने। भद्रा ४०।४४ (रा.१०।१९) उ. (मर्त्ये)। अनन्त चतुर्दशी १४ व्रतम्। मध्यान्हे अनन्त भगवान पूजनम् कथा श्रवणम् अनन्त धारणम् च। अद्य मृदु भोजन कार्यम्। श्रीशिवपरिवर्तनोत्सवः।(च)
२९	५१	१५ शनि.	४०	५	रात	१०	४	पूर्वाभाद्रपद	१५	१९	दिन	१२	१०	गण्ड	२२	२०	दिन	२	५८	वि	१०	२४	बव	४०	५	कालदण्ड	२६	२९	९	४				६	२	५	५८	०	५९	५	८	५	४६	५८	५२	-	१०	+	+	भद्रा १०।२४ (दि.१०।१२) या.। स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। सन्ध्या पूजा १५। लोकपाल पूजनम्। नान्दी मातामह श्राद्धम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ श.	५	५	१७	२८	२	२६	६	३८	३६	५५	५	७	४७	२८	९६	२	३	२१	२६	४५	१२	०	६	७	११	२६	३६	३२	११	१८	४५	१३	४	१६	१०	४	२२	५०
२ र.	५	१८	२७	३७	२	२६	४३	३३	३६	४८	५	९	२३	३०	९५	५४	३	२१	३८	४५	११	५७	६	७	४७	५८	३४	२१	११	१८	४०	५७	४	१८	१०	४	१९	३९
३ सो.	६	१	२२	१२	२	२७	२०	२१	३६	४२	५	१०	५९	२४	९५	४२	३	२१	५०	४२	११	५५	६	८	२२	१९	३३	२९	११	१८	३६	३९	४	१९	१०	४	१६	२८
४ मं.	६	१४	१	४५	२	२७	५७	३	३६	३६	५	१२	३५	६	९५	२९	३	२२	२	३७	११	५२	६	८	५५	४८	३२	४०	११	१८	३२	२०	४	२१	१०	४	१३	१७
५ बु.	६	२६	२७	९	२	२८	३३	३९	३६	३२	५	१४	१०	३५	९५	५	३	२२	१४	२९	११	४९	६	९	२८	२८	३१	५५	११	१८	२७	५९	४	२२	१०	४	१०	६
६ गु.	७	८	४१	१५	२	२९	१०	११	३६	२७	५	१५	४५	४०	९४	५५	३	२२	२६	१८	११	४८	६	१०	०	२३	३०	१८	११	१८	२३	३७	४	२४	१०	४	६	५५
७ शु.	७	२०	४९	३९	२	२९	४६	३८	३६	२२	५	१७	२०	३५	९४	२५	३	२२	३८	६	११	४५	६	१०	३०	४१	२८	५६	११	१८	१९	१३	४	२५	१०	४	३	४४
८ श.	८	३	३	११	३	०	२३	०	३६	१८	५	१८	५५	०	९४	१२	३	२२	४९	५१	११	४१	६	१०	५९	३७	२७	०	११	१८	१४	४८	४	२७	१०	४	०	३३
९ र.	८	१५	५	३०	३	०	५९	१८	३६	१२	५	२०	२९	१२	९३	३०	३	२३	१	३२	११	३८	६	११	२६	२७	२६	३५	११	१८	१०	२१	४	२८	१०	३	५७	२२
१० सो.	८	२७	१५	२८	३	१	३५	३०	३६	५	५	२२	२	४२	९३	६	३	२३	१३	१०	११	३५	६	११	५३	१२	२४	३२	११	१८	५	५३	४	३०	१०	३	५४	११
११ मं.	९	९	२५	३३	३	२	११	३५	३५	५८	५	२३	३५	४८	९३	०	३	२३	२४	४५	११	३१	६	१२	१७	४४	२२	२७	११	१८	१	२३	४	३१	१०	३	५१	०
१२ बु.	९	२१	४५	१८	३	२	४७	३३	३५	५१	५	२५	८	४८	९२	४९	३	२३	३६	१६	११	२८	६	१२	४०	११	२०	३२	११	१७	५६	५२	४	३२	१०	३	४७	४९
१३ गु.	१०	४	१७	२६	३	३	२३	२४	३५	४४	५	२६	४१	३७	९२	२५	३	२३	४७	४४	११	२३	६	१३	०	४३	१७	४४	११	१७	५२	२०	४	३४	१०	३	४४	३८
१४ शु.	१०	१७	४	२१	३	३	५९	८	३५	३९	५	२८	१४	२	९२	४	३	२३	५९	७	११	१९	६	१३	१८	२७	१५	२१	११	१७	४७	४६	४	३५	१०	३	४१	२७
१५ श.	११	०	५	३९	३	४	३४	४७	३५	३३	५	२९	४६	६	९१	५६	३	२४	१०	२६	११	१६	६	१३	३३	४८	१३	५०	११	१७	४३	११	४	३५	१०	३	३८	१६

पं.२५ भाद्रपद शु.८ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २५१
अयनांशाः २४/१२/५०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	३	५	३	६	११	१०	४
१	३	०	१८	२२	१०	१८	४	४
१४	३	२३	५५	४९	५९	१४	०	०
४६	११	०	०	५१	३७	४८	३३	३३
५८	८२०	३६	९४	११	२७	४	३	३
३६	५१	१८	१२	४१	०	२७ व	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-पुनर्वसौ मिथुने ७ शुक्रः कर्क राशौ दिवा ३।३० वादने १२ बुधः- पुष्य नक्षत्रे रात्रि ३।३० वादने। बुधः- कन्या राशौ १५ शनिः तुला राशौ दिवा ९।४५ वादने। गुरुः-श्लेषायां (वक्री) रेवत्यां १ चरणे। शुक्रः-तुलाराशौ। राहुः-धनिष्ठा ४ चरणे केतुश्च-मघा २ चरणे।

भाद्रपद शु. दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१श. घं.	मि.	२र. घं.	मि.	३सो घं.	मि.	४मं. घं.	मि.	५बु. घं.	मि.	६गु. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	७शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९र. घं.	मि.	१०सो घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१४शु. घं.	मि.	१५श. घं.	मि.
सिंह	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	कन्या	७	५६	७	५२	७	४८	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५
कन्या	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	तुला	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१
तुला	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	वृश्चिक	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१३	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८
वृश्चिक	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३८	१२	३४	धनु	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३
धनु	२	५८	२	५४	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	मकर	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	१	३	५७	३	५३	३	४९
मकर	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	कुम्भ	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कुम्भ	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	मीन	७	१९	७	१५	७	११	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८
मीन	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२६	७	२३	मेष	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६
मेष	९	२१	९	१७	९	१४	९	१०	९	६	९	२	वृष	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३
वृष	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५९	मिथुन	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७
मिथुन	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	कर्क	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४
कर्क	३	४९	३	४५	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	सिंह	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८

पं.२६ भाद्रपद शु.१५ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २५८
अयनांशाः २४/१२/५१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	३	५	३	६	११	१०	४
८	०	४	२९	२४	१३	१७	३	३
५	५	३४	४६	१०	३३	४३	३८	३८
४६	३९	४७	६	२६	४८	११	१६	१६
५८	७८०	३५	९१	११	१३	४	३	३
५२	२१	३३	५६	१६	५०	३५ व	११	११



(क) चौथ ४ अद्य चन्द्रदर्शन निषिद्धम् चन्द्रास्त (रा.७।४९) वादने। वैनायकी वरद् श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। गणेशोत्सव प्रारम्भः। कपर्दीश्वर ४। चन्द्र पूजा (बिहार)। अद्य चन्द्रदृष्टे सति स्यमन्तकमणेः कथा श्रवणम्। "सिंह प्रसेनबधीत्सिंहो जाम्बवताहतः। सुकुमारक मारोदित्सव ह्येषु स्यमन्तकः" दोष शान्त्यर्थं इति मंत्र जपनीया। मन्वादिः ३।० उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे रविः १८।४२ (दि.१।२२) स्त्री-स्त्री सूर्य-सूर्य योगो मण्डूक वाहनं वह्नि (अग्नि) नाड़ी तदोशो भौमः मेघाडम्बरेण-वायुवेगेन स्वल्प वृष्टिः। (ख) अद्य कर्षण रहित (बिना जोते) भूमि जन्य शाकाहारं भुञ्जते। रवियोगः २६।५४ (दि.४।४०) या.। (ग) पूजा। ७सं.उ.फा. २ चरणे कन्याराशौ रविः ४४।० (रा.११।३१) मु.३० समा समतकरम्। पूर्वाः पराः १६ घटयः पुण्याः। गृहवस्त्रदानम् गोदावर्याम् स्नानम्। शरद् ऋतु आरम्भः। अनुराधायां ज्येष्ठदेव्यां आवाहनम्। सर्वार्थसिद्धियोगश्च ३६।५५ (रा.८।४१) या.। (घ) दूबड़ी सप्तमी ७। महालक्ष्मी व्रत-पूजन-स्थापना आरम्भः (चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टम्यां)। ज्येष्ठायां ज्येष्ठा देव्याः पूजनम्। सौर आश्विन मासारम्भः। (ङ) शाक्र ध्वजोत्थापनम्। दुग्ध त्याग व्रतारम्भः दधि दानम्। श्रीविष्णु परिवर्तनोत्सवः १२। विष्णुश्रृंखल योगः १।५८ (दि.८।४७) या.। (च) कदली व्रतम् १४। गणपति विसर्जनम्। काश्यां रामनगर रामलीला प्रारम्भः। रवियोगः १३।४४ (दि.११।३१) या.।

फलम्- यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन शनिवार नेष्ट फलकारक है। विभिन्न तरह का ज्वर-बुखार फैल सकता है। चन्द्र दर्शन के अनुसार दैनिक उपभोग में आने वाली वस्तुओं का भाव लगभग स्थिर रहेगा। महिलाओं के लिये वर्ष भर का सबसे महत्वपूर्ण एवं पवित्र पर्व हरितालिका तीज १४ सितम्बर सोमवार को होगा। सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सौभाग्य को अक्षुण बनाये रखने तथा कन्याएं भावी जीवन में सुखी दाम्पत्य जीवन की प्राप्ति करने के लिये इस व्रत-पर्व को तपस्या की तरह निर्जल, निराहार रहकर पूर्ण करती है। ढेलहिया चौथ एवं चन्द्रपूजा का मान भी आज ही चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी तिथि में ही होगा। आज के दिन अनजाने में भी चन्द्रमा को देख लेने से दोष लग जाता है एवं कोई न कोई अपयश, कलंक अनावश्यक रूप से लग जाता है। इसकी शान्ति के लिये "सिंह प्रसेन..." मन्त्र का उच्चार श्रीमद्भागवत से स्यमन्तक मणि की कथा सुनकर दोष शान्ति कर लेनी चाहिये। वैनायकी वरद श्री गणेश चतुर्थी का मान भी आज ही १४ सितम्बर को मध्याह्न व्यापिनी चतुर्थी में ही होगा। देशभर में गणेश उत्सव प्रारम्भ हो जायेगा। श्री ऋषिपंचमी व्रत-पर्व १५ सितम्बर मंगलवार को मनाया जायेगा। सप्तऋषियों की स्वर्ण आदि प्रतिमा का पूजनकर सुयोग्य ब्राह्मण को दानकर देने का पुण्य फलदायक विधान है। संतान प्राप्ति की कामना से किया जाने वाला लोलार्क षष्ठी का व्रत एवं पूजन तथा काशी के लोलार्क कुण्ड का स्नान १७ सितम्बर गुरुवार को होगा। आज के दिन स्वामी कार्तिक का दर्शन करने से ब्रह्म हत्या जैसे पापों से मुक्ति मिलती है। १७ सितम्बर गुरुवार को आदि शिल्पी भगवान विश्वकर्मा का पूजन किया जायेगा। १८ सित. शुक्र. से महालक्ष्मी व्रत का पूजन एवं अनुष्ठान प्रारम्भ हो जायेगा। महारविवार का व्रत २० सितम्बर रवि. को किया जायेगा। पद्मा एकादशी व्रत का मान सबके लिये २२ सित. □ मंगलवार को होगा। इसे बिहार झारखण्ड में कर्मा एकादशी, डोल ग्यारस भी कहा जाता है। वामन द्वादशी श्रवण द्वादशी, वामन जयंती २३ सितम्बर बुधवार को होगी। प्रदोष का व्रत २४ सितम्बर गुरुवार को किया जायेगा। अनन्त चतुर्दशी का व्रत पर्व २५ सितम्बर शुक्रवार को मनाया जायेगा। इसमें अनन्त रूपी भगवान विष्णु की पूजा की जायेगी। मीठा पकवान प्रसाद स्वरूप अर्पण कर अनन्त व्रत की कथा सुनी जायेगी तथा भगवान को चढ़ाया हुआ नैवेद्य प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया जायेगा। स्नान दान एवं व्रत सहित पूर्णिमा का मान २६ सितम्बर शनिवार को होगा। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का सूर्य १४ सितम्बर सोमवार को दिन १।२२ बजे से आयेगा। हवा के झोंके के साथ सामान्य वर्षा होगी। कन्या नक्षत्र का सूर्य १७ सितम्बर गुरुवार को रात ११।३१ बजे से आयेगा। इसका फल सामान्यतया शुभफल कारक है।

विविध मुहूर्ताः

तिथि १ शनौ–उत्तराफाल्गुन्यां- हस्त नक्षत्रे कृष्णलस धारणं पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूति स्नानं, विपणि व्यापारः लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ शस्त्रधारणं दस्तकुपत्रहरणं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म (आपरेशन), हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि २ रवौ–हस्त नक्षत्रे इष्टिका निर्माण दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ३ सोमे–दिवा ७।१४ वादनात्पूर्व चित्रायां–जातकर्म अन्नप्राशनं, विपणि व्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि ४ भौमे–रिक्ता भद्रा दिवा ७।५४ वादनात्परं स्वात्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्रधारणं दस्तकुपत्रहरणं शल्यकर्म (आपरेशन), पश्चिम दिग् यात्रा तिथि ५ बुधे–विशाखायां गवां क्रय-विक्रयः नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं, धान्यरोपणं वृक्षारोपणं शस्त्रधारणं नूतनवध्वा पाककर्म सायं ६।२८ वादनात्परं अनुराधायां गर्भाधानं जातकर्म अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः वाहनक्रयः नववस्त्रधारणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ६ गुरौ–अनुराधायां गर्भाधान, प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन (सप्तम्यां) नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः वाहनक्रयः नववस्त्र धारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं कण मर्दनं धान्यस्थापनं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं, शल्यकर्म (आपरेशन) भूमिक्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ७ शुक्रे–भद्रा दिवा १२।१६ वादनात्पूर्व ज्येष्ठायां–नामकरणं गवां क्रय विक्रयः कणमर्दनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं मुकदमा कार्यं नूतनवध्वा पाककर्म। तिथि ८ शनौ–मूले शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरण। तिथि ९ रवौ–पूर्वाषाढ़ायाम् रोग विमुक्तं स्नानं रित्ता दिवा ४।२२ वादनात्परं पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जलयन्त्र कर्म मुकदमाकार्यं इष्टिका दहनं पूर्व दिग् यात्रा। तिथि १० सोमे–उत्तराषाढ़ायाम् गर्भाधानं रात्रौ लग्नं २ वा ३ जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणि व्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं हलप्रवहणं चूल्ही स्थापनं, वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं नूतनवध्वा पाककर्म औषधि निर्माणं सेवनं दिवा १०।५८ वादनात्परं दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ११ भौमे–भद्रा दिवा ७।८ वादनात्पूर्व उ.षा.श्रवणे पुंसवनं सीमन्त प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं शल्यकर्म (आपरेशन) श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि १२ बुधे–श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं धनिष्ठायां नामकरणं अन्नप्राशनं गवां क्रय विक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं गर्भाधानं रात्रौ, आवेदन पत्र लेखनं औषधि सेवन। तिथि १३ गुरौ–धनिष्ठायां प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः गवां क्रय विक्रयः नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं आवेदन पत्र लेखनं दिवा १०।२३ वादनात्परं शतभिषायां नामकरणं अन्नप्राशनं दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि १४ शुक्रे–शतभिषायां तिथि १५ शनौ–भद्रा दिवा १०।१२ वादनात्परं पूर्वाभाद्रपदे इष्टिका दहनं शस्त्र घटनं दिवा १२।१० वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे कृष्ण वस्त्र धारणं, उत्तर दिग् यात्रा।

राशिफल

मेष-	भयं
वृष-	शत्रुपीड़ा
मिथुन-	पुत्रहानिः
कर्क-	धनागमः
सिंह-	अर्थागमः
कन्या-	धनागमः
तुला-	सुखं
वृश्चिक-	लाभः
धनु-	दुःखं
मकर-	धर्मोपचारः
कुम्भ-	सुखलाभः
मीन-	कष्टं

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ आश्विन कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः शरद् ऋतुः।
दि.२७ सितम्बर - १० अक्टूबर सन् २०२६ ई. (रा.आश्विन ५ - १८)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	आश्विन कृ. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. द- अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
२९	४८	१	रवि.	३८	१५	रात	९	२०	उत्तराभाद्र	१५	३९	दिन	१२	१८	वृद्धि	१८	२४	दिन	१	२४	बा	९	१०	कौ	३८	१५	स्थिर	२७	१	१०	५				६	२	५	५८	१	२२	५	९	४	३८	५८	५५	-	११	६	४	फसली आश्विनमासारम्भः। फसली नववर्ष १४३४ प्रारम्भः। पितृपक्षारम्भः। प्रतिपद श्राद्धम्। महालयारम्भः। क्षमा वाणी (जैन)। दुग्धमाश्विन्यां त्यजत्। ⦿ हस्त नक्षत्रे रविः५७।० (रा.४।५०)। स्वा-पु.(क)
२९	४४	२	सोम.	३५	१८	रात	८	१०	रेवती	१४	४८	दिन	११	५८	ध्रुव	१३	३३	दिन	११	२८	तै	६	४७	गर	३५	१८	मातंग	२८	२	११	६	मेष	१४	४८	६	३	५	५७	१	४६	५	१०	३	३३	५८	५७	-	११	६	४१	मेषराशिः दिवा ११।५८ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। द्वितीया श्राद्धम्। अशून्यशयन व्रतम् २। चन्द्रोदय (रा.६।४१) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्।
२९	४०	३	मंगल	३१	२५	सायं	६	३८	अश्विनी	१२	५९	दिन	११	१६	व्याघात	७	५९	दिन	९	१२	व	३	२१	वि/बव	३१/५९	२५/२	अमृत	२९	३	१२	७				६	४	५	५६	२	९	५	११	२	३०	५८	५९	-	१२	७	२२	भद्रा ३।२१ (दि.७।२४) उ. ३१।२५ (सा.६।३८) या. (स्वर्ग)। तृतीया श्राद्धम्। भरणी श्राद्धम्। भरणी पितृपक्षेतु महती परिकीर्तिता। अस्यां श्राद्ध कृतं तेन स गया श्राद्ध कृत् भवेत्। अंगारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी(ख)
२९	३६	४	बुध.	२६	३९	दिन	४	४५	भरणी	१०	१८	दिन	१०	१२	हर्षण/वज्र	१/५३	३३/४	प्रातः	६/३	४२/५८	बा	२६	३९	कौ	५३	५८	काण	३०	४	१३	८	वृष	२४	२८	६	५	५	५५	२	३३	५	१२	१	२९	५९	२	-	१२	८	१०	वृषराशिः दिवा ३।५२ वादने। चतुर्थी श्राद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः १०।१८ (दि.१०।१२) उ.। (ग) नन्दासिद्धयोगः १५।२८ (दि.१२।१७) या.। यमघंट योगः ३।८ (प्रातः ७।२१) या.।
२९	३३	५	गुरु	२१	१७	दिन	२	३६	कृत्तिका	६	५७	दिन	८	५२	सिद्धि	४७	१३	रात	१२	५८	तै	२१	१७	गर	४८	२२	लुम्बक	१	५	१४	९				६	५	५	५५	२	५६	५	१३	०	३१	५९	४	-	१३	९	४	पञ्चमी श्राद्धम्। चन्द्रषष्ठी ६ व्रतं (चन्द्रोदय व्यापिन्यां) चन्द्रोदय (रा.९।४) वादने। गुरौ-पूर्णासिद्धयोगः २१।१७ (दि.२।३६) या.। यमघंट योगः ६।५७ (दि.८।५२) या.। हस्त नक्षत्रे २ चरणे रविः दिवा २।१० वादने।
२९	२९	६	शुक्र.	१५	२८	दिन	१२	१७	रोहिणी/मृगशिरा	१/५०	८/५०	प्रातः	७/५	२१/४१	व्यतिपात	३९	३४	रात	९	५६	व	१५	२८	वि	४२	२८	मित्र	२	६	१५	१०	मिथुन	२९	२९	६	६	५	५४	३	१९	५	१३	५९	३६	५९	६	-	१३	१०	६	मिथुनराशिः सायं ५।५४ वादने। भद्रा १५।२८ (दि.१२।१७) उ. ४२।२८ (रा.११।५) या. (स्वर्ग)। गान्धी–शास्त्री जयन्ती। षष्ठी श्राद्धम् - सप्तमी श्राद्धमऽपि अद्यैव। रवियोगः ३।८ (प्रातः ७।२१) उ.। गुरु(ग)
२९	२५	७	शनि.	९	२७	दिन	९	५३	आर्द्रा	५४	४४	रात	४	०	वरीयान	३१	४७	सायं	६	५०	बव	९	२७	बा	३६	२४	मुद्गर	३	७	१६	११				६	६	५	५४	३	४२	५	१४	५८	४२	५९	९	-	१३	११	११	जीवत्पुत्रिका व्रतम् ८। जीमूतवाहन पूजनम्। अष्टमी श्राद्धम्। गया मध्याष्टमी श्राद्धम्। अन्वष्टका श्राद्धम्। महालक्ष्मी पूजन व्रत-अनुष्ठान, काश्यां लक्ष्मी कुण्डे स्नान-दर्शन पूजनं, सोरहिया मेला समाप्तिः।(घ)
२९	२२	८/९	रवि.	१/५३	२१/८	प्रातः	७/८	२७/८	पुनर्वसु	५०	३९	रात	२	२३	परिघ	२४	४	दिन	३	४४	कौ	३	२१	तै/गर	२८/५४	४३/५	ध्वज	४	८	१७	१२	कर्क	३६	४०	६	७	५	५३	४	६	५	१५	५७	५१	५९	११	-	१४	१२	१८	कर्कराशिः रात्रि ८।४७ वादने। पारणा जीवत्पुत्रिका व्रतस्य प्रातः ७।२७ वादनात्परं। मातृनवमी श्राद्धम् ९। सौभाग्यवती स्त्रीणामऽपि अद्यैव श्राद्धम्। हस्त नक्षत्रे ३ चरणे रविः रात्रि ११।१५ वादने। रवि-पुष्य सर्वार्थसिद्धियोगः(ङ)
२९	१८	१०	सोम	५१	५२	रात	२	५३	पुष्य	४६	५४	रात	१२	५४	शिव	१६	३०	दिन	१२	४४	व	२२	५८	वि	५१	५२	धाता	५	९	१८	१३				६	८	५	५२	४	२९	५	१६	५७	२	५९	१३	-	१४	१	२४	भद्रा २२।५८ (दि.३।१९) उ. ५१।५२ (रा.२।५३) या. (मर्त्य)। दशमी श्राद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ४६।५४ (रा.१२।५४) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५१।५२ (रा.२।५३) उ.। (ङ) ५०।३९ (रा.२।२३) उ.।
२९	१४	११	मंगल	४६	५०	रात	१२	५२	श्लेषा	४३	४२	रात	११	३७	सिद्ध	९	१६	दिन	९	५१	बव	१९	२१	बा	४६	५०	आनन्द	६	१०	१९	१४	सिंह	४३	४२	६	८	५	५२	४	५२	५	१७	५६	१५	५९	१६	-	१४	२	२७	सिंहराशिः रात्रि ११।३७ वादने। इन्दिरा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। एकादशी श्राद्धम्। सर्वार्थसिद्धयोगः ४३।४२ (रा.११।३७) या.। (घ) लक्ष्मी व्रतं चाभ्युदिते शशांके। चन्द्रोदय (रा.११।११) वादने।
२९	११	१२	बुध.	४२	३५	रात	११	११	मघा	४१	१६	रात	१०	३९	साध्य/शुभ	:/५३	३२/४०	प्रातः	७/४	११/४२	कौ	१४	४२	तै	४२	३५	चर	७	११	२०	१५				६	९	५	५१	५	१५	५	१८	५५	३१	५९	१८	-	१४	३	२७	द्वादशी श्राद्धम्। साधुर्यति वैष्णवानामऽपि अद्यैव श्राद्धम्। बुधे-भद्रा सिद्धियोगः ४२।३५ (रा.११।११) या.।
२९	७	१३	गुरु	३९	१३	रात	९	५१	पूर्वाफा.	३९	३७	रात	१०	१	शुक्ल	५१	१०	रात	२	३९	गर	१०	५४	व	३९	१३	गद	८	१२	२१	१६	कन्या	५४	२८	६	१०	५	५०	५	३८	५	१९	५४	४९	५९	२०	-	१४	४	२५	कन्याराशिः रात्रि ३।५७ वादने। भद्रा ३९।१३ (रा.९।५१) उ. (मर्त्य-पाताले)। प्रदोष व्रतम् १३। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। त्रयोदशी श्राद्धम्। हस्त नक्षत्रे ४ चरणे रविः दिवा ८।१८ वादने।
२९	३	१४	शुक्र.	३६	५५	रात	८	५७	उत्तराफा.	३९	२	रात	९	४८	ब्रह्म	४६	३७	रात	१२	५०	वि	८	४	श	३६	५५	शुभ	९	१३	२२	१७				६	११	५	४९	६	१	५	२०	५४	९	५९	२३	-	१५	५	२२	भद्रा ८।४ (दि.९।२५) या.। चतुर्दशी श्राद्धम्। शस्त्रादिहतानाम् श्राद्धम्। (च) १२।२० वादने। शनि अमावस ३०। यमघंट योगः ३९।३९ (रा.१०।४) या.। पाप वारान्विते दर्श दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्।
२९	०	३०	शनि	३५	५०	रात	८	३२	हस्त	३९	३९	रात	१०	४	ऐन्द्र	४३	३	रात	११	२५	च	६	२२	ना	३५	५०	मृत्यु	१०	१४	२३	१८				६	१२	५	४८	६	२४	५	२१	५३	३२	५९	२५	-	१५	+	+	स्नानदान श्राद्धादो अमा ३० पुण्यतमा। सर्वपैतृ अमावस्या ३०। महालया ३०। पितृविसर्जनम् ३०। अज्ञाततिथिनामऽपि अद्यैव श्राद्धम्। श्रीमहाविष्णु प्रीत्यर्थ ब्राह्मण भोजनम्। शुक्र वृद्धात्वारम्भ रात्रि(च)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.		स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	र.	११	१३	२१	५	३	५	१०	२०	३५	२६	६	०	१८	२	११	४५	३	२४	२१	४२	११	१४	६	१३	४७	३८	१३	०	११	१७	३८	३६	४	३७	१०	३	३५	६
२	सो.	११	२६	५१	१९	३	५	४५	४६	३५	१८	६	१	४९	४७	११	२२	३	२४	३३	५६	११	९	६	१४	०	३८	१२	४४	११	१७	३३	५९	४	३८	१०	३	३१	५५
३	मं.	०	१०	३३	३९	३	६	२१	४	३५	९	६	३	२१	९	११	०	३	२४	४४	५	११	२	६	१४	१३	३२	१२	२६	११	१७	२९	२१	४	३८	१०	३	२८	४४
४	बु.	०	२४	२५	११	३	६	५६	१३	३५	१	६	४	५२	९	१०	१	३	२४	५५	७	१०	५५	६	१४	२५	४८	११	१९	११	१७	२४	४३	४	४०	१०	३	२५	३३
५	गु.	१	८	२४	४९	३	७	३१	१४	३४	५४	६	६	२२	१०	८५	४३	३	२५	६	२	१०	४६	६	१४	३७	७	७	१	११	१७	२०	३	४	४१	१०	३	२२	२२
६	शु.	१	२२	३०	२१	३	८	६	८	३४	४८	६	७	४७	५३	८०	२५	३	२५	१६	४८	१०	३८	६	१४	४४	८	३व	०	११	१७	१५	२२	४	४२	१०	३	१९	११
७	श.	२	६	४०	४७	३	८	४०	५६	३४	४१	६	९	८	१८	७८	११	३	२५	२७	२६	१०	३३	६	१४	४१	८	५	३८	११	१७	१०	४०	४	४२	१०	३	१६	०
८	र.	२	२०	४८	१४	३	९	१५	३७	३४	३६	६	१०	२६	२९	७५	०	३	२५	३७	५९	१०	२७	६	१४	३५	३०	६	४	११	१७	५	५८	४	४१	१०	३	१२	५०
१०	सो.	३	४	५१	२७	३	९	५०	१३	३४	२८	६	११	४१	२९	७२	२१	३	२५	४८	२६	१०	२०	६	१४	२९	२६	७	३३	११	१७	१	१७	४	४०	१०	३	९	३९
११	मं.	३	१८	४९	८	३	१०	२४	४१	३४	२०	६	१२	५३	५०	७१	३६	३	२५	५८	४६	१०	१३	६	१४	२२	५३	८	१३	११	१६	५६	३७	४	४०	१०	३	६	२८
१२	बु.	४	३	३८	२५	३	१०	५९	१	३४	११	६	१४	५	२६	७०	५६	३	२६	८	५९	१०	९	६	१४	१५	४०	८	४५	११	१६	५१	५७	४	४०	१०	३	३	१७
१३	गु.	४	१७	१८	४६	३	११	३३	१२	३४	४	६	१५	१६	२२	६६	४१	३	२६	१९	८	१०	३	६	१४	६	५५	१०	२५	११	१६	४७	१७	४	३८	१०	३	०	६
१४	शु.	५	१	३१	११	३	१२	७	१६	३३	५	६	१६	२३	३	६३	२७	३	२६	२९	११	९	५८	६	१३	५६	३०	१४	४२	११	१६	४२	३९	४	३८	१०	२	५६	५५
३०	श.	५	१४	४५	५६	३	१२	४१	१२	३३	४५	६	१७	२६	३०	६१	५१	३	२६	३९	९	९	५४	६	१३	४१	४८	१६	३६	११	१६	३८	१	४	३८	१०	२	५३	४४

आश्विन कृष्ण–नवमी तिथि का क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। आश्विन का पहला पक्ष पितरों के लिये आरक्षित है तथा बहुत महत्रपूर्ण है। २७ सितम्बर रविवार से पितृपक्ष प्रारम्भ हो रहा है। और इसमें पितरों का श्राद्ध एवं तर्पण करना हम सनातनियों के लिए प्रथम ही अनिवार्य है। श्राद्ध तर्पण के मन्त्रों से यह सिद्ध होता है कि हम श्राद्ध तर्पण कर अपने पितृगण को तो तृप्त करते ही है इसके साथ ही समस्त गतात्मा जीव-जगत को भी तृप्त करते हैं। पितृ पक्ष में श्राद्ध तो अपने स्वर्गीय पिता की मृत्यु तिथि को अथवा तिथि ज्ञात न होने पर अमावस्या तिथि को करना चाहिये। देव, ऋषि, मनुष्य तर्पण पूरे पक्ष भर करना चाहिये। **देव कार्यादपिसदापितृकार्यविशिष्यते।** अर्थात् देव कार्य से भी महत्वपूर्ण पितृकार्य को माना गया है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी** व्रत का मान २९ सितम्बर मंगलवार को होगा। चन्द्रोदय रात ७।२२ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा: अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी तिथि मे चन्द्रोदय मिलने के कारण विगत १६ दिनो से चला आ रहा **महालक्ष्मी व्रत** का पूजन अनुष्ठान ३ अक्टूबर शनिवार को सम्पन्न हो जायगा। पुत्र के दीर्घायु होने की कामना से **जीवित्पुत्रिका** का अत्यन्त महत्वपूर्ण व्रत मातायें ३ अक्टूबर शनिवार को करेंगी। जीवित्पुत्रिका **व्रत का पारण** ४ अक्टूबर रवि. ☐

पं.२७ आश्विन कृ.८ रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २६६
अयनांशाः २४/१२/५२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	कं.
५	२	३	६	३	६	११	१०	४
१५	२०	९	१०	२५	१४	१७	३	३
५७	४८	१५	२६	३७	३५	५	१२	१२
५१	१४	३७	२१	५९	३०	५८	५०	५०
५९	७५६	३४	७५	१०	६ ४	४ ४१	३	३
११	५५	३६	०	२७	व	व	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-पुष्य नक्षत्रे कर्क राशौ। बुधः-तुला राशौ। गुरु-श्लेषायां कर्क राशौ। शुक्रः-तुला राशौ ति.६ शुक्रतः वक्री। शनिः-(वक्री) रेवत १ चरणे १४ शुक्रतः वक्रगत्या उ.भा. ४ चरणे रात्रि ११।३५ वादने। राहुः-५ गुरुतः धनिष्ठा ३ चरणे। केतुश्च-मघा १ चरणे।

शुद्ध आश्विन कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१र. घं.	मि.	२सो घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु. घं.	मि.	७श. घं.	मि.	८र. घं.	मि.	१०सो घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१४शु. घं.	मि.	३०श. घं.	मि.
कन्या	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०
तुला	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६
वृश्चिक	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३
धनु	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८
मकर	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	२	२	५८	२	५४
कुम्भ	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मीन	६	४४	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	५	६	१	५	५७	५	५३
मेष	८	२२	८	१८	८	१५	८	११	८	७	८	३	८	०	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१
वृष	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८
मिथुन	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२
कर्क	२	५०	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९
सिंह	५	४	५	०	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३

विविध मुहूर्ताः **तिथि १ रवौ**–उत्तराभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माण औषधिसेवन उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि २ सोमे**–रेवत्यां जातकर्म अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः गवां क्रय-विक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं औषधि निर्माणं उत्तर दिग् यात्रा दिवा ११।५८ वादनात्परं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३ भौमे**–भद्रा दिवा ७।२४ वादनात्पूर्व अश्विन्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्रप्रवालरत्न (मूँगा) धारणं, शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं, भद्रा सायं ६।३८ वादनात्परं भरण्यां इष्टिका दहनं। **तिथि ४ बुधे**–रिक्ता दिवा ४।४५ वादनात्परं कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं। **तिथि ५ गुरौ**–कृत्तिकायां धान्यच्छेदन दिवा ८।५२ वादनात्परं रोहिण्यां प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माण पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ६ शुक्रे**–भद्रा दिवा १२।१७ वादनात्पूर्व रोहिण्यां-मृगभे जातकर्म अन्नप्राशनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शस्त्रधारण शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं भूमि क्रयः भद्रा रात्रि ११।५ वादनात्परं गर्भाधानं, दक्षिण दिग् यात्रा यावद्दिनम्। **तिथि ७ शनौ**–आर्द्रायाम् शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ८/९ रवौ**–रिक्ता प्रातः ७।२७ वादनात्पूर्व पुनर्वसौ पुंसवनं सीमन्तः गवां क्रय विक्रयः लालवस्त्रधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं शस्त्रधारणं औषधि सेवनं रात्रि ८।४७ वादनात्परं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १० सोमे**–भद्रा दिवा ३।१९ वादनात्पूर्व पुष्य नक्षत्रे जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं औषधि निर्माणं सेवनं च दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ११ भौमे**–श्लेषायां शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १२ बुधे**–मघायां कणमर्दनं जलयन्त्रकर्म शय्यासनाद्युपभोग। **तिथि १३ गुरौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां प्रसूतिं स्नानं कणमर्दनं जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्य भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १४ शुक्रे**–रिक्ता व्याप्ति तत्परं मासान्तः।

पं.२८ आश्विन कृ.३० शनौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २७२
अयनांशाः २४/१२/५३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
५	५	३	६	३	६	११	१०	४
२१	१४	१२	१७	२६	१३	१६	२	२
५३	४५	४१	२६	३९	४१	३८	५३	५३
३२	५६	११	३०	९	४८	१	४४	४४
५९	७२२	३३	६१	९	१६	४	३	३
२५	५	४५	५१	५४	३६ व	३८ व	११	११



(क) सूर्य-चन्द्र योगौ मूषक वाहनं वह्नि (अग्नि) नाड़ी तदीशो भौमः सुवृष्टियोगः। **पितृपक्षे विशेषः**-आयुः प्रजां धनं वित्तं स्वर्गं मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्यं प्रीता नृणां पितामहाः।। सर्वार्थसिद्धियोगः १५।३९ (दि.१२।१८) या.। यायि (मद्दई) जयद् योगः ३८।१५ (रा.९।२०) या.। **(ख) ४ व्रतम्।** चन्द्रोदये (रा.७।२२) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। भौमाश्विनी-सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ १२।५९ (दि.११।१६) या.। भौमे-जया सिद्धयोगः ३१।२५ (सा.६।३८) या.।

☐ को प्रातः ७।२७ बजे के बाद किया जायेगा। सौभाग्यवती मृतका माताओं का श्राद्ध क्षयवती नवमी तिथि में ४ अक्टूबर रविवार को होगा और इसे ही हम मातृनवमी का श्राद्ध कहते है। **प्रदोष का व्रत** एवं **मासशिवरात्रि** का व्रत दोनो ही ८ अक्टूबर गुरुवार को होगा। **स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित सर्वपैतृ अमावस्या पितृ विसर्जन, महालया** १० अक्टूबर शनिवार को होगा आज के दिन अपने पितरो का श्राद्ध तर्पण कर ब्राह्मणों को चतुर्भुज श्री महाविष्णु का स्वरूप मानते हुए उनको भोजन कराना एवं श्रद्धा पूर्वक दान-दक्षिणा देकर उनको सन्तुष्ट करना, परिवार में सुख शान्ति प्रदान करता है तथा वंश-वृद्धि होती है। हर सनातन धर्मी को इस पुनीत कार्य को अवश्य करना चाहिए। **हस्त नक्षत्र** का सूर्य २७ सितम्बर रविवार को रात ४।५० बजे से आयेगा। इसमें सामान्य से अच्छी वृष्टि होने के योग प्राप्त हो रहे हैं। इस पक्ष में अच्छी वृष्टि होने की संभावना है। हथिया बरसेगी

राशिफल

मेष-	सुखम्
वृष-	अर्थनाश
मिथुन-	रोग
कर्क-	सुख
सिंह-	भयम्
कन्या-	स्थान हानि
तुला-	द्रव्यनाश
वृश्चिक-	विलासिता
धनु-	सौख्यं
मकर-	पापं बुद्धि
कुम्भ-	रोगं
मीन-	गमनम्

श्रीशुंभ संवत् २०८३ शाके १९४८ आश्विन शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः तुलार्कतः याम्य गोलः शरद् ऋतुः दि.११ - २६ अक्टूबर सन् २०२६ ई. (रा.आश्विन १९ - कार्तिक ४)

पश्चिमदिशायाम् शुक्रास्तः १३-१०-२०२६

दि.मा. घ.	प.	आश्विन शु. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. द- अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
२८	५६	१	रवि.	३६	०	रात	८	३७	चित्रा	४१	३१	रात	१०	४९	वैधृति	४०	२८	रात	१०	२४	किं	५	५५	बव	३६	०	पद्म	११	१५	२४	१९	तुला	१०	३५	६	१३	५	४७	६	४७	५	२२	५२	५७	५९	२७	-	१५	५	४७
२८	५२	२	सोम	३७	३१	रात	९	१३	स्वाती	४४	३८	रात	१२	४	विष्कुम्भ	३८	५६	रात	९	४८	बा	६	४५	कौ	३७	३१	छत्र	१२	१६	२५	२०				६	१३	५	४७	७	९	५	२३	५२	२४	५९	३०	-	१५	६	२२
२८	४९	३	मंगल	४०	१०	रात	१०	२८	विशाखा	४८	५२	रात	१	४७	प्रीति	३८	१३	रात	९	३१	तै	८	५१	गर	४०	१०	श्रीवत्स	१३	१७	२६	२१	वृश्चिक	३२	४९	६	१४	५	४६	७	३२	५	२४	५१	५४	५९	३२	-	१६	७	२
२८	४५	४	बुध.	४३	५९	रात	११	५१	अनुराधा	५४	१३	रात	३	५६	आयुष्मान	३८	२७	रात	९	३८	व	१२	५	वि	४३	५९	सौम्य	१४	१८	२७	२२				६	१५	५	४५	७	५४	५	२५	५१	२६	५९	३४	-	१६	७	४६
२८	४२	५	गुरु.	४८	३६	रात	१	४२	ज्येष्ठा	६०	०	स	म	स्त	सौभाग्य	३९	१९	रात	१०	०	बव	१६	१७	बा	४८	३६	कालदण्ड	१५	१९	२८	२३				६	१६	५	४४	८	१७	५	२६	५१	०	५९	३६	-	१७	८	३४
२८	३८	६	शुक्र.	५३	४७	रात	३	४७	ज्येष्ठा	०	१४	प्रातः	६	२२	शोभन	४०	३६	रात	१०	३०	कौ	२१	११	तै	५३	४७	चर	१६	२०	२९	२४	धनु	०	१४	६	१६	५	४४	८	३९	५	२७	५०	३६	५९	३९	-	१७	९	२५
२८	३४	७	शनि	५८	५९	रात	५	५३	मूल	६	४३	दिन	८	५८	अतिगण्ड	४२	२	रात	११	६	गर	२६	२३	व	५८	५९	गद	१७	२१	३०	२५				६	१७	५	४३	९	१	५	२८	५०	१६	५९	४१	-	१७	१०	१९
२८	३१	८	रवि.	६०	०	स	म	स्त	पूर्वाषाढ़ा	१३	११	दिन	११	३४	सुकर्मा	४३	१५	रात	११	३६	वि	३१	२६	बव	६०	०	शुभ	१८	२२	३१	२६	मकर	२९	४२	६	१८	५	४२	९	२३	५	२९	४९	५७	५९	४३	-	१८	११	१५
२८	२७	८	सोम.	३	५४	दिन	७	५३	उत्तराषा.	१९	१४	दिन	२	१	धृति	४४	४	रात	११	५६	बव	३	५४	बा	३६	०	मृत्यु	१९	२३	१	२७				६	१९	५	४१	९	४४	६	०	४९	४०	५९	४५	-	१८	१२	१०
२८	२४	९	मंगल.	८	७	दिन	९	३५	श्रवण	२४	३३	दिन	४	८	शूल	४४	११	रात	१२	०	कौ	८	७	तै	३९	४१	लुम्बक	२०	२४	२	२८	कुम्भ	५६	४१	६	१९	५	४१	१०	७	६	१	४९	२५	५९	४८	-	१८	१	६
२८	२०	१०	बुध.	११	१५	दिन	१०	५०	धनिष्ठा	२८	४८	सायं	५	५१	गण्ड	४३	२५	रात	११	४२	गर	११	१५	व	४२	१८	मित्र	२१	२५	३	२९				६	२०	५	४०	१०	२८	६	२	४९	१४	५९	५०	-	१८	२	१
२८	१७	११	गुरु	१३	२१	दिन	११	४१	शतभिषा	३१	५७	रात	७	८	वृद्धि	४१	४४	रात	११	३	वि	१३	२१	बव	४३	४३	वज्र	२२	२६	४	३०				६	२१	५	३९	१०	४९	६	३	४९	४	५९	५२	-	१८	२	५७
२८	१३	१२	शुक्र.	१४	५	दिन	१२	०	पूर्वाभाद्र.	३३	४७	रात	७	५३	ध्रुव	३९	३	रात	९	५९	बा	१४	५	कौ	४३	४८	ध्वांक्ष	२३	२७	५	१	मीन	१८	२०	६	२२	५	३८	११	११	६	४	४८	५६	५९	५५	-	१८	३	५४
२८	१०	१३	शनि.	१३	३१	दिन	११	४७	उत्तराभाद्र	३४	२३	रात	८	८	व्याघात	३५	२१	रात	८	३०	तै	१३	३१	गर	४२	३८	धूम्र	२४	२८	६	२				६	२३	५	३७	११	३२	६	५	४८	५१	५९	५७	-	१८	४	५४
२८	६	१४	रवि.	११	४५	दिन	११	६	रेवती	३३	४८	रात	७	५५	हर्षण	३०	४२	सायं	६	४१	व	११	४५	वि	४०	२०	प्रवर्धमान	२५	२९	७	३	मेष	३३	४८	६	२४	५	३६	११	५३	६	६	४८	४८	५९	५९	-	१८	५	५७
२८	३	१५	सोम	८	५५	दिन	९	५८	अश्विनी	३२	११	रात	७	१६	वज्र	२५	१२	दिन	४	२९	बव	८	५५	बा	३६	५९	राक्षस	२६	३०	८	४				६	२४	५	३६	१२	१३	६	७	४८	४७	६०	१	-	१८	+	+

तुलाराशिः रात्रि १०।२७ वादने। **शारदीय नवरात्रारम्भः, प्रथमं शैलपुत्री दर्शनम्।** कलशस्थापनं मध्याह्ने अभिजित् मुहूर्त्त दिवा ११।३६ वादनात्परं १२।२४ वादनम् यावत्। **दुर्गा सप्तशती पाठारम्भः, ध्वजारोपणम्।**(क)

चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.१५ जघन्या महर्धताकरम्। सौम्यश्रृंगम् सुभिक्षं। **द्वितीयं ब्रह्मचारिणी देवी दर्शनम्।** 'पट्टोदरं द्वितीयायांकेशसंयम हेतवे।' यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३७।३१ (रा.९।१३) उ. ४४।३८ (रा.१२।४) या.।(ख)

वृश्चिक राशिः ७।२२ वादने। **मु.जमादि-उल-अव्वल ५ हिजरी सन् १४४८। तृतीयं चन्द्रघण्टा देवी दर्शनम्।** 'दर्पणञ्च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा।' सिन्दूर तृतीया ३। **पश्चिम दिशायाम् शुक्रास्तः** रात्रि १२।२०वादने।(ग)

भद्रा १२।५ (दि.११।५) उ. ४३।५९ (रा.११।५१) या. (स्वर्ग)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चतुर्थकं कूष्माण्डा देवी दर्शनम्।** 'मधुपर्क चतुर्थ्यान्तुतिलकं नेत्र मण्डनम्।' रथोत्सव चतुर्थी ४। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो(घ)

उपांग ललिता व्रतम् ५। महाराष्ट्रे प्रसिद्धिम्। गुरौ पूर्णा सिद्धयोगः ४८।३६ (रा.१।४२) या.। **पंचम स्कन्दमातादर्शनम्।** 'पञ्चम्यामङ्गरागञ्च शक्त्यालंकरणानि च।' (ख) यमघंट योगः ४४।३८ (रा.१२।४) उ.।

धनुराशिः प्रातः ६।२२ वादने। **षष्ठं कात्यायनी देवी दर्शनम्।** 'षष्ठ्यांबिल्वतरोबार्धं सायं सन्ध्यासुकारयेत्।' षष्ठ्यां बिल्वाभिमंत्रणम्, **देवी बोधनम्सायंआमंत्रणं अधिवासनं च।** शुक्रे नन्दा सिद्धयोगः ५३।४७ (रा.३।४७)या.।(ङ)

भद्रा ५८।५९ (रात्रि शेष ५।५३) उ. (पाताले)। **सप्तमं कालरात्रि दर्शनम्।** 'सप्तम्यां प्रातरानीया गृहमध्ये प्रपूजयेत्।' मूल नक्षत्र युता सप्तम्यां **पत्रिका प्रवेशनम् (सरस्वत्या आवाहनं), दुर्गापूजा पण्डाल देवी स्थापना।**(च)

मकरराशिः सायं ६।११ वादने। भद्रा ३१।२६ (सायं ६।५२) या.। **महाष्टमी ८ व्रतम्। अष्टमं महागौरी दर्शनम्।** उपोषणमथाष्टम्यामात्मशक्त्याथपूजनम्। महानिशा पूजा अन्नपूर्णा परिक्रमा यावद्दिनम्।☉सं तुला राशौ(छ)

पूजा पण्डाले सन्धि पूजा प्रातः ७।२९ वादनात्परं ८।१७ वादनम् यावत्। **महानवमी व्रतम् ९।** नवम्यामुग्रचण्डायाः पूजां कुर्याद बलिं तथा अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रातः ७।५३ वादनम् यावत्। सर्वार्थाऽमृतसिद्धयोगः १९।२४(ज)

कुम्भराशिः रात्रि ४।५९ वादने। **पंचक (पचखा) आरम्भः। यावन्नवमी होमादिकञ्च्** दिवा ९।३५ वादनम् यावत्। **पारणा नवरात्र व्रतस्य दिवा ९।३५ वादनात् परम्। विजया दशमी १० श्रवण नक्षत्र युता दशमी**(झ)

भद्रा ४२।१८ (रा.११।१५) उ. (मर्त्ये)। रवियोगः २८।४८ (सा. ५।५१) या.। (ग) भौमे जयासिद्धयोगः ४०।१० (रा.१०।२८) या.। रवियोगः ४८।५२ (रा.१।४७) उ.।

भद्रा १३।२१ (दि.११।४१) या.। **पापांकुशा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। काश्यां नाटी ईमली नामक स्थाने भरतमिलापः।** (घ) ५४।१३ (रा.३।५६) या.। रवियोगः ५४।१३ (रा.३।५६) या.।

मीनराशिः दिवा १।४२ वादने। **प्रदोष व्रतम् १२। पद्मनाभ द्वादशी १२।** द्वादश्यामेवदुग्धदानम् द्विदलत्याग व्रतारम्भः। **राष्ट्रीय कार्तिक मासारम्भः।** (ङ) रवियोगः ०।१४ (प्रातः ६।२२) उ.।

☉ **स्वाती नक्षत्रे रविः** ५१।२० (रा.२।५५)। स्त्री-पुं., सूर्य चन्द्र योगो, मेष वाहनं वह्नि (अग्नि) नाड़ी तदीशो भौमः सुवृष्टि योगः। **पश्चिम दिशायाम् बुधास्तः।** शनि रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः १३।३१ (दि.११।४७)उ.।

मेषराशिः रात्रि ७।५५ वादने। **पंचक (पचखा) समाप्ति।** भद्रा ११।४५ (दि.११।६) उ. ४०।२० (रा.१०।३२) या. (मर्त्य-स्वर्ग)। **व्रताय पूर्णिमा १५। शरद् पूर्णिमा-कोजागरी पूर्णिमा १५।** अद्य रात्रौ लक्ष्मी कुबेरादि(ट)

स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। महर्षि बाल्मीकि जयन्ती १५। पराशर जयन्ती १५। कौमुदी महोत्सवः, **रास पूर्णिमा (ब्रजभूमि)।** नवपद ओली समाप्ति (जैन)। कार्तिक स्नान यम नियम संयमारम्भः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा. अ. क. वि.	स्पष्ट मंगल रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट बुध रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट गुरु रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट शुक्र रा. अ. क. वि.	गति वक्री	स्पष्ट शनि रा. अ. क. वि.	गति वक्री	स्पष्ट राहु रा. अ. क. वि.
१ र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२ सो.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३ मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४ बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५ गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६ शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७ श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८ र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८ सो.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९ मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१० बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११ गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२ शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३ श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४ र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५ सो.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पं.२९ आश्विन शु.८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २८० अयनांशाः २४/१२/५४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	३	६	३	६	११	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

८ बु.७शु. के.५ | सू. ६ | ४गु.मं. | ९ चं. | ३ | १० | १२ श. | २ | ११रा. | १

भौमादीनां चारः भौमः-पुष्य नक्षत्र कर्कराशौ ७ शनिः। श्लेषायां दिवा १२।१५ वादने। बुधः- तुला राशौ १२ शुक्रः वक्री। गुरुः- श्लेषा कर्कराशौ। शुक्रः-(वक्री) तुला राशौ। शनिः-(वक्री) उ.भा.४ चरणे। राहुः- धनिष्ठा ३ चरणे। केतुश्च- मघा १ चरणे।

आश्विन कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१र. घं.	मि.	२सो घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु. घं.	मि.	७श. घं.	मि.	८र. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	८सो. घं.	मि.	९मं. घं.	मि.	१०बु. घं.	मि.	११गु. घं.	मि.	१२शु. घं.	मि.	१३श. घं.	मि.	१४र. घं.	मि.	१५सो. घं.	मि.
कन्या	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	तुला	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३
तुला	[illegible]																वृश्चिक	[illegible]															
वृश्चिक	[illegible]																धनु	[illegible]															
धनु	[illegible]																मकर	[illegible]															
मकर	[illegible]																कुम्भ	[illegible]															
कुम्भ	[illegible]																मीन	[illegible]															
रा.																	रा.																
मीन	[illegible]																मेष	[illegible]															
मेष	[illegible]																वृष	[illegible]															
वृष	[illegible]																मिथुन	[illegible]															
मिथुन	[illegible]																कर्क	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६
कर्क	[illegible]	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	सिंह	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०
सिंह	[illegible]	५५	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	कन्या	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ रवौ**–चित्रायां नृत्यगीतवाद्य कलारम्भः, दीक्षाग्रहणं शस्त्रधारणं दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि २ सोमे**–स्वात्यां गर्भाधानं रात्रौ लग्ने ३ आ. प्रसूतिस्नान नामकरणं अन्नप्राशन नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः क्रयविक्रयः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं आवेदन पत्र लेखनं पश्चिम [illegible]। **तिथि ३ भौमे**–विशाखायां इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ४ बुधे**–भद्रा दिवा [illegible] वादनात्पूर्व अनुराधायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ५ गुरौ**–ज्येष्ठायां नामकरणं गवां क्रय [illegible]मर्दनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ शस्त्रधारणं मुकदमा कार्य इष्टिका निर्माणं, शल्यकर्म [illegible]नूतनवध्वा पाककर्म। **तिथि ६ शुक्रे**–प्रातः ६।२२ वादनात्परं मूले नामकरणं हलप्रवहणं [illegible]मर्दनं धान्यरोपणं वृक्षारोपणं जलयन्त्र कर्म मुकदमाकार्य भूमिक्रय पूर्व दिग् यात्रा। [illegible]–मूले पूर्वाषाढ़ायाम् शस्त्र निर्माणं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ८ रवौ**–भद्रा सायं ६।५२ [illegible]षाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं आभूषण निर्माणं धारणं च नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ [illegible]आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ८ सोमे**–रिक्ता दिवा ७।५३ वादनात्पूर्व उत्तराषाढ़ायाम् आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः आभूषण धारणं हलप्रवहण बीजवपनं चूल्हीस्थापन वृक्षारोपण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं नूतन बध्वा पाककर्म औषधि सेवनं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ९ भौमे**–रिक्ता दिवा ९।३५ वादनात्परं श्रवणे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं (धनिष्ठायां) लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारण, शल्यकर्म [illegible] विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १० बुधे**–धनिष्ठायां नामकरणं अन्नप्राशनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः नव[illegible] हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं गर्भाधानं रात्रौ लग्ने ३ औषधि सेवनं, वाहनक्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ गुरौ**–शतभिषायां अन्नप्राशनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः क्रय-विक्रय दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं धान्यरोपण धान्यस्थापनं वृक्षारोपण [illegible] लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन), नूतनबध्वा पाककर्म औषधिसेवनं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ शुक्रे**–पूर्वाभाद्रपदे [illegible] धान्यच्छेदनं धान्यरोपणं चूल्ही स्थापनं जलयंत्रकर्म मुकदमाकार्य भूमिक्रयः रात्रि ७।५३ वादनात्परं उ.भा.-गर्भाधानं [illegible] दिग् यात्रा। **तिथि १३ शनौ**–रिक्ता दिवा ११।४७ वादनात्पूर्व उत्तराभाद्रपदे कृष्णवस्त्रधारणं, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १४** [illegible] **तिथि १५ सोमे**–अश्विन्यां आ.प्रसूति स्नानं अन्नप्राशनं वाहनक्रयः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहण[illegible] हलप्रवहण सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग आवेदनपत्र लेखनं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं।

पं.३० आश्विन शु.१५ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २८८ अयनांशाः २४/१२/५५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	३	६	३	६	११	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

८ | ७ सू. शु.बु. | ६ | ५ के. | ९ | १० | ४गु.मं. | ११ रा. | १ चं. | १२ श. | २

(क) केश संस्कार द्रव्याणि प्रदद्याप्रतिपद्दिने। महाराजा अग्रसेन जयन्ती १। दौहित्र कर्तृक मातामह (नानी) श्राद्धम्।☉चित्रा नक्षत्रे रवि २७।३८ (सा.५।१६)। स्त्री-स्त्री, सूर्य-सूर्य योगो, नागवाहनं, अग्नि नाड़ी, तदीशो भौमः, अल्प वृष्टि योगः। द्विपुष्करयोगः ३६।० (रा.८।३७) उ. ४१।३१ (रा.१०।४९) या.। (च) प्रातः ८।५८ वादनम् यावत्। तुरंगमे (घोड़ा अथवा अश्व) देवी आगमनं फलं छत्र भंग (अनिष्टम्)। रवियोगः ६।४३ (दि.८।५८) या.। (छ) रविः १०।२० (दि.१०।२६)। मु.३० सभा समताकरम्। पूर्वाः पराः १६ घटाः पुण्याः दीप, तिल गोदनदान गोदावर्यां स्नानम्। याम्यगोलः। सर्वार्थसिद्धियोगः १३।११ (दि.११।३४) उ.। (ज) (दि.२।१) उ.। रवियोगः १९।१४ (दि.२।१) उ.। **सौर कार्तिक मासारम्भः।** (झ) प्रशस्ता दशम्यामेव नवरात्र व्रतानाम् पारणा। मन्वादिः ९। शमी पूजनम् १०। अपराजिता पूजा १०। जयन्ती ग्रहणम्। नीलकंठदर्शनम् सीमोल्लंघनम् विजय यात्रा। श्रवणे **सरस्वती विसर्जनम्।** दुर्गाप्रतिमा विसर्जनम्। सम्पूज्य प्रेषणं कुर्यादेवतां शाबरोत्सवैः। राज्ञां पट्टाभिषेकः। **चरणायुध** (मुर्गा) वाहन देवी गमनं फलं अनिष्टकारकं। बौद्धावतारः १०। **जगद्गुरु माधवाचार्य जयन्ती १०। खत्री दिवसः।** (ट) पूजनम्। अहोरात्रि घृतदीप प्रज्वालितम्। धन ऐश्वर्य प्राप्ति हेतवः। लक्ष्मी पूजा लखी पूजा (बंगाल)। निशीथे वरदा लक्ष्मीः को जागर्तीति भाषिणी। तस्मै वित्तं प्रदास्यामि अक्षैः क्रीडां करोतियः। सर्वार्थसिद्धियोगः ३३।४८ (रा.७।५५) उ.।

● की विश्व प्रसिद्ध भरत-मिलाप की रामलीला, काशीराज की गौरवपूर्ण उपस्थिति एवं काशी के यादव बंधुओं की परम्परागत सहभागिता के साथ भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न होगी। अस्ताचल गामी सूर्य की सुनहरी किरणों से आलोकित चारों भाइयों के भाव-पूर्ण मिलन के नयनाभिराम दृश्य को देखकर काशीवासी निहाल हो जायेंगे। **प्रदोष का व्रत** २३ अक्टूबर शुक्रवार को किया जायेगा। **व्रत की पूर्णिमा** तथा कोजागरी शरद पूर्णिमा २५ अक्टूबर रविवार को रात्रि व्यापिनी पूर्णिमा मिलने कारण हो जायेगी। आज की रात शरद्कालीन शुद्ध दूध में निर्मित खीर को पूर्ण चन्द्रमा की अमृतोपम चाँदनी में रख दिया जाता है एवं पूर्ण चन्द्र की अमृतवर्षा से सिक्त खीर को प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया जाता है। माना जाता है कि इससे अनेक रोगों के शमन की शक्ति होती है। **स्नान दान की पूर्णिमा एवं महर्षि बाल्मीकि जयन्ती** २६ अक्टूबर सोमवार को मनाई जायेगी। **चित्रा नक्षत्र का सूर्य ११** अक्टूबर रविवार को सायं ५।१६ बजे से आयेगा। **तुला** [illegible] **की सूर्य संक्रान्ति** १८ अक्टूबर रविवार को दिन १०।२६ बजे से आयेगी। **स्वाती नक्षत्र का सूर्य** २४ अक्टूबर शनिवार को रात २।५५ बजे से आयेगा। १३ अक्टूबर के आसपास वर्षा होने की सम्भावना है।

राशिफल

मेष-	शत्रुभयं
वृष-	सुखं श्रीः
मिथुन-	धनहानिः
कर्क-	पीड़ा भयम्
सिंह-	रोगं
कन्या-	सुख प्राप्तिः
तुला-	शोकं
वृश्चिक-	सुखम्
धनु-	पापबुद्धिः
मकर-	दौर्बल्यं
कुम्भ-	लाभः
मीन-	रोगं

फलम्– आश्विन तिथि की वृद्धि हो जाने से यह पक्ष १६ दिन का हो गया है तथा नवरात्र भी दस दिन का होगा। शारदीय नवरात्रारम्भ **११ अक्टूबर रविवार आश्विन शुक्ल प्रतिपदा** के दिन चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग होने के कारण नवरात्र का **कलश स्थापन** मध्याह्न में **अभिजित मुहूर्त** दिन ११।३६ बजे से लेकर १२।२४ बजे के बीच करना चाहिए। [illegible] **२० अक्टूबर** मंगलवार [illegible] **विजयादशमी का पावन पर्व** [illegible] **पापांकुशा एकादशी** व्रत [illegible] आज काशी में **नाटी इमली** ●

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ कार्तिक कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः शरद् ऋतुः। दि.२७ अक्टूबर - ९ नवम्बर सन् २०२६ ई.। (रा.कार्तिक ५ - १८)

पूर्व दिशायाम् शुक्रोदयः दिनाकं २८-१०-२०२६

दि.मा. घ.प.	ति. वार	तिथि घ.प.	दि. घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	दि. घं.मि.	योग	घ.प.	दि. घं.मि.	करण	औदायिका योगा	तारीखें अं.फ.सो.रा.	चंद्र राशि प्रवेश	सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	र.क्रा.	स्पष्ट सूर्यः रा.अं.क.वि.	गति	रे.अं.	चन्द्रोदय घं.मि.	विवरण
२७५९	१ मंगल	५ ४	दिन ८ २७	भरणी	२९ ४५	सायं ६ १९	सिद्धि	१९ १	दिन २ २	को ५ ४ तै ३२ ४४	मुसल	२७ १ ९ ५	वृष ४३ ५७	६ २५	५ ३५	१२ ३४	६ ८ ४८ ४८	६० ३	-	१८ ६ २	वृषराशिः रात्रि १२।० वादने। फसली कार्तिक मासारम्भः। आकाशदीपारम्भः। धर्मशास्त्रायुर्वेद मतेन द्विदल (दाल) तक्रश्च (मट्ठा) कार्तिकेत्यजेत्। अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.६।२) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्।(क)
२७५६	३ बुध.	५६	प्रातः	कृत्तिका	२६ ३३	सायं ५ २	व्यतिपात	१२ ११	दिन ११ १८	गर ० २५	सिद्धि	२८ २ १० ६		६ २५	५ ३५	१२ ५४	६ ९ ४८ ५१	६० ५	-	१८ ६ ५६	भद्रा २७।३३ (सा.५।२६) उ. ५४।४२ (रा.४।२८) या. (स्वर्ग)। पूर्व दिशायाम् शुक्रोदय दिवा ७।३५ वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ०।२५ (प्रातः ६।३५) या.।
२७५३	४ गुरु.	४९ २४	रात २ ११	रोहिणी	२२ ४८	दिन ३ ३२	वरीयान्	[illegible]	प्रातः	बव २२ ३ बा ४९ २४	उत्पात	२९ ३ ११ ७	मिथुन ५० ४५	६ २५	५ ३५	१३ १४	६ १० ४८ ५६	६० ८	-	१८ ७ ५७	मिथुन राशिः रात्रि २।४३ वादने। संकष्टी श्रीगणेश करक चतुर्थी (करवा चौथ) ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.७।५७) वादने। चन्द्राय अर्घ्यम्। ललिता चतुर्थी ४ व्रतम्। दशरथ पूजा ४।
२७४९	५ शुक्र.	४३ २६	रात ११ ४८	मृगशिरा	१८ ४२	दिन १ ५५	शिव	४९ २३	रात २ ११	को १६ २५ तै ४३ २६	मानस	३० ४ १२ ८		६ २६	५ ३४	१३ ३४	६ ११ ४९ ४	६० १०	-	१८ ९ ३	शुक्र-नन्दा सिद्धयोगः ४३।२६ (रा.११।४८) उ.। (ख) रवियोगः १०।२० (दि.१०।३६) या.। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः १०।२० (दि.१०।३६) या.।
२७४६	६ शनि.	३७ २५	रात ९ २५	आर्द्रा	१४ ३०	दिन १२ १५	सिद्ध	४१ ३२	रात ११ ४	गर १० २६ व ३७ २५	मुद्गर	३१ ५ १३ ९	कर्क ४६ २४	६ २७	५ ३३	१३ ५४	६ १२ ४९ १४	६० १२	-	१८ १० ११	कर्कराशिः रात्रि शेष ५।१ वादने। भद्रा ३७।२५ (रा.९।२५) उ. (स्वर्ग-मर्त्य)। शुक्र बालत्व निवृत्तिः दिवा ७।३५ वादने। दोषसंघविनाशको रवियोगः १४।३० (दि.१२।१५) उ.।
२७४३	७ रवि.	३१ ३४	रात ७ ६	पुनर्वसु	१० २०	दिन १० ३६	साध्य	३३ ५०	रात ८ ०	वि ४ २९ [illegible]	ध्वज	१ ६ १४ १०		६ २८	५ ३२	१४ १३	६ १३ ४९ २६	६० १४	-	१८ ११ १८	भद्रा ४।२९ (दि.८।१६) या.। अहोई अष्टमी ८। (चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टम्यां)। चन्द्रोदय (रा.११।१८) वादने। भानु सप्तमी पर्वः सूर्य ग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। रवि-पुष्य सर्वार्थसिद्धियोगः १०।२० (दि.१०।३६) उ.।(ख)
२७४०	८ सोम	२६ ६	दिन ४ ५४	पुष्य	६ २९	दिन ९ ४	शुभ	२६ २६	सायं ५ ३	को २६ ६ तै ५३ ३६	धाता	२ ७ १५ ११		६ २८	५ ३२	१४ ३३	६ १४ ४९ ४०	६० १६	-	१८ १२ २१	राधाष्टमी ८ व्रतम्। राधा जयन्ती। अरुणोदये मथुरायाम् राधाकुण्डे स्नानम्। कराष्टमी ८। महाराष्ट्र प्रसिद्धः। सर्वार्थसिद्धियोगः ६।२९ (दि.९।४) या.। (घ) कामेश्वरी जयन्ती १३।
२७३६	९ मंगल.	२१ ७	दिन २ ५६	श्लेषा	३ ७	दिन ७ ४४	शुक्ल	१९ २९	दिन २ १५	गर २१ ७ व ४८ ३३	आनन्द	३ ८ १६ १२	सिंह ३ ७	६ २९	५ ३१	१४ ५२	६ १५ ४९ ५६	६० १८	-	१८ १ २१	सिंहराशिः दिवा ७।४४ वादने। भद्रा ४८।३३ (रा.१।५४) उ. (मर्त्य)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३।७ (दि.७।४४) या.। (ग)'गोक्षीर गोघृतं दधि तक्रं च वर्जयेत्।' यायि (मुद्दई) जयद् योगः १३।४१ (दि.११।५८) या.।
२७३३	१० बुध.	१६ ०	दिन १२ ५३	पूर्वाफाल्गुनी	[illegible]	प्रातः	ब्रह्म	१३ ५	दिन ११ ४३	वि १६ ० बव ४४ ५०	चर	४ ९ १७ १३		६ २९	५ ३१	१५ ११	६ १६ ५० १४	६० २०	-	१८ २ १९	भद्रा १६।० (दि.१२।५३) या.।
२७३०	११ गुरु.	१३ ४१	दिन ११ ५८	उत्तराफा.	५७ ४२	रात ५ ३५	ऐन्द्र	७ २४	दिन ९ २८	बा १३ ४१ को ४२ ३४	मातंग	५ १० १८ १४	कन्या १३ ०	६ ३०	५ ३०	१५ २९	६ १७ ५० ३४	६० २२	-	१८ ३ १५	कन्याराशिः दिवा ११।४२ वादने। रम्भा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। रमा ११। गोवत्स द्वादशी १२। (सा प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या)। सवत्सा पयस्विनीगांपूजयेत्। प्रदोषे-सायं काले गोवत्स क्रोडनम् अलंकरणञ्च।(ग)
२७२७	१२ शुक्र.	११ २८	दिन ११ ६	हस्त	५८ ०	रात ५ ४३	वैधृति	[illegible]	प्रातः	तै ११ २८ गर ४० ५८	अमृत	६ ११ १९ १५		६ ३१	५ २९	१५ ४७	६ १८ ५० ५६	६० २४	-	१८ ४ ११	प्रदोष व्रतम् १२। धनत्रयोदशी (धनतेरस) १३। धन्वन्तरि जयन्ती १३। प्रदोषे अपमृत्यु निवारणार्थ गृहात् बहिः तिल तैलस्य दक्षिणभिमुख यमाय दीपदानम्। काश्यां गौतमेश्वर जयन्ती १३। गोत्रिरात्रियमपंचकारम्भः।(घ)
२७२४	१३ शनि.	१० २९	दिन १० ४६	चित्रा	५९ ३७	रात ४ ४७	प्रीति	[illegible]	रात [illegible]	व १० २९ वि ४० ३७	काण	७ १२ २० १६	तुला २८ ४६	६ ३१	५ २९	१६ ५	६ १९ ५१ १८	६० २६	-	१८ ५ ७	तुलाराशिः सायं ६।१ वादने। भद्रा १०।२९ (दि.१०।४६) उ. ४०।३७ (रा.१०।४६) या. (पाताले) ☉ विशाखा नक्षत्रे रविः ८।४० (दि.९।५९)। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। नरक चतुर्दशी १४। श्रीहनुमज्जयन्ती१४।(ङ)
२७२१	१४ रवि.	१० ४६	दिन १० ५०	स्वाती	६० ०	स म स्त	आयुष्मान्	३ ४४	रात ४ २	श १० ४६ च ४० ३६	लुम्बक	८ १३ २१ १७		६ ३२	५ २८	१६ २३	६ २० ५१ ४६	६० २८	-	१८ ६ ४	श्राद्धादौ अमावस्या ३०। प्रातरेव हनुमद्दर्शनम्। प्रदोष-रात्रि व्यापिनी अमावस्यायां दीपावली ३०। सायं शिवादीनां भवनेषु मठेषु देवयतनादौ दीपदानम्। प्रदोषे लक्ष्मी गणेश कुबेरादि पूजनम्। निशीथे महानिशा(च)
२७१८	३० सोम	१२ २५	दिन ११ २०	स्वाती	२ २१	दिन ७ २८	सौभाग्य	५२ ४६	रात ३ ४०	ना १२ २५ किं ४३ ४९	छत्र	९ १४ २२ १८	वृश्चिक ५० १८	६ ३२	५ २८	१६ ४०	६ २१ ५२ १४	६० ३०	-	१८ + +	वृश्चिकराशिः रात्रि २।३९ वादने। स्नानदानादौ अमावस्या ३० पुण्यतमा। महावीर स्वामी निर्वाण दिवसः ३०। अन्नकूट १। काशीतोऽन्यत्र गोवर्धन पूजा। बलि पूजा १। गोक्रीडनम् १। मार्गपाली बन्धनम्।(छ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.अ.क.वि.	स्पष्ट मंगल रा.अ.क.वि.	गति	स्पष्ट बुध रा.अ.क.वि.	गति वक्री	स्पष्ट गुरु रा.अ.क.वि.	गति	स्पष्ट शुक्र रा.अ.क.वि.	गति वक्री	स्पष्ट शनि रा.अ.क.वि.	गति वक्री	स्पष्ट राहु रा.अ.क.वि.
१ मं. – १० श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११ गु.	४ २७ ४० ३६	३ २६ २५ ११	२९ ५	६ १७ २६ ५६	८६ २१	४ ० २० ४४	६ ५४	६ ० ४ ३६	२१ ३३	११ १४ ४८ ५३	३ २६	१० १ ३१ ०
१२ शु.	५ १० ५७ ११	३ २६ ५४ १६	२८ ४९	६ १६ ० ३५	८१ ४६	४ ० २७ ३८	६ ४६	५ २९ ४३ ३	१८ २४	११ १४ ४५ २७	३ २२	१० १ २७ ४९
१३ श.	५ २३ ५९ ४२	३ २७ २३ ५	२८ २९	६ १४ ३८ ४९	७५ १९	४ ० ३४ २४	६ ३९	५ २९ २४ ३९	१६ ३५	११ १४ ४२ ५	३ १७	१० १ २४ ३८
१४ र.	६ ६ ४७ ५	३ २७ ५१ ३४	२८ १३	६ १३ २३ ३०	६० ३८	४ ० ४१ ३	६ ३०	५ २९ ८ ४	१३ ५०	११ १४ ३८ ४८	३ ११	१० १ २१ २७
३० सो.	६ १९ ३५ २७	३ २८ १९ ४७	२८ ३	६ १२ २२ ५२	४२ ३२	४ ० ४७ ३३	६ १५	५ २८ ५४ १४	११ ४२	११ १४ ३५ ३७	३ ६	१० १ १८ १६

पं.३१ कार्तिक कृ.८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २९५ अयनांशाः २४/१२/५६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

८ ७ सू.बु. शु. ६ ५ के. ९ १० गु.४मं. चं. ११ रा. १ ३ १२श. २

भौमादीनां चारः- भौमः-श्लेषायां कर्क राशौ। बुधः-(वक्री) तुलायां। गुरुः-श्लेषायां कर्क राशौ ८ सोमतः मघा नक्षत्रे सिंह राशौ दिवा ९।५५वादने। शुक्रः-(वक्री) तुला राशौ ११ गुरुतः वक्रगत्या कन्याराशौ दि.४।१० वादने। शनिः-(वक्री) उ.भा.४ चरणे। राहुः-धनिष्ठा ३ चरणे। केतुश्च-मघा १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

लग्नानि ति.वा.	१मं. घं.	मि.	२बु. घं.	मि.	४गु. घं.	मि.	५शु. घं.	मि.	६श. घं.	मि.	७र. घं.	मि.	८सो. घं.	मि.	९मं. घं.	मि.	१०बु. घं.	मि.	११गु. घं.	मि.	१२शु. घं.	मि.	१३श. घं.	मि.	१४र. घं.	मि.	३०सो. घं.	मि.
तुला – मेष, वृष	[illegible]																											
मिथुन	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४
कर्क	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	[illegible]	१२	९	१२	५	१२	१
सिंह	३	६	३	२	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५
कन्या	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८

पं.३२ कार्तिक कृ.३० सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३०२ अयनांशाः २४/१२/५७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	५	११	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	१४	१	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५४	३५	१८	१८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४	३७	१६	१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ४२ व	३ ६ व	११	११

शु. ६ ७ बु. ५ के. गु. चं.७ सू.बु. ४ मं. १० ११रा. १ ३ १२श. २

फलम्–तृतीया तिथि का क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। **अशून्य शयन का व्रत चन्द्रोदय** व्यापिनी द्वितीया तिथि में २७ अक्टूबर मंगलवार को किया जायेगा. **चन्द्रोदय रात ६।२ बजे** चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा और इसी के साथ चातुर्मास में किया जाने वाला यह व्रत इस वर्ष के लिए समाप्त हो जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत एवं सौभाग्यवती स्त्रियों में अत्यन्त लोकप्रिय **करवा चौथ का व्रत** २९ अक्टूबर गुरुवार को किया जायेगा। काशी में गणितागत **चन्द्रोदय रात ७।५७** बजे के बाद चन्द्रमा के दर्शन हो जाने पर परम्परागत तरीके से अर्घ्य देकर तथा **करवा चौथ** से सम्बन्धित पूजन कर इसे विधिवत सम्पन्न किया जायेगा। आज ही काशी की अत्यन्त लोकप्रिय **चेतगंज की नक्कटैया** की रामलीला भव्य साज-सज्जा तथा विभिन्न लागों के प्रदर्शन के साथ सम्पन्न होगी। चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी तिथि में **अहोई अष्टमी** का व्रत पर्व १ नवम्बर रविवार को किया जायेगा। **राधाष्टमी एवं राधा जयन्ती** २ नवम्बर सोमवार को मनाई जायेगी। आज मथुरा के राधाकुण्ड मे अरुणोदय के समय स्नान किया जायेगा। **रम्भा एकादशी** का व्रत सबके किए ५ नवम्बर गुरुवार को होगा एवं आज ही प्रदोष काल मे द्वादशी तिथि मिलने के कारण **गोवत्स द्वादशी** का मान भी हो जायेगा। आज के दिन गाय के दूध से बनी किसी खाद्य सामग्री का प्रयोग नही करना चाहिये। **प्रदोष** का व्रत ६ नवम्बर शुक्रवार को किया जायेगा। **धन त्रयोदशी (धनतेरस)** का मान प्रदोषकाल में त्रयोदशी तिथि मिलने के कारण ६नवम्बर शुक्रवार को होगा एवं आज ही **धन्वन्तरि जयन्ती** मनायी जायेगी। धन-ऐश्वर्य में वृद्धि की कामना से विधिवत **महालक्ष्मी पूजन** के लिये सर्वोत्तम प्रदोष ●

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ भौमे–भरण्यां कृत्तिकायां इष्टिकादहनं शस्त्र निर्माणं उग्रकर्माचरणं। तिथि २/३ बुधे–कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं रोहिण्यां भद्रा व्याप्तिः। तिथि ४ गुरौ–रोहिण्यां रिक्ता व्याप्तिः। तिथि ५ शुक्रे–मृगशिरायां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहण आभूषण निर्माण धारणं च हलप्रवहण बीजवपनं धान्यच्छेदनं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोग आवदेनपत्र लेखनं भूमिक्रयः नूतनबध्वा पाककर्म औषधि निर्माणं सेवनं दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ६ शनौ–आर्द्रायाम् शस्त्र निर्माणं उग्रकर्माचरणं दिवा १२।१५ वादनात्परं पुनर्वसौ कृष्ण वस्त्र धारणंदक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ७ रवौ–भद्रा दिवा ८।१६ वादनात्परं पुनर्वसौ पुंसवन सीमन्तः प्रसूतिस्नानं दिवा १०।३६ वादनात्परं पुष्ये वाहनक्रयः विपणिव्यापार दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारण। तिथि ८ सोमे–पुष्ये–जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ सेवारम्भ जलयन्त्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं नूतनवध्वा पाककर्म औषधि निर्माणं सेवनं च पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ९ भौमे–श्लेषायां मघायां शस्त्र निर्माणं उग्रकर्माचरणं। तिथि १० बुधे–भद्रा दिवा १२।५३ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां दीक्षाग्रहणं कर्णमर्दनं जलयन्त्रकर्म मुकदमाकार्य। तिथि ११ गुरौ–उ.फा. पुंसवनं सीमन्तः गर्भाधान रात्रौ लग्नं ३ प्रसूति स्नान जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः वाहनक्रयः हलप्रवहण बीजवपनं वृक्षारोपणं चूल्ही स्थापनं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोग आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं जीर्णादिगृहप्रवेश ल.८ वा ९ नूतनबध्वा पाककर्म पूर्व दिग् यात्रा। तिथि १२ शुक्रे–हस्त नक्षत्रे गर्भाधानं रात्रौ ल.३ आ.प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं (त्रयोदश्यां) विपणिव्यापारः वाहनक्रयः नववस्त्रधारणं दीक्षाग्रहण आभूषण निर्माण धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भ शस्त्रधारण शय्यासनाद्युपभोगं दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं जीर्णादिग्रहप्रवेश ल.८ या ९ दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि १३ शनौ–भद्रा रिक्ता दिवा १०।४६ वादनात्पूर्व चित्रायां नीलमादि रत्नकृष्ण वस्त्रधारणं जीर्णादिगृह प्रवेशः ल.८। तिथि १४रवौ–स्वात्यां रिक्ता व्याप्तिः तत्परं मासान्तः।

(क) अर्घ्य मन्त्र-"गगनांगण संदीप क्षीराब्धिमथनोद्भव। भाभासितादिगाभोगरमानुजनमोऽस्तुते।" सर्वार्थसिद्धियोगः २९।४५ (सा.६।१९) उ.। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः २९।४५ (सा.६।१९) उ.। (ङ) सायंकाले मेष लग्ने हनुमज्जन्म। सायं नरकोद्देशेन चतुर्वति युक्तं दीपदानम् यम तर्पणम्। प्रातः (रात्रिशेषे) साभ्यङ्ग स्नानम्। माष पत्रस्य शाकभोजनम्। चन्द्रोदये तिल तैलेन स्नानम् रोगहरम्। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः १०।२१ (दि.१०।४६) उ.। (च) पूजा, महाकाली पूजा (बंगाल)। शेष रात्रौ दरिद्र निस्सारणम्। गोत्रिरात्रि समाप्तिः। तुला संस्थे सहस्त्रां शो प्रदोषे भूत दर्शयोः। उल्का हस्ता नरा कुर्युः पितृणा मार्गदर्शनम्। (छ)यष्ट्या कर्षणम्। सोमवती अमावस्या ३०। अश्वत्थ मूले प्रणिधाय विष्णुं सम्पूज्य सम्यग्विविधोपचारैः, प्रदक्षिणाभीष्ट फलादि द्रव्यैः स्त्रिर्भिविधेया पति-सौख्य वृद्ध्यैः इति। मंत्रेण अश्वत्थ। पीपल मूलस्य १०८ परिक्रमा कार्या।

●काल में स्थिर **वृष लग्न** सायं ५।४५ से ७।४२ के बीच होगा। **मास शिवरात्रि** व्रत सहित **नरक चतुर्दशी, हनुमत् जयन्ती, छोटी दीपावली** ७ नवम्बर शनिवार को होगी। सायं मेष लग्न में **श्री हनुमान जी** का जन्मोत्सव मनाया जायेगा। दूसरे दिन सूर्योदय से पूर्व ही हनुमान जी का दर्शन-पूजन कर लेना चाहिये। प्रदोष एवं रात्रि व्यापिनी अमावस्या तिथि में **८ नवम्बर** रविवार को सनातन धर्म का विश्व-प्रसिद्ध पर्व **दीपावली** हर्षोल्लास के साथ मनाई जायेगी। **दीपावली पूजन** के लिए ३ मुहूर्त निर्धारित किये जा रहे हैं। १.दिन में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिये स्थिर **कुम्भ लग्न १ बजे से २।३१** बजे तक २.सर्वोत्तम प्रदोष काल में स्थिर **वृषलग्न** ५।३७ से ७।३४ बजे तक ३.महानिशा में तांत्रिक पूजा, मंत्र सिद्धि के लिये स्थिर **सिंह लग्न** १२।५ से २।१९ बजे तक। शेष रात्रि (भोर में) सूप बजाकर दरिद्र का निस्सारण एवं लक्ष्मी का पदार्पण कराया जायेगा। श्राद्ध के लिये **अमावस्या** ८ नवम्बर रविवार को होगी एवं **स्नान दान** सहित **सोमवती अमावस्या** का पर्व-योग ९ नवम्बर को मिल रहा है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ **सोमवती अमावस्या** की परम्परा के अनुसार पूजन करेंगी। **अन्नकूट एवं काशी से अन्यत्र गोवर्धन** पूजा भी ९ नवम्बर सोमवार को होगा। **विशाखा नक्षत्र का सूर्य** ७ नवम्बर शनिवार को दिन ९।५९ बजे से आयेगा। २८ अक्टूबर के आसन्न वर्षा होने के योग मिल रहे हैं।

राशिफल

मेष- गमनम्
वृष- रिपुनाश
मिथुन- दैन्यम्
कर्क- मानताश
सिंह- सुखम्
कन्या- भयम्
तुला- स्थान हानि
वृश्चिक- द्रव्यलाभ
धनु- चिन्ताप्ति
मकर- सौख्य
कुम्भ- पाप वृद्धि
मीन- रोग

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ कार्तिक शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः शरद् ऋतुः। वृश्चिकार्कतः हेमन्त ऋतुः।
दि. १० – २४ नवम्बर सन् २०२६ ई. (रा.कार्तिक १९ - मार्गशीर्ष ३)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्र.द. - अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२७	१५	१	मंगल	१५	१०	दिन	१२	३७	विशाखा	६	१८	दिन	९	४	शोभन	५२	३९	रात	३	३६	बव	१५	१०	बा	४७	८	श्रीवत्स	१०	१५	२३	१९				६	३३	५	२७	१६	५८	६	२२	५२	४४	६०	३२	-	१८	५	४१	चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। **काश्यां गोबर्धनपूजा, भ्रातृ द्वितीया (भइया दूज) २।** भ्रातृस्य भगिनी गृहे, भोजनम् तस्य द्रव्यवस्त्रादिभिसम्मानम्(क)
२७	१२	२	बुध.	१९	६	दिन	२	१२	अनुराधा	११	२०	दिन	११	६	अतिगण्ड	५३	१९	रात	३	५४	को	१९	६	ते	५१	२९	सौम्य	११	१६	२४	२०				६	३४	५	२६	१७	१५	६	२३	५३	१६	६०	३३	-	१८	६	२७	**मु.जमादि उस्सानी ६ हिजरी सन् १४४८।** सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ११।२० (दि.११।६) या.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः १९।६ (दि.२।१२) या.। **(ख)** रवियोगः २३।३७ (दि.४।२)या.।
२७	९	३	गुरु.	२३	५२	दिन	४	७	ज्येष्ठा	१७	१४	दिन	१	२८	सुकर्मा	५४	२४	रात	४	१९	गर	२३	५२	व	५६	२७	कालदण्ड	१२	१७	२५	२१	धनु	१७	१४	६	३४	५	२६	१७	३१	६	२४	५३	५०	६०	३५	-	१८	७	१८	**धनुराशिः** दिवा १।२८ वादने। भद्रा ५६।२७ (रा.शे.५।९) उ. (पाताले)। रवियोगः १७।१४ (दि.१।२८) उ.।
२७	६	४	शुक्र.	२९	३	सायं	६	१२	मूल	२३	३७	दिन	४	२	धृति	५५	४७	रात	४	५४	वि	२९	३	बव	६०	०	स्थिर	१३	१८	२६	२२				६	३५	५	२५	१७	४८	६	२५	५४	२५	६०	३७	-	१८	८	११	भद्रा २९।३ (सा.६।१२) या.। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। नाग नथैय्या** श्रीकृष्ण लीला (तुलसीघाट-काशी)। **सूर्य षष्ठी व्रतारम्भः** दिन त्रयं यावत्। **तत्रैकभुक्तेनभवितव्यम्।(ख)**
२७	३	५	शनि.	३४	२४	रात	८	२१	पूर्वाषाढ़ा	३०	७	रात	६	३८	शूल	५७	५	रात	५	२५	बव	१	४३	बा	३४	२४	मातंग	१४	१९	२७	२३	मकर	४६	४०	६	३५	५	२५	१८	३	६	२६	५५	२	६०	३९	-	१७	९	६	**मकरराशिः** रात्रि १।१५ वादने। सूर्य षष्ठी व्रतस्य द्वितीय दिनम्। ज्ञान पंचमी ५ (जैन)। सौभाग्य ५, लाभ ५, पाण्डव पंचमी ५। **पं.नेहरु जयन्ती बाल दिवसः।** रवियोगः ३०।७(रा.६।३८)उ.।
२७	०	६	रवि.	३९	२२	रात	१०	२१	उत्तराषाढ़ा	३६	१८	रात	९	७	गण्ड	५८	०	रात	५	४८	को	७	५३	ते	३९	२२	अमृत	१५	२०	२८	२४				६	३६	५	२४	१८	१९	६	२७	५५	४१	६०	४१	-	१७	१०	१	**सूर्य षष्ठी (डाला छठ)। प्रतिहार षष्ठी६। स्कन्द षष्ठी ६।** सायंकालीन सूर्यार्घ्यदानम्, अरुणोदये द्वितीयार्घ्यम्। **सूर्यार्घ्य मन्त्रः-**"नमोऽस्तु सूर्याय सहस्रभानवे नमोऽस्तु वैश्वानरजातवेदसे।(ग)
२६	५८	७	सोम	४३	३८	रात	१२	३	श्रवण	४१	५२	रात	११	२१	वृद्धि	५८	१७	रात	५	५६	गर	११	३०	व	४३	३८	सिद्धि	१६	२१	२९	२५				६	३६	५	२४	१८	३४	६	२८	५६	२२	६०	४२	-	१७	१०	५५	भद्रा ४३।३८ (रा.१२।३) उ.(पाताले)। **पारणा सूर्यषष्ठीव्रतस्य प्रातरेव। सहस्त्रार्जुन (सहस्त्रबाहु) जयन्ती ७** (जायसवाल समाज)। कल्पादिः ७। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो४१।५२(रा.११।२१)या.
२६	५५	८	मंगल	४६	४९	रात	१	२१	धनिष्ठा	४६	२५	रात	१	११	ध्रुव	५७	४४	रात	५	४३	वि	१५	१३	बव	४६	४९	उत्पात	१७	२२	३०	२६	कुंभ	१४	८	६	३७	५	२३	१८	५०	६	२९	५७	४	६०	४४	-	१७	११	४९	**कुम्भ राशिः** दिवा १२।१६ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा १५।१३ (दि.१२।४२) या.। **गोपाष्टमी ८।** गवामलंकरणम् पूजनम् तत्प्रदक्षिणा च। अयोध्या-मथुरा परिक्रमा ४६।४९(घ)
२६	५२	९	बुध.	४८	५७	रात	२	१३	शतभिषा	४९	५१	रात	२	३४	व्याघात	५६	२१	रात	५	९	बा	१७	५३	को	४८	५७	मानस	१८	२३	१	२७				६	३८	५	२२	१९	४	७	०	५७	४८	६०	४६	-	१७	१२	४३	**सौर मार्गशीर्ष मासारम्भः। अक्षय नवमी ९ व्रतम्।** रत्न गर्भ कुष्माण्डादिदानम्। धात्री (आँवला) मूले सपरिवार भोजनम्। **कृतयुगादिः ९।** श्री विष्णु त्रिरात्रि आरम्भः। जगद्धात्री(ङ)
२६	५०	१०	गुरु.	४९	४१	रात	२	३०	पूर्वाभाद्र	५२	१	रात	३	२६	हर्षण	५३	५५	रात	४	१२	ते	१९	१९	गर	४९	४१	मुद्गर	१९	२४	२	२८	मीन	३६	२८	६	३८	५	२२	१९	१९	७	१	५८	३४	६०	४७	-	१७	१	३८	**मीनराशिः** रात्रि ९।१३ वादने। रवियोगः ५२।१ (रा.३।२६) या.। गुरौ पूर्णा सिद्धयोगः ४९।४१ (रा.२।३०) या.।
२६	४७	११	शुक्र.	४८	८	रात	१	५४	उत्तराभाद्र	५२	५५	रात	३	४९	वज्र	५०	२९	रात	२	५१	व	१८	५४	वि	४८	८	ध्वज	२०	२५	३	२९				६	३९	५	२१	१९	३३	७	२	५९	२१	६०	४९	-	१६	२	३५	भद्रा १८।५४ (दि.२।१३) उ. ४८।८ (रा.१।५४) या. (मर्त्ये)। **श्रीहरिप्रबोधिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। देवोत्थापनम् प्रबोधनोत्सवः। दिठवन एकादशी ११।** भद्रा दिवा(च)
२६	४५	१२	शनि.	४७	२४	रात	१	३७	रेवती	५२	३७	रात	३	४२	सिद्धि	४६	३	रात	१	४	बव	१७	४६	बा	४७	२४	धाता	२१	२६	४	३०	मेष	५२	३७	६	३९	५	२१	१९	४६	७	४	०	१०	६०	५०	-	१६	३	३६	**मेषराशिः** रात्रि ३।४२ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। **चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः।** मन्वादिः १२। द्विदलदानम्।
२६	४२	१३	रवि.	४४	३२	रात	१२	२९	अश्विनी	५१	१३	रात	३	९	व्यतिपात	४०	४८	रात	१०	५९	को	१५	५८	ते	४४	३२	आनन्द	२२	२७	५	१				६	४०	५	२०	२०	०	७	५	१	०	६०	५२	-	१६	४	४१	**प्रदोष व्रतम् १३। राष्ट्रीय मार्गशीर्ष मासारम्भः।** सर्वार्थसिद्धियोगः ५१।१३ (रा.३।९) या.। (ङ) पूजा (बंगाल) अयोध्या-मथुरा परिक्रमा ४८।५७ (रा.२।१३) या.। रवियोगः यावद्दिनम्।
२६	४०	१४	सोम	४०	४६	रात	१०	५८	भरणी	४९	१	रात	२	१६	वरीयान	३४	४५	रात	८	३४	गर	१२	३९	व	४०	४६	चर	२३	२८	६	२				६	४०	५	२०	२०	१२	७	६	१	५२	६०	५३	-	१६	५	५०	भद्रा ४०।४६ (रा.१०।५८) उ. (स्वर्गे)। **श्रीबैकुण्ठ चतुर्दशी १४।** रात्रौ श्रीमहाविष्णुपूजनम्। अरुणोदये काश्यां मणिकर्णिका स्नानम्। **श्री विश्वेश्वर पूजनम्। नर्मदेश्वराय तुलसी समपर्णम्। उक्तं च-विनाहारं पूजां(छ)**
२६	३८	१५	मंगल	३६	८	रात	९	७	कृत्तिका	४५	५७	रात	१	३	परिघ	२८	४	सायं	५	५४	वि	८	२७	बव	३६	८	गद	२४	२९	७	३	वृष	३	१५	६	४०	५	२०	२०	२५	७	७	२	४५	६०	५५	-	१६	+	+	भद्रा ८।२७ (दि.१०।३) या.। **स्नानदान व्रतादौ कार्तिक पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। गुरु नानक जयन्ती १५।** मन्वादिः १५। सर्वत्रगंगा स्नानम्। **काश्यां देव दीपावली महोत्सवः।** प्रदोषे त्रिपुरोत्सवः। दवालय दीपदानम्(ज)

विवाह मुहूर्त विमर्शः

ति.११ शुक्रे–उत्तराभाद्रपदे शनिपुतिः रेखा ८ भद्रा दिवा २।१३ वादनात्पूर्वं दिवा लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५।। भद्रा रात्रि १।५४ वादनात्परं लग्नं ६ पंचेष्टाभावः वा रात्रि ३।४९ वादनात्परं रेवत्यां रेखा ८ लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.९।।

ति.१२ शनौ–रेवत्यां रेखा ८ दिवा लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५।। (भौ.दा.) वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। तत्परं पंचेष्टाभावः।

ति.१५ भौमे-रात्रि १।३ वादनात्परं रोहिण्यां रेखा ८ लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.९।।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ मं. – १० गु.	[illegible]																																						
११ शु.	११	६	१३	३८	४	३	१९	५६	२५	५०	६	१३	४५	४	५२	३५	४	१	४५	१५	४	२७	५	२९	२	२२	१३	४५	११	१४	६	३०	२	१२	१०	०	४३	१६
१२ श.	११	१९	३७	५२	४	३	४५	४६	२५	२५	६	१४	३७	३९	५९	२५	४	१	४९	४२	४	२०	५	२९	१६	७	१६	३८	११	१४	४	१८	२	१	१०	०	४०	५
१३ र.	०	३	१४	८	४	४	११	११	२५	२	६	१५	३७	४	६६	५३	४	१	५४	२	४	११	५	२९	३२	४५	२०	१०	११	१४	२	१७	२	०	१०	०	३६	५५
१४ सो.	०	१६	०	५५	४	४	३६	१३	२४	३९	६	१६	४३	५७	७२	३३	४	१	५८	१३	४	२	५	२९	५२	५५	२२	५१	११	१४	०	१७	१	५८	१०	०	३३	४४
१५ मं.	०	२९	३१	११	४	५	०	५२	२४	१९	६	१७	५६	३०	८५	४८	४	२	२	१५	३	५२	६	०	१५	४६	२४	४०	११	१३	५८	१९	१	५७	१०	०	३०	३३

फलम्–यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन मंगलवार भयकारक है। आतंकवाद के कारण कुछ क्षति उठानी पड़ सकती है। दैनिक उपभोग में आने वाली वस्तुओं दूध, घी, छेना, पनीर, रिफाइन्ड डालडा इत्यादि का भाव चढ़ने लगेगा। **काशी में गोवर्द्धन पूजा, कलम दवात पूजा** १० नवम्बर मंगलवार को मनाई जायेगी। आज के दिन भाइयों को अपने बहनों के घर जाकर भोजन करना चाहिये तथा वस्त्र, द्रव्य आदि का उपहार देकर उनको स्नेह, सम्मान देना चाहिये। इससे भाइयों के आयुष्य में तथा बहनों के सौभाग्य में वृद्धि होती है। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी** एवं काशी के तुलसी घाट की विश्व-प्रसिद्ध **नाग-नथैया की कृष्ण-लीला** १३ नवम्बर शुक्रवार को होगी। ३ दिन तक चलने वाला सूर्यषष्ठी व्रत का अनुष्ठान १३ नवम्बर शुक्रवार से प्रारम्भ हो जायेगा। वर्ष भर का सबसे लोकप्रिय पर्व **डाला छठ (छठ पूजा)** १५ नवम्बर रविवार को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देकर तथा रातभर की कठिन तप-पूर्ण प्रतीक्षा के बाद पुनः दूसरे दिन उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देकर १६ नवम्बर सोमवार को पारण कर पूर्ण कर लिया जायेगा। यह एक ऐसा व्रत पर्व है जिसमे कोई शास्त्रीय विधान तथा कर्मकाण्डीय विधि नही अपनायी जाती वरन लोक रीति, कुल परम्परा एवं अपार श्रद्धा के समावेशी स्वरूप के साथ इसको सम्पन्न किया जाता है। **गोपाष्टमी** का पर्व १७ नवम्बर मंगलवार को मनाया जायेगा। अयोध्या, मथुरा की परिक्रमा १७,१८ की रात १।२१ बजे से प्रारम्भ हो कर अक्षय नवमी पर्यन्त १८ नवम्बर बुधवार को रात २।१३ बजे तक चलेगी। **अक्षय नवमी** का पुण्य-पवित्र पर्व १८ नवम्बर बुधवार को मनाया जायेगा। आज के दिन आँवला वृक्ष के नीचे स्वादिष्ट पकवान बनाकर ब्राह्मणों को खिलाने तथा भोजन दक्षिणा देकर सपरिवार प्रसाद स्वरूप भोजन ग्रहण करने का पुण्यफलदायक विधान है। **हरि प्रबोधिनी एकादशी** व्रत का मान सबके लिये २० नवम्बर शुक्रवार को होगा। आज के दिन अखिल सृष्टि के पालनहार श्री हरि विष्णु का विधिवत पूजन कर उनको योग-निद्रा से जगाया जायेगा। भद्रा दिन २।१३ बजे के पहले गन्ने का पूजन ● कर उसका सेवन किया जायेगा। **तुलसी शालिग्राम का विवाह-उत्सव** परम्परागत तरीके से मनाया जायेगा तथा इसका क्रम पूर्णिमान्त तक चलता रहेगा। एकादशी तिथि मे अयोध्या की अन्तर्गृही परिक्रमा भी की जायेगी। **प्रदोष का व्रत** २२ नवम्बर रविवार को होगा। **बैकुण्ठ चतुर्दशी** २३ नवम्बर सोमवार को मनायी जायेगी। अरुणोदय समय काशी के मणिकर्णिका कुण्ड का स्नान अत्यन्त पुण्यफलकारी माना जाता है। आज ही के दिन श्री काशी विश्वनाथ का प्रतिष्ठा दिवस भी उत्सव, पूजा श्रृंगार के साथ मनाया जायेगा। वर्ष भर मे केवल आज के ही दिन बाबा विश्वनाथ को तुलसी दल समर्पित किया जाता है। यह हर एवं हरि के एकाकार होने का पर्व है स्नान-दान एवं व्रत सहित **कार्तिक पूर्णिमा २४ नवम्बर** मंगलवार को मनायी जायेगी। आज के दिन गंगा का स्नान अत्यन्त पुण्यफलकारी माना जाता है। त्रिपुरोत्सव मनाया जायेगा। काशी का विश्वविख्यात हो चुका देव-दीपावली का भव्यपर्व काशी के गंगा घाटों सहित सम्पूर्ण काशी नगरी में स्थित देवालयों, सरोवरों पर असंख्य दीप जलाकर एक अलौकिक दृश्य पैदा कर लिया जाता है, जिसकी एक झलक पाने के लिये विश्वभर के सैलानी-पर्यटक काशी मे उमड़ पड़ते है। **गुरु नानक देव** की जयन्ती परम्परा एवं रीति रिवाज के साथ मनायी जायेगी। **वृश्चिक राशि** की सूर्य संक्रान्ति १७ नवम्बर मंगलवार को दिन ७।३३ बजे से आयेगी। **अनुराधा नक्षत्र** का सूर्य २० नवम्बर शुक्रवार को दिन ३।०१ बजे से आयेगा।

पं.३३ कार्तिक शुक्ल ८ भौमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३१०
अयनांशाः २४/१२/५८

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	४	६	४	५	११	१०	४
[illegible]								



भौमादीनां चारः

भौमः-श्लेषायां कर्क राशौ ३ गुरुतः मघायां सिंह राशौ दिवा ४।१०वादने। **बुधः**-(वक्री) तुला राशौ ४ **शुक्रतः मार्गी। गुरुः**-मघायां सिंह राशौ **शुक्रः**-(वक्री) कन्याराशौ ४ **शुक्रतः** मार्गी १४ सोमतः तुला राशौ दिवा २।३० वादने। **शनिः**-(वक्री) उ.भा. ४ चरणे। **राहुः**-धनिष्ठा ३ चरणे **केतुश्च**-मघा १ चरणे।

कार्तिक शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१मं. घं.	मि.	२बु. घं.	मि.	३गु. घं.	मि.	४शु. घं.	मि.	५श. घं.	मि.	६र. घं.	मि.	७सो घं.	मि.	८मं. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	९बु. घं.	मि.	१०गु. घं.	मि.	११शु. घं.	मि.	१२श. घं.	मि.	१३र. घं.	मि.	१४सो घं.	मि.	१५मं. घं.	मि.
तुला	६	४४	६	४०	६	३६	६	३३	६	२९	६	२५	६	२०	६	१६	वृश्चिक	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६
वृश्चिक … मेष	[illegible]																धनु … वृष	[illegible]													
वृष	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५९	मिथुन	९	८	९	४	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५
मिथुन	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	कर्क	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२
कर्क	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	सिंह	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६
सिंह	२	११	२	७	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	कन्या	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९
कन्या	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	तुला	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ भौमे–विशाखायाम् दत्तकपुत्र ग्रहणम् इष्टिका दहनं दिवा ९।४ वादनात्परं अनुराधायां प्रसूति स्नान लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि २ बुधे**–अनुराधायां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहण हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं वृक्षारोपण सेवारम्भ. शय्यासनाद्युपभोगं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३ गुरौ**–ज्येष्ठायां नामकरण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ कणमर्दनं दिवा १।२८ वादनात्परं मूले **जलयंत्रकर्म** मुकदमाकार्य भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ४ शुक्रे**–भद्रा सायं ६।१२ वादनात्परं पूर्वाषाढ़ायाम् आ.प्रसूति स्नानं दीक्षाग्रहणं **जलयंत्रकर्म** मुकदमाकार्य भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ५ शनौ**–पूर्वाषाढ़ायाम् शस्त्र निर्माणं उग्रकर्माचरण सायं ६।३८ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् नीलनदि रत्न कृष्णवस्त्र धारणं **इष्टिका निर्माणं जीर्णादिगृहप्रवेशः** ल. २। **तिथि ६ रवौ**–उत्तराषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं विपणि व्यापारः दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं औषधिसेवनं पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ७ सोमे**–श्रवणे भद्रा रात्रि १२।३ वादनात्पूर्वं गर्भाधान ल.५, अन्नप्राशनं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः क्रय-विक्रय, वाहनक्रयः आभूषण निर्माणं धारण च हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं कणमर्दनं नूतनवध्वा पककर्म दिग् शूल विहायसर्व दिग् गमनं। **तिथि ८ भौमे**–भद्रा दिवा १२।४२ वादनात्परं धनिष्ठायां प्रसूति स्नान लालवस्त्रधारणं, दत्तकपुत्रग्रहणं दिवा १२।१६ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ९ बुधे**–रिक्तायां रोग विमुक्त स्नान। **तिथि१० गुरौ**–पू.भा. पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं दीक्षाग्रहणं धान्यच्छेदनं धान्यस्थापनं, जलयंत्रकर्म मुकदमाकार्य भूमिक्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ शुक्रे**–भद्रा दिवा २।१३ वादनात्पूर्व उ.भा. आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **वरवरणं कन्यावरण, वधूप्रवेश ल.९** विपणिव्यापार वाहनक्रयः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं **चूल्हीस्थापनं** सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं **गृहारम्भ जीर्णादि गृहप्रवेश ल.९**वा भद्रा रात्रि१।५४ वादनात्परं रेवत्यां ल.६ उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १२ शनौ**–रेवत्यां कृष्णवस्त्र धारणं **गृहारम्भ-जीर्णादि-गृहप्रवेशः** ल.८ वा ९ इष्टिका निर्माणं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १३ रवौ**–अश्विन्यां प्रसूति स्नानं, दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र प्रवालरत्नधारणं, शस्त्रधारणं दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १४ सोमे**–भरण्यां रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १५ भौमे**–कृत्तिकायां भद्रा दिवा १०।३ वादनात्परं इष्टिका दहनं, शस्त्र निर्माण उग्रकर्माचरण।

पं.३४ कार्तिक शु.१५ भौमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३१७
अयनांशाः २४/१२/५९

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	४	६	४	६	११	१०	४
[illegible]								



(क) स्नेह वर्धनम्। **चित्रगुप्त पूजा** लेखन्यादि पूजा (दवात पूजा) यमुना स्नानम् यम तर्पणम्, यम पञ्चक निवृत्तिः। **गुर्जर (गुजराती) नूतन नववर्ष २०८३ आरम्भः। (ग)** त्वमेव चार्घ्यं प्रतिगृह्ण, गृहण देवाधिदेवायनमोनमस्ते।" इत्यादिः। सर्वार्थसिद्धियोगः ३६।१८ (रा.९।७) या.। रवियोगः ३६।१८ (रा.९।७) या.। **(घ)** (रा.१।२१) उ.। ⊙**सं.वृश्चिकराशौ रविः** २।२० (दि.१।३३) मु.३० समा समता करम्। पूर्वाः पराः १६ घट्यः पुण्याः दीपवस्त्र गोऽन्नदानं नर्मदा स्नानम्। **हेमन्त ऋतु प्रारम्भः।** भौम-जया सिद्धियोगः ४६।४९ (रा.१।२१) या.। **(च)** २।१३ वादनात्पूर्वं **इक्षुरसपानम्। तुलसी विवाहोत्सवः** पूर्णिमान्तं यावत्। श्रीविष्णुत्रिरात्रि निवृत्तिः। भीष्म पंचकारम्भः। एकादश्यां अयोध्या अन्तर्गृही परिक्रमा। ⊙**अनुराधायां नक्षत्रे रविः** २०।५५ (दि.३।१)। सर्वार्थामृतसिद्धियोगो ५२।५५ (रा.३।४९) उ.। शुक्रे नन्दा सिद्धयोगः ४८।८ (रा.१।५४) या.। **(छ)** तु कुर्याद्रुद्रस्यवार्चनम्। वृषात्स्य भवेतृजासत्येमेतद्व्रतोमम्। **श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिनम् १४। चैमासी चौदस** (जैन)। रवियोगः ४९।१ (रा.२।१६) या.। **(ज)** तद्दर्शनम् च। सायं क्षीरसागरादिदानम्। **रासयात्रा १५।** सायं मत्स्यावतारः१५। कार्तिकेय दर्शनम्। हरिहर क्षेत्रे सोनपुर मेला पुष्कर स्नानम् मेलोत्सवः। भीष्म पञ्चक समाप्तिः। **श्रीमहावीर रथोत्सवः** (जैन)। कार्तिक स्नान-दान-यम-नियम संयम समाप्तिः।

राशिफल

मेष-	पीड़ा भयम्
वृष-	हानिः
मिथुन-	रोग
कर्क-	सुखप्राप्ति
सिंह-	शत्रुता
कन्या-	धननाशः
तुला-	बन्धनम्
वृश्चिक-	धनहानिः
धनु-	अर्थलाभः
मकर-	सुखोत्पत्ति
कुम्भ-	हानिः
मीन-	धनादि लाभ

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः।

दि.२५ नवम्बर - ८ दिसम्बर सन् २०२६ ई. (रा.मार्गशीर्ष ४ - १७)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा.द. अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
२६	३५	१	बुध.	३०	५२	रात	७	२	रोहिणी	४२	२४	रात	११	३९	शिव	२०	४८	दिन	३	०	या	३	३०	कौ	३०	५२	शुभ	२५	१	८	४				६	४१	५	१९	२०	२७	७	८	३	४०	६०	५६	-	१५	५	४०
२६	३३	२	गुरु.	२५	१५	दिन	४	४७	मृगशिरा	३८	१८	रात	१०	०	सिद्ध	१३	१२	दिन	११	५८	गर	२५	१५	व	५२	१७	मृत्यु	२६	२	९	५	मिथुन	१०	२०	६	४१	५	१९	२०	४१	७	९	४	३६	६०	५८	-	१५	६	४६
२६	३१	३	शुक्र.	१९	२०	दिन	२	२६	आर्द्रा	३४	६	रात	८	२०	शुक्ल			प्रातः			वि	१९	२०	बव	४६	२२	पद्म	२७	३	१०	६				६	४२	५	१८	२१	१	७	१०	५	३३	६०	५९	-	१५	७	५७
२६	२९	४	शनि.	१३	२५	दिन	१२	४	पुनर्वसु	२९	५६	रात	६	४०	शुक्ल	४९	४१	रात	२	३४	बा	१३	२५	को	४०	३१	छत्र	२८	४	११	७	कर्क	१५	५८	६	४२	५	१८	२१	१२	७	११	६	३२	६१	०	-	१४	९	७
२६	२७	५	रवि.	७	३८	दिन	९	४६	पुष्य	२६	०	सायं	५	७	ब्रह्म	४२	३	रात	११	३२	तै	७	३८	गर	३५	५६	श्रीवत्स	२९	५	१२	८				६	४३	५	१७	२१	२२	७	१२	७	३२	६१	२	-	१४	१०	१३
२६	२५	६	सोम.			प्रातः			श्लेषा	२२	२८	दिन	३	४२	ऐन्द्र	३४	५५	रात	८	४१	व	२	१५				सौम्य	३०	६	१३	९	सिंह	२२	२८	६	४३	५	१७	२१	३३	७	१३	८	३४	६१	३	-	१४	११	१५
२६	२३	८	मंगल	५३	२१	रात	४	३	मघा	१९	३५	दिन	२	३३	वैधृति	२८	०७	सायं	६	१	बा	२४	१४	कौ	५३	२१	कालदण्ड	१	७	१४	१०				६	४३	५	१७	२१	४२	७	१४	९	३७	६१	४	-	१३	१२	१४
२६	२२	९	बुध	५०	११	रात	२	४८	पूर्वफल्गु.	१७	३४	दिन	१	४६	विष्कुम्भ	२२	२०	दिन	३	४०	तै	२१	४६	गर	५०	११	स्थिर	२	८	१५	११	कन्या	३२	१७	६	४४	५	१६	२१	५२	७	१५	१०	४१	६१	५	-	१३	१	११
२६	२०	१०	गुरु	४८	५	रात	१	५८	उत्तराफा.	१६	२६	दिन	१	१८	प्रीति	१७	१०	दिन	१	३६	व	१९	८	वि	४८	५	मातंग	३	९	१६	१२				६	४४	५	१६	२२	०	७	१६	११	४६	६१	७	-	१३	२	६
२६	१८	११	शुक्र.	४७	१३	रात	१	३७	हस्त	१६	२५	दिन	१	१८	आयुष्मान	१२	५३	दिन	११	५३	बव	१७	३९	बा	४७	१३	अमृत	४	१०	१७	१३	तुला	४७	१	६	४४	५	१६	२२	९	७	१७	१२	५३	६१	८	-	१३	३	२
२६	१७	१२	शनि	४७	३९	रात	१	४९	चित्रा	१७	३७	दिन	१	४०	सौभाग्य	९	३३	दिन	१०	३५	को	१७	२६	तै	४७	३९	काण	५	११	१८	१४				६	४५	५	१५	२२	१७	७	१८	१४	१	६१	९	-	१३	३	५८
२६	१५	१३	रवि	४९	२८	रात	२	३२	स्वाती	२०	६	दिन	२	४७	शोभन	७	१५	दिन	९	३९	गर	१८	३४	व	४९	२८	लुम्बक	६	१२	१९	१५				६	४५	५	१५	२२	२५	७	१९	१५	१०	६१	१०	-	१२	४	५४
२६	१४	१४	सोम	५२	२२	रात	३	४२	विशाखा	२३	५०	दिन	४	१७	अतिगण्ड	६	०	दिन	९	९	वि	२०	५५	श	५२	२२	मित्र	७	१३	२०	१६	वृश्चिक	७	५४	६	४५	५	१५	२२	३२	७	२०	१६	२०	६१	११	-	११	५	५१
२६	१३	३०	मंगल	५६	२७	रात	४	२०	अनुराधा	२८	४०	सायं	६	१३	सुकर्मा	५	३२	दिन	८	५८	च	२४	२४	ना	५६	२७	वज्र	८	१४	२१	१७				६	४५	५	१५	२२	३९	७	३१	१७	३१	६१	११	-	११	+	+

फसली मार्गशीर्ष मासारम्भः। पारणा कार्तिक व्रतस्य। धनधान्य व्रतारम्भः १ धन प्राप्ति हेतवः वर्षपर्यन्तम् (वाराहपुराणानुसारेण)। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः(क)

मिथुनराशिः दिवा १०।४९ वादने। भद्रा ५२।१७ (रा.३।३६) उ. (स्वर्ग)। मृत्युबाणः ५५।४ (रा.४।४३) उ.। (क) ३०।५२ (रा.७।२) उ.।

भद्रा १९।२० (दि.२।२६) या.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्**। चन्द्रोदये (रा.७।५७) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। **सौभाग्य सुन्दरी व्रतम् ३**। सर्वार्थसिद्धियोगः ३४।६ (रा.८।२०)उ.।(ख)

कर्कराशिः दिवा १।५ वादने। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः १३।२५ (दि.१२।४) या.। (ख) मृत्युबाणः ५४।२७ (रा.४।२९) या.।

रवि-पुष्य सर्वार्थसिद्धियोगः २६।० (सा.५।७) या.। रवियोगः २६।० (सा.५।७) उ.। **काश्यां माता अन्नपूर्णेश्वरी** (काशी अन्नपूर्णा) निमित्त षोडष (१६) दिनानि यावत् दर्शन पूजन(ग)

सिंहराशि दिवा ३।४२ वादने। भद्रा २।१५ (प्रातः ७।३७) उ. २८।४१ (सा.६।११) या. (मर्त्य)। काश्यां रामेश्वर तीर्थे **लोटा-भण्टा मलोत्सवः** (परम्परानुसारेण)। रवियोगः २२।२८(दि.३।४२)या.।

श्रीकालभैरवाष्टमी ८ व्रतम्। अद्य श्री भैरव उत्पत्तिः। कालाष्टमी ८। काश्यां काल भैरव–बटुक भैरव–अष्ट भैरव मन्दिरेषु तथा अन्यत्र कालभैरव मन्दिरे दर्शनम् पूजनञ्च(घ)

कन्याराशिः रात्रि ७।३९ वादने। (घ) कुर्यात्। **मनघा व्रतम् ८**। भौमे-जया सिद्धयोगः ५३।२१ (रा.४।३) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ५३।२१ (रा.४।३) या.।

भद्रा १९।८ (दि.२।२३) उ. ४८।५ (रा.१।५८) या. (पाताले)। ⊙ **ज्येष्ठा नक्षत्रे रविः** २८।१४ (सा.६।२)। गुरौ-पूर्णासिद्धयोगः ४८।५ (रा.१।५८) या.।

तुलाराशिः रात्रि १।३२ वादने। **उत्पन्ना एकादशी व्रतम् सर्वेषाम् ११**। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ४७।१३ (रा.१।३७) या.। (ग) आरम्भः (परम्परानुसारेण)।

शुभाशुभे द्वय गुण्यकरः द्विपुष्करयोगः १७।३७ (दि.१।४०) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः १७।३७ (दि.१।४०) उ.। मृत्युबाणः ४६।० (रा.१।९) उ.। (ङ) च प्रजा भयम्।

भद्रा ४९।२८ (रा.२।३२) उ. (पाताले-स्वर्गे)। **प्रदोष व्रतम् १३**। मृत्युबाणः ४४।५० (रा.१२।४१) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २०।६ (दि.२।४७) या.।

वृश्चिकराशिः दिवा ९।५५ वादने। भद्रा २०।५५ (दि.३।७) या.। **मास शिवरात्रि व्रतम् १४**। यमघंटयोगः २३।५० (दि.४।१७) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २३।५० (दि.४।१७) उ.।

स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। भौमवती अमावस्या ३०। अमायाञ्च यदा वारो भवेद् भूमि सुतस्यवे, गंगायाम् यदि लभ्यंत् कोटि सूर्यग्रहे समा। पापवारान्विते दर्शे सुभिक्षं(ङ)

विवाह मुहूर्त विमर्शः

ति.१ बुधे–रोहिण्यां रेखा ८ दिवा लग्नं ... इ.५ ग्र.व.वि.१०।। (भौ.दा.) वा लग्नं गोधूलि वा रात्रौ लग्नं ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। ... इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। वा रात्रि ११।३९ वादनात् मृगशिरायां रेखा ९ लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.११।।

ति.२ गुरौ–मृगशिरायां रेखा ९ दिवा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।। (भौ.दा.) वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।।

ति.६/७ सोमे–भद्रा सायं ६।११ वादनात्परं मघायां भौमयुतिः रेखा ८ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ३ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१८।। वा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ७ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१६।।

ति.८ भौमे–मघायां भौमयुतिः रेखा ८ दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः।

ति.९ बुधे-दिवा १।४६ वादनात्परं उत्तरा... रेखा ७ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ३ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१८।। वा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.११।।

ति.१० गुरौ--उ.फा. रेखा ७ दिवा लग्नं १... इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।। (भौ.दा.) दिवा २।... वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः। भद्रा रात्रि १।... वादनात्परं हस्त नक्षत्रे शनिवेधः।

ति.११ शुक्रे-हस्त नक्षत्रे शनिवेधः। **ति.१२ शनौ**-दिवा १।४० वादनात्परं स्वात्यां रेखा ... लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ३ इष्टाः ... ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.... वा लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४ (सप्त.श.रा.) रात्रि १।९ वादनात्परं मृत्युबाणः।

ति.१३ रवौ- मृत्युबाण दिवा १२।४१ वादनात्... स्वात्यां रेखा ७ दिवा लग्नं १२ पंचेष्टाभावः।

ति.१४ सोमे-दिवा ४।१७ वादनात्परं अनुराधा... रेखा ८ लग्न गोधूलिःरात्रौ लग्नं ३ इष्टाः ... ग्र.व.वि.१०।। वा लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१... **तत्परं मासान्तः।**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	बु.	१	१३	३३	१९	४	५	२५	११	२४	६	६	१९	२२	१८	८६	०	४	२	६	७	३	४१	६	०	४०	२६	२५	८	११	१३	५६	२२	१	४२	१०	०	२७	२२
२	गु.	१	२७	४२	२८	४	५	४९	१७	२३	४५	६	२०	४८	१८	८६	२१	४	२	९	४८	३	२६	६	१	५	३४	२५	५७	११	१३	५४	४०	१	४०	१०	०	२४	११
३	शु.	२	११	५२	३८	४	६	१३	२	२३	१८	६	२२	१४	३९	८६	४५	४	२	१३	१४	३	१५	६	१	३१	३१	२७	१५	११	१३	५३	०	१	२६	१०	०	२१	०
४	श.	२	२६	२	४५	४	६	३६	२०	२२	५०	६	२३	४१	२४	८६	५७	४	२	१६	२९	३	१	६	१	५८	४६	२९	५८	११	१३	५१	३४	१	२०	१०	०	१७	५०
५	र.	३	१०	९	८	४	६	५९	१०	२२	२७	६	२५	८	२१	८७	९	४	२	१९	३०	२	५०	६	२	२८	४४	३०	४६	११	१३	५०	१४	१	१०	१०	०	१४	३९
६	सो	३	२४	११	३५	४	७	२१	३७	२२	५	६	२६	३५	३०	८७	४९	४	२	२२	२०	२	३८	६	२	५९	३०	३२	५१	११	१३	४९	४	१	१	१०	०	११	२८
८	मं.	४	८	६	४८	४	७	४३	४२	२१	४९	६	२८	३	१९	८८	०	४	२	२४	५८	२	२८	६	३	३२	२१	३५	४९	११	१३	४८	३	१	०	१०	०	८	१७
९	बु.	४	२२	५०	९	४	८	५	३१	२१	३०	७	२९	३१	१९	८८	१५	४	२	२७	२६	२	१४	६	४	८	१०	३७	९	११	१३	४७	३	०	५८	१०	०	५	६
१०	गु.	५	६	२४	११	४	८	२७	१	२१	९	७	०	५९	३४	८८	४६	४	२	२९	४०	२	०	६	४	४५	१९	३८	३९	११	१३	४६	५	०	५५	१०	०	१	५५
११	शु.	५	१९	४४	२९	४	८	४८	१०	२०	४५	७	२	२८	२०	८९	१	४	२	३१	४०	१	४४	६	५	२३	५८	३९	५	११	१३	४५	१०	०	५२	९	२९	५८	४४
१२	श.	६	२	५०	१६	४	९	८	५५	२०	२७	७	३	५७	२१	८९	३०	४	२	३३	२४	१	३०	६	६	३	३	३९	३२	११	१३	४४	१८	०	४२	९	२९	५५	३३
१३	र.	६	१५	४०	५	४	९	२९	२२	२०	५	७	५	२६	५१	८९	५६	४	२	३४	५४	१	१५	६	६	४२	३५	४०	१७	११	१३	४३	३६	०	१९	९	२९	५२	२२
१४	सो.	६	२८	१६	२९	४	९	४९	२७	१९	४९	७	६	५६	४७	९०	१२	४	२	३६	९	१	२	६	७	२२	५२	४०	४५	११	१३	४३	१७	०	१५	९	२९	४९	११
३०	मं.	७	१०	३८	५१	४	१०	९	१६	१९	४५	७	८	२६	५९	९०	३३	४	२	३७	११	०	५६	६	८	३	३७	४१	०	११	१३	४३	२	०	१०	९	२९	४६	०

फलम्–सप्तमी तिथि का क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी** व्रत का मान २७ नवम्बर शुक्रवार को होगा। **चन्द्रोदय** रात ७।५७ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी तद्नुसार २९ नवम्बर रविवार से **काशी अन्नपूर्णेश्वरी माता (अन्नपूर्णा जी)** के निमित्त १६ दिन तक चलने वाला व्रत, पूजन, शृंगार का अनुष्ठान प्रारम्भ हो जायेगा। इसमें काशी के समीपस्थ गाँवके किसान धानके फसल की पहली कटाई से धान की बालियों को लाकर माता को समर्पित करते हैं एवं प्रसाद स्वरूप उन्हीं बालियों को वितरित किया जाता है। आगामी फसल में उन्नत पैदावार की कामना से कृषक प्रसाद स्वरूप उन्हीं धान की बालियों को ग्रहण करते है तथा धान के बीज के लिये संचित करते हैं। सामान्य जनता भी उन्हीं धान की बालियों को प्रसाद स्वरुप ग्रहण करती है। मार्गशीर्ष कृष्ण **षष्ठी** ३० नवम्बर सोमवार को काशी के समीप प्रसिद्ध **रामेश्वर तीर्थ** का लोटा-भण्टा मेला लगेगा एवं भगवान राम द्वारा पूजित स्थापित, रामेश्वर महादेव के मन्दिर में श्रद्धालु विधिवत पूजन कर, बाटी-चोखा बनाकर श्रद्धा स्वरूप ग्रहण करने की पुण्य-फलदायक परम्परा का निर्वहन करते हैं। **श्रीकाल भैरवाष्टमी** का प्रसिद्ध व्रत-पर्व १ दिसम्बर मंगलवार को मनाया जायेगा। आज के दिन **श्रीकालभैरव** की जयन्ती मानी गयी है। देश भर में सर्वत्र एवं काशी के कोतवाल तथा सुरक्षा अधिकारी **श्री काल भैरव मन्दिर एवं कमच्छा स्थित बटुक भैरव मन्दिर** सहित काशीके आठों भैरव मन्दिरों में कालाष्टमी ●

पं.३५ मार्गशीर्ष कृष्ण ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३२४ अयनांशाः २४/१३/०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	कं.
७	४	४	६	४	६	११	१०	४
१४	८	७	२८	२	३	१३	०	०
९	६	४३	३	२४	३२	४८	८	८
३७	४८	४२	१९	५८	२१	३	१७	१७
६१	८३९	२१	८८	२	३५	१	३	३
४	५६	४९	०	२८	४९	० व	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-मघायां सिंहराशौ। **बुधः**-तुलाराशौ ९ वुधतः वृश्चिकराशौ दिवा ४।१५ वादने। **गुरुः**-मघायां सिंहराशौ। **शुक्रः**-तुलाराशौ। **शनिः**-(वक्री) उ.भा. ४ चरण। **राहुः**-१० गुरुतः धनिष्टा २ चरणे मकर राशौ। **केतुश्च**-श्लेषा ४ चरणे।

मार्गशीर्ष कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६ सो घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ सो. घं.	मि.	३० मं. घं.	मि.
वृश्चिक	८	२	७	५८	७	५४	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	११
धनु	१०	७	१०	३	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६
मकर	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	१०	११	६	११	२
कुम्भ	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३
मीन	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१३	२	९	२	५	२	१
मेष	४	३०	४	२६	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृष	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६
मिथुन	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	२	७	५८	७	५४	७	५०
कर्क	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७
सिंह	१	१२	१	८	१	५	१	१	१२	५९	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१
कन्या	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४
तुला	५	४१	५	३७	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०

विविध मुहूर्त्ताः- **तिथि १ बुधे**–रोहिण्यां गर्भाधानं जातकर्मः अन्नप्राशनं **वरवरणं कन्या वरणं द्विरागमनं ल.१२** विपणिव्यापारः वाहनक्रयः दीक्षाग्रहणः हलप्रवहण बीजवपनं कणमर्दनं धान्यरोपणं धान्यस्थापन **चूल्हीस्थापनं** वृक्षारोपणः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग, नूतनवध्वापाककर्म, **गृहारम्भः ल.८ वा ११** पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि २ गुरौ**–मृगशिरायां **गर्भाधानं** पुसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं **वर वरणं कन्यावरणं वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.८ वा ११** हलप्रवहणं, नवान्नभक्षणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं धान्यस्थापनं सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन) भूमिक्रयः **गृहारम्भः ल.८वा ११** नूतनवध्वा पाककर्म दिवा १०।४९ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ३ शुक्रे**–आर्द्रायाम् पुनर्वसौ भद्रा रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ शनौ**–रिक्ता दिवा १२।४ वादनात्परं पुनर्वसौ पुष्ये नीलमादि रत्नकृष्ण-वस्त्र धारणं इष्टिका निर्माणं शस्त्रनिर्माण पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ५ रवौ**–पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः नवान्नभक्षण विपणिव्यापारः वाहनक्रयः दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारण जलयन्त्र कर्म शस्त्रधारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६/७ सोमे**–भद्रा प्रातः ७।३७ वादनात्पूर्व श्लेषायां **जलयंत्रकर्म** भद्रा सायं ६।११ वादनात्परं मघायां शय्यासनाद्युपभोगं भूमिक्रयः। **तिथि ८ भौमे**–दिवा २।३३ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां पुंसवन सीमन्त प्रसूति स्नानं इष्टिका दहनं। **तिथि ९ बुधे**–पूर्वाफाल्गुन्यां रिक्तायां रोगविमुक्त स्नानं रिक्तोत्तरे रात्रि २।४८ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां **द्विरागमनं रात्रि शेषे ल.७ जीर्णादिगृहप्रवेश ल.७ वा ८**। **तिथि १० गुरौ**–भद्रा दिवा २।२३ वादनात्पूर्व उत्तराफाल्गुन्यां हस्त भे पुंसवन सीमन्तः प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्या नासिकाच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेश–द्विरागमनं ल.८ वा ११ वा १२, निर्माण व्यापारः दीक्षाग्रहण हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदन कणमर्दन चूल्ही स्थापनं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं नवान्न भक्षणं **जीर्णादिगृहप्रवेश ल.८ वा ११** पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ११ शुक्रे**–हस्त नक्षत्रे आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदन **वधूप्रवेश द्विरागमनं ल.८ वा गोधू.** विपणिव्यापारः वाहनक्रयः दीक्षाग्रहणं आभूषणं निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदन, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं **जीर्णादि-ग्रहप्रवेशः ल.८ वा गोधूलिः** (चित्रायां), औषधि निर्माणं सेवनं च नवान्नभक्षण पूर्व दिग् यात्रा (रात्रि १।३२) या.। **तिथि १२ शनौ**–चित्रायां कृष्ण वस्त्र धारणं **जीर्णादि गृहप्रवेशः ल.८ वा ११** पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ रवौ**–दिवा २।४७ वादनम् यावत् स्वात्यां प्रसूति स्नानं **वरवरण–कन्यावरणं**, विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र धारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदनपत्र लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन) नवान्न भक्षणं। **तिथि १४ सोमे**–भद्रा रिक्ताव्याप्तिः **तत्परं मासान्तः।**

पं.३६ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३३१ अयनांशाः २४/१३/१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	कं.
७	७	४	७	४	६	११	९	३
२१	१०	१०	८	२	८	१३	२९	२९
१७	३८	९	२६	३०	३	४३	४६	४६
३१	५१	१६	५९	११	३७	२	०	०
६१	७४०	१९	९०	०	४१	०	३	३
१२	२०	४५	३३	५६	०	१० व	११	११



● कालभैरव जयन्ती मनायी जायेगी। रात्रि जागरण कर पूजन शृंगार के विशेष अनुष्ठान किये जायेंगे। शास्त्र में कहा गया है कि यदि कोई पाप जीवन में किया गया है तो वह आज के दिन दर्शन मात्र से समाप्त हो जाता है। मनघा व्रत का मान भी आज ही होगा। **उत्पन्ना एकादशी** का व्रत सबके लिए ४ दिसम्बर शुक्रवार को होगा। **प्रदोष का व्रत** ६ दिसम्बर रविवार को किया जायेगा। **मास-शिवरात्रि व्रत** का मान ७ दिसम्बर सोमवार को होगा। स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या **भौमवती अमावस्या** ८ दिसम्बर को है। आज भौमवती अमावस्या में किया गया गंगा स्नान अनेक सूर्य ग्रहण में किये गये स्नान दान के बराबर माना जाता है। **ज्येष्ठा नक्षत्र** का सूर्य ३ दिसम्बर गुरुवार को सायं ६।३ बजे से आवेगा। सोना चाँदी, सरसों, कपड़ा मादक द्रव्य इत्यादि में तेजी आयेगी। मंगलवार की अमावस्या एवं चतुर्ग्रही योग देश काल के लिये भारी पड़ेगा।

राशिफल

मेष- रोगभयं	तुला- भयम्
वृष- गमनम्	वृश्चिक-स्थानहानिः
मिथुन-रिपुनाशः	धनु-द्रव्यनाशः
कर्क- दैन्यम्	मकर-विनाशः
सिंह- माननाशः	कुम्भ-कर्मसिद्धि
कन्या-सुखम्	मीन-पापबुद्धि

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः। दि.९ - २४ दिसम्बर सन् २०२६ ई. (रा.मार्गशीर्ष १८ - पौष ३)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२६	११	१	बुध.	६०	०	स	म	स्त	ज्येष्ठा	३४	२१	रात	८	३०	धृति	५	५६	दिन	९	८	कि	२८	५२	बव	६०	०	ध्वांक्ष	९	१५	२२	१८	धनु	३४	२१	६	४६	५	१४	२२	४५	७	२२	१८	४३	६१	१३	-	११	५	१३	धनुराशिः रात्रि ११।२ वादने। रुद्रव्रतम् (पीड़िया) इति लोके प्रसिद्धम्। यमघट योगः ३४।२१ (रा.८।३०) उ.।
२६	१०	१	गुरु.	१	१८	दिन	७	१७	मूल	४०	३९	रात	११	२	शूल	६	५३	दिन	९	३२	बव	१	१८	बा	३३	५९	धूम्र	१०	१६	२३	१९				६	४६	५	१४	२२	५१	७	२३	१९	५६	६१	१४	-	१०	६	५	चन्द्र (दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। (घ) मुख पद्मद्विनिस्मृतां। सर्वार्थसिद्धियोगः १०।२४ (दि.१०।५७) या.। रवियोगः १०।२४ (दि.१०।५७) या.।
२६	९	२	शुक्र.	६	४०	दिन	९	२६	पूर्वाषाढ़ा	४७	११	रात	१	३८	गण्ड	८	९	दिन	१०	२	को	६	४०	तै	३९	२२	प्रवर्धमान	११	१७	२४	२०				६	४६	५	१४	२२	५७	७	२४	२१	१०	६१	१५	-	१०	६	५९	मु.रज्जब ७ हिजरी सन् १४४८। रवियोगः ४७।११ (रा.१।३८) उ.। पूर्व दिशायाम् बुधास्तः। (क) १२।५ (दि.११।३६) उ.।
२६	८	३	शनि.	१२	५	दिन	११	३६	उत्तराषा.	५३	२९	रात	४	१०	वृद्धि	९	३०	दिन	१०	३४	गर	१२	५	व	४४	३५	राक्षस	१२	१८	२५	२१	मकर	३	४५	६	४६	५	१४	२३	२	७	२५	२२	२५	६१	१६	-	९	७	५४	मकरराशिः दिवा ८।१६ वादने। भद्रा ४४।३५ (रा.१२।३६) उ. (पाताले)। यायिजयद् योगः १२।५ (दि.११।३६) या.। रवियोगः ५३।२९ (रा.४।१०) या.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धियोगः(क)
२६	७	४	रवि.	१७	५	दिन	१	३७	श्रवण	५९	१३	रात	६	२८	ध्रुव	१०	३२	दिन	११	०	वि	१७	५	बव	४९	१४	गद	१३	१९	२६	२२				६	४७	५	१३	२३	६	७	२६	२३	४१	६१	१६	-	८	८	४८	भद्रा १७।५ (दि.१।३७) या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। (ख) रवियोगः यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २१।३३ (दि.३।२०) या.।
२६	७	५	सोम.	२१	२३	दिन	३	२०	धनिष्ठा	६०	०	स	म	स्त	व्याघात	११	२	दिन	११	१२	वा	२१	२३	को	५२	५९	शुभ	१४	२०	२७	२३	कुंभ	३१	३७	६	४७	५	१३	२३	१०	७	२७	२४	५७	६१	१७	-	८	९	४२	कुम्भराशिः रात्रि ७।२६ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। श्रीराम विवाहमहोत्सवः। विवाह पंचमी ५। भविस्योक्तरोक्तं श्रीपञ्चमी ५ व्रतम्। द्वितीया नाग पञ्चमी ५ स्नानेदानेबहुफलम्।(ख)
२६	६	६	मंगल.	२४	३५	दिन	४	३७	धनिष्ठा	४	२	दिन	८	२४	हर्षण	१०	४९	दिन	११	७	तै	२४	३५	गर	५५	३९	उत्पात	१५	२१	२८	२४				६	४७	५	१३	२३	१४	७	२८	२६	१३	६१	१८	-	७	१०	३५	स्कन्दषष्ठी ६। चम्पा षष्ठी ६। महाराष्ट्रे प्रसिद्धा। माँ अन्नपूर्णेश्वरी व्रत पूजन श्रृंगार समाप्तिः। रवियोगः ४।२ (दि.८।२४) या.।
२६	५	७	बुध.	२६	४३	सायं	५	२८	शतभिषा	७	४७	दिन	९	५४	वज्र	९	४१	दिन	१०	३९	व	२६	४३	वि	५७	४	मानस	१६	२२	२९	२५	मीन	५४	४०	६	४७	५	१३	२३	१७	७	२९	२७	३१	६१	१८	-	७	११	२८	मीनराशिः रात्रि ४।३९ वादने। भद्रा २६।४३ (सा.५।२८) उ. ५७।४ (रा.शे.५।३७) या. (मर्त्ये)। विष्णु सप्तमी ७। मित्र सप्तमी ७।☉ सं.मूल नक्षत्रे धनु राशौ रविः ३२।२९(ग)
२६	५	८	गुरु.	२७	२५	सायं	५	४५	पूर्वाभाद्र	१०	१७	दिन	१०	५४	सिद्धि	७	३३	दिन	९	४९	बव	२७	२५	बा	५७	८	मुद्गर	१७	२३	१	२६				६	४७	५	१३	२३	२०	८	०	२८	४९	६१	१९	-	७	१२	२२	सौर पौष मासारम्भः। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २७।२५ (सा.५।४५) उ.। (च) दत्तात्रेय अवतार १५। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। रवियोगः २।५ (प्रा.७।३७) या.।
२६	४	९	शुक्र.	२६	५१	सायं	५	३१	उत्तराभा	११	२९	दिन	११	२३	व्यतिपात	४	२६	दिन	८	३३	को	२६	५१	तै	५५	४९	ध्वज	१८	२४	२	२७				६	४७	५	१३	२३	२२	८	१	३०	८	६१	२०	-	६	१	१९	कल्पादिः ९। नन्दा नवमी ९। देवी पूजनेन विष्णुलोक प्राप्तिः। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ११।२९ (दि.११।२३) उ.। रवियोगः ११।२९ (दि.११।२३) उ.।
२६	४	१०	शनि	२४	४९	दिन	४	४३	रेवती	११	३१	दिन	११	२४	वरीयान परिघ	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	गर	२४	४९	व	५३	३१	धाता	१९	२५	३	२८	मेष	११	३१	६	४७	५	१३	२३	२४	८	२	३१	२८	६१	२०	-	५	२	२०	मेषराशिः दिवा ११।२४ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ५३।३१ (रा.४।११) उ. (स्वर्ग)। रवियोगः यावद्दिनम्।
२६	४	११	रवि	२२	१३	दिन	३	४०	अश्विनी	१०	२४	दिन	१०	५७	शिव	४९	२९	रात	२	३५	वि	२२	१३	बव	५०	१८	आनन्द	२०	२६	४	२९				६	४७	५	१३	२३	२५	८	३	३२	४८	६१	२१	-	५	३	२५	भद्रा २२।१३ (दि.३।४०) या.। मोक्षदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। गीता जयन्ती ११। मौन एकादशी (जैन)। अखिल भूमण्डले गीता ज्ञान महोत्सवः। या स्वयं पद्मनाभस्य(घ)
२६	४	१२	सोम	१८	२३	दिन	२	८	भरणी	८	२३	दिन	१०	८	सिद्ध	४२	५९	रात	११	५८	वा	१८	२३	को	४६	३	चर	२१	२७	५	३०	वृष	२२	४१	६	४७	५	१३	२३	२६	८	४	३४	१०	६१	२१	-	४	४	३४	वृषराशिः दिवा ३।५१ वादने। सोम प्रदोष व्रतम् १२ पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। व्यञ्जन द्वादशी १२। बहुविध पक्वान्नं विष्णुं अर्पयेत्। जनार्दन पूजा १२। अखण्ड १२। दान १२ (उड़ीसा)।
२६	३	१३	मंगल	१३	४४	दिन	१२	१७	कृत्तिका	५	३४	दिन	९	१	साध्य	३५	५४	रात	९	७	तै	१३	४४	गर	४१	६	गद	२२	२८	६	१				६	४७	५	१३	२३	२६	८	५	३५	३१	६१	२२	-	४	५	४५	अनंग त्रयोदशी १३ व्रतम्। काश्यां अन्तगृही परिक्रमा १३।४४ (दि.१२।१७) उ.। काश्यां पिशाचमोचन यात्रा दर्शनम्। पिशाचत्व मुक्तये श्राद्धं तर्पणं च १४। पार्वण श्राद्धम् १४। कपर्दीश्वर दर्शनम्। राष्ट्रीय पौष(ङ)
२६	३	१४	बुध	८	२८	दिन	१०	१०	रोहिणी मृगशिरा	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	शुभ	२८	२३	सायं	६	८	व	८	२८	वि	३५	४८	शुभ	२३	२९	७	२	मिथुन	२९	५	६	४७	५	१३	२३	२६	८	६	३६	५४	६१	२२	-	३	+	+	मिथुनराशि सायं ६।२५ वादने। भद्रा ८।२८ (दि.१०।१०) उ. ३५।४८ (रा.९।६) या. (स्वर्ग)। व्रताय पूर्णिमा १५। काश्यां अन्तर्गही यात्रा ८।२८ (दिन १०।१०) या.। नगर परिक्रमा। श्रीदत्तात्रेय जयन्ती १५। प्रदोष(च)
२६	३	१५/१	गुरु	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा	५४	३	रात	४	२४	शुक्ल	२०	३४	दिन	३	०	बव	३	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	काण	२४	३०	८	३				६	४७	५	१३	२३	२६	८	७	३८	१६	६१	२२	-	३	+	+	स्नानदानादौ पूर्णिमा १५। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ३।९ (प्रातः ८।३) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५४।३ (रा.४।२४) उ.।

(ग) (रा.७।४७)। मु.३० समा समताकरम्। पूवाः १६ घट्यः पुण्याः। वस्त्रादिदानम् गोदावर्याम् स्नानम्। खरमासारम्भः। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः २६।४३ (सा.५।२८) या.। (ङ) मासारम्भः। भौमे-जया सिद्धयोगः १३।४४ (दि.१२।१७) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५।३४ (दि.९।१) या.। रवियोगः ५।३४ (दि.९।१) उ.।

विवाह मुहूर्त विमर्शः

ति.१ बुधे–रात्रि ८।३० वादनात्परं मूल नक्षत्रे रेखा ८ लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५।

ति.१ गुरौ-मूल नक्षत्रे रेखा ८ लग्नं गोधूलिः वा लग्नं ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। (सप्त चं. दा.) वा लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (रात्रि ११।२ वादनम् यावत्)।

ति.२ शुक्रे–रात्रि ।३८ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायां रेख १० लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५।

ति.३ शनौ–उत्तराषाढ़ायां रेखा १० दिवा लग्ने पंचेष्टा-भावः। लग्नं गोधूलि वा लग्न ३ इष्टाः ६ ग्र.व. वि.१३।। या लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० रात्रि १२।३६ वादनात्परं भद्राव्याप्तिः।

तत्परं धन्वार्कः खरमासारम्भः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	बु.	७	२२	५०	१७	४	१०	२९	१	१९	२५	७	९	५७	३२	१०	४५	४	२	३८	७	०	४८	६	८	४४	३७	४२	४२	११	१३	४२	५२	०	४	९	२९	४२	५०
१	गु.	८	४	५५	४२	४	१०	४८	२६	१८	५५	७	११	२८	१७	११	१२	४	२	३८	५५	०	३९	६	९	२७	१९	४३	२४	११	१३	४२	४८	०मा	५	९	२९	३९	३९
२	शु.	८	१६	५७	२८	४	११	७	२१	१८	२०	७	१२	५९	२९	११	३६	४	२	३९	३४	०	२०	६	१०	१०	४३	४६	३३	११	१३	४२	५३	०	९	९	२९	३६	२८
३	श.	८	२९	९	१४	४	११	२५	४१	१७	५९	७	१४	३१	५	११	५५	४	२	३९	५४	०व.	५	६	१०	५७	१६	४७	२०	११	१३	४३	२	०	१२	९	२९	३३	१७
४	र.	९	११	२१	२०	४	११	४३	४०	१७	४०	७	१६	३	०	१२	९	४	२	३९	४९	०	१०	६	११	४४	३६	४८	३५	११	१३	४३	१४	०	१५	९	२९	३०	६
५	सो.	९	२३	४३	३४	४	१२	१	२०	१७	११	७	१७	३५	९	१२	२०	४	२	३९	३९	०	१६	६	१२	३३	११	४९	५०	११	१३	४३	२९	०	१७	९	२९	२६	५५
६	मं.	१०	६	५	२३	४	१२	१८	३१	१६	३५	७	१९	७	२९	१२	३९	४	२	३९	२३	०	२०	६	१३	२३	१	५०	४९	११	१३	४३	४६	०	२०	९	२९	२३	४४
७	बु.	१०	१८	४०	९	४	१२	३५	६	१६	४	७	२०	४०	८	१२	५७	४	२	३९	३	०	३०	६	१४	१३	५०	५१	४४	११	१३	४४	६	०	२५	९	२९	२०	३३
८	गु.	११	१	३०	४७	४	१२	५१	१०	१५	३८	७	२२	१३	५	१३	०	४	२	३८	३३	०	४४	६	१५	५	३४	५२	३६	११	१३	४४	३१	०	२९	९	२९	१७	२२
९	शु.	११	१४	३६	२२	४	१३	६	४८	१५	१२	७	२३	४६	५	१३	१४	४	२	३७	४९	०	५७	६	१५	५८	१०	५२	५१	११	१३	४५	०	०	३४	९	२९	१४	११
१०	श.	११	२७	५६	३५	४	१३	२२	०	१४	३३	७	२५	१९	१९	१३	३४	४	२	३६	५२	१	२	६	१६	५१	१	५३	२४	११	१३	४५	३४	०	४०	९	२९	११	०
११	र.	०	११	२९	१२	४	१३	३६	३३	१२	५५	७	२६	५२	५३	१३	४३	४	२	३५	५०	१	१३	६	१७	४४	२५	५४	५	११	१३	४६	१४	०	४८	९	२९	७	५०
१२	सो.	०	२५	१३	४०	४	१३	४९	२८	१२	२९	७	२८	२६	३६	१३	५२	४	२	३४	३७	१	२८	६	१८	३८	३०	५४	२९	११	१३	४७	२	०	५८	९	२९	४	३९
१३	मं.	१	९	७	१३	४	१४	१	५७	१२	१	८	०	०	२८	१४	२	४	२	३३	९	१	४५	६	१९	३२	५९	५४	५०	११	१३	४८	०	१	५	९	२९	१	२८
१४	बु.	१	२३	९	३९	४	१४	१३	५८	११	३६	८	१	३४	३०	१४	१५	४	२	३१	२४	२	०	६	२०	२७	४९	५५	११	११	१३	४९	५	१	१३	९	२८	५८	१७
१५	गु.	२	७	१७	२६	४	१४	२५	३४	११	६	८	३	८	४५	१४	३३	४	२	२९	२४	२	६	६	२१	२३	०	५५	४२	११	१३	५०	१८	१	२२	९	२८	५५	६

पं.३७ मार्गशीर्ष शुक्ल ८ गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४०
अयनांशाः २४/१३/१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	४	७	४	६	११	९	३
०	१	१२	२२	२	१५	१३	२९	२९
२८	३०	५१	१३	३८	५	४४	१७	१७
४९	४७	१०	५	३३	३४	३१	२२	२२
६१	७६९	१५	१३	०	५२	०	३	३
११	२५	३८	०	४४ व	३६	२९ मा	११	११



मार्गशीर्ष शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिथि-वार	१ बु. घं.	मि.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ सो. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	लग्नांत तिथि-वार	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ सो. घं.	मि.	१३ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	१५ गु. घं.	मि.
वृश्चिक	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५२	६	४८	६	४३	६	३९	धनु	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३
धनु	९	१२	९	८	९	४	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	मकर	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९
मकर	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	कुम्भ	११	५७	११	५३	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०
कुम्भ	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	मीन	१	२५	१	२१	१	१७	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८
मीन	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	मेष	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६
मेष	३	३५	३	३१	३	२७	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	वृष	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृष	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१३	५	९	५	५	मिथुन	७	१४	७	१०	७	६	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७
मिथुन	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	कर्क	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४
कर्क	१०	३	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	सिंह	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८
सिंह	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	कन्या	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१
कन्या	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	तुला	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७
तुला	४	४६	४	४२	४	३८	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	वृश्चिक	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४

पं.३८ मार्गशीर्ष शु.१५ गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४७
अयनांशाः २४/१३/२

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	४	८	४	६	११	९	३
७	७	१४	३	२	२१	१३	२८	२८
३८	१७	२५	८	२९	२३	५०	५५	५५
१६	२६	३४	४५	२४	०	१८	६	६
६१	८६०	११	१४	२	५५	१	३	३
२२	२०	६	३३	६ व	४२	२२ मा	११	११



फलम्-प्रतिपदा तिथि की वृद्धि हो जाने के कारण यह पक्ष १६ दिन का है। पक्ष के तीन बुधवार एवं तीन गुरुवार शुभफलकारक है। देशी घी, रुई, चांदी के भाव में तेजी आयेगी। सोना, पीतल, चावल, शक्कर का भाव थमा रहेगा। मूल नक्षत्र धनु राशि का चन्द्रदर्शन मादक द्रव्यों में तेजी कारक है। ठंडक पड़ने लगेगी। **पीडिया** नाम से प्रचलित **रुद्रव्रत** ९ दिसम्बर बुधवार को किया जायेगा। **विवाह पंचमी** के रुप मे प्रचलित श्रीराम एवं माता **जानकी का विवाहोत्सव** १४ दिसम्बर सोमवार को मनाया जायेगा। मिथिलांचल मे इसे हर्ष उल्लास एवं अपनी परम्परा के अनुसार विशेष रुप से पर्व की तरह मनाया जाता है। साथ ही पूरे देश में इसको उत्सव रूप में मनाते है। **चम्पा षष्ठी-स्कन्द षष्ठी** १५ दिसम्बर मंगलवार को होगी। पश्चिमी प्रदेशों विशेषकर **महाराष्ट्र** में इसका विशेष महात्म्य है। पौराणिक मान्यता के अनुसार आज ही के दिन **स्वामी कार्तिकेय** ने तारकासुर का वध किया था और आज ही उनका राज्याभिषेक भी हुआ था। **विष्णु सप्तमी एवं मित्र सप्तमी** १६ दिसम्बर बुधवार को होगी। **मोक्षदा एकादशी** व्रत ▯ का मान सबके लिए २० दिसम्बर रवि.को होगा। आज ही के दिन जैन जगत की **मौन एकादशी** तथा सुप्रसिद्ध **गीता जयन्ती** भी मनाई जायेगी। ३६ भाषाओं में अनुवादित तथा सन्तों महापुरुषों के विशिष्ट टीका व्याख्या-विवेचन से परिष्कृत एवं महिमा मण्डित विस्तारित गीता का ज्ञान सम्पूर्ण विश्व में भारतीय मनीषा की गौरवपूर्ण गाथा को मुखरित करेगा। श्रीमद्भागवत गीता मात्र एक धार्मिक ग्रन्थ नही है,अपितु अपार ज्ञान कोष है तथा हम सनातन धर्मियों की आचार संहिता एवं जीवन के आधार भूत मूल्यों का मार्गदर्शक है। पुत्र की कामना से **सोम प्रदोष व्रत** २१ दिस.को किया जायेगा। **अनंग त्रयोदशी** २२ दिस. मंगलवार को होगी। काशी के पिशाच मोचन मे **अतृप्त आत्माओं** की शान्ति के लिए **श्राद्ध कर्म** २२ दिस.मंगल. को होगा व्रत की पूर्णिमा २३ दिस.बुध. को है एवं आज ही श्री दत्तात्रेय भगवान का जन्मोत्सव, दत्त जयन्ती मनाई जायेगी। नगर परिक्रमा की जायेगी। मूल नक्षत्र एवं धनु राशि की **सूर्य संक्रान्ति** १६ दिस. बुध. को रात ७।४७ बजे से लगेगी और इसी के साथ **खरमास** प्रारम्भ हो जायेगा। पक्षारम्भ ११ दिस. को आसन्न मौसम करवट लेगा। बूंदा-बांदी वर्षा होने के योग है। ठंड पड़ना प्रारम्भ हो जायेगी।

भौमादीनां चारः

भौमः-मघायां सिंहराशौ ९ शुक्रतः पू.फा. रात्रि ३।२० वादने। **बुधः**-वृश्चिकराशौ १२ सोमतःमूल नक्षत्रे धनु राशौ रात्रि शेष ६।३५ वादने। **गुरुः**-मघायां सिंहराशिः ३ शनितः वक्री। **शुक्रः**-तुला राशौ। **शनिः**-(वक्री) उ.भा.४ चरणे १गुरुतः मार्गी। **राहुः**-धनिष्ठा २ चरणे **केतुश्च**-श्लेषा ४ चरणे।

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ बुधे–ज्येष्ठायां नामकरणं कणमर्दनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ जलयंत्रकर्म मुकदमाकार्य रात्रि ८।३० वादनात्परं मूले **वरवरणं कन्या वरणं** द्विरागमनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १ गुरौ**–मूले नामकरणं दीक्षाग्रहणं वरवरणं कन्या **वरणं वधूप्रवेश–द्विरागमनं ल.९**, हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं वृक्षारोपण जलयन्त्रकर्म, भूमिक्रयः, उत्तर पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ शुक्रे**–पूर्वाषाढ़ायाम् आ.प्रसूति स्नानं **वरवरणं कन्यावरणं दीक्षाग्रहणं** जलयन्त्र कर्म, मुकदमा कार्य भूमिक्रय उत्तर-पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ३ शनौ**–उत्तराषाढ़ायाम् नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं, इष्टिकानिर्माण दिवा ८।१६ वादनात्परं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ४ रवौ**–रिक्ता भद्रा दिवा १।३७ वादनात्परं श्रवणे पुंसवनं सीमन्तः **कन्यावरणं** क्रय-विक्रयः लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं कणमर्दनं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माण शल्यकर्म (आपरेशन) नवान्नभक्षणं औषधि सेवनं, श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ५ सोमे**–धनिष्ठायां **गर्भाधानं** रात्रौ लग्नं ५ आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्यानासिकाच्छेदन **कन्यावरणं वधूप्रवेश द्विरागमनं ल.९** आभूषण निर्माणं धारणं हलप्रहवणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं वाहनक्रयः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ आवेदनपत्र लेखनं **जीर्णादिगृहप्रवेशः ल.९** नूतनबध्वापाककर्म नवान्नभक्षणं। **तिथि ६ भौमे**–धनिष्ठायां प्रसूतिस्नानं लालवस्त्रधारणं दत्तक पुत्र ग्रहणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ७ बुधे**–दिवा ९।५४ वादनम् यावत् शतभिषां **गृहारम्भे जीर्णादि गृहप्रवेशे** अग्निवाणः अन्नप्राशनं, **द्विरागमनं ल.९** क्रय विक्रयः दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं बीजपवनं, धान्यरोपणं धान्यस्थापन, वृक्षारोपण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ जलयंत्र कर्म भद्रा सायं ५।२८ वादनात्पूर्व पूर्वाभाद्रपदे वरवरणं कन्या वरणं धान्यच्छेदनं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८ गुरौ**–पूर्वाभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जलयंत्र कर्म मुकदमाकार्यं, भूमिक्रयः दिवा १०।५४ वादनात्परं रिक्ता सायं ५।४५ वादनात्पूर्व उ.भा.जातकर्म नामकरणं विपणि व्यापारः नववस्त्रधारण हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ सेवारम्भ आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ९ शुक्रे**–रिक्ता सायं ५।३१ वादनात्परं रेवत्यां–जातकर्म अन्नप्राशनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ विपणिव्यापार नववस्त्र धारणं औषधि निर्माणं सेवनं च वाहनक्रयः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १० शनौ**–रेवत्यां कृष्णवस्त्र धारणं दिवा ११।२४ वादनात्परं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ११ रवौ**–भद्रा दिवा ३।४० वादनात्परं भरण्यां शस्त्र निर्माणं इष्टिका दहनं। **तिथि १२ सोमे**–दिवा १०।८ वादनात्परं कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं। **तिथि १३ भौमे**–दिवा ९।१ वादनात्परं रिक्ता दिवा १२।१७ वादनात्पूर्व रोहिण्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १४ बुधे**–भद्रा रात्रि ९।६ वादनात्परं मृगशिरायां पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १५/१ गुरौ**–आर्द्रायाम् मुकदमा कार्यं धान्यच्छेदनं।

राशिफल

मेष-	रोगं हानिः
वृष-	शत्रुभयं
मिथुन-	सुखं श्रीः
कर्क-	नेत्र कष्टं
सिंह-	पीडा भयम्
कन्या-	रोगं
तुला-	लाभः
वृश्चिक-	सुखं
धनु-	रोगं
मकर-	भय
कुम्भ-	दौर्बल्यं
मीन-	लाभः

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ पौष कृष्ण पक्षः।

दि.२५ दिसम्बर २०२६ - ७ जनवरी २०२७ ई. (राष्ट्रीय पौष ४ - १७)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	विशेष
२६	४	२	शुक्र.	५१	३	रात	३	१२	पुनर्वसु	४९	५१	रात	२	४३	ब्रह्म	१२	३६	दिन	११	४९	ते	२२	२५	गर	५१	३	लुम्बक	२५	१	९	४	कर्क	३५	५४	६	४७	५	१३	२३	२५	८	८	३९	३८	६१	२३	-	२	६	४४	**कर्कराशिः** रात्रि ९।१ वादने। **फसली पौष मासारम्भः। क्रिसमस डे (ईसाई)। ज्येष्ठ दिनम् (बड़ा दिन)। म.म.पं.मदनमोहन मालवीय अटल बिहारी बाजपेयी जयन्ती (अंग्रेजी दिनांकनुसारेण)।** सर्वार्थसिद्धियोगः(क)
२६	४	३	शनि.	४५	२२	रात	१२	५६	पुष्य	४५	५१	रात	१	७	ऐन्द्र वैधृति	०/५२	३/३५	प्रातः	६/५	४१/३७	व	१८	१३	वि	४५	२२	मित्र	२६	२	१०	५				६	४७	५	१३	२३	२३	८	९	४१	१	६१	२३	-	२	७	५५	भद्रा १८।१३ (दि.२।४) उ. ४५।२२ (रा.१२।५६) या. (मर्त्ये)। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ४५।२२ (रा.१२।५६) उ.। (क) ४९।५१ (रा.२।४३) या.।
२६	४	४	रवि	४०	४	रात	१०	४९	श्लेषा	४२	१६	रात	११	४१	विष्कुम्भ	४९	४४	रात	२	४१	बव	१२	४३	बा	४०	४	वज्र	२७	३	११	६	सिंह	४२	१६	६	४७	५	१३	२३	२१	८	१०	४२	२४	६१	२३	-	१	९	२	**सिंहराशिः** रात्रि ११।४१ वादने। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदय** (रा.९।२) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। यमघंट योगः ४२।१६ (रा.११।४१) उ.।
२६	५	५	सोम	३५	१७	रात	८	५४	मघा	३९	१५	रात	१०	२९	प्रीति	४२	५५	रात	११	५७	को	७	४०	ते	३५	१७	ध्वांक्ष	२८	४	१२	७				६	४७	५	१३	२३	१९	८	११	४३	४७	६१	२३	-	१	१०	५	दोषसंघ विनाशको रवियोगः ३९।१५ (रा.१०।२९) उ.। (ख) पक्षे पूर्वव्यसुन्वष्टकं तवाष्टका। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २६।१९ (सा.५।१९) उ. ३५।२७ (रा.८।५८) या.।
२६	५	६	मंगल	३१	१८	रात	७	१८	पूर्वाफा.	३७	५	रात	९	३७	आयुष्यमान	३६	४४	रात	९	२९	गर	३	१७	व	३१	१८	धूम्र	२९	५	१३	८	कन्या	५१	४४	६	४७	५	१३	२३	१६	८	१२	४५	१०	६१	२३	-	०	११	४	**कन्याराशिः** रात्रि ३।२९ वादने। भद्रा ३१।१८ (रा.७।१८) उ. (मर्त्य-पाताले)। ⊙ **पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रे रविः** ३४।५० (रा.८।४३) रवियोगः ३४।५० (रा.८।४३) या.।
२६	६	७	बुध.	२९	१८	रात	६	३०	उत्तराफा.	३५	४२	रात	९	४	सौभाग्य	३१	१८	रात	७	१८	वि	०	१८	बव/बा	२९/५७	४८/४८	प्रवर्धमान	३०	६	१४	९				६	४७	५	१३	२३	१२	८	१३	४६	३२	६१	२४	-	०	१२	१	भद्रा ०।१८ (प्रातः ६।५४) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।४२ (रा.९।४) उ.। रवियोगः ३५।४२ (रा.९।४) या.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः २९।१८ (रा.६।३०) या.।
२६	७	८	गुरु.	२६	१९	सायं	५	१९	हस्त	३५	२७	रात	८	५८	शोभन	२६	४१	सायं	५	२७	को	२६	१९	ते	५५	५७	राक्षस	३१	७	१५	१०				६	४७	५	१३	२३	८	८	१४	४७	५६	६१	२४	-	०	१२	५७	**अष्टका श्राद्धम् ८।** पार्वण वदस्य विधिः। म.म.म.मो.**मालवीय जयन्ती ८** (तिथिमतानुसारेण), **रुक्मिणी अष्टमी ८।** 'तत्र कृष्ण रुक्मिणी प्रद्युम्न च पूजयेदित्युक्ते।' मार्गशीर्ष पौष माघे प्रोष्ठे च फाल्गुन कृष्ण (ख)
२६	७	९	शुक्र.	२५	३६	सायं	५	०	चित्रा	३६	२३	रात	९	१९	अतिगण्ड	२३	२	दिन	४	०	गर	२५	३६	व	५५	५२	मुसल	१	८	१६	११	तुला	५	५५	६	४६	५	१४	२३	३	८	१५	४९	२०	६१	२४	+	०	१	५३	**तुलाराशिः** दिवा ९।८ वादने। भद्रा ५५।५२ (रा.शे.५।७) उ. (पाताले)। **अन्वष्टका श्राद्धम् ९। ईसवीय (अंग्रेजी) वर्ष २०२७ प्रारम्भः।** सर्वत्र हर्षोल्लासः शुभकामना सन्देशः।
२६	८	१०	शनि.	२६	८	सायं	५	१३	स्वाती	३८	३५	रात	१०	१२	सुकर्मा	२०	२५	दिन	२	५६	वि	२६	८	बव	५६	४०	सिद्धि	२	९	१७	१२				६	४६	५	१४	२२	५८	८	१६	५०	४४	६१	२४	+	१	२	४९	भद्रा २६।८ (सा.५।१३) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।३५ (रा.१०।१२) या.। श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक १०। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २६।८ (सा.५।१३) उ. ३८।३५ (रा.१०।१२) या.।
२६	९	११	रवि	२८	२	सायं	५	५९	विशाखा	४२	५	रात	११	३६	धृति	१८	४७	दिन	२	१७	बा	२८	२	को	५९	३३	उत्पात	३	१०	१८	१३	वृश्चिक	२६	१२	६	४६	५	१४	२२	५३	८	१७	५२	८	६१	२४	+	२	३	४६	**वृश्चिकराशिः** सायं ५।१५ वादने। **सफला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः २८।२ (सा.५।५९) उ. ४२।५ (रा.११।३६) या.।
२६	१०	१२	सोम	३१	४	रात	६	१२	अनुराधा	४६	४३	रात	१	२७	शूल	१८	२	दिन	२	०	ते	३१	४	गर	६०	०	मानस	४	११	१९	१४				६	४६	५	१४	२२	४७	८	१८	५३	३२	६१	२३	+	२	४	४१	सर्वार्थसिद्धियोगः ४६।४३ (रा.१।२७) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३१।४ (रा.६।१२) उ. ४६।४३ (रा.१।२७) या.।
२६	१२	१३	मंगल	३५	१६	रात	८	५३	ज्येष्ठा	५२	१६	रात	३	४०	गण्ड	१८	१०	दिन	२	२	गर	३	१०	व	३५	१६	मुद्गर	५	१२	२०	१५	धनु	५२	१६	६	४६	५	१४	२२	४१	८	१९	५४	५५	६१	२३	+	३	५	३३	**धनुराशिः** रात्रि ३।४० वादने। भद्रा ३५।१६ (रा.८।५३) उ. (स्वर्ग-पाताले)। **भौम प्रदोष व्रतम् १३।** ऋणापकर्णाय श्रेयस्करम्। **मास शिवरात्रि व्रतम् १४।** गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती ५ जनवरी। भौमे जया सिद्ध योगः(ग)
२६	१३	१४	बुध.	४०	११	रात	१०	५०	मूल	५८	२८	रात	६	९	वृद्धि	१८	५७	दिन	२	२१	वि	७	४३	श	४०	११	ध्वज	६	१३	२१	१६				६	४६	५	१४	२२	३४	८	२०	५६	१८	६१	२३	+	३	६	२२	भद्रा ७।४३ (दि.९।५१) या.। यमघंटयोगः ५८।२८ (रा.६।९) या.। (ग) ३५।१६ (रा.८।५३) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ३५।१६ (रा.८।५३) उ. ५२।१६ (रा.३।४०) या.।
२६	१४	३०	गुरु.	४५	३६	रात	१	०	पूर्वाषाढ़ा	६०	०	स	म	स्त	ध्रुव	२०	१०	दिन	२	४९	च	१२	५३	ना	४५	३६	धाता	७	१४	२२	१७				६	४६	५	१४	२२	२७	८	२१	५७	४१	६१	२३	+	३	+	+	**स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा।** शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.		स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
२	शु.	२	२१	२७	५६	४	१४	३६	४०	१०	४१	८	४	४३	१८	९४	४४	४	२	२७	१८	२	१५	६	२२	१८	४२	५६	३३	११	१३	५१	४०	१	३२	९	२८	५१	५५
३	श.	३	५	३५	१४	४	१४	४७	२१	१०	२	८	६	१८	२	९४	४५	४	२	२५	३	२	३१	६	२३	१५	१५	५६	५७	११	१३	५३	१२	१	४७	९	२८	४८	४४
४	र.	३	१९	४३	३९	४	१४	५७	२३	९	३३	८	७	५२	५७	९५	३	४	२	२२	३२	२	४०	६	२४	१२	१२	५७	२३	११	१३	५४	५९	२	१	९	२८	४५	३३
५	सो.	४	३	३९	८	४	१५	६	५६	९	११	८	९	२८	०	९५	१९	४	२	१९	५२	२	५४	६	२५	९	३५	५७	४८	११	१३	५७	०	२	५	९	२८	४२	२२
६	मं.	४	१७	२५	२२	४	१५	१६	७	८	५६	८	११	३	१९	९५	३४	४	२	१६	५८	३	३	६	२६	७	२३	५८	१३	११	१३	५९	५	२	१०	९	२८	३९	११
७	बु.	५	१	४१	३०	४	१५	२५	३	७	४९	८	१२	३८	५३	९५	५०	४	२	१३	५५	३	११	६	२७	५	३६	५९	२२	११	१४	१	१५	२	१६	९	२८	३६	०
८	गु.	५	१५	४	१८	४	१५	३२	५२	७	५	८	१४	१४	४३	९६	१३	४	२	१०	४४	३	२३	६	२८	४	५८	५९	५६	११	१४	३	३१	२	२४	९	२८	३२	५०
९	शु.	५	२८	५२	२७	४	१५	३९	५७	६	४८	८	१५	५०	५६	९६	३०	४	२	७	२१	३	३८	७	२९	४	५४	६०	१६	११	१४	५	५५	२	३१	९	२८	२९	३९
१०	श.	६	११	४६	१४	४	१५	४६	४५	६	१२	८	१७	२७	२६	९६	४५	४	२	३	४३	३	५०	७	०	५	१०	६०	५१	११	१४	८	२६	२	३५	९	२८	२६	२८
११	र.	६	२४	२४	३९	४	१५	५२	५७	५	३८	८	१९	४	११	९६	५८	४	१	५९	५३	४	१	७	१	६	१	६१	५	११	१४	११	१	२	३९	९	२८	२३	१७
१२	सो.	७	६	४८	१२	४	१५	५८	३५	४	४१	८	२०	४१	९	९७	१०	४	१	५५	५२	४	१२	७	२	७	६	६१	२८	११	१४	१३	४०	२	४१	९	२८	२०	६
१३	मं.	७	१९	२	३३	४	१६	३	१६	३	२९	८	२२	१८	१९	९७	२१	४	१	५१	४०	४	२१	७	३	८	३४	६१	५८	११	१४	१६	२१	२	४५	९	२८	१६	५५
१४	बु.	८	१	८	१६	४	१६	६	४५	३	१	८	२३	५५	४०	९७	३९	४	१	४७	१९	४	३१	७	४	१०	३२	६२	१९	११	१४	१९	६	२	५०	९	२८	१३	४४
३०	गु.	८	१३	११	२०	४	१६	९	४६	२	४९	८	२५	३३	१९	९८	५	४	१	४२	४८	४	३९	७	५	१२	५१	६२	३७	११	१४	२१	५६	२	५३	९	२८	१०	३३

फलम्-विगत पूर्णिमा में ही प्रतिपदा तिथि का क्षय हो गया है जिसके कारण यह पक्ष १४ दिन का ही है। पक्षारम्भ २५ दिसम्बर शुक्रवार को ईसाई धर्म का विश्वप्रसिद्ध पर्व **क्रिसमस डे (बड़ा दिन)** मनाया जायेगा। अंग्रेजी दिनांक के अनुसार **महामना पं. मदन मोहन मालवीय** तथा महान राष्ट्रवादी **पं.अटल बिहारी बाजपेयी** की जयन्ती मनायी जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी** व्रत का मान २७ दिसम्बर रविवार को होगा। **चन्द्रोदय** रात ९.१२ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **रुक्मिणी अष्टमी** ३१ दिसम्बर गुरुवार को होगी और इसमें रुक्मिणी एवं भगवान प्रद्युम्न की प्रतिमा को षोडषोपचार विधि से पूजित कर कम से कम ८ सौभाग्यवती स्त्रियों को भोजन कराकर वस्त्रादि से सम्मानित करना सौभाग्यप्रद माना गया है। जैन-जगत का **पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक** २ जनवरी शनिवार को मनाया जायेगा। **सफला एकादशी** व्रत का मान सबके लिये ३ जनवरी रविवार को होगा। इस एकादशी में •

पं.३९ पौष कृष्ण ८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५४ अयनांशाः २४/१३/३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	४	८	४	६	११	९	३
१४	१५	१५	१४	२	२८	१४	२८	२८
४७	४	३२	१४	१०	४	३	३२	३२
५६	१८	५२	४३	४४	५८	३१	४०	४०
६१	८०२	७	९६	[illegible]	५९	२		
२४	४५	५	९३	४	५६	२४	११	११



औमादीनां चारः
भौमः-पूर्वाफाल्गुन्यां सिंहराशौ। बुधः-धनु राशौ। गुरुः-(वक्री) मघायां सिंह राशौ। शुक्रः-तुला राशौ ९ शुक्रतः वृश्चिकराशौ रात्रि ३।५० वादने। शनिः-उ.भा.४चरणे। राहुः-धनिष्ठा २ चरणे केतुश्च- श्लेषा ४ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

पौष कृष्ण

लग्नांत ति.वा.	२शु. घं.	मि.	३श. घं.	मि.	४र. घं.	मि.	५सो. घं.	मि.	६मं. घं.	मि.	७बु. घं.	मि.	८गु. घं.	मि.	९शु. घं.	मि.	१०श. घं.	मि.	११र. घं.	मि.	१२सो. घं.	मि.	१३मं. घं.	मि.	१४बु. घं.	मि.	३०गु. घं.	मि.
धनु	८	९	८	५	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८
मकर	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१६	९	१२	९	८	९	४
कुम्भ	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५
मीन	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३
मेष	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१
वृष	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८
	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मिथुन	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	४	६	०	५	५६	५	५२
कर्क	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०
सिंह	११	१८	११	१४	११	१०	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८
कन्या	१	३०	१	२६	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०
तुला	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२
वृश्चिक	६	०	५	५६	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९

विविध मुहूर्ताः **तिथि २ शुक्रे**–पुनर्वसौ नामकरणं अन्नप्राशनं गवां क्रय-विक्रय नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं शस्त्रधारण, शय्यासनाद्युपभोग भूमिक्रय औषधि सेवना। **तिथि ३ शनौ**–भद्रापूर्व पुष्ये नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं दिवा २।४ वादनात्परं भद्रा। **तिथि ४ रवौ**– श्लेषायां रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ५ सोमे**–मघायां कणमर्दनं जलयंत्र कर्म शय्यासनाद्युपभोग भूमिक्रयः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ६ भौमे**–पूर्वाफाल्गुन्यां प्रसूति स्नानं (ति.दा.) इष्टिका दहनं शस्त्र निर्माणं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ७ बुधे**–भद्रा प्रातः ६।५४ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापार वृक्षारोपण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८ गुरौ**– हस्त नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्रधारणं आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, शल्यकर्म (आपरेशन) हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् यात्रा। **तिथि ९ शुक्रे**–रिक्ता सायं ५।० वादनात्परं चित्रायां जातकर्म

पं.४० पौष कृष्ण ३० गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६१ अयनांशाः २४/१३/४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	४	८	४	७	११	९	३
२१	१३	१६	२५	१	५	१४	२८	२८
५७	११	९	३३	४२	१२	२१	१०	१०
४१	२०	४६	११	४८	५१	५६	३३	३३
६१	[illegible]	२	९८	४	६२	२		
२३	५६	४१	५	३३	३०	५३	११	११



• भगवान को नैवेद्य में बेल, बिजौरा, जंवीरी, नारियल, अनार का भोग अर्पित कर पूजा करने से पुण्यफल की प्राप्ति होती है। ऋण से छुटकारा पाने के लिए **भौम प्रदोष** का व्रत ५ जनवरी को होगा। **मास शिवरात्रि** का व्रत भी ५जनवरी मंगलवार को किया जायेगा। नवीन मत के अनुसार **गुरुगोविन्द सिंह** जी की जयन्ती ५ जनवरी मंगलवार को समारोहपूर्वक शोभायात्रा के साथ मनाई जायेगी। **स्नान-दान** एवं श्राद्ध सहित अमावस्या ७ जनवरी गुरुवार को होगी। **पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र** का सूर्य २९ दिसम्बर मंगलवार को रात ८।४३ बजे से आयेगा। तिल-तेल, गुड़, गुग्गुल हल्दी, चपड़ी, कपूर, ऊनी वस्त्र सन् जूट चांदी, अफीम के भाव में तेजी चलेगी। हाड़ कंपा देने वाली सर्दी पड़ेगी।

नामकरणं, अन्नप्राशन नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोग दत्तकपुत्रग्रहण आवेदन पत्र लेखनं औषधि निर्माणं सेवनं च दक्षिण दिग् यात्रा रात्रि ९।१९ वादनात्परं स्वात्यां गर्भाधानं। **तिथि १० शनौ**–स्वात्यां भद्रा सायं ५।१३ वादनात्परं कृष्णवस्त्रधारण पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ रवौ**–विशाखायां लालवस्त्र धारणं इष्टिका दहनं रात्रि ११।३६ वादनात्परं अनुराधायां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ सोमे**–अनुराधायां–**गर्भाधान रात्रौ ल.५** वा ६ आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ विपणिव्यापारः हलप्रहवणं बीजवपनं कणमर्दनं वृक्षारोपणं सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं औषधिसेवन दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ भौमे**–ज्येष्ठायां शस्त्र निर्माणं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १४ बुधे**–मूले रिक्ता व्याप्तिः **तत्परं मासान्तः।**

राशिफल

मेष-	पाप वृद्धि
वृष-	रोग भयं
मिथुन-	गमनम् हानि
कर्क-	रिपुनाशः
सिंह-	दैन्यम् हानिः
कन्या-	रोगं मान्नाशः
तुला-	सुखं श्रीः
वृश्चिक-	हानिः भयम्
धनु-	स्थान हानिः
मकर-	द्रव्यनाशः
कुम्भ-	वित्ताप्तिः
मीन-	सौख्यं कर्मसिद्धिः

श्रीशुभ संवत्२०८३ शाके१९४८ पौष शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः। मकरार्कतः सौम्यायनं शिशिर ऋतुः।
दि.८- २२ जनवरी २०२७ ई. (राष्ट्रीय पौष १८ - माघ २)

दि.मा. घ.	प.	पौष शुक्ल तिथि ति. वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा.द- अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२६	१५	१ शुक्र.	५०	०	रात	२	४५	पूर्वाषाढ़ा	५	१	दिन	८	४५	व्याघात	२१	३२	दिन	३	२२	किं	१७	४८	बव	५०	०	प्रवर्धमान	८	१५	२३	१८	मकर	२१	३७	६	४५	५	१५	२२	१९	८	२२	५९	४	६१	२३	+	४	५	४९	मकरराशिः दिवा ३।२४ वादने। (ख) खरमास समाप्तिः। देवानाम् दिनम दत्यानाम् च रात्रि प्रारम्भः। सर्वार्थसिद्धियोगः ३०।५० (रा.७।३) उ.। रवियोगः ३०।५० (रा.७।३) या.।
२६	१७	२ शनि.	५५	५९	रात	४	९	उत्तराषाढ़ा	११	२७	दिन	११	२०	हर्षण	२२	४४	दिन	३	५१	बा	२३	०	कौ	५५	५९	राक्षस	९	१६	२४	१९				६	४५	५	१५	२२	११	८	२४	०	२७	६१	२२	+	४	६	४४	चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। सर्वार्थसिद्धियोगः ११।२७ (दि.११।२०) उ.। शुभाशुभत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ११।२७ (दि.११।२०) या.।
२६	१९	३ रवि.	६०	०	स	म	स्त	श्रवण	१७	२३	दिन	१	४१	वज्र	२३	२५	दिन	४	७	ते	२८	६	गर	६०	०	गद	१०	१७	२५	२०	कुंभ	४९	५५	६	४४	५	१६	२२	३	८	२५	१	४९	६१	२२	+	४	७	३७	कुम्भराशिः रात्रि २।४२ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। मु.सावान ८ हिजरी सन् १४४८। रवियोगः १७।२३ (दि.१।४१) या.। (क) २२।२८ (दि.३।४३) या.।
२६	२०	३ सोम	०	१४	प्रातः	६	५०	धनिष्ठा	२२	२८	दिन	३	४३	सिद्धि	२३	२८	दिन	४	८	गर	०	१४	व	३१	४७	शुभ	११	१८	२६	२१				६	४४	५	१६	२१	५४	८	२६	३	११	६१	२२	+	५	८	३०	भद्रा ३१।४७ (रा.७।२७) उ. (मर्त्य)। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। ⊙उ.षा. नक्षत्रे रविः ३६।२० (रा.९।१६)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ०।१४ (प्रातः ६।५०) या.। रवियोग(क)
२६	२२	४ मंगल	३	२१	दिन	८	४	शतभिषा	२६	२७	सायं	५	१९	व्यतिपात	२२	३८	दिन	३	४७	वि	३	२१	बव	३४	२१	मृत्यु	१२	१९	२७	२२				६	४४	५	१६	२१	४५	८	२७	४	३३	६१	२१	+	५	९	२३	भद्रा ३।२१ (दि.८।४) या.। रवियोगः २६।२७ (सायं ५।१९) या.। स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (१२ जनवरी)।
२६	२४	५ बुध	५	२२	दिन	८	५२	पूर्वाभाद्र	२९	१६	रात	६	२५	वरीयान	२०	५१	दिन	३	४	बा	५	२२	कौ	३५	४२	पद्म	१३	२०	२८	२३	मीन	१३	३३	६	४३	५	१७	२१	३५	८	२८	५	५४	६१	२१	+	५	१०	१५	मीनराशिः दिवा १२।८ वादने। रवियोगः २९।१६ (रा.६।२५) उ.। (ङ) जया सिद्धयोगः ४६।४२ (रा.१।२२) उ.। द्विपुष्करयोगः २२।२९ (दि.३।४१) उ. ४६।४२ (रा.१।२२) या.।
२६	२५	६ गुरु	६	१	दिन	९	७	उत्तराभाद्र	३०	५०	रात	७	३	परिघ	१८	७	दिन	१	५८	ते	६	१	गर	३५	४१	छत्र	१४	२१	२९	२४				६	४३	५	१७	२१	२४	८	२९	७	१५	६१	२०	+	६	११	१०	⊙सं.मकरराशौ रविः ५२।२० (रात्रि ३।३९)। मु.३० समा समताकरम्। पराः ४० घट्यः पुण्याः। पर दिने पुण्यकालः। उत्तरायणे रविः निरचन सौम्यायनं। शिशिर ऋतु प्रारम्भः।(ख)
२६	२८	७ शुक्र.	५	२२	दिन	८	५१	रेवती	३१	८	रात	७	९	शिव	१४	२१	दिन	१२	२६	व	५	२२	वि	३४	२६	श्रीवत्स	१५	२२	१	२५	मेष	३१	८	६	४२	५	१८	२१	१४	९	०	८	३५	६१	२०	+	६	१२	७	मेषराशिः रात्रि ७।९ वादने। भद्रा ५।२२ (दि.८।५१) उ. ३४।२६ (रा.८।२८) या. (मर्त्य-स्वर्ग)। मकर संक्रान्ति जन्य पुण्यकालः। यावद्दिनम्। (खिचड़ी) पर्वः। पोंगल (द.भा.)(ग)
२६	२९	८ शनि.	३	३०	दिन	८	६	अश्विनी	३०	१९	रात	६	५०	सिद्ध	९	३९	दिन	१०	३४	बव	३	३०	बा	३२	२	सौम्य	१६	२३	२	२६				६	४२	५	१८	२१	२	९	१	९	५५	६१	१९	+	७	१	८	शाकम्भरी देवी (पीठ) पूजन यात्रा नवरात्रश्च प्रारम्भः। रवियोगः ३०।१९ (रा.६।५०) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३०।१९ (रा.६।५०) उ.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः३।३०(दि.८।६)उ.।
२६	३२	९/१० रवि.	०/५३	३३/९	प्रातः	६/४	५५/२३	भरणी	२८	३१	रात	६	६	साध्य/शुभ	४/५३	५/४५	प्रातः	८/५	२०/५०	कौ	०	३३	ते/गर	२८/५६	११/९	कालदण्ड	१७	२४	३	२७	वृष	४२	५०	६	४२	५	१८	२१	५२	९	२	११	१४	६१	१९	+	७	२	१३	वृषराशिः रात्रि ११।५० वादने। साम्ब दशमी १०। सूर्य पूजा १० (उड़ीसा)। रवियोगः यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ०।३३ (प्रातः ६।५५) या.। (घ) उ. ५१।५९ (रा.३।३९) या.।
२६	३४	११ सोम	५१	५९	रात	३	२९	कृत्तिका	२५	४९	सायं	५	१	शुक्ल	५०	५७	रात	३	३	व	२४	४	वि	५१	५९	स्थिर	१८	२५	४	२८				६	४१	५	१९	२०	४०	९	३	१२	३३	६१	१८	+	८	३	२१	भद्रा २४।४ (दि.४।१९) उ. ५१।५९ (रा.३।२९) या. (स्वर्ग)। पुत्रदा एकादशी ११ व्रतम् स्मार्त्तानाम्। मन्वादिः ११। सोपपदा ११। सर्वार्थसिद्धियोगः २५।४९ (सा.५।१) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २५।४९ (सा.५।१)(घ)
२६	३६	१२ मंगल	४६	४२	रात	१	२२	रोहिणी	२२	२९	दिन	३	४१	ब्रह्म	४३	३४	रात	१२	६	बव	१९	२१	बा	४६	४२	मातंग	१९	२६	५	२९	मिथुन	५०	३५	६	४१	५	१९	२०	२८	९	४	१३	५१	६१	१७	+	८	४	२८	मिथुनराशिः रात्रि २।५५ वादने। वैष्णवानामैकादशी व्रतम्। कूर्म द्वादशी १२। श्रीरामलला पुनर्प्रतिष्ठा द्वादशी १२ (अयोध्याय)। पश्चिम दिशायाम् बुधोदयः। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।२९ (दि.३।४१) उ.। भौमे(ङ)
२६	३८	१३ बुध.	४१	२	रात	११	५	मृगशिरा	१८	४०	दिन	२	८	ऐन्द्र	३५	५३	रात	९	१	कौ	१३	५२	ते	४१	२	अमृत	२०	२७	६	३०				६	४०	५	२०	२०	१५	९	५	१५	८	६१	१६	+	८	५	३२	प्रदोष व्रतम् १३। सर्वार्थसिद्धियोगः १८।४० (दि.२।८) या.। रवियोगः १८।४० (दि.२।८) उ.। (च) सर्वार्थसिद्धियोगः १०।२५ (दि.१०।४९) या.।
२६	४०	१४ गुरु.	३५	९	रात	८	४३	आर्द्रा	१४	३६	दिन	१२	२९	वैधृति	२८	२	सायं	५	५३	गर	८	५	व	३५	९	काण	२१	२८	७	१	कर्क	५६	२८	६	३९	५	२१	२०	२	९	६	१६	२४	६१	१६	+	९	६	२९	कर्कराशि रात्रि शेष ५।१४ वादने। भद्रा ३५।९ (रा.८।४३) उ. (स्वर्ग-मर्त्य)। राष्ट्रीय माघ मासारम्भः।⊙अभिजित् प्रवेशो रविः २३।३६ (दि.४।२)। सर्वार्थसिद्धियोगः १४।३६ (दि.१२।२९) उ.। रवियोगः १४।३६(दि.१२।२९या.।
२६	४३	१५ शुक्र.	२९	१७	सायं	६	२२	पुनर्वसु	१०	२५	दिन	१०	४९	विष्कुम्भ	२०	१०	दिन	२	४३	वि	२	१२	बव/बा	२८/५५	२७/५७	लुम्बक	२२	२९	८	२				६	३९	५	२१	१९	४९	९	७	१७	४०	६१	१५	+	९	+	+	भद्रा २।१२ (प्रा.७।३२) या.। स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। पौषी पूर्णिमा १५। शाकम्भरी जयन्ती १५। शाकम्भरी नवरात्र समाप्तिः। प्रयागे माघ मेला, कल्पवास-माघ स्नान, यम नियम संयमारम्भः।(च)

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.११ सोमे–भद्रा रात्रि ३।२९ वादनात्परं रोहिण्यां रेखा ७ लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं ९ पंचेष्टाभावः। **ति.१२ भौमे**-रोहिण्यां रेखा ७ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१८।।(श.दा.) दिवा ३।४१ वादनात्परं मृगशिरायां सूर्यवेधः। **ति.१३ बुधे**–दिवा २।८ वादनम् यावत् मृगशिरायां सूर्यवेधः।

(ग) विट्ठ (आसाम)। गंगा सागरे प्रयागे त्रिवेणी काश्यां दशाश्वमेधे गोदावर्याम् सर्वत्र गंगा नद्यां च स्नानम्। तिल चावल मृदग्मोदक कम्बल उपानह आदि दानम्। **सौर माघ मासारम्भः। गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (प्राचीन–तिथिमत)।** सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो३१।८(रा.७।९)या.। तदुपरि सर्वार्थसिद्धियोगः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ शु.	८	२५	१४	४३	४	१६	१२	३५	२	१	८	२७	११	२४	९८	२३	४	१	३८	९	४	५१	७	६	१५	२८	६३	०	११	१४	२४	४९	३	०	९	२८	७	२२
२ श.	९	७	१७	२३	४	१६	१४	३६	१	१०	८	२८	४९	४७	९८	४९	४	१	३३	१८	५	२	७	७	१८	२८	६३	२५	११	१४	२७	४९	३	६	९	२८	४	११
३ र.	९	१९	२६	४	४	१६	१५	४६	व.१	४०	९	०	२८	३६	९९	८	४	१	२८	१६	५	१२	७	८	२१	५३	६३	५२	११	१४	३०	५५	३	१४	९	२८	१	१
३ सो.	१०	१	४६	४१	४	१६	१५	६	१	१५	९	२	७	४४	९९	२१	४	१	२३	४	५	२०	७	९	२४	४५	६४	८	११	१४	३४	९	३	२१	९	२७	५७	५०
४ मं.	१०	१४	१८	३५	४	१६	१३	५१	१	५०	९	३	४७	५	९९	४८	४	१	१७	४४	५	२५	७	१०	२९	५३	६४	३२	११	१४	३७	३०	३	३२	९	२७	५४	३९
५ बु.	१०	२७	४	२०	४	१६	१२	१	२	१७	९	५	२६	५३	१००	६	४	१	१२	१९	५	३०	७	११	३४	२५	६४	५४	११	१४	४१	२	३	४०	९	२७	५१	२८
६ गु.	११	१०	५	१४	४	१६	९	४४	२	४४	९	७	६	५९	१००	३१	४	१	६	४९	५	३८	७	१२	३९	१९	६५	३	११	१४	४४	४२	३	४९	९	२७	४८	१७
७ शु.	११	२३	२२	२८	४	१६	७	०	३	३५	९	८	४७	३०	१००	४७	४	१	१	११	५	४५	७	१३	४४	२२	६५	२६	११	१४	४८	३१	३	५५	९	२७	४५	६
८ श.	०	६	५२	३१	४	१६	३	२५	४	४३	९	१०	२८	१७	१०१	५	४	०	५५	२६	५	५६	७	१४	४९	४८	६५	४०	११	१४	५२	२६	४	०	९	२७	४१	५५
९ र.	०	२०	३४	५३	४	१५	५८	४२	५	३८	९	१२	९	२२	१००	५२	४	०	४९	३०	६	४	७	१५	५५	२८	६५	५७	११	१४	५६	२६	४	६	९	२७	३८	४४
११ सो.	१	४	१६	२७	४	१५	५३	४	६	४	९	१३	५०	१४	१००	४१	४	०	४३	२६	६	१३	७	१७	१	२५	६६	४	११	१५	०	३२	४	१०	९	२७	३५	३३
१२ मं.	१	१८	१६	४४	४	१५	४७	०	६	५१	९	१५	३०	५५	१००	२५	४	०	३७	१३	६	२८	७	१८	७	२९	६६	१८	११	१५	४	४२	४	१२	९	२७	३२	२२
१३ बु.	२	२	२२	५३	४	१५	४०	९	७	३४	९	१७	११	२०	९९	१६	४	०	३०	४५	६	४०	७	१९	१३	४७	६६	३३	११	१५	८	५४	४	१५	९	२७	२९	११
१४ गु.	२	१६	३०	८	४	१५	३२	३५	७	५६	९	१८	५०	३६	९८	२२	४	०	२४	५	६	४९	७	२०	२०	२०	६६	४१	११	१५	१३	९	४	१७	९	२७	२६	०
१५ शु.	३	०	४०	३	४	१५	२४	३९	९	२०	९	२०	२८	५८	९८	०	४	०	१७	१६	६	५७	७	२१	२७	१	६६	५२	११	१५	१७	२६	४	२०	९	२७	२२	५०

फलम्–तृतीया तिथि की वृद्धि हुई है तथा दशमी तिथि का क्षय भी हो गया है, इस प्रकार पक्ष १५ दिन का है। पौष का महीना एवं कोहरा पाला तुषार पात का आपस में गहरा प्राकृतिक नाता है। शनिवार श्रवण नक्षत्र का चन्द्र दर्शन मु.३० बाजार भाव को स्थिर रखेगा। मादक द्रव्य तिल, घी में मन्दी चलेगी। **मकर राशि** में सूर्य का प्रवेश १४/१५ जनवरी की रात ३।३९ बजे से होगा इसलिए **मकर संक्रान्ति से सम्बन्धित स्नान-दान एवं खिचड़ी का प्रसिद्ध पर्व १५ जनवरी शुक्रवार** को मनाया जायेगा। भगवान भास्कर उत्तरायण हो जायेंगे तथा विवाहादि शुभ कार्यों के लिये मुहूर्त्त मिलने लगेगा। इसमें सर्वत्र गंगा नदी, प्रयाग की त्रिवेणी, काशी एवं सबसे बढ़कर गंगा सागर का स्नान अत्यन्त पुण्यफलकारक माना गया है। ऊनी वस्त्र दुशाला कम्बल, जूता, धार्मिक पुस्तकें विशेषकर **पंचाग का दान** विशेष पुण्यफल कारक होता है। इस पर्व को पूरे देश में अपनी स्थानीय परम्परा एवं रीति रिवाज के साथ मनाया जाता है। **पुत्रदा एकादशी व्रत** का मान **स्मार्त्त गृहस्थों** के लिए १८ जनवरी सोमवार को जबकि **वैष्णव जन** १९ जनवरी मंगलवार को इस एकादशी का व्रत करेंगे। **प्रदोष** का व्रत २० जनवरी बुधवार को किया जायेगा। **स्नान दान** एवं व्रत सहित पूर्णिमा **पौषी पूर्णिमा** २२ जनवरी शुक्रवार को होगी। पौष पूर्णिमा से ही प्रयाग में माघ मेला कल्पवास●

पं.४१ पौष शुक्ल ८ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७०
अयनांशाः २४/१३/५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	४	९	४	७	११	९	३
१	६	१६	१०	०	१४	१४	२७	२७
९	५२	३	२८	५५	४९	५२	४१	४१
५५	३१	२५	१७	२६	४८	२६	५५	५५
६१	८९३	४ ४३	१०१	५ ५६	६५	४	३	३
१९	१०	व	५	व	४०	०	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-पू.फा. सिंहराशौ ३ रवितः वक्री। बुधः-२ शनितः मकरराशौ रात्रि १।१५ वादने। गुरुः-(वक्री) मघायां सिंह राशौ। शुक्रः-वृश्चिक राशौ। शनिः-उ.भा.४ चरणे। राहुः-धनिष्ठा २ चरणे केतुश्च-श्लेषा ४ चरणे।

पौष शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिथि वार	१ शु. घं.	मि.	२ श. घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	३ सो घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	५ बु. घं.	मि.	६ गु. घं.	मि.	लग्नांत तिथि वार	७ शु. घं.	मि.	८ श. घं.	मि.	९ र. घं.	मि.	११ सो. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	१४ गु. घं.	मि.	१५ शु. घं.	मि.
धनु	७	१३	७	१०	७	७	७	३	६	५९	६	५४	६	५०	मकर	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१७	८	१३	८	९	८	५
मकर	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	कुम्भ	१०	३	९	५९	९	५५	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६
कुम्भ	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	मीन	११	३१	११	२७	११	२३	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४
मीन	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	मेष	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२
मेष	१	३७	१	३३	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	वृष	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९
वृष	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१९	३	१५	३	११	मिथुन	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	१	४	५७	४	५३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मिथुन	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	कर्क	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०
कर्क	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	सिंह	९	५२	९	४९	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४
सिंह	१०	१९	१०	१५	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	कन्या	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७
कन्या	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	तुला	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३
तुला	२	४८	२	४४	२	४०	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	वृश्चिक	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०
वृश्चिक	५	५	५	१	४	५७	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	धनु	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शुक्रे**–पूर्वाषाढ़ायाम् आ.प्रसूति स्नानं **जलयंत्र** कर्म दिवा ८।४५ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् **गर्भाधानं** रात्री लग्नं ५ वा ६ जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवजण बीजवपनं धान्यच्छेदन वृक्षारोपणः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ शनौ**–उत्तराषाढ़ायाम् श्रवणे नीलमदिरत्न कृष्ण वस्त्र धारणं, इष्टिका निर्माणं श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३ रवौ**–श्रवणे पुंसवनं सीमन्तः लालवस्त्र प्रवालरत्नधारणं शल्यकर्म (आपरेशन) इष्टिका निर्माणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं दिवा १।४१ वादनात्परं धनिष्ठायां प्रसूति स्नानं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं औषधिसेवन। **तिथि ३ सोमे**–धनिष्ठा-शतभिषाया रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ भौमे**–रिक्ता भद्रा दिवा ८।४ वादनात्परं शतभिषायां लालवस्त्र धारण-शल्यकर्म (आपरेशन) सायं ५।१९ वादनात्परं पूर्वाभाद्रपदे प्रसूति स्नानं पुंसवनं सीमन्तः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ५ बुधे**–पूर्वाभाद्रपदे धान्यच्छेदन धान्यस्थापनं जलयंत्रकर्म मुकदमा कार्य पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ६ गुरौ**–उ.भा. दिवा ९।७ वादनात्परं सप्तम्यां पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणि व्यापारः नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदन, वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ सेवारम्भ आवेदन पत्र लिखनं, इष्टिका निर्माणं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ७ शुक्रे**–भद्रा दिवा ८।५१ वादनात्पूर्व रेवत्यां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, चौलमुण्डनं ल.११, अक्षरारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः **वधूप्रवेशः ल.११** हलप्रवहणं बीजवपनं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यसनाद्युपभोग, आवेदनपत्र लेखनं, औषधि निर्माणं, सेवनं च भद्रा रात्रि८।२८ वादनात्परं अश्विन्यां वाहनक्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं।

पं.४२ पौष शुक्ल १५ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७६
अयनांशाः २४/१३/६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	४	९	४	७	११	९	३
७	०	१५	२०	०	२१	१५	२७	२७
१७	४०	२४	२८	१७	२७	१७	२२	२२
४०	३	३९	५८	१६	१	२६	५०	५०
६१	७४९	९ २०	९८	६ ५७	६६	४	३	३
१५	२५	व	०	व	५२	२०	११	११



● तथा स्नान दान इत्यादि प्रारम्भ हो जाता है। **शाकम्भरी जयन्ती** २२ जनवरी शुक्रवार को मनाई जायेगी। आज के दिन शाकम्भरी पीठ में भगवती का विशेष पूजन-अर्चन अनुष्ठान किया जाता है। शाकम्भरी पीठ की अपनी मान्यता के अनुसार पौष शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक **शाकम्भरी नवरात्र** मनाया जाता है। **उत्तराषाढ़ा नक्षत्र** का सूर्य ११ जनवरी सोमवार को रात ९।१६ बजे से आयेगा। उड़द, मूंग, चावल, पटसन गुड़, कपास पीपलामूल, लाख पपड़ी मूंज, चावल सरसों का भाव तेज चलेगा। पक्ष के तीन शुक्रवार एवं शुक्रवार की पूर्णिमा बुधादित्य योग पहाड़ों पर भयंकर हिमपात करायेगा। हाड़ कँपा देने वाली सर्दी से जन-जीवन ठिठुर जायेगा।

तिथि ८ शनौ–रिक्ता दिवा ८।६ वादनात्पूर्व अश्विन्यां कृष्णवस्त्र धारणं, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं रिक्तायां रोगविमुक्त स्नानं। **तिथि ९/१० रवौ**–रिक्ता प्रातः ६।५५ वादनात्परं भरण्यां इष्टिका दहनं। **तिथि ११ सोमे**–भद्रा दिवा ४।१९ वादनात्पूर्व कृत्तिकायां वरवरणं–कन्यावरणं, धान्यच्छेदन। **तिथि १२ भौमे**–रोहिण्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा मिथुन चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ बुधे**–दिवा २।८ वादनात्पूर्व मृगशिरायां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **चौलमुण्डनं वरवरणं कन्यावरणं** विपणि व्यापारः वाहनक्रयः सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं **गृहारम्भः ल.११, सर्वदेव प्रतिष्ठा** जलाशयवाटिकारम्भ नूतनवध्वा पाककर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १४ गुरौ**–आर्द्रायाम् रिक्तायां रोगविमुक्त स्नानं। **तिथि १५ शुक्रे**–भद्रा दिवा ७।३२ वादनात्परं पुनर्वसौ पुष्ये जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं **चूल्हीस्थापनं** जलयंत्र कर्म शस्त्रधारण आवेदन पत्र लेखनं भूमिक्रयः वाहनक्रयः **गृहारम्भः ल.२** सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः औषधि निर्माणं सेवनं च पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं।

राशिफल

मेष-	धनदः
वृष-	शोकः
मिथुन-	पीड़ा
कर्क-	पुत्रोन्नति
सिंह-	धनलाभः
कन्या-	अर्थागमः
तुला-	धन प्राप्तिः
वृश्चिक-	सुखं शत्रुनाशः
धनु-	लाभः
मकर-	धनागमः
कुम्भ-	धर्माचरणं
मीन-	सुखलाभः

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ माघ कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं याम्यगोलः शिशिर ऋतुः। दि.२३ जनवरी - ६ फरवरी सन् २०२७ ई. (राष्ट्रीय माघ ३ - १७)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
२६	४५	१	शनि.	२३	३७	दिन	३	५५	पुष्य	६	२०	दिन	९	१०	प्रीति	१२	२७	दिन	११	३७	को	२३	३७	तै	५१	२	मित्र	२३	१	९	३				६	३८	५	२२	१९	३५	९	८	१८	५५	६१	१४	+	९	६	३९	फसली माघ मासारम्भः। 'माघे मूलिकाम्त्यजंत्।' यायि (मुद्दई) जयद् योगः ६।२० (दि.९।१०) उ. २३।३७ (दि.३।५५) या.। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती (२३ जनवरी)।
२६	४८	२	रवि.	१८	२६	दिन	२	०	श्लेषा मघा	२ ५६	११ ४१	प्रातः	७ ६	४३ ३६	आयुष्मान सौभाग्य	५ ५३	० ०	प्रातः	८ ५	३८ ७	गर	१८	३६	व	४६	२	वज्र	२४	२	१०	४	सिंह	२	३९	६	३८	५	२२	१९	२१	९	९	२०	९	६१	१३	+	९	७	४५	सिंहराशि प्रातः ७।४२ वादने। भद्रा ४६।२ (रा.१।३)उ.(मर्त्य)।⊙श्रवण नक्षत्रे रविः ४०।० (रा.१०।३८)। मृत्युबाणः ४०।० (रा.१०।३८) उ.। यमघंट योगः ५६।४९ (रा.शे.६।२६)या.।
२६	५०	३	सोम.	१३	३९	दिन	१२	५	पूर्वाफा.	५७	८	रात	५	२८	शोभन	५१	३८	रात	३	१७	वि	१३	३९	बव	४१	४४	ध्वज	२५	३	११	५				६	३७	५	२३	१९	७	९	१०	२१	२२	६१	१२	+	१०	८	४८	भद्रा १३।३९ (दि.१२।५) या.। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.८।४८) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। 'गणेश चौथ इति लोके प्रसिद्धम्।' अद्य गणेशोत्पत्तिः। तिलकुटी४।(क)
२६	५३	४	मंगल	९	५०	दिन	१०	३३	उत्तराफा.	५५	३४	रात	४	५१	अतिगण्ड	४५	५६	रात	१२	५९	बा	९	५०	को	३८	२२	धाता	२६	४	१२	६	कन्या	११	४५	६	३७	५	२३	१८	५२	९	११	२२	३४	६१	११	+	१०	९	४९	कन्याराशिः दिवा ११।१९ वादने। भारतीय गणतन्त्र दिवसः। ध्वजोत्तोलनम् राष्ट्रगानं सैन्य बल प्रदर्शनम्।
२६	५६	५	बुध	६	५४	दिन	९	२३	हस्त	५५	३	रात	४	३८	सुकर्मा	४१	४	रात	११	३	तै	६	५४	गर	३५	२८	आनन्द	२७	५	१३	७				६	३७	५	२३	१८	३७	९	१२	२३	४६	६१	१०	+	१०	१०	४७	सर्वार्थसिद्धियोगः ५५।३ (रा.४।३८) या.। (क) वक्रतुण्ड चतुर्थी ४। 'माघ कृष्ण चतुर्थ्यांतु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।⊙ अभिजित् समाप्ति रविः३२।१५(रा.७।३१)। मृत्युबाणः ३९।१०(रा.१०।१७)या.।
२६	५८	६	गुरु.	५	३	दिन	८	३७	चित्रा	५५	४५	रात	४	५४	धृति	३७	६	रात	९	२७	व	५	३	वि	३४	४५	चर	२८	६	१४	८	तुला	२५	२४	६	३६	५	२४	१८	२२	९	१३	२४	५६	६१	९	+	११	११	४५	तुलाराशिः दिवा ४।४६ वादने। भद्रा ५।३ (दि.८।३७) उ. ३४।४५ (रा.८।३०) या. (पाताले)। रवियोगः ५५।४५ (रा.४।५४) या.।
२७	१	७	शुक्र	४	२६	दिन	८	२२	स्वाती	५७	४१	रात	५	४०	शूल	३४	११	रात	८	१६	बव	४	२६	बा	३४	४६	गद	२९	७	१५	९				६	३६	५	२४	१८	६	९	१४	२६	५	६१	८	+	११	१२	४२	सर्वाप्ति सप्तमी७। स्वामी रामानन्दाचार्य जयन्ती ७। स्वामी विवेकानन्द जयन्ती ७ (तिथिमतानुसारेण)। अष्टका श्राद्धम् ८।
२७	४	८	शनि.	५	६	दिन	८	३७	विशाखा	६०	०	स	म	स्त	गण्ड	३२	१३	रात	७	२८	को	५	६	तै	३६	८	शुभ	३०	८	१६	१०	वृश्चिक	४५	८	६	३५	५	२५	१७	५०	९	१५	२७	१४	६१	७	+	११	१	३९	वृश्चिक राशिः रात्रि १२।३८ वादने। शनि-रिक्ता समायोग सिद्धयोगः ५।६ (दि.८।३७) उ.। अन्वष्टका श्राद्धम्।
२७	७	९	रवि.	७	११	दिन	९	२७	विशाखा	०	५६	दिन	६	५७	वृद्धि	३१	१६	रात	७	५	गर	७	११	व	३८	४४	उत्पात	३१	९	१७	११				६	३५	५	२५	१७	३३	९	१६	२८	२१	६१	६	+	११	२	३५	भद्रा ३८।४४ (रा.१०।५) उ. (स्वर्गे)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ०।५६ (प्रातः ६।५७) उ. ७।११ (दि.९।२७) या.।
२७	१०	१०	सोम	१०	१८	दिन	१०	४१	अनुराधा	५	१६	दिन	८	४०	ध्रुव	३१	११	रात	७	२	वि	१०	१८	बव	४२	२६	मानस	१	१०	१८	१२				६	३४	५	२६	१७	१६	९	१७	२९	२७	६१	५	+	११	३	२९	भद्रा १०।१८ (दि.१०।४१) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५।१६ (दि.८।४०) या.।
२७	१३	११	मंगल	१४	३४	दिन	१२	२३	ज्येष्ठा	१०	४०	दिन	१०	४९	व्याघात	३१	५०	रात	७	१७	बा	१४	३४	को	४७	४	मुद्गर	२	११	१९	१३	धनु	१०	४०	६	३३	५	२७	१७	०	९	१८	३०	३२	६१	४	+	१२	४	१९	धनुराशिः दिवा १०।४९ वादने। षट्तिला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। मृत्युबाणः २९।५० (सा.६।२९) उ.।
२७	१६	१२	बुध	१९	३४	दिन	२	२३	मूल	१६	४४	दिन	१	१५	हर्षण	३२	५५	रात	७	४३	तै	१९	३४	गर	५२	१५	ध्वज	३	१२	२०	१४				६	३३	५	२७	१६	४२	९	१९	३१	३६	६१	३	+	१२	५	४	प्रदोष व्रतम् १२। तिल द्वादशी १२ अत्र तिलोत्पत्तिः। यमघंटयोगः १६।४४ (दि.१।१५) या.। मृत्युबाणः २८।४६ (सा.६।३) या.।
२७	१९	१३	गुरु	२४	५६	दिन	४	३०	पूर्वाषाढ़ा	२३	१५	दिन	३	५०	वज्र	३४	२०	रात	८	१६	व	२४	५६	वि	५७	३७	धाता	४	१३	२१	१५	मकर	३९	५३	६	३२	५	२८	१६	२५	९	२०	३२	३९	६१	१	+	१२	५	४५	मकरराशिः रात्रि १०।२९ वादने। भद्रा २४।५६ (दि.४।३०) उ. ५७।३७ (रा.५।३५) या. (पाताले)। मास शिवरात्रि व्रतम् १३।
२७	२२	१४	शुक्र	३०	१८	रात	६	३९	उत्तराषाढ़ा	२९	४८	रात	६	२७	सिद्धि	३५	३८	रात	८	४८	श	३०	१८	च	६०	०	आनन्द	५	१४	२२	१६				६	३२	५	२८	१६	७	९	२१	३३	४०	६१	०	+	१२	६	२२	सर्वार्थसिद्धियोगः २९।४८ (रा.६।२७) उ.।
२७	२५	३०	शनि.	३५	११	रात	८	३५	श्रवण	३५	५१	रात	८	५१	व्यतिपात	३६	३५	रात	९	९	च	२	४४	ना	३५	११	स्थिर	६	१५	२३	१७				६	३१	५	२९	१५	४८	९	२२	३४	४०	६१	०	+	१२	+	+	स्नानदान श्रादादौ अमा ३० पुण्यतमा। मौनी अमावस्या ३०। मौन व्रताचारेण स्नानम् विधेयम्। प्रयागे त्रिवेणी, काश्यां दशाश्वमेधे वा पश्चिम वाहिनी गंगायाम् स्नानम्।(ख)

(ख) मन्वादिः ३०। त्रिवेणी अमावस्या (उड़ीसा)।⊙ धनिष्ठा नक्षत्रे रविः ४५।५० (रा.१२।५१)। शनि अमावस ३०। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।५१ (रा.८।५१) या.।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.२ रवौ–प्रातः ७।४२ वादनात्परं मघायां रेखा ८ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा दिवा लग्नं ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४।। वा लग्नं गोधूलिः रात्रि १०।३८ वादनात्परं मृत्युबाणः।

ति.३ सोमे-रात्रि शेष ५।२८ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां रेखा ८ लग्नं ९ पंचेष्टाभावः।

ति.४ भौमे-उ.फा. रेखा ८ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ५ इ.६ ग्र.व.वि. १५।। वा लग्नं ६ इ.५ ग्र.व.वि.१० वा ल.८ इष्टः ६ ग्र.व.वि.१३ रात्रि ४।५१ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे शनिवेधः।

ति.५ बुधे-हस्त नक्षत्रे शनिवेधः।

ति.६ गुरौ–रात्रि ४।५४ वादनात्परं स्वात्यां रेखा ७ लग्नं ९ पंचेष्टाभावः।

ति.७ शुक्रे–स्वात्यां रेखा ७ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। (अष्ट.चं.दा.) वा दिवा लग्नं ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। (सप्त.श.दा.) वा ल.७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं ९ पंचेष्टाभावः।

ति.९ रवौ—प्रातः ६।५७ वादनात्परं अनुराधायां रेखा ८ दिवा लग्नं १२ इ.५ ग्र.व.वि.११।। वा दिवा लग्नं ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ ल.५ पंचेष्टाभावः रात्रि १०।५ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः।

ति.१० सोमे—अनुराधायां रेखा८ भद्राव्याप्तिः।

ति.११ भौमे—दिवा १०।४९ वादनात्परं मूले रेखा ६ दिवा लग्नं ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। सायं ६।२९ वादनात्परं मृत्युबाणः।

ति.१२ बुधे—मूले मृत्युबाणव्याप्तिः।

ति.१३ गुरौ—दिवा ३।५० उ.षा. भद्राव्याप्तिः।

ति.१४ शुक्रे—उ.षा. रेखा ७ दिवा ल.३ इ.५ ग्र.व.वि. ११ (अष्ट.चं.दा.)। तत्परं मासान्तः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	श.	३	१४	५०	१८	४	१५	१५	१९	१०	१	९	२२	६	५८	९७	४१	४	०	१०	१९	७	४	७	२२	३३	५३	६७	०	११	१५	२१	४०	४	२२	९	२७	१९	४०
२	र.	३	२९	४४	३५	४	१५	५	१८	११	४९	९	२३	४४	३९	९७	११	४	०	३	१५	७	११	७	२३	४०	५३	६७	९	११	१५	२६	८	४	२५	९	२७	१३	२९
३	सो.	४	१३	२६	४१	४	१४	५३	२९	१२	२९	९	२५	२१	५०	९६	३३	३	२९	५६	४	७	१७	७	२४	४८	२	६७	२५	११	१५	३०	३३	४	२६	९	२७	१३	१८
४	मं.	४	२७	४	२०	४	१४	४१	०	१३	५२	९	२६	५८	२३	९६	१८	३	२९	४८	४७	७	२५	७	२५	५५	२७	६७	३०	११	१५	३४	५९	४	२९	९	२७	१०	७
५	बु.	५	१०	३०	८	४	१४	२७	८	१४	१६	९	२८	३४	४१	९५	३५	३	२९	४१	२२	७	३०	७	२७	२	५७	६७	३८	११	१५	३९	२८	४	३४	९	२७	६	५६
६	गु.	५	२३	४२	२५	४	१४	१२	५२	१४	३५	१०	०	१०	१६	९३	२०	३	२९	३३	५२	७	३३	७	२८	१०	३५	६७	४८	११	१५	४४	२	४	३८	९	२७	३	४५
७	शु.	५	६	४०	३९	४	१३	५८	१७	१४	५७	१०	१	४३	३६	९०	४६	३	२९	२६	११	७	३७	७	२९	१८	२३	६७	५६	११	१५	४८	४०	४	४४	९	२७	०	३४
८	श.	६	१९	२१	१८	४	१३	४३	२०	१५	९	१०	३	१४	२२	८८	११	३	२९	१८	४२	७	४०	८	०	२६	११	६८	१	११	१५	५३	२४	४	५०	९	२६	५७	२४
९	र.	६	३	२	४२	४	१३	२८	११	१५	३१	१०	४	४२	३३	८१	२५	३	२९	११	२	७	४२	८	१	३४	२०	६८	१२	११	१५	५८	१४	४	५२	९	२६	५४	१३
१०	सो.	७	१५	३२	२९	४	१३	१२	४०	१६	२२	१०	६	३	५८	७०	३२	३	२९	३	२०	७	४३	८	२	४२	३२	६८	२३	११	१६	३	६	४	५५	९	२६	५१	२
११	मं.	७	२८	४७	१४	४	१२	५६	२८	१७	२९	१०	७	१४	३०	६२	१८	३	२८	५५	३७	७	४५	८	३	५०	५५	६८	३२	११	१६	८	१	५	०	९	२६	४७	५१
१२	बु.	८	१०	५५	२६	४	१२	३८	४९	१८	३५	१०	८	१६	४८	५९	४१	३	२८	४८	५२	७	४६	८	४	५९	२७	६८	४५	११	१६	१३	१	५	४	९	२६	४४	४०
१३	गु.	८	२२	५७	१४	४	१२	२०	१४	१९	११	१०	९	१६	२९	५५	५०	३	२८	४१	६	७	४८	८	६	८	१२	६८	५८	११	१६	१८	५	५	९	९	२६	४१	२९
१४	शु.	९	३	५९	४६	४	१२	१	३	१९	४८	१०	१०	१२	१९	४५	३०	३	२८	३३	१६	७	५१	८	७	१७	१०	६९	५	११	१६	२३	१४	५	१५	९	२६	३८	१८
३०	श.	९	१५	७	२४	४	११	४१	१५	२०	३४	१०	१०	५७	४९	३०	२९	३	२८	२५	२५	७	५३	८	८	२६	१५	६९	२३	११	१६	२८	२९	५	२०	९	२६	३५	७

फलम्–यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन शनिवार एवं शनिवार की अमावस्या देश के लिये भारी पड़ेगी। दैवी-प्राकृतिक या अन्य किसी आपदा से धन-जन को काफी क्षति पहुँच सकती है। **'गणेश-चौथ'** के नाम से प्रचलित संकष्टी **श्रीगणेश चतुर्थी** व्रत का मान २५ जनवरी सोमवार को होगा। गणितागत चन्द्रोदय का समय काशी में रात ८।४८ बजे है अतः उसके बाद चन्द्रमा के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाने पर इस व्रत का पूजन एवं चन्द्रमा को अर्घ्य देकर इसको सम्पन्न किया जायेगा। आज ही के दिन **गणेश जी की उत्पत्ति** मानी गई है। इसे **तिलकुटी एवं वक्रतुण्ड चतुर्थी** भी कहते हैं। पुत्र की दीर्घायु की कामना से माताएँ इसे श्रद्धा एवं विश्वास के साथ करती है। **सर्वाप्ति सप्तमी एवं सन्त स्वामी श्री रामानन्दाचार्य** की जयन्ती तथा तिथि मत से स्वामी **विवेकानन्द** की जयन्ती २९ जनवरी शुक्रवार को मनाई जायेगी। **षटतिला एकादशी** व्रत का मान सबके लिए २ फरवरी मंगलवार को है। इस एकादशी में तिलयुक्त जल से स्नान करने, पिसे हुए तिल का उबटन लगाने, तिलो से हवन करने, तिल युक्त जल को पीने एवं तिलों का दान करने से ● समस्त पापों का नाश हो जाता है। **प्रदोष का व्रत** ३ फरवरी बुधवार को किया जायेगा। **मासशिवरात्रि** का व्रत ४ फरवरी गुरुवार को किया जायेगा। **स्नान दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या, मौनी अमावस्या** ६ फरवरी शनिवार को होगी। मौनव्रत रखकर स्नान किया जायेगा। तीर्थराज प्रयाग, काशी के दशाश्वमेध तथा पश्चिम वाहिनी गंगा में आज के दिन का स्नान-दान विशेष पुण्यफलकारक माना गया है। काशी चन्दौली के चन्द्रावती-बलुआ घाट-पश्चिम वाहिनी गंगा में आज का स्नान-दान का विशेष पुण्यफलकारी होता है। **श्रवण नक्षत्र** का सूर्य २४ जनवरी रविवार को रात १०।३८ बजे से आवेगा। पक्षान्त ६ फरवरी शनिवार को **धनिष्ठा नक्षत्र** का सूर्य रात १२।५१ बजे से आवेगा। मंहगाई बढ़ जायेगी।

पं.४३ माघ कृष्ण ८ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३८४ अयनांशाः २४/१३/७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	४	१०	३	८	११	९	३
१५	१९	१३	३	२९	०	१५	२६	२६
२७	२१	४३	१४	१८	२६	५३	५७	५७
१४	१८	२०	२२	४२	१९	२४	२४	२४
६१	७५८	१५	८८	७	६८	४	३	३
७	२०	९ व	११	४० व	१	५०	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-(वक्री) पू.फा.सिंह राशौ ९ रवितः वक्रगत्या मघा ४ चरणे रात्रि ७।१० वादने। **बुधः**-मकरे ४ बुधतः कुम्भ राशौ रात्रि शेष ६।० वादने। **गुरुः**-(वक्री) २ रवितः वक्रगत्या कर्क राशौ रात्रि ११।३० वादने। **शुक्रः**-वृश्चिक राशौ ७ शुक्रतः मूल नक्षत्रे धनुराशौ रात्रि १०।१० वादने। **शनिः**-उ.भा. ४ चरणे। **राहुः**-धनिष्ठा २ चरणे **केतुश्च**- श्लेषा ४ चरणे १३ गुरुतः। **राहुः**- धनिष्ठा १ चरणे **केतुश्च**- श्लेषा ३ चरणे।

माघ कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

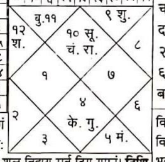
लग्नांत ति.वा.	१ श. घं.	मि.	२ र. घं.	मि.	३ सो. घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	५ बु. घं.	मि.	६ गु. घं.	मि.	७ शु. घं.	मि.	८ श. घं.	मि.	९ र. घं.	मि.	१० सो. घं.	मि.	११ मं. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१३ गु. घं.	मि.	१४ शु. घं.	मि.	३० श. घं.	मि.
मकर	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१८	७	१४	७	१०	७	६
कुम्भ	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७
मीन	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५
मेष	१२	३८	१२	३४	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४६
वृष	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०
मिथुन	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कर्क	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११
सिंह	९	२०	९	१६	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५
कन्या	११	३३	११	२९	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८
तुला	१	४९	१	४५	१	४१	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४
वृश्चिक	४	६	४	२	३	५८	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११
धनु	६	११	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५०	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ शनौ–पुष्ये नीलमादिरत्न कृष्ण वस्त्र धारणं शस्त्र निर्माणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं इष्टिका निर्माणं। **तिथि २ रवौ**–श्लेषा मघायां जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्य इष्टिका दहनं। **तिथि ३ सोमे**–पूर्वाफाल्गुन्यां भद्रा–रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ भौमे**–रिक्ता दिवा १०।३३ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ५ बुधे**–हस्त नक्षत्रे गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ६ जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्या नासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं लग्नं** २, अक्षरारम्भ विद्यारम्भः **उपनयनं ल.११ वा २ वरवरवरणं कन्यावरणं**, विपणिव्यापारः वाहनक्रयः दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं इक्षुवपनं, धान्यच्छेदन नृत्यगीत वाद्यकलारम्भं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं सर्वदेवप्रतिष्ठा **जलाशयवाटिकारम्भः** दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ गुरौ**–चित्रायां भद्रा दिवा ८।३७ वादनात्पूर्व जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्यानासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं लग्नं ११** (ति.दा.), अक्षरारम्भ विद्यारम्भः **वधूप्रवेश ल.११**, विपणिव्यापार दीक्षाग्रहणं हलप्रवहण,इक्षुवपनं, शस्त्रधारण **सर्वदेवप्रतिष्ठा लग्नं ११। तिथि ७ शुक्रे**–स्वात्यां आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं **चौलमुण्डनं ल.११** विद्यारम्भः वरवरणं कन्यावरणं **वधूप्रवेशः ल.११ वा २** दीक्षाग्रहणं वाहनक्रयः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं इक्षुवपनं आवेदन पत्र लेखनं **सर्वदेव प्रतिष्ठा ल.११ वा २**, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८ शनौ**–विशाखायां इष्टिका दहनं दिवा ८।३७ वादनात्परं रिक्ताव्याप्तिः। **तिथि ९ रवौ**–रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं दिवा ९।२७ वादनात्परं अनुराधायां प्रसूति स्नानं। **तिथि १० सोमे**–अनुराधायां भद्रा व्याप्तिः भद्रा दिवा १०।४१ वादनात्परं ज्येष्ठायां नामकरणं **चौलमुण्डनं ल. २**, अक्षरारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः गवां क्रय-विक्रय कणमर्दनं नूतनबध्वा पाककर्म। **तिथि ११ भौमे**–ज्येष्ठायां शस्त्र निर्माणं दिवा १०।४९ वादनात्परं मूले पुंसवनं सीमन्तः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १२ बुधे**–मूले–नामकरणं विद्यारम्भ पूर्वाषाढ़ायाम् **वरवरण कन्यावरणं**, दीक्षाग्रहण जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्य पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १३ गुरौ**–भद्रा दिवा ४।३० वादनात्पूर्व पूर्वाषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं **वरवरणं कन्यावरणं** दीक्षाग्रहणं धान्यच्छेदनं जलयंत्रकर्म मुकदमाकार्यं भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १४ शुक्रे**–रिक्ता व्याप्तिः **तत्परं मासान्तः**।

पं.४४ माघ कृष्ण ३० शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९१ अयनांशाः २४/१३/८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	४	१०	३	८	११	९	३
२२	१५	११	१०	२८	८	१६	२६	२६
३४	७	४१	५७	२५	२६	२८	३५	३५
४०	२४	१५	४९	२५	१५	२९	७	७
६१	७५८	२० ३४	३०	७	६९	५	३	३
०	४०	व	२९	५३	२३	२०	११	११



राशिफल

मेष- संकट
वृष- धन वृद्धि
मिथुन- [illegible]
कर्क- गमनम्
सिंह- रिपुजय
कन्या- दैन्य
तुला- रोग
वृश्चिक- [illegible]
धनु- हानिः [illegible]
मकर- स्थान [illegible]
कुम्भ- द्रव्यनाश
मीन- [illegible]

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ माघ शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं याम्य गोलः शिशिर ऋतुः। दि.७ - २० फरवरी सन् २०२७ ई. (रा.माघ १८ - फाल्गुन १)

माघ शुक्ल ति.	वार	तिथि घ.प. / दि.घं.मि.	नक्षत्र	नक्षत्र घ.प. / दि.घं.मि.	योग	योग घ.प. / दि.घं.मि.	करण	औदायिक योग	तारीखें	चन्द्र राशि प्रवेश	सूर्योदय	सूर्यास्त	र.क्रां.	स्पष्ट सूर्यः	गति	रे.अं.	चन्द्रास्त
१	रवि.	[illegible]	धनिष्ठा	[illegible]	वरीयान	[illegible]	[illegible]	मातंग	७	कुम्भ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६ २६
२	सोम.	[illegible]	शतभिषा	[illegible]	परिघ	[illegible]	[illegible]	अमृत	८		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७ १९
३	मंगल	[illegible]	पूर्वाभाद्र	[illegible]	शिव	[illegible]	[illegible]	काण	९	मीन [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८ १२
४	बुध.	[illegible]	उत्तराभाद्र	[illegible]	सिद्ध	[illegible]	[illegible]	लुम्बक	१०		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९ ५
५	गुरु	[illegible]	रेवती	[illegible]	साध्य	[illegible]	[illegible]	मित्र	११	मेष [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० १
६	शुक्र	[illegible]	अश्विनी	[illegible]	शुभ	[illegible]	[illegible]	वज्र	१२		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ०
७	शनि	[illegible]	भरणी	[illegible]	शुक्ल	[illegible]	[illegible]	ध्वांक्ष	१३		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२ २
८	रवि	[illegible]	कृत्तिका	[illegible]	ब्रह्म	[illegible]	[illegible]	धूम्र	१४	वृष [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१ ६
९	सोम	[illegible]	रोहिणी	[illegible]	ऐन्द्र	[illegible]	[illegible]	प्रवर्धमान	१५		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ १२
१०	मंगल	[illegible]	मृगशिरा	[illegible]	विष्कुम्भ	[illegible]	[illegible]	राक्षस	१६	मिथुन [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ १५
११	बुध.	[illegible]	आर्द्रा	[illegible]	प्रीति	[illegible]	[illegible]	मुसल	१७		६ २४	५ ३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	+१२	४ १३
१२	गुरु.	[illegible]	पुनर्वसु	[illegible]	आयुष्मान	[illegible]	[illegible]	सिद्धि	१८	कर्क १७ १६	६ २३	५ ३७	११ ५१	१० ४ ४४ ४८	६० ४०	+१२	५ ५
१३	शुक्र.	[illegible]	पुष्य	[illegible]	सौभाग्य	[illegible]	[illegible]	उत्पात	१९		६ २२	५ ३८	११ ३०	१० ५ ४५ ३८	६० ३८	+१२	५ ५०
१४/१५	शनि.	[illegible]	श्लेषा	[illegible]	शोभन	[illegible]	[illegible]	मानस	२०	सिंह २३ २२	६ २२	५ ३८	११ ८	१० ६ ४६ ६	६० ३७	+१२	+ +

कुम्भराशिः दिवा ९।५४ वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। **गुप्त नवरात्रारम्भः** गुप्त रुपेण पूजा-साधनाविधेयम्। **वल्लभाचार्य जयन्ती १।** यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३९।२० (रा.१०।१४)या.।

चन्द्र दर्शनम् मु.१५ जघन्या महर्घताकरम्। सम श्रृंगम् समताकरम्। **(घ)** ५०।२७ (रा.२।३८) या.। शुक्रे नन्दा सिद्धयोगः ४१।५३ (रा.११।१२) या.।

मीनराशिः रात्रि ७।३५ वादने। **मु.रमजान ९ हिजरी सन् १४४८।** सर्वार्थसिद्धियोगः ४८।३३ (रा.१।५४) उ.। भौमे-जया सिद्धयोगः ४४।९ (रा.१२।९) या.। रवियोगः ४८।३३**(क)**

भद्रा १४।५ (दि.१२।६) उ. ४४।१ (रा.१२।४) या. (मर्त्य)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। सोपपदा ४ वेदारम्भानध्यायः। उमा चतुर्थी ४ व्रतम्। तिल ४। कुन्द पुष्पैः(ख)**

मेषराशिः रात्रि २।५२ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। **बसन्त पञ्चमी ५। श्रीपञ्चमी ५।** वाणी पूजा, वागीश्वरी जयन्ती। सर्वत्र सरस्वती पूजनोत्सवः। तक्षक पूजा। रतिकाममहोत्सवः।**(ग)**

मन्दार षष्ठी ६ (भविष्योत्तरे) **दारिद्र्यहरण षष्ठी ६** (स्कन्दपुराण)। **शीतला षष्ठी** (बंगाल)। मृत्युबाणः २०।१० (दि.२।३१) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५०।२७ (रा.२।३८) या.। रवियोगः**(घ)**

भद्रा ३८।४९ (रा.९।५८) उ. (स्वर्ग)। **अचला सप्तमी ७। रथसप्तमी ७।** आरोग्य सप्तमी ७। अरुणोदय स्नानम्। सूर्यरथोत्सवः। मन्वादिः ७। **पश्चिम दिशायाम् बुधास्तः।(ङ)**

वृषराशिः दिवा ७।४२ वादने। भद्रा ६।४९ (दि.९।१०) या.। **भीष्माष्टमी ८।** भीष्माय श्राद्धम् तर्पणञ्च सन्तति लाभाय। **सौर फाल्गुन मासारम्भः।** मृत्युबाणः १८।३२ (दि.१।५१)उ.।

महानन्दानवमी९। ब्रह्मनायक श्रीहरसूब्रह्मदेव जयन्ती उत्सवः (चैनपुर, रोहतास)स्थाने मेलोत्सवः दर्शन पूजनम् च। **गुप्त नवरात्र समाप्तिः।** सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। सर्वार्थाऽमृतसिद्धि**(च)**

मिथुनराशिः दिवा १०।५५ वादने। भद्रा ५१।५२ (रा.३।९) उ. (स्वर्ग)। रवियोगः ३९।२६ (रा.१०।१०) या.। यमघंट योगः ३९।२६ (रा.१०।१०) उ.। **(क)** (रा.१।५४) उ.।

भद्रा १९।३ (दि.२।१) या.। **जया एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। भैमी एकादशी ११। (ख)** सदाशिवपूजनम्। काश्यां दुण्ढिराज पूजन दर्शनञ्च। रवियोगः ५०।२३ (रा.२।३७) या.।

कर्कराशिः दिवा १।१७ वादने। **प्रदोष व्रतम् १२। भीष्म द्वादशी १२।** भीष्मोद्देशेन श्राद्धम् तर्पणञ्च दीर्घायुलाभाय। **वाराहद्वादशी १२।** तिल द्वादशी १२। तिलेन श्रीविष्णु पूजनम्।**(छ)**

⊙**शतभिषा नक्षत्रे रविः** ५४।५५ (रा.४।१६)। रवियोगः २७।९ (सा.५।१४) या.। कल्पादिः १३।

सिंहराशिः दिवा ३।४३ वादने। भद्रा १।३२ (प्रातः ६।५९) उ. २८।७ (सायं ५।३७) या. (मर्त्य)। **स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। माघी पूर्णिमा १५। राजराजेश्वरी(ज)**

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

फलम्

फलम्—यह पक्ष १४ दिन का ही होगा क्योंकि पूर्णिमा तिथि क्षयवती हो गई है। सोमवार शतभिषा नक्षत्र का चन्द्रदर्शन मु.१५, दूध, दही, छेना, पनीर घी, रिफाईन्ड इत्यादि दैनिक खाद्य सामाग्रियों का भाव बढ़ जायेगा। पूरे माघ मे गंगा स्नान करने मे असमर्थ श्रद्धालु जन यदि तीन दिन भी गंगा स्नान कर ले तो पूरे मास भर का पुण्यफल प्राप्त हो जाता है। माघ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक **गुप्त नवरात्र** का मान होता है इसमें साधक गुप्त रूप से सिद्धि प्राप्त करने के लिए भगवती की आराधना अनुष्ठान करते हैं। **माँ सरस्वती** के विद्यादायिनी स्वरूप की पूजा-प्रतिष्ठा आराधना का पर्व **बसन्त पञ्चमी** ११ फरवरी गुरुवार को मनाया जायेगा। वागीश्वरी जयन्ती, वाणी पूजा, बसन्तोत्सव, रतिकाम महोत्सव के साथ विद्यानुरागी श्रद्धालुगण माँ सरस्वती की प्रतिमा स्थापित कर उत्सव पूर्वक पूजा अर्चना करेंगे। यह प्रकृति के उत्सव का भी पर्व है। **अचला सप्तमी, रथसप्तमी** १३ फरवरी शनिवार को है। **भीष्माष्टमी** १४ फरवरी रविवार को है इसमें सनातन धर्म के सार्वभौमिक-सर्वकालिक पूर्वज भीष्म पितामह का श्राद्ध तर्पण सन्तान प्राप्ति के निमित्त किया जाता है। **महानन्दा नवमी** का मान १५ फरवरी सोमवार को होगा। आज ब्रह्मनायक **श्री हरसूब्रह्मदेव** की जयन्ती उनके धाम चैनपुर रोहतास में दर्शन-पूजन मेलोत्सव के साथ मनायी जायेगी। **जया एकादशी व्रत** का मान सबके लिए १७ फरवरी बुधवार को होगा। इसे **भैमी एकादशी** भी कहते हैं। **प्रदोष** का व्रत १८ फरवरी गुरुवार को किया जायेगा। आज **भीष्म द्वादशी** में भीष्म को उद्देश्य कर श्राद्ध तर्पण करने से दीर्घायु की प्राप्ति होती है। **स्नान दान एवं श्राद्ध** सहित क्षयवती **पूर्णिमा** २० फरवरी शनिवार को होगी। आज ही **राजराजेश्वरी ललिता देवी** की जयन्ती एवं **सन्त रविदास** की जयन्ती भी मनाई जायेगी। सन्त रविदास की जन्मस्थली काशी के **सीर गोवर्धन** नामक स्थान तक शोभायात्रा निकाली जायेगी एवं विभिन्न समारोह सम्पन्न होंगे। **माघी पूर्णिमा** में तिल कम्बल आदि का दान पुण्यफलदायक माना जाता है। कुम्भ राशि की **सूर्य संक्रान्ति** १३ फरवरी शनिवार को दिन २।१० बजे से आयेगी। मंहगाई बढ़ने के योग हैं। **शतभिषा** नक्षत्र का सूर्य १९ फरवरी शुक्रवार को रात ४।१६ बजे से आयेगा। १३ फरवरी के आसन्न मौसम करवट लेगा। बूंदा-बांदी पानी बरसने मघवदरिया की सम्भावना है।

पं.४५ माघ शुक्ल ८ रवी सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३९९ अयनांशाः २४/१३/९

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	४	१०	३	८	११	९	३
०	२९	८	१०	२७	१७	१७	२६	२६
४१	१२	४८	१०	२१	४४	१३	९	९
५०	२५	२४	३३	५७	५३	५६	४०	४०
६०	८३३	२२	५०	७	७०	६	३	३
४७	५०	५२ व	४५ व	५४ व	२१	१०	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-(वक्री) मघा नक्षत्रे ४ चरणे वक्रगत्या ४ बुधतः मघा ३ चरणे रात्रि १।३५वादने। **बुधः**-कुम्भराशौ ३ भौमतः वक्री। **गुरुः**-(वक्री) श्लेषायां कर्क राशौ। **शुक्रः**-धनुराशौ। **शनिः**-२ सोमतः रेवत्यां दिवा ९।२० वादने। **राहुः**-धनिष्ठा १ चरणे **केतुश्च**-श्लेषा ३ चरणे।

माघ शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिं.वा.	१र. घं.	मि.	२सो घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु घं.	मि.	७श घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	८र. घं.	मि.	९सो. घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु घं.	मि.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श घं.	मि.
मकर	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	कुम्भ	८	५	८	१	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२
कुम्भ	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	मीन	९	३३	९	२९	९	२५	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०
मीन	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	मेष	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८
मेष	११	३९	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	वृष	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५
वृष	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२१	१	१७	१	१३	मिथुन	३	२२	३	१८	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९
मिथुन	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	कर्क	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कर्क	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	सिंह	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०
सिंह	८	२१	८	१७	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८	कन्या	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३
कन्या	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	तुला	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९
तुला	१२	५०	१२	४६	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	वृश्चिक	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६
वृश्चिक	३	७	३	३	२	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	धनु	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१
धनु	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	मकर	६	३०	६	२६	६	२२	६	१९	६	१५	६	११	६	७

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ रवौ**—धनिष्ठायां प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः **उपनयनं ल. २** (ति.दा.) लालवस्त्रधारणं हलप्रवहणं इक्षुवपनं नृत्यगीत-वाद्यकलारम्भः दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदनपत्र लेखनं। **तिथि २ सोमे**—शतभिषायां **गर्भाधानं** रात्रौ लग्नं ६ अन्नप्राशनं नृत्यगीतावाद्यकलारम्भः **उपनयनं ल. २** गवां क्रय विक्रय दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं इक्षुवपनं जलयन्त्रकर्म आवेदन पत्र लेखनं सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः नूतनवध्वापाककर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ३ भौमे**—पूर्वाभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारण पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ४ बुधे**—रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। रिक्ता रात्रि १२।४ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे गर्भाधानं। **तिथि ५ गुरौ**—रेवत्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं **कर्णवेधः** कन्यानासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं ल. ११ वा २** अक्षरारम्भ **उपनयनं ल. ११ वा २, वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेशः ल. ११ वा २** विपणि-व्यापारः नववस्त्राभूषणधारण दीक्षाग्रहण हलप्रवहणं इक्षुवपनं नृत्यगीत-वाद्यकलारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं भूमिक्रयः वाहनक्रयः सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयावाटिकारम्भ नूतनवध्वापाककर्म उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ६ शुक्रे**—अश्विन्यां-आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं **कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं चौलमुण्डनं ल. ११ वा २** (ति.दा.) अक्षरारम्भ विद्यारम्भः **उपनयनं ल. ११ वा २,** वधूप्रवेशः ल. ११ वा २ विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहण वाहनक्रयः आवेदनपत्र लेखनं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ७ शनौ**—भरण्यां इष्टिका दहनं शस्त्र निर्माण। **तिथि ८ रवौ**—भद्रा दिवा ९।१० वादनात्परं कृत्तिकायां **वरवरणं कन्यावरणं** लालवस्त्रधारणं धान्यच्छेदनं इष्टिका दहनं। **तिथि ९ सोमे**—रिक्ता सायं ६।२६ वादनात्परं रोहिण्यां-मृगभे गर्भाधानं जातकर्मः नामकरणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ **वरवरणं कन्यावरणं वधू प्रवेश द्विरागमनं** ल.गोधूलि विपणिव्यापारः वाहनक्रयः दीक्षाग्रहण आभूषण निर्माण धारणं च सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोग आवेदनपत्र लेखन **गृहारम्भः गृहप्रवेशः लग्नं गोधूलि.,** सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः नूतनवध्वापाककर्म औषधि निर्माण सेवनं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १० भौमे**—मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं शल्यकर्म दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ११ बुधे**—भद्रा दिवा २।१ वादनात्परं आर्द्रायाम् कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदन अक्षरारम्भ विद्यारम्भः उपनयनं ल.३ मुकदमा कार्य रात्रि ८।२४ वादनात्परं पुनर्वसौ **द्विरागमनं** ल.६, पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ गुरौ**—पुनर्वसौ पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध-कन्यानासिकाच्छेदनं चौलमुण्डनं ल.१२, अक्षरारम्भः विद्यारम्भ नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ **उपनयनं ल. १२ वा २ द्विरागमनं ल. १२ वा २** चूल्हीस्थापनं सर्वदेव प्रतिष्ठा नववस्त्रधारण, दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं इक्षुवपनं शय्यासनाद्युपभोगं सायं ६।५३ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे **गृहारम्भः गृहप्रवेशः** लग्नं गोधूलिः वाहनक्रयः दिग् शूल विहाय सर्वदिग् यात्रा। **तिथि १३ शुक्रे**—रिक्ता दिवा ९।१५ वादनात्पूर्व पुष्य नक्षत्रे जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **कर्णवेध-कन्यानासिकाच्छेदनं चौलमुण्डन** अक्षरारम्भः विद्यारम्भ नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः **द्विरागमनं वधूप्रवेश ल. १२** विपणिव्यापारः नववस्त्राभूषण धारणं दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं **इक्षुवपनं चूल्ही स्थापन,** सेवारम्भ, जलयंत्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं भूमि क्रयः **गृहारम्भः गृहप्रवेशः ल. ११,** औषधि निर्माणं सेवनं च, दिग् शूल विहा सर्व दिग् गमनं। **तिथि १४/१५ शनौ**—भद्रा सायं ५।३७ वादनात्परं मघायां इष्टिका दहनं, शस्त्र निर्माण।

पं.४६ माघ शुक्ल १४ शनी सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४०५ अयनांशाः २४/१३/१०

र.	सा.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	४	१०	३	८	११	९	३
६	२४	६	४	२६	२४	१७	२५	२५
४६	४६	२४	७	३४	४८	५२	५०	५०
६	४७	१३	४७	५०	३०	१८	३५	३५
६०	८५८	२४	६१	७	७०	६	३	३
३७	५	१९ व	३५ व	४५ व	५०	३६	११	११



(ग) आम्रमञ्जरी भक्षणम्। लेखनी पूजन (बंगाल)। पुष्पाञ्जलि व्रतारम्भः (जैन)। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। रवियोगः ५१।१ (रा.२।५२) उ.। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः४३।५३ (रा.१२।१) या.। मृत्युबाणः २१।० (दि.२।५२) उ.। **(ङ)**⊙ **सं.कुम्भ राशौ रविः** १९।२० (दि.२।१०)। मु.१५ जघन्या महर्घता करम्। पूर्वा पराः १६ घट्यःपुण्याः। गो-अन्न-तिल आदि दानम् गोदावर्याम् स्नानम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३८।४९ (रा.९।५८) या.। **(च)** योगो ४३।१० (रा.११।४१) उ.। रवियोगः यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३०।३ (रा.६।२६) या.। मृत्युबाणः १७।४५ (दि.१।३१) या.। **(छ)** सोपपदा १२ वेदारम्भानध्यायः। माघे दिन त्रयंऽपिस्नानं विधेयम् पूर्णमासस्य स्नान फल प्राप्ति हेतवः। सर्वार्थसिद्धियोगः ३१।१४ (रा.६।५३) या. तदुपरि गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ रवियोगः ३१।१४ (रा.६।५३) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १३।७ (दि.११।३८) उ. ३१।१४ (रा.६।५३) या.। **(ज) ललिता देवी जयन्ती १५। सन्त रविदास जयन्ती १५।** शोभायात्रा। काश्यां सीर गोवर्धन जन्मस्थाने महोत्सवः। माघ स्नान, प्रयागे माघ मेला कल्पवास यम-नियम संयम समाप्तिः। **राष्ट्रीय फाल्गुन मासारम्भः।** रवियोगः २३।२२ (दि.३।४३) या.।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.३ भौमे—रात्रि १।५४ वादनात्परं उ.भा. रेखा ९ लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं ९ पंचेष्टाभावः। **ति.४ बुधे**-भद्रा दिवा १२।६ वादनात्पूर्वं उ.भा. रेखा ९ दिवा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। वा दिवा लग्नं १२ इ.५ ग्र.व.वि.११।। वा दिवा लग्नं १ पंचेष्टाभावः वा भद्रा रात्रि १२।४ वादनात्परं लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं ८ इ.५ ग्र.व.वि.१२ वा रात्रि २।३७ वादनात्परं रेवत्यां शनियुतिः रेखा ७ लग्नं ९ पंचेष्टाभावः। **ति.५ गुरौ**-रेवत्यां शनियुतिः रेखा ७ मृत्युबाणः दिवा २।५२ वादनात्पूर्वं लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। वा दिवा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। वा दिवा लग्नं १ पंचेष्टाभावः वा दिवा लग्नं २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा दिवा लग्नं ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११। **ति.८ रवौ**-रात्रि १२।५८ वादनात्परं रोहिण्यां मृत्युबाणः।

ति.९ सोमे-मृत्युबाण दिवा १।३१ वादनात्परं रोहिण्यां वैधृतिः रेखा ६ आ.लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ ल.७ इ.५ ग्र.व.वि.१० (चं.दा.) वा रात्रि ११।४१ वादनात्परं मृग.रेखा८ पंचेष्टलग्नाभावः।

ति.१० भौमे-मृगशिरायां रेखा ८ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१५।। (श.दा.) वा लग्नं २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२।

ति.१४/१५ शनौ-भद्रा सायं ५।३७ वादनात्परं मघायां भौमयुतिः रेखा ७ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ आ.लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (सप्त श.दा.) वा लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ तत्परं पंचेष्टलग्नाभावः।

राशिफल

मेष-	सुखलाभः
वृष-	कष्ट लाभ च
मिथुन-	शोकः
कर्क-	शत्रुभयं
सिंह-	पुत्रोन्नति
कन्या-	धनागमः
तुला-	अर्थागमः
वृश्चिक-	धनप्राप्तिः
धनु-	सुख लकुन्नतः
मकर-	धनागमः
कुम्भ-	अर्थागमः
मीन-	धनांचरणं

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ फाल्गुन कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनम् याम्यगोलः शिशिर ऋतुः। दिनांक २१ फरवरी - ८ मार्च सन् २०२७ ई. (रा.फाल्गुन २ - १७)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
२८	१५	१	रवि.	५१	३६	रात	२	५९	मघा	२०	६	दिन	२	२३	अतिगण्ड	१४	२२	दिन	१२	६	बा	२३	९	कौ	५१	३६	मुद्गर	२१	१	८	२				६	२१	५	३९	१०	४७	१०	७	४६	४३	६०	३५	+	१२	६	२७	**फसली फाल्गुन मासारम्भः**। यमघंट योगः २०।६ (दि.२।२३) या.।
२८	१९	२	सोम.	४७	४८	रात	१	२७	पूर्वाफाल्गु	१७	३२	दिन	१	२१	सुकर्मा	७	४८	दिन	९	२७	ते	२०	४२	गर	४७	४८	ध्वज	२२	२	९	३	कन्या	३२	६	६	२०	५	४०	१०	२५	१०	८	४७	१८	६०	३३	+	१२	७	२९	**कन्याराशिः** रात्रि ७।११ वादने। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४७।४८ (रा.१।२७) उ.।
२८	२२	३	मंगल.	४४	५४	रात	१२	१८	उत्तराफा	१५	४८	दिन	१२	३९	शूल	१ ५४	५६ ५६	प्रातः	७ ८	५ ४	व	१६	२१	वि	४४	५४	धाता	२३	३	१०	४				६	२०	५	४०	१०	३	१०	९	४७	५१	६०	३१	+	१२	८	३०	भद्रा १६।२१ (दि.१२।५२) उ. ४४।५४ (रा.१२।१८) या. (पाताले)। **मृत्युबाणः** १३।१५ (दि.११।३८) उ.। भौमे जया सिद्धयोगः ४४।५४ (रा.१२।१८) या.।
२८	२६	४	बुध.	४३	६	रात	११	३३	हस्त	१५	४	दिन	१२	२१	गण्ड	५२	४०	रात	३	२३	बव	१४	०	बा	४३	६	आनन्द	२४	४	११	५	तुला	४५	१८	६	१९	५	४१	९	४९	१०	१०	४८	२२	६०	३०	+	१२	९	३०	**तुलाराशिः** (रा.१२।२६)वादने। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्**। चन्द्रोदये (रा.९।३०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। मृत्युबाणः १२।३८ (दि.११।२२) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः १५।४(दि.१२।२१)या.
२८	३०	५	गुरु	४२	३३	रात	११	१९	चित्रा	१५	३१	दिन	१२	३०	वृद्धि	४९	२७	रात	२	५	कौ	१२	४९	ते	४२	३३	चर	२५	५	१२	६				६	१८	५	४२	९	१९	१०	११	४८	५२	६०	२८	+	१२	१०	३०	यायि (मुद्दई) जयद् योगः १५।३१ (दि.१२।३०) उ. ४२।३३ (रा.११।१९) या.। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ४२।३३ (रा.११।१९) या.। **पूर्व दिशायाम् बुधोदयः**।
२८	३३	६	शुक्र	४३	१६	रात	११	३५	स्वाती	१७	१३	दिन	१	१०	ध्रुव	४९	१५	रात	१	११	गर	१२	५५	व	४३	१६	गद	२६	६	१३	७				६	१७	५	४३	८	५७	१०	१२	४९	२०	६०	२६	+	११	११	२९	भद्रा ४३।१६ (रा.११।३५) उ. (पाताले-स्वर्गे)। दोष संघविनाशको रवियोगः १७।१३ (दि.१।१०) उ.।
२८	३७	७	शनि	४५	२३	रात	१२	२६	विशाखा	२०	९	दिन	२	२१	व्याघात	४६	४	रात	१२	४२	वि	१४	१९	बव	४५	२३	शुभ	२७	७	१४	८	वृश्चिक	४	२५	६	१७	५	४३	८	३५	१०	१३	४९	४६	६०	२४	+	११	१२	२६	**वृश्चिक राशिः** दिवा ८।३ वादने। भद्रा १४।१९ (दि.१२।१) या.। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर ४५।२३ (रा.१२।२६) या.। रवियोगः २०।९ (दि.२।२१) या.। यायि (मुद्दई) जयद्(क)
२८	४०	८	रवि.	४८	३५	रात	१	४२	अनुराधा	२४	१६	दिन	३	५८	हर्षण	४५	४३	रात	१२	३३	बा	१६	५९	कौ	४८	३५	मृत्यु	२८	८	१५	९				६	१६	५	४४	८	१३	१०	१४	५०	१०	६०	२२	+	११	१	२२	**अष्टका श्राद्धम् ८**। अद्य श्राद्धस्य सन्तति लाभाय सर्वोपरि। **जानकी जयन्ती ८**। मिथिलायां विशेष उत्सवः। (क) योगः २०।९ (दि.२।२१) उ. ४५।२३ (रा.१२।२६) या.।
२८	४४	९	सोम	५२	५१	रात	३	२३	ज्येष्ठा	२९	२८	सायं	६	२	वज्र	४६	१४	रात	१२	४४	ते	२०	४३	गर	५२	५१	पद्म	१	९	१६	१०	धनु	२९	२८	६	१५	५	४५	७	४९	१०	१५	५०	३२	६०	२०	+	१०	२	१३	**धनुराशिः** सायं ६।२ वादने। **अन्वष्टका श्राद्धम्**!
२८	४८	१०	मंगल	५७	५०	रात	५	२२	मूल	३५	२६	रात	८	२४	सिद्धि	४७	१७	रात	१	९	व	२५	२१	वि	५७	५०	छत्र	२	१०	१७	११				६	१४	५	४६	७	२६	१०	१६	५०	५२	६०	१८	+	१०	३	१	भद्रा २५।११ (दि.४।१८) उ. ५७।५० (रा.५।२२) या. (पाताले)।
२८	५१	११	बुध.	६०	०	स	म	स्त	पूर्वाषाढ़ा	४१	५८	रात	११	१	व्यतिपात	४८	४१	रात	१	४३	बव	३०	३२	बा	६०	०	श्रीवत्स	३	११	१८	१२	मकर	५८	३६	६	१४	५	४६	७	४	१०	१७	५१	१०	६०	१६	+	१०	३	४३	**मकरराशिः** रात्रि शेष ५।४१ वादने। **विजया एकादशी ११ व्रतम् स्मार्त्तानाम्**। (ख) ८।३० (दि.९।३६) या.।
२८	५५	११	गुरु.	३	१४	दिन	७	३१	उत्तराषाढ़ा	४८	३१	रात	१	३७	वरीयान	५०	८	रात	२	१८	बा	३	१४	कौ	३५	५२	सौम्य	४	१२	१९	१३				६	१३	५	४७	६	४१	१०	१८	५१	२६	६०	१४	+	१०	४	२१	**वैष्णवानामेकादशी व्रतम्**। पारणा स्मार्त एकादशी व्रतं दिवा ७।३१ वादनात्परं। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३।१४ (दि.७।३१) या.। मृत्युबाणः ९।३४ (दि.१०।३) उ.।
२८	५९	१२	शुक्र.	८	३०	दिन	९	३६	श्रवण	५४	४२	रात	४	५	परिघ	५१	१४	रात	२	४२	ते	८	३०	गर	४०	५३	धूम्र	५	१३	२०	१४				६	१२	५	४८	६	१८	१०	१९	५१	४०	६०	१२	+	१०	४	५६	**प्रदोष व्रतम् १२**। ⊙ **पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रविः** ९।२० (दि.९।५६)। मृत्युबाणः ९।२० (दि.९।५६) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५४।४२ (रा.४।५) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः(ख)
२९	२	१३	शनि.	१३	१६	दिन	११	३०	धनिष्ठा	६०	०	स	म	स्त	शिव	५१	४९	रात	२	५४	व	१३	१६	वि	४५	१६	प्रवर्धमान	६	१४	२१	१५	कुंभ	२७	२८	६	१२	५	४८	५	५४	१०	२०	५१	५२	६०	१०	+	९	५	२८	**कुम्भराशिः** दिवा ५।११ वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। भद्रा १३।१६ (दि.११।३०) उ. ४५।१६ (रा.१२।१८) या. (पाताले-मर्त्ये)। **श्री महाशिवरात्रि व्रतम् १३। कृति वासेश्वर(ग)**
२९	६	१४	रवि.	१७	१४	दिन	१	५	धनिष्ठा	०	१३	प्रात	६	१६	सिद्ध	५१	४०	रात	२	५१	श	१७	१४	च	४८	३९	मातंग	७	१५	२२	१६				६	११	५	४९	५	३१	१०	२१	५२	२	६०	८	+	९	५	५९	**पारणा शिवरात्रि व्रतस्य**। (घ) द्रव्यैः स्त्रीभिर्विधया पति सौख्य वृद्धयैः। शुभवारान्वितेदर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।
२९	१०	३०	सोम.	२०	३	दिन	२	११	शतभिषा	४	४६	दिन	८	४	साध्य	५०	३७	रात	२	२५	ना	२०	३	किं	५०	५५	अमृत	८	१६	२३	१७	मीन	५२	१९	६	१०	५	५०	५	८	१०	२२	५२	१०	६०	६	+	९	+	+	**मीनराशिः** रात्रि ३।६ वादने। **स्नानदान श्राद्धादौ अमा पुण्यतमा ३०। सोमवती अमावस्या ३०**। अश्वत्थमूले प्रणिधाय विष्णुं सम्पूज्य सम्यग्विविधोपचारैः। प्रदक्षिणा भीष्ट फलादि(घ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	र.	४	८	४५	१६	४	५	५९	५४	२३	५०	१०	३	६	१२	६०	५५	३	२६	२७	५	७	४०	८	२५	५९	२०	७०	५३	११	१७	५८	५४	६	३७	९	२५	४७	२५
२	सो.	४	२२	२७	३१	४	५	३६	४	२३	३१	१०	२	५	१७	६०	११	३	२६	१९	२५	७	३६	८	२७	१०	१३	७०	५५	११	१८	५	३१	६	४०	९	२५	४४	१४
३	म.	५	६	९	३७	४	५	१२	३३	२३	१५	१०	१	५	६	५७	५२	३	२६	११	४९	७	३१	८	२८	२१	८	७०	५७	११	१८	१२	११	६	४१	९	२५	४१	३
४	बु.	५	१८	२१	४२	४	४	४९	१८	२३	२	१०	०	७	१४	५१	३७	३	२६	४	१८	७	२६	८	२९	३२	५	७१	०	११	१८	१८	५२	६	४३	९	२५	३७	५३
५	गु.	६	१	३६	३०	४	४	२६	१६	२२	५४	९	२९	१५	३७	४५	१८	३	२५	५६	५२	७	२२	९	०	४३	५	७१	४	११	१८	२५	३५	६	४६	९	२५	३४	४२
६	शु.	६	१५	३६	५२	४	४	३	२२	२२	४०	९	२८	३०	१९	४१	३०	३	२५	४९	३०	७	१९	९	१	५४	९	७१	१०	११	१८	३२	२१	६	४८	९	२५	३१	३१
७	श.	६	२९	२०	२८	४	३	४०	४२	२२	२५	९	२७	४८	४९	३७	४५	३	२५	४२	११	७	१५	९	३	५	१९	७१	१३	११	१८	३९	९	६	५०	९	२५	२८	२०
८	र.	७	११	५१	९	४	३	१८	१७	२२	१३	९	२७	११	४	२५	३४	३	२५	३४	५६	७	१२	९	४	१६	३२	७१	१५	११	१८	४५	५९	६	५१	९	२५	२५	९
९	सो.	७	२४	९	५०	४	२	५६	४	२२	०	९	२६	४५	३०	११	१५	३	२५	२७	४४	७	८	९	५	२७	४७	७१	१९	११	१८	५२	५०	६	५२	९	२५	२१	५८
१०	म.	८	६	१७	३३	४	२	३४	४	२१	४०	९	२६	३४	१५	मा.२	६	३	२५	२०	३६	७	०	९	६	३९	६	७१	२२	११	१८	५९	४२	६	५२	९	२५	१८	४७
११	बु.	८	१८	३१	२५	४	२	१२	२४	२१	१६	९	२६	३६	२१	७	५५	३	२५	१३	३६	६	५०	९	७	५०	२८	७१	२३	११	१९	६	३४	६	५४	९	२५	१५	३६
११	गु.	९	०	३३	४३	४	१	५१	८	२१	०	९	२६	४४	१६	१५	२८	३	२५	६	४६	६	४४	९	९	१	५१	७१	२५	११	१९	१३	२८	६	५५	९	२५	१२	२५
१२	शु.	९	१३	३	३१	४	१	३०	८	२०	४५	९	२६	५९	४४	१८	३३	३	२५	०	२	६	३५	९	१०	१३	१६	७१	२८	११	१९	२०	२३	६	५५	९	२५	९	१४
१३	श.	९	२५	१७	१८	४	१	९	२३	२०	१५	९	२७	१८	१७	२०	३६	३	२४	५३	२७	६	२९	९	११	२४	४४	७१	३२	११	१९	२७	१८	६	५७	९	२५	६	३
१४	र.	१०	७	३१	३९	४	०	४९	८	१८	३८	९	२७	३८	५३	२०	५४	३	२४	४६	५८	६	२१	९	१२	३६	१६	७१	३५	११	१९	३४	१५	६	५८	९	२५	२	५३
३०	सो.	१०	१९	१७	२६	४	०	३०	३०	१६	४२	९	२७	५९	४७	२३	८	३	२४	४०	३७	६	१४	९	१३	४७	५१	७१	३७	११	१९	४१	१३	६	५९	९	२४	५९	४२

पं.४७ फाल्गुन कृष्ण ८ रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४१३
अयनांशाः २४/१३/१२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	४	९	३	९	११	९	३
१४	११	३	२७	२५	४	१८	२५	२५
५०	५१	१८	११	३४	१६	४५	२५	२५
१०	९	१७	४	५६	३२	५९	९	९
६० २२	७४९ १०	२२ १३ व	२५ ३४ व	७ १२ व	७१ १५	६ ५१	३ ११	३ ११

श.१२	११ सू.	शु.बु.१०रा.
१	२	९
	८ चं.	
३	५ मं.	७
के.४गु.		६

भौमादीनां चारः

भौमः-(वक्री) मघायां सिंह राशौ। **बुधः**-(वक्री) कुम्भ राशौ ४ बुधतः वक्रगत्या मकरे दिवा १०।५ वादने। **गुरुः**-(वक्री) श्लेषायां कर्क राशौ। **शुक्रः**-धनु राशौ ४ बुधतः मकरे दिवा ४।४० वादने। **शनिः**-रेवत्यां १ चरणे मीन राशौ। **राहुः**-धनिष्ठा १ चरणे **केतुश्च**-श्लेषा ३ चरणे।

फाल्गुन कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१र. घं.	मि.	२सो घं.	मि.	३मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु घं.	मि.	६शु घं.	मि.	७श. घं.	मि.	८र. घं.	मि.	९सो घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.	११गु. घं.	मि.	१२शु. घं.	मि.	१३श. घं.	मि.	१४र. घं.	मि.	३०सो. घं.	मि.
कुम्भ	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९
मीन	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७
मेष	१०	४४	१०	४०	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५
वृष	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२
मिथुन	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६
कर्क	५	१२	५	८	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१८	४	१४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
सिंह	७	२६	७	२२	७	१८	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	[illegible]	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७
कन्या	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०
तुला	११	५५	११	५१	११	४६	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६
वृश्चिक	२	१२	२	८	२	४	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३
धनु	४	१७	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८
मकर	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४

पं.४८ फाल्गुन कृष्ण ३० सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४२१
अयनांशाः २४/१३/१३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	४	९	३	९	११	९	३
२२	१९	०	२७	२४	१३	१९	२४	२४
५२	१७	३०	५९	४०	४७	४१	५९	५९
१०	२६	३०	४७	३७	५१	१३	४२	४२
६० ६	७४६ ५	१६ ४२ व	२३ ८ मा	६ १४ व	७१ ३७	६ ५८	३ ११	३ ११

१२ श.	सू.११ चं.	शु.१०रा.बु.
१	२	९
	८	
३	५ मं.	७
४गु.के.		६

(ग) **(काशी विश्वनाथ)** दर्शन पूजन जलाभिषेकञ्च। काश्यां चतुर्दश लिंग पूजनम्। **श्रीवैद्यनाथ जयन्ती**। सर्वत्र शिवपूजनम् अभिषेकञ्च। रात्रि जागरणम्। **काश्यां शिव बारात-शोभायात्रा**। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः १३।१६ (दि.११।३०) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १३।१६ (दि.११।३०) या.।

● काशी नगरी का कण-कण, कोना-कोना शिवमय हो जाता है। औघड़दानी बाबा भोलेनाथ के भक्त शिव भक्ति में सराबोर होकर शिव बारात निकालकर, मस्ती में आकर इसको अति उत्साह के साथ मनाते है। शास्त्रीय मान्यता एवं परम्परा के सम्मिलित स्वरुप को मानते हुए आज के दिन बाबा भोलेनाथ का माता पार्वती के साथ विवाह हुआ था। काशी एक अकेली नगरी है जहाँ चतुर्दश शिवलिंगों का पूजन किया जाता है। (प्रसंगवस स्कन्दपुराण) **महाशिव रात्रि व्रत का पारण ७ मार्च** रविवार को प्रातः किया जायेगा। स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या **सोमवती अमावस्या** ८ मार्च को है। सोमवती अमावस्या में सौभाग्यवती स्त्रियाँ पीपल वृक्ष में भगवान विष्णु का निवास मानते हुए विहित मंत्र.. अश्वत्य मूले... का उच्चारण करते हुए १०८ परिक्रमा करती है। **पूर्वाभाद्रपद** नक्षत्र का सूर्य ५ मार्च शुक्रवार को दिन ९।५६ बजे से आवेगा। तेज हवा गरज-चमक के साथ वर्षा होने ओला पत्थर पड़ने के योग मिल रहे है।

फलम्-एकादशी तिथि की वृद्धि हो गई है। जिससे यह पक्ष १६ दिन का हो गया है। पक्ष के तीन रविवार एवं तीन सोमवार शुभाशुभ फलकारक है। पहाड़ों पर बर्फ पड़ेगी जिससे ठिठुरन भरी सर्दी का सिलसिला जारी रहेगा। धूप में तेजी भी आयेगी जिसके कारण ज्वर-बुखार से सम्बन्धित बीमारी भी फैलेगी। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी** व्रत का मान २४ फरवरी बुधवार को होगा चन्द्रोदय **रात ९।३०** बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **जनक नन्दिनी-सीता जी** की जयन्ती २८ फरवरी रविवार को मनाई जायेगी। मिथिलांचल बिहार में इसे पर्व रूप में उत्सव पूर्वक मनाते है। **विजया एकादशी व्रत** का मान स्मार्त-गृहस्थों के लिए ३ मार्च बुधवार को होगी जबकि वैष्णव जन ४ मार्च गुरुवार को इस एकादशी का व्रत करेंगे। **प्रदोष** का व्रत ५ मार्च शुक्रवार को किया जायेगा। **महाशिवरात्रि** का अत्यन्त महत्वपूर्ण व्रतपर्व ६ मार्च शनिवार को मनाया जायेगा। यह **'ॐकार'** शिव के साकार रूप में प्रकट होने की महारात्रि है। विश्वभर में फैले सनातन धर्मी शिवानुरागी भक्तजन इस पर्व को अत्यन्त श्रद्धा एवं विश्वास के साथ दर्शन-पूजन जलाभिषेक, दुग्धाभिषेक कर मनाते है। देश भर के ज्योतिर्लिङ्ग के साथ सभी शिव मन्दिरों में विशेष पूजन-अनुष्ठान का कार्य सम्पन्न होगा। ●

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ रवौ-मघायां जलयंत्रकर्मः, इष्टिकादहनं, दिवा २।२३ वादनात्परं पू.फा. प्रसूति स्नानं। **तिथि २ सोमे**-पूर्वाफाल्गुन्यां आ.प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः रोगबाण दिवा १२।४० वादनात्परं **उपनयनं ल.३**, दिवा १।२१ वादनात्परं उ.फा. रात्रौ **गर्भाधानं ल.७** जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **वरवरण कन्यावरणं वधूप्रवेश-द्विरागमनं ल.३** विपणि व्यापारः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं **इक्षुवपनं** धान्यच्छेदनं चूल्हीस्थापन सेवारम्भः **जलयंत्रकर्म** शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं **गृहारम्भः ल.३** वा गोधूलिः **सर्वदेवप्रतिष्ठा** जलाशयवाटिकारम्भः **नूतन बध्वापाककर्म**। **तिथि ३ भौमे**-भद्रा दिवा १२।५२ वादनात्पूर्व उत्तराफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ४ बुधे**-हस्त-चित्रयोः रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ५ गुरौ**-चित्रायां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कन्यानासिकाच्छेदनं **कर्णवेधः चौलमुण्डनं ल.२** अक्षरारम्भ विद्यारम्भः **उपनयनं ल.१ वा २ वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.११ वा १२** विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं इक्षुवपनं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन लेखनं, गृहारम्भ ल.२ सर्वदेव प्रतिष्ठा दक्षिण दिग् यात्रा दिवा १२।३० वादनात्परं स्वात्यां प्रसूति स्नानं। **तिथि ६ शुक्रे**-स्वात्यां नामकरणं अन्नप्राशनं आ.**चौलमुण्डनं** (ति.दा.) अक्षरारम्भः विद्यारम्भः **वरवरणं कन्यावरणं** वधूप्रवेशः, दीक्षाग्रहणः आभूषण निर्माणं धारणं च सर्वदेवप्रतिष्ठा, वाहनक्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ७ शनौ**-भद्रा दिवा १२।१ वादनात्परं विशाखायां इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ८ रवौ**-अनुराधायां प्रसूति स्नानं **वरवरणं कन्यावरणं** लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ९ सोमे**-रिक्ता रात्रि ३।२३ वादनात्परं मूले **वधूप्रवेशः ल.११ तिथि १० भौमे**-भद्रा दिवा ४।१८ वादनात्पूर्व मूले पुंसवनं सीमन्तः उग्रकर्माचरणं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ११ बुधे**-पूर्वाषाढ़ायाम् विद्यारम्भः वरवरणं कन्या वरणं, दीक्षाग्रहणं जलयन्त्र कर्म रात्रि ११।१ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् **गर्भाधानं गृहारम्भः ल.११। तिथि ११ गुरौ**-उत्तराषाढ़ायाम् रात्रौ **गर्भाधानं ल.८** पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं **वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेशः-द्विरागमनं ल.१२ वा ३** विपणिव्यापारः हलप्रवहण, इक्षुवपनं चूल्ही स्थापनं, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग, आवेदनपत्र लखेनं, इष्टिका निर्माण **गृहप्रवेशः ल.१२ वा २** सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः नूतन बध्वा पाककर्म पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १२ शुक्रे**-श्रवणे-**गर्भाधानं रात्रौ ल.८** अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं** (ति.दा.) अक्षरारम्भ विद्यारम्भः **कन्यावरणं वधूप्रवेश-द्विरागमनं** (त्रयोदशायां) ल.२ आभूषण निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं इक्षुवपनं आवेदन पत्र लेखनं सर्वदेवप्रतिष्ठा, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ शनौ**-रिक्ता भद्रा दिवा ११।३० वादनात्पूर्व धनिष्ठायां कृष्ण वस्त्र धारणं इष्टिका निर्माणं। **तिथि १४ रवौ**-धनिष्ठा शतभिषायां रिक्ता व्याप्तिः **तत्परं मासान्तः**।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१ भौमे-मघायां भौमपूर्तिर्गा ... लग्नं ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ (दिवा ... वादनम् यावत्)। **ति.२ सोमे**-दिवा ... वादनात्परं उ.फा. रेखा ७ दिवा लग्न ३ इष्टा ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (सप्त.श.दा.) वा लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्न ८ इष्टाः ... ग्र.व.वि.१३।। वा ल.९ वा लग्नं १० पंचेष्टाभावः।
ति.३ भौमे-मृत्युबाण दिवा ११।३८ वादनात्पूर्व उ.फा. रेखा ७ दिवा लग्न पंचेष्टाभावः तत्परं हस्त नक्षत्रे मृत्युबाणः ...
ति.४ बुधे-मृत्युबाण दिवा ११।२२ वादनात्... हस्त नक्षत्रे दिवा लग्नं २ पंचेष्टाभावः।
ति.५ गुरौ-दिवा १२।३० वादनात्परं ... सूर्यवेधः। **ति.६ शुक्रे**-दिवा १।१० वादनात्... स्वात्यां सूर्य वेधः। **ति.७ शनौ**-दिवा २।२१ वादनात्परं अनुराधायां रेखा ८ लग्नं ३ पंचेष्टाभावः लग्न ४ पंचेष्टाभाव। वा लग्नं गोधूलिः वा लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१७ वा लग्नं ... इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१६ लग्न ८ वा लग्नं ... पंचेष्टाभावः। **ति.८ रवौ**-दिवा ३।५८ वादनात्... अनुराधायां रेखा ८ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ... ग्र.व.वि.१० वा लग्नं २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०
ति.९ सोमे- सायं ६।२ वादनात्परं मूल नक्षत्रे रेखा ८ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ... ग्र.व.वि.१२ (सप्त.श.दा.) वा लग्नं ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ९ वा १० पंचेष्टाभावः। **ति.१० भौमे**-भद्रा दिवा ४।१८ वादनात्पूर्वं मूल नक्षत्रे ... ८ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा ... लग्नं २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा दिवा लग्नं ३ वा ४ पंचेष्टाभावः। **ति.११ बुधे**-रात्रि ११।१ वादनात्परं उ.षा. रेखा ७ लग्नं ८ इष्टाः ... ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ९ वा १० पंचेष्टाभाव
ति.११ गुरौ-उ.षा. रेखा ७ दिवा ल.१२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ दिवा १०।३ वादनात्पर मृत्युबाण ...

राशिफल

मेष- [illegible]
वृष- [illegible]
मिथुन- [illegible]
कर्क- [illegible]
सिंह- [illegible]
कन्या- [illegible]
तुला- [illegible]
वृश्चिक- [illegible]
धनु- [illegible]
मकर- [illegible]
कुम्भ- [illegible]
मीन- [illegible]

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४८ फाल्गुन शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं याम्यगोलः शिशिर ऋतुः। मीनर्कतः बसन्त ऋतुः।
दि.९ - २२ मार्च सन् २०२७ ई. (राष्ट्रीय फाल्गुन १८ - चैत्र १)

दि.मा. घ. प.	फाल्गुन शुक्ल तिथि ति. वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. द - अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
२९ १४	१ मंगल	२१	४६	दिन	२	५१	पूर्वाभाद्र.	८	१०	दिन	९	२५	शुभ	४८	३६	रात	१	३५	बव	२१	४६	बा	५१	४६	काण	९	१७	२४	१८				६	९	५	५१	४	४४	१०	२३	५२	१६	६०	४	+	९	७	०
२९ १७	२ बुध.	२२	७	दिन	३	०	उत्तराभा.	१०	१६	दिन	१०	१६	शुक्ल	४५	३३	रात	१२	२२	कौ	२२	७	तै	५१	३९	लुम्बक	१०	१८	२५	१९				६	९	५	५१	४	२१	१०	२४	५२	२०	६०	२	+	९	७	५६
२९ २१	३ गुरु.	२१	११	दिन	२	३६	रेवती	११	९	दिन	१०	३६	ब्रह्म	४१	३३	रात	१०	४६	गर	२१	११	व	५०	७	मित्र	११	१९	२६	२०	मेष	११	९	६	८	५	५२	३	५७	१०	२५	५२	२२	५९	५९	+	९	८	५४
२९ २५	४ शुक्र.	१९	३	दिन	१	४४	अश्विनी	१०	५०	दिन	१०	२७	ऐन्द्र	३६	४१	रात	८	४७	वि	१९	३	बव	४७	२७	वज्र	१२	२०	२७	२१				६	७	५	५३	३	३४	१०	२६	५२	२१	५९	५७	+	९	९	५५
२९ २८	५ शनि.	१५	५१	दिन	१२	२६	भरणी	९	२२	दिन	९	५१	वैधृति	३१	०	सायं	६	३०	बा	१५	५१	कौ	४३	४८	ध्वांक्ष	१३	२१	२८	२२	वृष	२३	४९	६	६	५	५४	३	१०	१०	२७	५२	१८	५९	५५	+	९	१०	५९
२९ ३२	६ रवि.	११	४५	दिन	१०	४८	कृत्तिका	७	१०	दिन	८	५८	निष्कुम्भ	२४	३७	दिन	३	५७	तै	११	४५	गर	३९	१८	धूम्र	१४	२२	२९	२३				६	६	५	५४	२	४७	१०	२८	५२	१३	५९	५३	+	८	१२	४
२९ ३६	७ सोम.	६	५०	दिन	८	४९	रोहिणी	४	७	दिन	७	४४	प्रीति	१७	३९	दिन	१	९	व	६	५०	वि	३४	८	प्रवर्धमान	१५	२३	३०	२४	मिथुन	३२	१९	६	५	५	५५	२	२३	१०	२९	५२	६	५९	५१	+	८	१	७
२९ ४०	८/९ मंगल	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	मृगशिरा/आर्द्रा	[illegible]	[illegible]	प्रात	[illegible]	[illegible]	आयुष्मान	१०	१६	दिन	१०	१०	बव	१	२६	बा/कौ	[illegible]	[illegible]	राक्षस	१६	२४	१	२५				६	४	५	५६	१	५९	११	०	५१	५७	५९	४९	+	७	२	५
२९ ४३	१० बुध	४९	४३	रात	१	५६	पुनर्वसु	५२	२१	रात	२	५९	सौभाग्य/शोभन	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	तै	२१	५८	गर	४९	४३	गद	१७	२५	२	२६	कर्क	३८	१७	६	३	५	५७	१	३५	११	१	५१	४६	५९	४६	+	७	२	५७
२९ ४७	११ गुरु	४३	४६	रात	११	३३	पुष्य	४८	१६	रात	१	२१	अतिगण्ड	४७	७	रात	१२	५४	व	१६	४५	वि	४३	४६	शुभ	१८	२६	३	२७				६	३	५	५७	१	१२	११	२	५१	३२	५९	४४	+	७	३	४३
२९ ५१	१२ शुक्र.	३८	३	रात	९	१५	श्लेषा	४४	२४	रात	११	४८	सुकर्मा	३९	३६	रात	९	५२	बव	१०	५४	बा	३८	३	मृत्यु	१९	२७	४	२८	सिंह	४४	२४	६	२	५	५८	०	४८	११	३	५१	१६	५९	४२	+	६	४	२४
२९ ५५	१३ शनि.	३२	४४	रात	७	७	मघा	४१	३	रात	१०	२६	धृति	३२	२४	सायं	६	५९	कौ	५	२३	तै	३२	४४	पद्म	२०	२८	५	२९				६	१	५	५९	०	२४	११	४	५०	५८	५९	४०	+	६	५	१
२९ ५८	१४ रवि.	२८	४	दिन	५	१४	पूर्वाफा.	३८	१४	रात	९	१८	शूल	२५	४५	दिन	४	१८	गर	०	२४	व/वि	२८/५६	४/८	छत्र	२१	२९	६	३०	कन्या	५२	४६	६	०	६	०	०	१	११	५	५०	३८	५९	३७	+	६	५	३६
३० ०	१५ सोम.	२४	१३	दिन	३	४१	उत्तराफा.	३६	२३	रात	८	३३	गण्ड	१९	४५	दिन	१	५४	बव	२४	१३	बा	५२	४६	श्रीवत्स	२२	३०	७	१				६	०	६	०	उ+	२२	११	६	५०	१५	५९	३५	+	५	+	+

चन्द्र दर्शनम् मु.४५ वहती समर्घताकरम्। याम्य श्रृंगम् दुर्भिक्षं। **पयोव्रतारम्भः** दिनात्मकं १२ पुत्रकामनया। फाल्गुन शुक्लपक्षे प्रतिपदारम्भ द्वादश दिन पर्यन्तम्। तच्च भागवते दृष्टव्यम्।(क)

मु.सव्वाल १० हिजरी सन् १४४८। इदुल फितर (ईद) श्रीरामकृष्णपरमहंस जयन्ती २। फुलरिया २। बुध-भद्रा सिद्धयोगः २२।७ (दि.३।०) या.।

मेषराशिः दिवा १०।३६ वादने। पंचक (पचखा) समाप्ति। भद्रा ५०।७ (रा.२।११) उ. (स्वर्ग)। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। रवियोगः ११।९ (दि.१०।३६) उ.। यायि (मुद्दइ) जयद्(ख)

भद्रा १९।३ (दि.१।४४) या.। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः १०।५० (दि.१०।२७) या.। रवियोगः १०।५० (दि.१०।२७) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः(ग)

वृषराशिः दिवा ३।३८ वादने। मृत्युबाणः ८।४२ (दि.९।३५) उ.। रवियोगः ९।२२ (दि.९।५१) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ९।२२ (दि.९।५१) या.। (ग)१०।५० (दि.१०।२७) या.।

मृत्युबाणः ८।४७ (दि.९।३७) या.। रवियोगः ७।१० (दि.८।५८) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ११।४५ (दि.१०।४८) उ.। (क) सर्वार्थसिद्धियोगः ८।१० (दि.९।२५) उ.।

मिथुनराशिः रात्रि ७।० वादने। भद्रा ६।५० (दि.८।४९) उ. ३४।८ (रा.७।४४) या. (स्वर्ग)। सर्वार्थसिद्धियोगः ४।७ (दि.७।४४) या.। तदुपरि सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ।⊙ **सं.मीन**(घ)

सौर चैत्र मासारम्भः। रवियोगः ०।३० (प्रातः ६।१६) उ.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ०।३० (प्रातः ६।१६) या.। यमघंटयोगः ५६।२ (रा.शे.४।४१) या.। **होलाष्टके वर्जितः**(ङ)

कर्कराशिः रात्रि ९।२२ वादने। **लट्ठमार होली** (नन्दगाँव)। रवियोगः ५२।२१ (रा.२।५९) या.। (ज) तत्सम्बन्धित रंगोत्सवः। **राष्ट्रीय चैत्र मासारम्भः। शाके १९४९ प्रारम्भः।**

भद्रा १६।४५ (दि.१२।४५) उ. ४३।४६ (रा.११।३३) या. (मर्त्य)। **आमलकी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। इयमेव रंगभरी एकादशी। श्रीकाशी विश्वनाथ अबीरेण शिवार्चनम्**(च)

सिंहराशिः रात्रि ११।४८ वादने। **सुगति द्वादशी १२। श्रीकृष्ण इति मन्त्र जपनीया। मेला श्रीखाटू रामदेवस्य १२।**

शनि प्रदोष व्रतम् १३। पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। रवियोगः ४१।३ (रा.१०।२६) उ.। शनि-रिक्ता समायोग सिद्धयोगः ३२।४४ (रा.७।७) उ.। (ख) योगः ११।९ (दि.१०।३६) या.।

कन्याराशिः रात्रि ३।६ वादने। भद्रा २८।४ (सा.५।१४) उ. ५६।८ (रा.४।२७) या. (मर्त्य-पाताल)। **व्रताय पूर्णिमा १५।** भद्रा पुच्छे (रा.१२।२६) वादनात्परं (रा.१।३८) वादनम्(छ)

स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। मन्वादिः १५। श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती १५। **श्रीविष्णुदोलोत्सवः। होली-रंगोत्सवः। काश्यां** चतुषष्टी (चौसट्ठी) देवी यात्रा दर्शनम् पूजनम्(ज)

विवाह मुहूर्त विमर्शः

ति.१ भौमे–दिवा ९।२५ वादनात्परं उ.भा. रेखा ९ दिवा लग्नं २ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा रात्रौ लग्नं ८ वा ९ वा १० पंचेष्टाभावः। **ति.२ बुधे**–उ.भा. रेखा ९ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (लग्नस्य न्यूनत्व) वा दिवा १०।१६ वादनात्परं रेवत्यां गोधूलि रेखा ९ दिवा लग्नं २ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं ८ वा लग्नं ९ पंचेष्टाभावः। **ति.३ गुरौ**–रेवत्यां दिवा १०।३६ वादनं यावत् रेखा ९ दिवा ल.२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५। **ति.६ रवौ**–मृत्युबाण दिवा ९।३७ वादनात्परं रोहिण्यां रेखा ८ दिवा लग्नं २ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.११।। वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। तत्परं पंचेष्टा भावः। **ति.७ सोमे**–रोहिण्यां रेखा ८ दिवा लग्नं २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१५।। दिवा ९।३९ वादनात्परं मीनार्कः खरमासः विवाह मुहूर्ताभावः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री क.	वि.	स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री क.	वि.	स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ मं.	[illegible]																																							
२ बु.	[illegible]																																							
३ गु.	[illegible]																																							
४ शु.	[illegible]																																							
५ श.	[illegible]																																							
६ र.	[illegible]																																							
७ सो.	[illegible]																																							
८ मं.	[illegible]																																							
९ मं.	[illegible]																																							
१० बु.	२	२०	४०	४०	३	२८	१४	२२	१०	३९	१०	४	१५	५५	६८	२१	३	२३	४९	२६	४	५३	९	२४	३३	३६	७१	५५	११	२०	४४	२८	७	७	९	२४	३१	४
११ गु.	३	४	४४	५९	३	२८	३	४३	१०	३३	१०	५	२४	१६	७०	३३	३	२३	४४	३३	४	४९	९	२५	४५	३१	७१	५६	११	२०	५१	३५	७	७	९	२४	२७	५३
१२ शु.	३	१८	५०	१७	३	२७	५३	१०	९	३५	१०	६	३४	४९	७२	४४	३	२३	३९	४४	४	४०	९	२६	५७	२७	७१	५९	११	२०	५८	४२	७	१०	९	२४	२४	४२
१३ श.	४	२	५०	३५	३	२७	४३	३५	८	४७	१०	७	४७	३३	७३	१९	३	२३	३५	४	४	२९	९	२८	९	२६	७२	०	११	२१	५	५२	७	१४	९	२४	२१	३१
१४ र.	४	१७	४४	८	३	२७	३४	४८	८	१२	१०	९	०	५२	७३	५२	३	२३	३०	३५	४	१८	९	२९	२१	२६	७२	२	११	२१	१३	६	७	१९	९	२४	१८	२०
१५ सो.	५	१	४६	२४	३	२७	२६	३६	८	०	१०	१०	१४	४४	७४	२६	३	२३	२६	१७	४	३	१०	०	३३	२८	७२	५	११	२१	२०	२५	७	२३	९	२४	१५	९

फलम्–मंगलवार उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का चन्द्रदर्शन मु.४५ दैनिक उपभोग की वस्तुओं तथा वस्त्र कपड़ा इत्यादि में मन्दी का रुख बनेगा। नवमी तिथि का क्षय हो जाने के कारण यह पक्ष १४ दिन का ही है। **पुत्र की कामना** से किया जाने वाला **पयोव्रत** ९ मार्च से प्रारम्भ होकर १२ दिन तक चलेगा। १५ मार्च सोमवार को मीन राशि की सूर्य संक्रान्ति दिन ९।३९ बजे से आ जायेगी और इसी के साथ **खरमास** प्रारम्भ हो जायेगा। विवाहादि शुभ कार्यों के लिए मुहूर्त मिलना स्थगित हो जायेंगे। १६ मार्च मंगलवार से **होलाष्टक** लग जायेगा। **होलाष्टक** में विपाशा एवं रावती शुतद्र तथा त्रिपुष्कर क्षेत्र में ही विवाहादि शुभ कार्य वर्जित रहते हैं न कि पूरे देश में, होलाष्टक से प्रभावित क्षेत्र के अन्तर्गत लुधियाना, धवलपुर, फिरोजपुर, गुरुदासपुर होशियारपुर, कांगड़ा, कपूरथला एवं उसके समीप के ही स्थान आते हैं। इसके अलावा पूरे भारत में सर्वत्र विवाहादि शुभ कार्यों में कोई दोष नहीं लगता। **फागु दशमी** १७ मार्च बुधवार को है एवं आज से ही ब्रज भूमि की लट्ठ मार होली प्रारम्भ हो जाएगी। यह होली अपनी अनूठी शैली के लिए विश्वविख्यात है। **आमलकी एकादशी** व्रत का मान सबके लिए १८ मार्च गुरुवार को है और इसी को **रंगभरी एकादशी** भी कहते हैं। काशीवासी इस एकादशी को उत्सव रुप में मनाते हैं, ऐसा माना गया है कि आज ही के दिन भोले बाबा माता गौरा का गौना करा कर काशी लाए हैं। इस विश्वास एवं परम्परा को मानते हुए रजत पालकी में विराजित गौरा पार्वती के विग्रह का पूजन कर काशीवासी अबीर-गुलाल उड़ाते हुए, भक्तिभाव में सराबोर होकर निहाल हो जाते हैं। **पुत्र की कामना** से **शनि प्रदोष** व्रत का मान २० मार्च को होगा। **व्रत के लिए** ■

पं.४९ फाल्गुन शुक्ल ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४२९ अयनांशाः २४/१३/१४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]								



भौमादीनां चारः

भौमः-(वक्री) १ भौमतः वक्रगत्या श्लेषायां कर्क राशौ रात ३।२५ वादने। **बुधः**-मकरे ४ शुक्रतः कुम्भ राशौ दिवा १०।१० वादने। **गुरुः**-(वक्री) श्लेषायां कर्क राशौ। **शुक्रः**-मकरे १४ रवितः कुम्भ राशौ रात ८।२०वादने। **शनिः**-रेवत्यां १ चरणे रवुधतः रेवत्यां २ चरणे रात्रि ११।४५ वादने **राहुः**-धनिष्ठा १ चरणे। **केतुश्च**-श्लेषा ३ चरणे।

फाल्गुन शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१मं. घं.	मि.	२बु. घं.	मि.	३गु. घं.	मि.	४शु. घं.	मि.	५श. घं.	मि.	६र. घं.	मि.	७सो. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	८मं. घं.	मि.	१०बु. घं.	मि.	११गु. घं.	मि.	१२शु. घं.	मि.	१३श. घं.	मि.	१४र. घं.	मि.	१५सो. घं.	मि.
कुम्भ	[illegible]														मीन	[illegible]												[illegible]	७	१२
मीन	[illegible]														मेष	[illegible]												५४	८	५०
मेष	[illegible]														वृष	[illegible]												५१	१०	४७
वृष	[illegible]														मिथुन	[illegible]												५	१	१
मिथुन	[illegible]														कर्क	[illegible]												२२	३	१९
कर्क	[illegible]														सिंह	[illegible]												३६	५	३२
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
सिंह	[illegible]														कन्या	[illegible]												४९	७	४५
कन्या	[illegible]														तुला	[illegible]												५	१०	१
तुला	१०	५२	१०	४८	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	वृश्चिक	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८
वृश्चिक	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	धनु	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३
धनु	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	मकर	४	३२	४	२८	४	२४	४	२१	४	१७	४	१३	४	९
मकर	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	कुम्भ	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०

पं.५० फाल्गुन शुक्ल१५ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४३५ अयनांशाः २४/१३/१५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	३	१०	३	१०	११	९	३
६	१	२७	१०	२३	०	२१	२४	२४
५०	४६	२६	१४	२६	३३	२०	१५	१५
१५	२४	३६	४४	१७	२८	२५	९	९
५९	[illegible]	८ ० व	७४	४ ३ व	७२	७	३	३
३५	[illegible]		२६		५	२३	११	११



(घ) **राशो रविः** ८।५४ (दि.९।३९)। मु.३० समा समता करम्। पराः१६ घट्यः पुण्याः गोऽन्नदानं गोदावर्याम् स्नानम्। **खरमासारम्भः। वसन्त ऋतु आरम्भः। होलाष्टकारम्भः। अकंपुट सप्तमी ७, कामदा ७। कल्याण सप्तमी ७।** (ङ) "विपाशे रावतीतीरे शुतुद्र्याश्च त्रिपुष्करे विवाहादि शुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम्।" (च) **श्रृंगारोत्सवः शोभायात्रा।**⊙ **उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे रविः** २९।८ (सायं ५।५०) गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ ४८।१६ (रा.१।२१) या.। (छ) यावत् **होलिका दहन मुहूर्तः।** दुण्ढा राक्षसी पूजनम् तद्दहनं च। **"ॐ होलिकायै नमः"** इति मन्त्रेण यथोपचारैः सम्पूजयेत्। हुताशनी जन्म। चौमासी चौदस १४ (जैन)। सर्वार्थसिद्धि-योगः ३८।१४ (रा.९।१८) या.। रवियोगः ३८।१४ (रा.९।१८) या.।

■ **पूर्णिमा** २१ मार्च रविवार को होगी आज दिन में सायं ५।१४ बजे के बाद से पूर्णिमा तिथि लग जायेगी। तथा उसी के साथ भद्रा भी प्रारम्भ हो जाएगी अतः आज ही **२१ मार्च** रविवार को भद्रा पुच्छ में रात **१२।२६** बजे से लेकर रात १।३८ के बीच होलिकादहन का मुहूर्त निकल रहा है, अतः इसी समय के बीच में **'ॐहोलिकायै नमः'** इस मंत्र का उच्चारण करते हुए शास्त्रीय विधि से होलिका दहन किया जाएगा। **स्नान-दान की पूर्णिमा** २२ मार्च सोमवार को होगी। २२ मार्च सोमवार को रंग की **होली रंगोत्सव** तथा काशी में चर्तुषष्ठी देवी (चौसट्टी देवी) की यात्रा, दर्शन-पूजन एवं काशी की अपनी परम्परा के अनुसार रंग-गुलाल चढ़ाया जाएगा। **उत्तरा-भाद्रपद** नक्षत्र का सूर्य १८ मार्च गुरुवार को सायं ५।५० बजे से आयेगा। रस पदार्थ एवं खाद्य तेलों के भाव बढ़ जायेंगे।

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ भौमे–पूर्वाभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, इष्टिका दहनं दिवा ९।२५ वादनात्परं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि २ बुधे**–उत्तराभाद्रपदे जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं दिवा १०।१६ वादनात्परं रेवत्यां **कर्णवेधः** कन्यानासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं लग्नं २ वा ३**, अक्षरारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः उपनयनं ल.३ वरवरणं कन्यावरणं द्विरागमनं ल.३ दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं इक्षुवपनं चूल्हीस्थापनं वाहनक्रयः शय्यासनाद्युपभोग, सर्वदेवप्रतिष्ठा पश्चिम दिग यात्रा। **तिथि ३ गुरौ**–रेवत्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नान जातकर्मः नामकरणं अन्नप्राशनं **चौलमुण्डनं कर्णवेधः**–कन्यानासिकाच्छेदनं ल.२ वा ३, **अक्षरारम्भः** विद्यारम्भः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः **उपनयनं ल.१२ वरवरण कन्या वरणं वधूप्रवेश–द्विरागमनं ल.२**, विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहण हलप्रवहण **इक्षुवपनं** सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगः दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदनपत्रलेखनं इष्टिकानिर्माण शल्यकर्म भूमिक्रयः **सर्वदेवप्रतिष्ठा** जलाशयवाटिकारम्भः अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ४ शुक्रे**–रिक्ता दिवा १।४४ वादनात्परं भरण्यां मुकदमा कार्य। **तिथि ५ शनौ–भरण्यां कृत्तिकाया** इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ६ रवौ**–कृत्तिकायां इष्टिकादहनं दिवा १०।४८ वादनात्परं सप्तम्यां रोहिण्यां प्रसूति स्नानं आ.**उपनयनं ल.२ वा ३** (ति.द्वा.) **वरवरण**–कन्यावरणं विपणि व्यापारः दीक्षाग्रहणः लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं **सर्वदेवप्रतिष्ठा** पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ७ सोमे**–भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्व रोहिण्यां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं आ.**उपनयनं ल.१२**, वरवरणं कन्यावरण वधूप्रवेश–**द्विरागमनं ल.१२ गृहप्रवेश ल.१२, सर्वदेव प्रतिष्ठा**, नूतनवध्वापाककर्म वाहनक्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८/९ भौमे**–मृगशिराया प्रातः ६।१६ वादनम् यावत् प्रसूति स्नानं रिक्तायां आर्द्रायाम् रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १० बुधे**–पुनर्वसौ–नामकरणं अन्नप्राशनं विपणि व्यापारः हलप्रवहणं इक्षुवपनं शय्यासनाद्युपभोगं पश्चिम दिग् यात्रा।

तिथि ११ गुरौ–भद्रा दिवा १२।४५ वादनात्पूर्व पुष्य नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः वाहनक्रयः हलप्रवहणं **इक्षुवपनं** शस्त्रधारणं **जलयंत्र** कर्म शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माण औषधि सेवन शल्यकर्म (आपरेशन) भूमिक्रयः पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ शुक्रे**–श्लेषायां **जलयन्त्र** कर्म मुकदमा कार्य भूमिक्रयः। **तिथि १३ शनौ**–मघायां इष्टिका दहनं शस्त्र घटनं। **तिथि १४ रवौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १५ सोमे**–उ.फा. जातकर्म नामकरण-अन्नप्राशन विपणिव्यापारः आभूषण धारण हलप्रवहण **इक्षुवपनं** नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं दक्षिण दिग् यात्रा।

राशिफल

मेष-	धर्माचरणं
वृष-	सुखलाभः
मिथुन-	विवादः
कर्क-	भयं
सिंह-	शत्रुभयं
कन्या-	पुत्रोन्नतिः
तुला-	अर्थागमः
वृश्चिक-	सुखोपभोग
धनु-	धनलाभः
मकर-	सुख शत्रुनाश
कुम्भ-	लाभकरः
मीन-	धनागमः

श्रीशुभ संवत् २०८३ शाके १९४९ चैत्र कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं याम्यगोलः बसन्त ऋतुः। दि.२३ मार्च - ६ अप्रैल सन् २०२७ ई. (रा.चैत्र २ - १६)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	चैत्र कृष्ण तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.
३०	४	१	मंगल	२१	२०	दिन	२	३१	हस्त	३५	२३	रात	८	८	वृद्धि	१४	३१	दिन	११	४७
३०	७	२	बुध.	१९	३२	दिन	१	४८	चित्रा	३५	३४	रात	८	१३	ध्रुव	१०	६	दिन	१०	०
३०	११	३	गुरु	१८	५६	दिन	१	३२	स्वाती	३६	५७	रात	८	४५	व्याघात	६	४०	दिन	८	३७
३०	१५	४	शुक्र	१९	४०	दिन	१	४९	विशाखा	३९	३९	रात	९	४९	हर्षण	४	१६	दिन	७	३९
३०	१९	५	शनि.	२१	४७	दिन	२	३९	अनुराधा	४३	३२	रात	११	२१	वज्र	२	५३	दिन	७	५
३०	२३	६	रवि.	२४	५६	दिन	३	५३	ज्येष्ठा	४८	२९	रात	१	१९	सिद्धि	२	२२	दिन	६	५२
३०	२६	७	सोम.	२९	९	सायं	५	३५	मूल	५४	२४	रात	३	४१	व्यतिपात	२	४३	दिन	७	०
३०	३१	८	मंगल	३४	५	रात	७	३२	पूर्वाषाढ़ा	६०	०	स	म	स्त	वरीयान	३	४२	दिन	७	२३
३०	३६	९	बुध.	३९	२४	रात	९	३९	पूर्वाषाढ़ा	०	४९	प्रातः	६	१३	परिघ	४	५८	दिन	७	५२
३०	४१	१०	गुरु	४४	३५	रात	११	४२	उत्तराषाढ़ा	७	२३	दिन	८	४९	शिव	६	३८	दिन	८	३२
३०	४६	११	शुक्र	४९	१७	रात	१	३४	श्रवण	१३	४४	दिन	११	२१	सिद्ध	७	५५	दिन	९	१
३०	५१	१२	शनि.	५३	९	रात	३	६	धनिष्ठा	१९	२४	दिन	१	३६	साध्य	८	४६	दिन	९	२२
३०	५६	१३	रवि.	५५	४८	रात	४	८	शतभिषा	२४	११	दिन	३	२९	शुभ	८	५४	दिन	९	२३
३१	०	१४	सोम	५७	२३	रात	४	४५	पूर्वाभाद्र	२७	५०	दिन	४	५६	शुक्ल	८	९	दिन	९	५
३१	३	३०	मंगल	५७	३५	रात	४	४९	उत्तराभाद्र	३०	१६	सायं	५	५३	ब्रह्म	६	३०	दिन	८	२३

ति.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योग	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं.		चन्द्रोदय घं.	मि.
१	को	२१	२०	ते	५०	२६	सौम्य	२३	१	८	२				५	५९	६	१	०	४६	११	७	४९	५०	५९	३२	+	५	७	१२
२	गर	१९	३२	व	४९	१४	कालदण्ड	२४	२	९	३	तुला	५	२९	५	५९	६	१	१	१०	११	८	४९	२३	५९	३१	+	५	८	१३
३	वि	१८	५६	बव	४९	१८	स्थिर	२५	३	१०	४				५	५८	६	२	१	३३	११	९	४८	५४	५९	२८	+	४	९	१३
४	वा	१९	४०	का	५०	४३	मातंग	२६	४	११	५	वृश्चिक	२४	०	५	५७	६	३	१	५७	११	१०	४८	२२	५९	२६	+	४	१०	१३
५	ते	२१	४७	गर	५३	२१	अमृत	२७	५	१२	६				५	५६	६	४	२	२०	११	११	४७	४८	५९	२४	+	४	११	१०
६	व	२४	५६	वि	५७	२	काण	२८	६	१३	७	धनु	४८	२९	५	५५	६	५	२	४४	११	१२	४७	१२	५९	२१	+	४	१२	४
७	बव	२९	९	बा	६०	०	लुम्बक	२९	७	१४	८				५	५४	६	५	३	७	११	१३	४६	३४	५९	१९	+	३	१२	५४
८	बा	१	३७	को	३४	५	मित्र	३०	८	१५	९				५	५४	६	६	३	३१	११	१४	४५	५३	५९	१७	+	३	१	३९
९	ते	६	४५	गर	३९	२४	श्रीवत्स	३१	९	१६	१०	मकर	१७	२८	५	५३	६	७	३	५४	११	१५	४५	१०	५९	१५	+	२	२	१८
१०	व	११	५९	वि	४४	३५	सौम्य	१	१०	१७	११				५	५२	६	८	४	१७	११	१६	४४	२५	५९	१२	+	२	२	५४
११	बव	१६	५६	बा	४९	१७	धूम्र	२	११	१८	१२	कुंभ	४६	३४	५	५१	६	९	४	४०	११	१७	४३	३७	५९	१०	+	२	३	२७
१२	को	२१	१३	ते	५३	९	प्रवर्धमान	३	१२	१९	१३				५	५०	६	१०	५	४	११	१८	४२	४७	५९	८	+	२	३	५९
१३	गर	२४	४९	व	५५	४८	राक्षस	४	१३	२०	१४				५	४९	६	११	५	२७	११	१९	४१	५५	५९	६	+	१	४	२९
१४	वि	२६	३५	श	५७	२३	मुसल	५	१४	२१	१५	मीन	११	५६	५	४८	६	१२	५	५०	११	२०	४१	१	५९	३	+	१	५	०
३०	च.	२७	२९	ना	५७	३५	सिद्धि	६	१५	२२	१६				५	४७	६	१३	६	१२	११	२१	४०	४	५९	१	+	१	५	३४

- १ फसली चैत्र मासारम्भः। बसन्तोत्सवः। धुरेड्डी, छारंडी, फाग १, होलिका विभूतिधारणं, धूलिवन्दनम् स्वपच स्पर्शम्, रतिकाम महोत्सवः सायं चूत कुसुम (नवआम्र मञ्जरी) प्राशनम्। तैलाभ्यङ्ग स्नानम्। स्वजन मिलनम्(क)
- २ तुलाराशिः दिवा ८।११ वादने। भद्रा ४९।१४ (रा.१।४१) उ. (पाताले)। **पश्चिम दिशायाम् शनि अस्तः।**
- ३ भद्रा १८।५६ (दि.१।३२) या.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदये (रा.९।१३) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। कल्पादिः ३। **छत्रपति शिवाजी जयन्ती ३।** यायि (मुहई) जयद् योगः १८।५६ (दि.१।३२) या.।
- ४ **वृश्चिकराशिः** दिवा ३।३३ वादने। स्थायी (मद्दालेह) जयद् योगः १९।४० (दि.१।४९) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३९।३९ (रा.९।४९) उ.।
- ५ **रंग पंचमी ५।** रवियोगः ४३।३२ (रा.११।२१) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २१।४७ (दि.२।३९) या.।
- ६ **धनुराशिः** रात्रि १।१९ वादने। भद्रा २४।५६ (दि.३।५३) उ. ५७।२ (रा.४।४४) या. (स्वर्ग-पाताले)। रवियोगः ४८।२९ (रा.१।१९) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ४८।२९ (रा.१।१९) उ.।
- ७ ☛ कन्या शय्या गृहं चैव देयं यद्गोहित्र यादिकम् एका एकस्य दातव्या न बहुभ्यः कथंचन। अर्थात् कन्या, शैय्या, मकान, गौ एक ही व्यक्ति को देना चाहिए।
- ८ **श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्।** पर्युपितान्नपानादिकमत्र विहितम्। **वृद्ध अंगारक (बुढ़वा मंगल) पर्वः।** काशीस्थ लौकिक पर्वः संगीत आदि महोत्सवः। **भौम-जया सिद्धयोगः** ३४।५ (रा.७।३२)या.।
- ९ **मकरराशिः** दिवा १२।५२ वादने।⊙ **रेवती नक्षत्रे रविः** ५५।५० (रा.४।१३)।
- १० भद्रा ११।५९ (दि.१०।४०) उ. ४४।३५ (रा.११।४२) या. (पाताले)। गुरो-पूर्णा सिद्धयोगः ४४।३५ (रा.११।४२) या.। **(ख)** पाप वारान्विते दर्श दुर्भिक्षं च प्रजा भयम। **संवत् २०८३ समाप्तिः।**
- ११ **कुम्भराशिः** रात्रि १२।२८ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। **पाप मोचनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः १३।४४ (दि.११।२१) या.।
- १२ शुभाशुभं द्वय गुण्यकरः द्विपुष्करयोगः १९।२४ (दि.१।३६) या.। **महामहा वारुणी पर्व योगः ५३।९ (रा.३।६) या.। (त्रयोदशी-शतभिषा शुभ योग समन्विता)।**
- १३ भद्रा ५५।४८ (रा.४।८) उ. (मर्त्ये)। **प्रदोष व्रतम् १३। वारुणी पर्वयोगः २४।११ (दि.३।२९) या.। (त्रयोदशी-शतभिषा नक्षत्र योगे)।**
- १४ **मीनराशिः** दिवा १०।३४ वादने। भद्रा २६।३५ (दि.४।२६) या.। **मासशिवरात्रि व्रतम् १४।** काम महोत्सवः १४। अद्य शिवसन्निधा गंगास्नानम् प्रेतत्व मुक्तये। अत्र सोपवासं केदार कुण्डोदक पानम्।
- ३० **स्नानदान श्रादादौ अमा पुण्यतमा ३०। भौमवती अमावस्या। पूर्व दिशायाम् बुधास्तः।** सर्वार्थसिद्धियोगः ३०।१६ (सा.५।५३) या.। अमायाञ्च यदावारो भवेद् भूमि सुतस्य वे। गंगायाम् यदि लभ्येत् कोटि सूर्य ग्रहेसमाः।(ख)

(क) मधुर पेय पानम्, मिष्ठान्न वितरणम्, विविधहास्य विनोद आयोजनम्। "चैत्रे मासि महाबाहोपुण्याप्रतिपदा परा। मस्तेस्यां व्वपच स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः। न तस्यंदुरितं किंचिन्ताधयोव्याधयोः नृपः।" शुभाशुभं द्वय गुण्यकरः द्विपुष्करयोगः ३५।२३ (रा.८।८) उ.।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	मं.	५	१५	१८	२३	३	२७	१८	३६	७	४८	१०	११	२९	१०	७४	४१	३	२३	२२	१४	३	५४	१०	१	४५	३३	७२	६	११	२१	२७	४८	७	२५	९	२४	११	५८
२	बु.	५	२८	५६	३७	३	२७	१०	४८	६	२८	१०	१२	४३	५१	७४	५६	३	२३	१८	२०	३	४५	१०	२	५७	३९	७२	८	११	२१	३५	१३	७	२८	९	२४	८	४७
३	गु.	६	१२	०	५८	३	२७	४	२०	५	३३	१०	१३	५८	४७	७५	१०	३	२३	१४	३५	३	३६	१०	४	९	४७	७२	९	११	२१	४२	४१	७	२८	९	२४	५	३६
४	शु.	६	२४	५०	३७	३	२६	५८	४७	४	४६	१०	१५	१३	५७	७५	२८	३	२३	१०	५९	३	२८	१०	५	२१	५६	७२	११	११	२१	५०	९	७	३०	९	२४	१	२५
५	श.	७	७	२४	११	३	२६	५४	१	३	४१	१०	१६	२९	२५	७५	५१	३	२३	७	३१	३	१९	१०	६	३४	७	७२	१२	११	२१	५७	३९	७	३१	९	२३	५८	१४
६	र.	७	१९	४४	३८	३	२६	५०	२०	३	१३	१०	१७	४५	१६	७७	९	३	२३	४	१२	३	८	१०	७	४६	१९	७२	१४	११	२२	५	१०	७	३१	९	२३	५५	३
७	सो.	८	१	५२	१७	३	२६	४७	७	२	५६	१०	१९	२	२५	७९	३९	३	२३	१	४	२	५६	१०	८	५८	३३	७२	१५	११	२२	१२	४१	७	३३	९	२३	५१	५२
८	मं.	८	१३	५६	४८	३	२६	४४	११	१	११	१०	२०	२२	४	८१	४८	३	२२	५८	८	२	४७	१०	१०	१०	४८	७२	१७	११	२२	२०	१४	७	३५	९	२३	४८	४१
९	बु.	८	२६	०	१४	३	२६	४३	०	०	४७	१०	२१	४३	५२	८५	३१	३	२२	५५	२१	२	३६	१०	११	२३	५	७२	१८	११	२२	२७	४९	७	३५	९	२३	४५	३०
१०	गु.	९	८	१	२७	३	२६	४२	१३	०मा	३१	१०	२३	९	२३	८७	२३	३	२२	५२	४५	२	२०	१०	१२	३५	२३	७२	२०	११	२२	३५	२४	७	३३	९	२३	४२	१९
११	शु.	९	२०	५	३९	३	२६	४२	४४	१	३	१०	२४	३६	४६	८८	४२	३	२२	५०	२५	२	११	१०	१३	४७	४३	७२	२१	११	२२	४२	५७	७	३२	९	२३	३९	८
१२	श.	१०	२	१७	१२	३	२६	४३	४७	१	४९	१०	२६	५	२८	९०	१७	३	२२	४८	१४	२	१	१०	१५	०	४	७२	२३	११	२२	५०	२९	७	३२	९	२३	३५	५७
१३	र.	१०	१४	४०	५१	३	२६	४५	३६	२	१५	१०	२७	३५	४५	९१	३०	३	२२	४६	१३	१	५२	१०	१६	१२	२७	७२	२४	११	२२	५८	१	७	३१	९	२३	३२	४६
१४	सो.	१०	२७	१६	१९	३	२६	४७	५१	२	५३	१०	२९	७	१५	९३	२२	३	२२	४४	२१	१	४०	१०	१७	२४	५१	७२	२६	११	२३	५	३२	७	३१	९	२३	३०	३५
३०	मं.	११	१०	१२	२३	३	२६	५०	४४	३	१५	११	०	४०	३७	९५	१३	३	२२	४२	४१	१	२४	१०	१८	३७	१७	७२	२७	११	२३	१३	३	७	३०	९	२३	२७	२४

फलम्—शास्त्र के नियमानुसार चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को ही धुरेड्डी, बसन्तोत्सव, छारेंडी धूलिवन्दन मनाया जाता है और इस प्रकार **होली** का प्रसिद्ध पर्व २३ मार्च मंगलवार को मनाया जायेगा। आज होलिका भस्म को मस्तक पर स्पर्श कराकर आगमी संवत्सर की कुशलता की मंगल कामना की जायेगी। वास्तव में यह पर्व आपसी सद्भाव के उन्नयन एवं मनोविकारों के शमन का पर्व है। पक्ष के तीन मंगलवार प्रजापीड़ाकारक है। अग्निकाण्ड की कोई बड़ी घटना घट सकती है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत २५ मार्च गुरुवार को किया जायेगा। चन्द्रोदय रात ९।१३ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **रंग पञ्चमी** का पर्व २७ मार्च शनिवार को मनाया जायेगा। **श्री शीतलाष्टमी** का व्रत (वसियउरा) ३० मार्च मंगलवार को है। आज पूर्व रात्रि में की गई **शीतला माता** की पूजा का बासी प्रसाद ग्रहण किया जाता है। काशी का लौकिक पर्व **बृद्ध अंगारक (बुढ़वा मंगल)** ३० मार्च को काशी की प्राचीन परम्परा के ■ अनुसार मनाया जायेगा। यह काशी का एक सांस्कृतिक पर्व है। **पाप मोचनी एकादशी** व्रत का मान सबके लिए २ अप्रैल शुक्रवार को है। प्रदोष का व्रत ४ अप्रैल रविवार को किया जायेगा। **मासशिवरात्रि** का व्रत ५ अप्रैल सोमवार को होगा। **चैत्र कृष्ण चतुर्दशी** ५ अप्रैल सोमवार को शिव सान्निध्य में गंगा स्नान करने से प्रेत बाधाओं से मुक्ति मिलती है। आज काशी के केदार कुण्ड का जल ग्रहण करना अत्यन्त पुण्यफलकारक माना जाता है। **स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या भौमवती अमावस्या** ६ अप्रैल को है। आज भौमवती अमावस्या के योग में किया जाने वाला गंगा स्नान अनेक सूर्य ग्रहण में किये गए गंगा स्नान के बराबर माना गया है। **रेवती नक्षत्र** का सूर्य ३१ मार्च को रात ४।१३ बजे से आयेगा। जलोत्पन्न पदार्थ को क्षति पहुँचेगी। पक्षान्त ६ अप्रैल के आसन्न आंधी-तूफान के साथ वर्षा होने के योग प्राप्त हो रहे हैं। इस प्रकार ६ अप्रैल मंगलवार से **संवत् २०८३** की समाप्ति हो जायेगी। शुभम्।

पं.५१ चैत्र कृष्ण ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४४३ अयनांशाः २४/१३/१६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	३	१०	३	१०	११	९	३
१४	१३	२६	२०	२२	१०	२२	२३	२३
४५	५६	४४	२२	५८	१०	२०	४८	४८
५३	४८	११	४	८	४८	१४	४१	४१
५९ १७	८२० ५०	१ ११ व	८१ ४८	२ ४७ व	७२ १७	७ ३५	३ ११	३ ११



भौमादीनां चारः
भौमः-(वक्री) श्लेषायां कर्क राशौ १० गुरुतः मार्गी। बुधः-कुम्भ १४ सोमत मीन राशौ रात्रि ७।५० वादने। गुरुः-(वक्री) श्लेषायां कर्क राशौ। शुक्रः-कुम्भ राशौ। शनिः-रेवत्यां २ चरणे मीनराशौ। राहुः-धनिष्ठा२ चरणे। केतुश्च-श्लेषा ३ चरणे।

चैत्र कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिथि.वा.	१मं. घं.	मि.	२बु. घं.	मि.	३गु. घं.	मि.	४शु. घं.	मि.	५श. घं.	मि.	६र. घं.	मि.	७सो. घं.	मि.	८मं. घं.	मि.	९बु. घं.	मि.	१०गु. घं.	मि.	११शु. घं.	मि.	१२श. घं.	मि.	१३र. घं.	मि.	१४सो. घं.	मि.	३०मं. घं.	मि.
मीन	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३
मेष	८	४६	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१
वृष	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८
मिथुन	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२
कर्क	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०
सिंह	५	२८	५	२४	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कन्या	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१४	७	१०	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७
तुला	९	५७	९	५३	९	४९	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	[illegible]	९	१४	९	१०	९	६	९	२
वृश्चिक	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	[illegible]	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९
धनु	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४
मकर	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०
कुम्भ	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ भौमे**—हस्त नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूति स्नानं, लालवस्त्र, प्रवालरत्न धारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं शल्यकर्म (आपरेशन) दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ बुधे**—चित्रायां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं नृत्यगीत-वाद्यकलारम्भः विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं दिवा ८।११ वादनात् पश्चिम दिग् यात्रा रात्रि ८।१३ वादनात्परं स्वात्यां **गर्भाधानं लग्नं ८। तिथि ३ गुरौ**—स्वात्यां भद्रा-रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ शुक्रे**—रात्रि ९।४९ वादनात्परं अनुराधायां **गर्भाधानं** दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ५ शनौ**—अनुराधायां नीलमादिरत्न कृष्णवस्त्र धारणः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ रवौ**—ज्येष्ठायां भद्रा दिवा ३।५३ वादनात्पूर्व धान्यच्छेदन, इष्टिका निर्माणं। **तिथि ७ सोमे**—मूले-नामकरणं हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं जलयंत्र कर्मः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ८ भौमे**—पूर्वाषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं शस्त्र घटनं। **तिथि ९ बुधे**—पूर्वाषाढ़ायाम् उत्तराषाढ़ायाम् रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १० गुरौ**—उत्तराषाढ़ायाम् प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं हलप्रवहण बीजवपनं धान्यच्छेदनं कणमर्दनं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं पूर्व दिग् यात्रा रात्रि ११।४२ वादनात्परं श्रवणे **गर्भाधान। तिथि ११ शुक्रे**—श्रवणे धनिष्ठायां रात्रौ **गर्भाधानं ल.८** आ.प्रसूति स्नानं नामकरण अन्नप्राशन क्रय-विक्रयः वाहनक्रयः हलप्रवहण बीजवपनं धान्यच्छेदनं कणमर्दनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं दत्तकपुत्रग्रहणं, आवेदनपत्र लेखनं श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ शनौ**—धनिष्ठायां कृष्ण वस्त्र धारण पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ रवौ**—दिवा ३।२९ वादनात्परं पूर्वाभाद्रपदे प्रसूति स्नानं पुंसवनं सीमन्तः इष्टिका दहनं। **तिथि १४ सोमे—पूर्वाभाद्रपदे उत्तराभाद्रपदे** रिक्ता व्याप्तिः।

तत्परं मासान्तः।

पं.५२ चैत्र कृष्ण ३० भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ४५० अयनांशाः २४/१३/१७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	३	११	३	१०	११	९	३
२१	१०	२६	०	२२	१८	२३	२३	२३
४०	१२	५०	४०	४२	३७	१३	२७	२७
४	२३	४४	३७	४१	१७	३	२४	२४
५९ १	७६८ ५६	३ १५ मा	९५ १३	१ २४ व	७२ २७	७ ३०	३ ११	३ ११



राशिफल
मेष- पीड़ा
वृष- वित्ताप्ति
मिथुन- कर्मसिद्धि
कर्क- पाप बुद्धि
सिंह- रोग
कन्या- गमनम्
तुला- रिपुनाश
वृश्चिक- दैन्यम्
धनु- रोग
मकर- सुख
कुम्भ- भयम्
मीन- स्थान हानि

सरल संध्या

शरीर पवित्र करने का मंत्र- **ॐअपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।**

इस मन्त्र को पढे, कुशा से अपने ऊपर जल छिडक कर शरीर पवित्र करें।

आसन पवित्र करने का मन्त्र-(विनियोगः) ॐपृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

मंत्रः- **ॐपृथ्वीत्वयाधृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।** (इस मन्त्र से आसन पर जल छिड़कें और नीचे का संकल्प पढ़कर पृथ्वी पर छोड़ देवें)। (संकल्पः) ॐतत्सत् अद्य अमुकमासे अमुक पक्षे अमुक शुभ पुण्यतिथौ अमुक वासरे स्वकायिक-वाचिक-मानसिक पापक्षायार्य श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थञ्च प्राप्तः (मध्याह्न वा सायं) सन्ध्योपासनामहं करिष्ये।

आचमन मन्त्रः-ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः।। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोऽजायत।अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।। सूर्याच्चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।। (इस मंत्र से हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें और अपनी रक्षा के लिए गायत्री मन्त्र (ॐभूभुर्वः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ) पढ़कर चारों ओर जल छिड़के। तत्पश्चात नीचे लिखे प्राणायाम के विनियोगों को पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ें और प्राणायाम के मन्त्र से प्राणायाम करें)। **(विनियोगः)**- ॐ कारस्य ब्रह्मऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।।१।। ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्नि भरद्वाज गौतमात्रिवसिष्ठ कश्यपा ऋषयोगायत्र्युष्णिगनुष्टब्बृहती पङ्क्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चिते प्राणायामे विनियोगः।।२।। ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः।।३।। ॐ शिरसः प्रजापति ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो ब्रह्माग्निवायु सूर्या देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः ।।४।।

संक्षिप्त तर्पण विधिः

संकल्प-अपवित्रः पवित्रो वा इत्यादिमंत्र को पढ़कर शिखा बांधकर संकल्प करें (अक्षत तिल, जौ लेकर) संकल्प में देशकालादि का उच्चारण करने के बाद अमुक गोत्रः अमुक शर्माहं (वर्माहं-गुप्तोऽहं-दासोऽहं) क्रमशः क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रादिको में जोड़कर) अद्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थ देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणंकरिष्ये।

आवाहन मन्त्रः-ब्रह्मादयः सुरा सर्वे, ऋषयः सनकादयः। आगच्छन्तु महाभागाः, ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः।।

१. तर्पणमन्त्र–(सव्य होकर पूर्वाभिमुख होकर कुश अक्षत हाथ में लेकर देवतीर्थ से जल गिरावे)।

देवासुरास्तथा यक्षा, नागा गन्धर्व राक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाःसिद्धाः कूष्माण्डास्तरवःखगाः।।
जलेचरा भूनिलया, वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु, महत्तेनाम्बुनाखिलाः।।

२. इसके बाद अपसव्य होकर जनेऊ और अंगोछे को दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख होकर कुशा का मोटक अंगूठे से दबाकर लिखे मन्त्र को पढ़कर पिता आदि का ध्यान करते हुए पितृतीर्थ से तीन-तीन बार जल गिरावे-

तर्पणमन्त्रा- ॐ अमुकगोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहास्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकास्तृप्यन्ताम् (३)।

इसके बाद अपसव्य होकर पहले ही जैसे जनेऊ और अंगोछे को दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख होकर मोटक दाहिने अंगूठे में दबाकर तिल से तर्पण करें।

मन्त्रः- १ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः। तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया।। २. येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते तृप्तिमखिलायान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।। ३.ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्।।४. आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे, मातृमातामहादयः।। ५. अतीतकुलकोटीनां, सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्राह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।

इसके बाद अंगोछे को चार तह कर उसमें तिल रखकर अंगोछे को जल से खूब भिगोकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर जल के बाहर बायीं ओर पृथ्वी पर वस्त्र को निचोड़े - **मंत्र–ये के चास्मत्कुले जाता, अपुत्रा गोत्रिणो मृताः। ते गृह्णन्तु मया दत्तं, वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।। इसके बाद भीष्मपितामह का तर्पण जल से करे- मंत्र–भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। इसके बाद सूर्य को अर्घ्य देकर प्रणाम करे। इति समाप्तम्।**

प्रस्तुति- डा.राधाकान्त ओझा
पूर्व ज्योतिषाध्यापक, रणवीर संस्कृत विद्यालय, का.हि.वि.वि.वाराणसी।

अङ्गन्यास मंत्र

(१) ॐ हृदयाय नमः । (२) ॐ भूः शिरसे स्वाहा। (३) ॐ भुवः शिखायैवषट् । (४) ॐ स्व कवचाय हुम् । (५) भुर्भुवः स्व नेत्राभ्यां वौषट् (६) ॐ भुर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ।

गायत्री के ध्यान करने का मन्त्र- **ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता।। आदित्यमण्डलस्था चब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।। गायत्री के आवाहन करने का मन्त्र** (विनियोगः)-ॐ तेजोऽसीति देवा ऋषयो शुक्रं दैवतं गायत्रीछन्दः गायत्र्यावाहने विनियोगः। मंत्रः-ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामना मसिप्रिय देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।

गायत्री के उपस्थान (प्रणाम) करने का मन्त्र-(विनियोगः)-गायत्र्यसीतिं मंत्रस्य विमलऋषिः पंक्तिश्छंदः परमात्मादेवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः। (मंत्रः)- **ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोमा प्रापत।।** इसके बाद प्रातःकाल में पूर्वाभिमुख, मध्याह्न में सूर्याभिमुख और सायंकाल में पश्चिमाभिमुख बैठ,सावधान होकर गायत्री का ध्यानपूर्वक शुद्ध उच्चारण (मन ही मन) करता हुआ जप करे।

गायत्री का जपस्वरुप- (विनियोगः) - ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लवर्णो जपे विनियोगः। ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिग्नुष्टुव् छन्दांस्यग्नि वायव्यादित्या देवता जपे विनियोगः।।२।। ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता अग्निर्मुखमुपनयने जपे विनियोगः।।३।। ***(मंत्रः)-*** **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् ॐ ।।** (हमलोग उस सविता सूर्य देवता का ध्यान करते है जो हमलोगों की बुद्धि को प्रकृष्ट प्रेरणा दिया करें।) सन्ध्या समाप्त होने पर ७ बार प्रदक्षिणा करके गायत्री देवी का विसर्जन करना चाहिए। ***प्रदक्षिणा मन्त्रः-*** **यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।** ***विसर्जन मन्त्रः-*** **ॐ उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्द्धनि। ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि ! यथासुखम् ।।** *ॐ तत्सदब्रह्मार्पणमस्तु।*

प्राणायाम विधि

स्वस्थचित्त हो, आसन पर बैठ कर प्राणायाम करना चाहिए। उससमय नेत्र बन्द करके मन ही मन मंत्रो का उच्चारण करते हुए पूरक, कुम्भक और रेचक प्राणायाम करें। पहिले नासिका के दाहिने छिद्र को अंगूठे से मूंदकर, बायें छिद्र से धीरे-धीरे स्वाँस खीचते हुए अपने नाभि में नीलकमल के समान श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णु भगवान का ध्यान करतेहुए, प्राणायाम मन्त्र को तीन बार पढ़े। फिर कनिष्ठिका अनामिका, अंगुलियों से बायें छिद्र को भी मूंदकर स्वाँस को रोके रहें और प्रणायाम मंत्र को पूर्ववत् पढ़ते जायें। उस समय हृदय में कमलासन पर बैठे हुए रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्मा का ध्यान करें। अन्त में अंगूठा हटाकर धीरे-धीरे स्वाँस को बाहर निकाले और ललाट में स्थित श्वेतवर्ण त्रिनेत्र शिवजी का ध्यान करते हुए उसी मन्त्र को पूर्ववत् पढ़ते रहें। इस प्रकार क्रमशः पूरक, कुम्भक और रेचक भेद से तीन प्रकार के प्राणायाम होते हैं।

(प्राणायाम मंत्र) - ॐ भूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

इसके बाद खड़े होकर हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ता हुआ प्रातः काल तथा सायंकाल में तीन चार और मध्याह्न काल में एक बार सूर्य को अर्घ देवें।

(मंत्र) - ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।

अथ स्वप्न विचार

शुभस्वप्न - राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्रवाली स्त्री इनके दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व, इनपर चढ़ना या दर्शन करना, रक्त से स्नान, रक्त, शय्यादि का ज्वलन स्वशिर का छेदन, अपना मरना, वेदध्वनि श्रवण, रक्तपात, पुष्प दर्शन दर्पण-प्राप्ति, दही, चावल भोजन, जुआ, रण, विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मद्य कपास इन वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धन ऐश्वर्य तथा सम्मान की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि स्वप्न में फल पुष्प में श्वेत सर्प काट खाये तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वपन में बिच्छू या सर्प द्वारा पैर में काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथ में हथकड़ी पैरो में जंजीर का वन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ जूता खड़ाऊँ तीक्ष्ण तलवार का मिलना, सर्प दिखना अपने पैर के माँस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रो में भोजन करना, शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्य मण्डल का देखना, अपना मरना, देखे तो रोगी पुरुष का रोग नाश और निरोग को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, मोरनी देखना चतुर स्त्री प्राप्ति सूचक है। स्वप्न में रक्त वा मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस चरबी का खाना, विष्टा अपने अंग में लगाना श्वेत चन्दन श्वेत पत्र पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर दे जाय तो लाभ हो। नदी में तैरना, या तालाब में तैरकर पार जाना, सूर्योदय का देखना, कष्ट निवृत्ति करता है। ऊँचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना भाग्योदय करता है। राजा गौ ब्राह्मण का प्रसन्न देखना, पर्वत वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हो तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ा पर चढ़कर नदी पार होने पर परदेश गमन होता है। स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है। अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न - लाल वस्त्र पहनना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हँस-हँस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना नीम, पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई कपास तेल, लोहा मिलना इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना, किसी द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु या भारी कष्ट को सूचित करता है। सिर के सारे बालों का वा मुख के दाँत का गिरना द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन या किसी वस्तु को टाँग कर ले जाना, द्रव्य हानि या कष्ट करता है। तेलपका गुलगुल ताँवा ताँबे के पैसे मिलना रोग सूचक है। अपनी स्त्री के वस्त्र को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो, हाथ नाक का कटना कीच (पंक) में फँसना ऊंचे गधे भैंस पर चढ़कर तेल मलकर दक्षिण को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्त वस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृ कार्यो का करना भूत प्रेत चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़े जाकर दक्षिम दिशा में जाना, इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा का देखना, वाज रीक्ष गीदड़ बिलाव भैंस सर्प मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखर का तथा बड़े मंजिल के ध्वज को गिराते देखने अशुभफल वा चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती देव विप्र इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ या चिन्ता कारक होता है।

स्वप्न फल कब मिलेगा? - रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में द्वितीय का ८ मास में तृतीय का तीन मास में अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। बहुत बड़ा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है।

अशुभ स्वप्नदोष शांति - दुष्ट स्वप्नदोष दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, इष्टदेव पूजन, विष्णु सहस्र नाम, गजेन्द्र मोक्ष, व चण्डी पाठ , ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देख फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है। दुःस्वप्न निवारण मन्त्रः- "लंकायाः दक्षिणेकोणे कुक्कुटो नाम ब्राह्मणः। तस्य स्मरण मात्रेण कुस्वप्नों सुस्वप्नो भवेत्।।"

अथ वृष्टिविचारः

आर्द्रादिकपञ्चाकं पू.भा. रेवत्यादिचतुष्टयम्। पूर्वाषाढ़ा चतुष्कञ्ज चन्द्राणि चतुर्दश।।१।। चैत्राणि रविनक्षत्राणि विज्ञेयानि मनीषिभिः।। रवेर्नक्षत्राणि रोहिणी, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, मूल, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद चन्द्र नक्षत्राणि आर्द्रा, पूर्वाफाल्गुनी, श्लेषा, मृगशिरा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृतिका, पूर्वाभाद्रपद, श्रवण, धनिष्ठा, इति सूर्य चन्द्रवर्गे वृष्टि चन्द्रे सूर्यर्क्षगे सति। उभौचंद्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदाभवेत्।. तावेनं यदि सूर्यक्षे तदा वृष्टिर्न जायते।। अथ सद्योवृष्टि विचारः वर्षाप्रश्ने शशिन्यराशिगे लग्नेऽपिवा। केंद्रगे वा शुक्ल पक्षे वाऽतिवृष्टि पापदृष्टे शुभेक्षिते।।१।। अल्पवृष्टि प्रावृट्कालेऽचिराद्भवेत्। चन्द्रवत् भार्गवसर्वमेघगुणस्थिते।।२।। प्रावृष्टेंदुः क्षिद्रात्सराशिगः शुभ विक्षितः। शुक्रो यदा बुधसमीपगः। तयोर्मध्यगत भानौतदावृष्टि विनाशनः।।४।। पुरतः पृष्टतो भानौ शुभायदि समीपगाः। तदा वृष्टि प्रकुर्वन्ति नचैते प्रतिलोमगाः।।५।। ग्रहाणामुदयास्ते वा राश्यन्तर्गतेऽपि पक्षतो प्रायो वृष्टिः प्रजायते।।६।। उदयास्तगतः शुक्रोः बुधश्च वृष्टि कारकः। चलत्यंगारके वृष्टि स्त्रियावृष्टिः शनैश्चरे।।७।। वारिपूर्णो मही कृत्वा पञ्चात्सञ्चरते गुरु। शुक्रोवास्तमितेर्मदेवृष्टिःदिवाऽपि जायते।।८।।

वर्षा-विज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७२	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	१२	१६	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र में जिस दिन वर्षा होवे उसके नीचे लिखे दिन तक जल वृष्टि उत्तम ढंग से न होगी।

उदाहरण - यदि रोहिणी नक्षत्र का सूर्य आने के पाँचवे दिन पानी बरस गया हो तो ३९ दिन तक सुन्दर ढंग से जल वृष्टि न हो सकेगी। जिस दिशा से बादल रोहिणी नक्षत्र में आते हुए दृष्टि गोचर होगा उसी दिशा में जलवृष्टि की आगे न्यूनता रहेगी।

विशिष्टयोगावली.

दीर्घायुर्योगाः

१-तृतीयैकादशे चैव नवमे पंचमे भृगुः।सप्तमस्थे यदाजीवो जीवेद्वर्षशतं नरः।।

जन्म कुण्डली में यदि शुक्र लग्न से ३, ११, ९, ५ स्थानों में से किसी एक में हो और सातवें गुरु हो तो मनुष्य सौ वर्ष जीता है।

२-कण्टकस्थो यदा जीव सप्तमस्थोपि भार्गवः।बुधे च लग्नसंप्राप्ते शतं जीवति जातकः।

यदि बृहस्पति कुण्डली में कंटकस्थ १।४।७।१० में हो और शुक्र सप्तम में पड़ा हो, बुध लग्न में हो तो जातक की आयु सौ वर्ष कहिये।

३-लग्ने जीवस्तथा शुक्रः सौम्यश्चाष्टमगो भवेत्।पापाः सर्वे न पश्यन्ति जीवेद्वर्षशतं नरः।।

लग्न में यदि गुरु और शुक्र पड़े हो, आठवें शुभग्रह हों, सब पाप ग्रह से दुष्ट न हों तो बालक की आयु सौ वर्ष जानिये।

४-पूर्णे चन्द्रे शुभे वर्गे भिन्ने वा मित्रवीक्षिते।उच्चत्रिलाभ संस्थे वा पूर्णायुर्जातको भवेत्।।

पूर्ण चन्द्रमा यदि मित्र के घर में हो, मित्र से देखा जाता हो उच्च का हो, या तीसरे अथवा ग्यारहवें स्थान में बैठा हो तो जातक की आयु पूर्ण जानिये।

बालारिष्टयोगाः

१-षष्ठरिष्फाष्टगश्चन्द्रः क्रूरैश्च सह वीक्षितः।जातस्य मृत्युदः यद्यस्त्वष्टवर्षैः शुभेक्षितः।।

जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा क्रूरग्रह के साथ या क्रूर दृष्टि युक्त हो ६, ८,१२ घर में बैठा हो तो बालक शीघ्र संसार छोड़ देता है,शुभ ग्रह की दृष्टि होने से उसकी आयु आठ वर्ष होती है।

२-व्यय-शत्रु-गतैः क्रूरैः मृत्युद्रव्यगतैरपि।पापमध्यगते लग्ने सत्यमेव मृतिवदित् ।।

यदि पापग्रह लग्न से ६, १२, ८, २ में हो और लग्न पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक को अल्पायु समझिये।

३-शनैश्चरार्कभौमेषु रिष्फधर्माष्टमेषु च। शुभैरावीक्षमाणेषु यो जातो निधनं गतः।। लग्न से बारहवें शनि, नवें सूर्य और आठवें मंगल होवें और उनको शुभ ग्रह न देखें तो अल्पायु योग होता है।

४-शनिक्षेत्रगतो भानुः भानुक्षेत्रगतः शशी। विंशद्वर्षे वदेन्नाशो रक्षितो यदिशंकरः।।कुण्डली में सूर्य, मकर या कुम्भ का हो और चन्द्रमा सिंह राशि का हो तो बीसवें वर्ष के अन्त में निधन हो जाता है।

५-लग्नस्थितो यदा राहुः केन्द्रे भवति चन्द्रमा।बालस्य तस्यारिष्टं स्याद्रक्षितो यदि शंकरः।। जिसकी कुण्डली में लग्न में राहु केन्द्र में चन्द्रमा हो तो वह जातक किसी भी जप, दान से नहीं बच सकता।

६-चतुर्थे च यदा राहुः केन्द्रषष्ठाष्टगः शशी। दशमे।ब्दे भवेन्मृत्युः सद्योजातो न संशयः।। जिसकी कुण्डली में चौथे राहु रहे तथा केन्द्र, छठवें या आठवें चन्द्रमा हो तो उस जातक की मृत्यु दस वर्ष में हो जाती है।

७-सप्तमस्थो भूमिपुत्रो लग्ने भवति चन्द्रमा। आत्मानं पितरं हन्ति मातरं च न संशयः।। जिस बालक की कुण्डली में सप्तम में मङ्गल और लग्न में चन्द्रमा रहता है वह माता पिता सहित अपना नाश कर देता है।

नोट-लग्न, द्वितीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह के होने से बालक को अरिष्ट योग होता है। लग्न लग्नेश पापग्रह के बीच में हो या पापयुक्त हो, सप्तम भी दो पापग्रह के बीच में हो (१) लग्नेश अष्टम में (२) अष्टमेश लग्न में (३) लग्नेश अष्टमेश का योग हो (४) चन्द्रमा लग्न पञ्चम सप्तम अष्टम नवम और द्वादश में पाप युक्त हो (५) सन्ध्या समय का जन्म हो (६) मधयाह्न का जन्म हो तो अरिष्ट समझिये।

पुत्र-भाव-विचारः

१- शुक्रेन्दुवर्गेः सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युते.थ दृष्टे। पापैरयुक्ते बहुपुत्रशाली शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः।। यदि पंचम भाव शुक्र या चन्द्र का वर्ण हो, या इस पर शुक्र, चन्द्र की दृष्टि हो और इसमें पापग्रह न बैठे हो तो उस मनुष्य को बहुत संतान सुख योग होता है। यदि शुक्र और चन्द्र की जगह शनि, मङ्गल का पूर्ववत् योग हो तो वह मनुष्य सन्तानहीन होता है।

२- पुत्रस्थे मदनाधिपे वितनयो जायाविहीनो थवा, पुत्रादष्टमशत्रुरिः फगृहगाः पापाः कुलध्वंसकाः। राहौ नन्दनराशिगे तदधिपे दुःस्थानगे पुत्रहा, पुत्रस्थे तनुपेतनौ सुतपतौ गृह्णाति दत्तात्मजम् ।। यदि लग्न से सप्तमेश पंचम में बैठा हो तो मनुष्य स्त्री-हीन वा पुत्र रहित होगा। पंचम भाव से छठे, आठवें तथा बारहवें यदि पाप ग्रह बैठे हो, तो उसी मनुष्य से परिवार-समाप्त हो जाता है। यदि पंचम भाव में राहु हो या पंचमेश ६,८,१२ वें घर में बैठा हो तो मृतवत्सा योग होता है। यदि लग्नेश पंचम भाव में और पंचमेश लग्न में हो तो दत्तक-पुत्र (गोद) का योग होता है।

३- दशमे शीतगुद्युनि भृगुभे पापिनः सुखे। तस्य सन्ततिविच्छेदो भविष्यति न संशयः।। यदि कुण्डली में लग्न से दसवें घर में चन्द्रमा, सातवें शुक्र और पापग्रह चौथे घर में बैठे हों तो उसे सन्तति विच्छेदयोग होता है।

४- षष्ठाष्टमस्थो लग्नेशः पापयुक्तः सुताधिपः। दृष्टो वा शत्रुनीचस्थैः पुत्रहानि वदेद्बुधः।। यदि लग्नेश छठें या आठवें बैठा हो पंचमेश पापग्रह युक्त हो या शत्रु दृश्य हो तो मृतवत्सा योग होता है।

५- लग्नसप्तमधर्मान्त्यराशिगाः पापखेचराः। सपत्नराशिवर्गस्था वंशविच्छेदकारियाः।। यदि पाप ग्रह १, ७, ९ और १२ वें घर में बैठे हों और वे शत्रु क्षेत्र के हों तो वंशविच्छेद योग जानिये।

पुत्र प्राप्ति समय - लग्नेश, पंचमेश के राशि अंशों को जोड़ने से जो राशि अंश बने उस पर जब गुरु आवे तो पुत्रोत्पत्ति का समय आता है।

दत्तक पुत्र योग-पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेथवा यदि। मन्दिमान्दयुते दृष्टे तदा दत्तादयः सुताः।। पंचम भाव बुध या शनि की राशि में हो (३,६,१०,११,) बुध शनि से युक्त या दृष्ट हो तो दत्तक पुत्र योग होता है। पुत्र प्राप्ति धर्म करने से होती है। बुध, शुक्र और चन्द्रमा प्रतिबन्धक हों तो शिवजी का अभिषेक कराना चाहिए। बृहस्पति प्रतिबंधक हो तो मन्त्र, तन्त्र औषधि प्रयोग से कष्ट निवारण जानिये। शनि राहु और केतु बाधक हों तो कुलदेवता तथा सन्तान गोपाल की आराधना विहित है। पंचम स्थान में जो राशि हो उसकी संख्या तुल्य हरिवंश का पारायण प्राचीन देवस्थान में वा तुलसी के बीच में पुष्कर प्रादुर्भाव सम्पुटित प्रायश्चित करके स्त्री, पुरुष साथ होकर सुनने से कल्याण होता है। काशी से १७ मील उत्तर बृहत् पंचक्रोशी में श्री मार्कण्डेश्वर महादेव का मन्दिर इसके लिये सिद्ध तथा उपयुक्त स्थान है।

कलत्रभावविचार

१-शत्रुस्थाने यदा भौमः सप्तमे सैंहिकासुतः। नैधने भानुपुत्रस्थेत्तस्यभार्या न जीवति।।जिसका कुण्डली छठे मङ्गल, सप्तम में राहु और बारहवें शनि पड़े हो तो उसकी स्त्री नहीं जीती है।

२-जयाधिपे लग्नशत्रुधर्मव्ययगते क्रमात् । एक-द्वि-त्रि-चतुर्भार्या भवन्ति नियतं नृणाम् ।।

अथ होरा मुहूर्त्त चक्रम् (शुभ ग्रह का फल शुभ एवं पाप का नेष्ट)

वार	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा
घंटा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
रवि	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध
सोम	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंग.	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.

राहुकाल विचारः

सप्ताह के ७ दिनों में प्रतिदिन प्रायः १ घंटा ३० मिनट का समय राहुकाल होता है। इसकी गणना दिनमान पर आधारित है। नीचे प्रतिदिन के राहुकाल का स्थूल समय पाठकों के सुविधार्थ प्रचलित घड़ी के अनुसार-

सोमवार-प्रातः ७.३० से ९ बजे तक।
मंगलवार-अपराह्न ३ से ४.३० बजे तक।
बुधवार-मध्यान्ह १२ से १.३० बजे तक।
गुरुवार-मध्यान्ह १.३० से ३ बजे तक।
शुक्रवार-पूर्वान्ह १०.३० से १२ बजे तक।
शनिवार-प्रातः ९ बजे से १०.३० बजे तक।
रविवार-सायं ४.३० से ६ बजे तक।

यदि सप्तमेश लग्न, छठें, नवें और बारहवे घर में पड़ा हो तो उस व्यक्ति को क्रम से १, २, ३ और ४ स्त्रियों का योग होता है। ***नोट***- (क) द्वितीय, सप्तम में पाप ग्रह हों, (ख) द्वितीयेश, सप्तमेश पाप युक्त हो (ग) शुक्र से चौथे, आठवें पाप ग्रह हों (घ) सप्तम घर पर पाप ग्रह की पूरी दृष्टि पड़ती हो (ङ) सप्तमेश अष्टम में और अष्टमेश सप्तम में हो, (च) शुक्र सप्तम में हो (छ) सप्तमेश पाप युक्त ६, ८, १२ में हो (ज) केवल बृहस्पति सप्तम में हो (झ) सन्तान प्रति बाधक योग पड़े हों तो मनुष्य स्त्री सुख से वंचित रहता है। यदि दाहिने हाथ में विवाह रेखायें ऊपर की ओर मुड़ी हो और मोटी हो तो उस मनुष्य का विवाह नहीं होगा।

स्त्री प्राप्ति समय - लग्नेश, सप्तमेश के राशि अंशों को जोड़ने से जो राशि अंश बने उस पर बृहस्पति आ जाय तो स्त्री प्राप्ति का समय हो जाता है।

प्रकारान्तर से विशेष योग

लग्न में सूर्य का सम्बन्ध हो तो राजकार्य करने वाला हो (१) लग्न में पूर्ण चन्द्रमा या शुक्र का सम्बन्ध हो तो भोगी तथा विद्या-जीवी होता है। (२) मंगल का योग हो तो धातु विद्या जाने, अग्नि से जीविका करे (३) बुध का योग हो तो सूत का काम तथा व्यवसाय करता है (४) बृहस्पति का सम्बन्ध हो तो विद्वान् और ज्ञानी हो (५) शुक्र का योग हो तो भी राजकार्य में नियुक्त और दीर्घायु हो (६) शनि हो तो प्रसिद्ध कर्म से जीविका करे (७) राहु हो तो लोहा का व्यापार करे (८)केतु हो तो उत्तम व्यवसायी हो (९) रवि राहु लग्न में हो शुभ दृष्टि न हो तो सर्प का भय हो (१०) गुलिक लग्न में हो पाप दृष्टि हो तो वष का भय हो (११) लग्न में सूर्य का योग या दृष्टि हो तो राज प्रेम हो (१२) दशम में बुध हो तो प्रसिद्ध कर्म करने वाला हो (१३) शुभ ग्रह दशम में हो तो स्थिर हो (१४) रवि दशम में हो केवल बृहस्पति की दृष्टि हो तो गोपालक हो (१५) चतुर्थ में चन्द्रमा और शुक्र का सम्बन्ध हो तो गृह बनाने वाला हो (१६) नवम में शुभ दृष्टि योग हो तो धार्मिक हो। शनि राहु हो तो अपने भृत्य से विरोध करे (१७) लग्न में मंगल शुक्र का सम्बन्ध हो तो परदारा संसक्त हो (१८) सप्तम में शुक्र चन्द्रमा का सम्बन्ध हो तो उसकी स्त्री सुन्दरी हो (१९) शनि का समन्वध हो तो स्त्री वयोधिका हो (२०) तृतीय में पापग्रह हो तो वीर हो शुभग्रह हो तो कायर हो (२१) तृतीया में षष्ट पाप ग्रह नवम में बृहस्पति हो तो कृषि कारक होता है (२२) द्वादश में शुभग्रह तथा केतु के होने से धार्मिक होता है (२३) नवम पंचम में पापग्रह हो तो मन्त्रज्ञ हो (२४) लग्न में चनद्रमा हो शुक्र का योग या दृष्टि हो तो रसायन जानने वाला हो (२५) चतुर्थ या पंचम में मंगल राहु हो तो क्षय रोग होता है। पाप सम्बन्ध से उदर विकार होता है (२६) लग्न पंचम में और द्वितीय में शुभग्रह का सम्बन्ध हो तो विद्वान होता है। (२७) द्वितीय अष्टम में पाप सम्बन्ध हो चन्द्रमा की दृष्टि हो तो केमद्रुम योग होता है। (२८) एकादश में शुभग्रह या पापग्रह या दृष्टि योग हो तो धनवान् होता है। शुभ सम्बन्ध से उत्तम मार्ग से पाप सम्बन्ध से नीच मार्ग से धन लाभ होता है (२९) द्वादश में अधिक ग्रह योग दृष्टि से अधिक व्यय होता है (३०) सप्तम में राहु केतु के होने से उदर रोग होता है। द्वितीय में केतु के होने से शीघ्र वार्धक्य चिन्ह हो जाते हैं (३१) सप्तम द्वितीय में चन्द्र बुध गुरु और शुक्र के योग से श्रीमान् हो (३२) जन्मलग्न , होरालग्न और घटिकालग्न को एक ही ग्रह देखता हो या तीनों के दृष्टिकोणों को एक ही ग्रह देखे या तीनों के नवांश को एक ही ग्रह देखे तो श्रीमान् होता है। जन्मेष्ट काल के घटी के तुल्य राशि जानना कलादि का आधा करके अंशादि जानना इन राश्यादि को स्पष्ट सूर्य के राश्यादि में जोड़ देने से घटिका लग्न होती है (३३) लग्न और सप्तम के राशि, अंश और दृष्टिकोण इन छवों पदार्थो को एक ही ग्रह देखे तो भी राजयोग होता है। इसमें जैसे-जैसे दृष्टि कम हो वैसे-वैसे योगों से भी तारातम्य जानना चाहिये (३४) जो ग्रह चर राशि में रहता है वह अपने द्वितीय स्थिति को छोड़कर बाकी तीनों स्थिर राशियों को देखता है। जो यह स्थिर राशि में रहता है वह अपने द्वादशस्थ चर को छोड़ कर बाकी सभी चरों को देखता है एवं द्विस्वभाव में रहता है यह अपने साथ वलों को छोड़कर बाकी सब द्विस्वभाव को तथा द्विस्वभाव गत ग्रहों को देखता है। इस प्रकार में इसी दृष्टि से व्यवाहर करना ठीक है (३५) दिनार्ध और रात्र्यार्ध में अढ़ाई दण्ड शुभ समय है इसमें उत्पन्न बालक श्रीमान् होता है। (३६) शुभ स्वामी के लग्न में चन्द्रमा हो द्वितीय में शुभ युक्त बृहस्पति हो वा उच्च गत ग्रह हो तो भी श्रीमान् हो (३७) सप्तम में शुभ ग्रह हो तृतीय में पाप ग्रह हो चतुर्थ में भी शुभ योग हो तो श्रीमान् हो (३८) चतुर्थेश सप्तमेश द्वितीयेश और लाभेश लग्न को देखते हो और एकादश को शुक्र देखता हो तो धनवान् हो (३९) नीच गत ग्रह भी लग्न को देखते हों तो भी भाग्य योग होता है (४०) चर लग्न का एकादश,स्थिर लग्न का नवम और द्विस्वभाव लग्न का सप्तम बाधा स्थान कहा जाता है। इनके स्वामी और इनमें रहने वाले अपनी दशा में हानिकारक होते हैं।

गुरु - शनि गोचर - फलम्

गुरु : - जीवे जन्मन्यपगतधनधीः स्थानभ्रष्टो बहुकलयुतः। प्राप्यार्थेऽर्थान् व्यरिरपि कुरुते कान्तास्याब्जे भ्रमरविलसितम् ॥१॥ स्थानभ्रंशात्कार्यविघाताच्च तृतीयऽनेकैः क्लेशैर्बन्धु धुजनोत्थैश्च चतुर्थे। जीवे शांति पीडितचितश्च स विन्देन्नैव ग्रामे नापि वने मत्तमयूरे॥२॥ ज़नयति च तनयभवनमुपगतः परिजनशुभसुत-करितुरगबृषान् । सकनपुरगृहयुवतिवसनकृन्मणिगुणनिकरकृदपि विबुधगुरुः॥३॥ न सखीवदनं तिलकोज्जवलं न चं बनं शिखिकोकिलनादितम् । हरिणप्लुतशा-विचित्रितं रिपुगते मनसः सुखदं गुरौ॥४॥ त्रिदशगुरुः शयनं रतिभोगं धनमशनं कुसुमान्युपवाह्यम् । जनयति सप्तमराशिमुपेतो ललितपदां चर गिरं धिषणां च॥५॥ बन्धं व्याधिं चाष्ट में शोकमुग्रं मार्गक्लेशान् मृत्युतुल्यौश्चरोगान् । नैपुण्याज्ञापुत्र-कर्मार्थसिद्धिं धर्मे जीवः शालिनीनाँ च लाभम्॥६॥ स्थानकल्यधनहा दशर्क्षगस्तत्प्रदो भवति लाभगो गुरुः। द्वादशेऽध्वनि विलोमदुःखभाग्याति यद्यपि नरो रथोद्धतः॥७॥

शनिः- प्रथमे रविजे विषवाह्निहतः स्वजनैर्वियुतः कृतबन्धुवधः। परमदेशमुपैत्य सुहृद्धवनो विमुखार्थसुतोऽटकदीनमुखः॥१॥ चारवशाद् द्वितीयगृहगे दिनकरतनये रूपसुखापवर्जिततनुर्विगतमदबलः। अन्यगुणैः कृतं वसुचय तदपि खलु भवत्यम्बिवव वंशप्न्नपतितं न बहु न च चिरम् ॥२॥ सूर्यसुते तृतीयगृहंगे धनानि लभते दासपरच्छदोष्ट्रमहिषाश्वञ्जरखरान् सद्म विभूतिसौख्यममितं गदव्युपरमं भीरुरपि प्रशास्त्यधिरिपूश्च वीरललितैः॥३॥ चतुर्थ गृहं सूर्यपूत्रेऽभ्युपेते सुहृद्वित्तभार्यादि-भिर्विप्रयुक्तः। भवत्यस्य सर्वत्र चासाधु दुष्टं भजुङ्गप्रयातानुकारं च चित्तम् ॥४॥ सुतधनपरिहीणः पञ्चमस्थे प्रचुरकलहयुक्तश्चार्कपुत्रे। विनिहतरिपुरोगः षष्ठयाते पिबति च वनितास्यं श्रीपुटोष्ठम् ॥५॥ गच्छत्यध्वानं सप्तमे चाष्टमे च हीनः स्त्रीपुत्रैः सूर्यजे दीनचेष्टः। तद्वद्धर्मस्थे वैरहृद्रोगबन्धैर्धर्मोऽप्युच्छिद्येद्वैश्वदेवीक्रियाद्यः॥६॥ कर्म प्राप्तिदर्शमेऽर्थक्षयश्च विद्याकीर्त्योः परिहानिश्च सौरे। तैक्ष्ण्यं लाभे परयोषार्थ-लाभश्चान्तये प्राप्नोत्यपि शोकोर्मिमालाम् ॥७॥ अपि कालमपेक्ष्य च पात्रं शुभकृद्विदधात्यनुरुपम् । न मधौ बहुकं कुडवे वा विसृजत्यपि मेघवितानः॥८॥

प्रसूती लग्न विचार

मेष - जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर उपसूतिका का २ या ३, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पैर से प्रसव, भूमि पर, घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एव मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन ४।११।१६।४४।५८ वर्षो में बालक कष्ट पावे इन वर्षो के आरम्भमें तुलादान गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १००वर्ष जीवे।

वृष- माता का दक्षिण में शिर,उपसूतिका ३ या ४ जन्मोपरान्त दो और आयी, जन्मते बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण अधोमुख पैर से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान श्वेत, स्वच्छ वस्त्र जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया १।१८।३३।४४ [illegible] वर्षो में बालक कष्ट पावे। इन वर्षो के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षो से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन-माता का पश्चिम में शिर, उपसूतिका ३ या ५ माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, [illegible] से प्रसव मुख ऊपर को जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाक छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म। माता ने पहले लवणयुक्त विचित्र अल्प भोजन किया, दूध कम [illegible] ४।१०।१३।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे इससे बचे तो १०० वर्ष जीवे,कष्टकारक वर्षो के प्रवेश समय तुलादान छायादान मृतसंजीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणकर।

कर्क-माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, वाम भाग में चिन्ह पैर के बल जन्म घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता का वस्त्र श्वेत या लाल, माता ने प्रसव के पूर्व मुधर एवं शीतल भोजन किया था। दीपक उठ ाया गया। बालक के वामांग मे लहसन आदिक का चिन्ह, बालक जन्मांत्तर देर से रोया ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षो में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश समय तुलादान छायादान मृतसंजीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणकर।

सिंह- माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलिन-सा लाल वस्त्र शुष्क कसैला या कटु भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३ पीछे से १ आई दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया। दक्षिण भाग में प्रसव स्थान। ५।१२।२८।३६।४८ इन वर्षो में बालक कष्ट पावे इनसे बचे तो ६४ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षो के प्रवेश होते हैं श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जप या आदित्य हृदय पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण होवे।

कन्या - माता का दक्षिण में शिर, रक्तजीर्ण वस्त्र मिष्ठ ान्न बासी चीज या बड़े अन्न का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५ दीपक हाथ में आठ ाया गया, बालक के जन्मते ही अर्ध शब्द किया, नैऋत्यकोण में सूतिका स्थान ४।१५।२३।३५।४५ इन कष्टकारक वर्षों में गोदान मृत्युज्य जपादि और मूंग के मोदक भोजन कराना श्रेयस्कर है, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला - माता का शिर पश्चिम या पूर्व को श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुजा हुआ। अन्न ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोध पूर्वक खाई गयी थी। जन्म समय स्त्री ३ या वहां एक कन्या भी हो दीपक उठ ाया गया बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्ध करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान ८।१५।३६।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षो के आरम्भ में नवग्रह दान, नवग्रह जप करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षो से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक - माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दुग्ध वस्त्र, अधिक अमधुर क्रोध पूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३ पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया दीर्खश घर के पश्चिमी भाग में प्रसव स्थान, ११।२८।५८ [illegible] इन कष्टकारक वर्षो के आरम्भ में मृत्युञ्जय जप औरतुलादान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षो से बचे तो १०० वर्ष जीये।

धनु-माता का शिर पश्चिम पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पकवान भोजन, जन्म समय स्त्री [illegible] ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, [illegible] के वायव्य कोण में सूतिका स्थान १।१०।१८२१।४२।६७ इन वर्षो के आरम्भ में शिव [illegible] महामृत्युञ्जय जप ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षो से बचे तो ७१ वर्ष जीवें।

मकर - माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दूध या कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था, जन्म समय १ स्त्री पीछे आई। दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया और छींक भी किया। घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिका स्थान ५।१३।२७।३३।५७।६३।८४ इन कष्टकारक वर्षों के आरंभ में रुद्राभिषेक स्वर्णदान अन्नदान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवें।

कुम्भ - माता का पश्चिम को शिर, जीर्ण धूम्र-वस्त्र या मलिन वस्त्र मधुर शीत शाकादि भोजन कष्ट अधिक, जन्म के समय पास में स्त्रियाँ ४ या २, १ पीछे से आई उनमें से एक स्त्री गर्भिणी थी। दीपक स्वस्थान में टिका रहा,बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका गृह २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के आस-पास प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवें।

मीन - माता का शिर उत्तर, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र ढंग का भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५ दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था। बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशानकोण में सूतिका स्थान, १।७।१३।३६।४५ इन कष्टकर वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह शान्ति हवन, मृतसंजीवनी मन्त्र का जप करना श्रेष्ठ है।यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवें।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न में लक्षण मिले वही बालक का जन्म लग्न जानना, क्योंकि वह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

राशियों का वर्ण - मेष लाल, वृष सफेद, मिथुन हरा, कर्क पाटल, (गुलाब के फूल जैसा थोड़ा लाल) सिंह धूम्र, कन्या चित्र, तुला कृष्ण, वृश्चिक गौर, धनु गौर, मकर भूरा, कुम्भ और मीन श्वेत वर्ण का है।

ग्रहों का वर्ण - सूर्य लाल, चन्द्रमा गौर, मंगल लाल, बुध श्याम, गुरुपीत, शुक्र श्वेत, शनि काला, राहु और केतु भी काले होते हैं।

राशियों की दिशा - मेष, सिंह, धनु पूर्व का। वृष कन्या, मकर दक्षिण का। मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम का और कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तर के स्वामी होते हैं।

ग्रह दिशा- सूर्य पूर्व, शुक्र अग्निकोण, मंगल दक्षिण, राहु नैऋत्य, शनि पश्चिम, चन्द्रमा वायव्य, बुध उत्तर और गुरु ईशान का स्वामी है। जो ग्रह अपनी राशि से मित्र की राशि में और उच्च में रहता है एवं शुभ ग्रह और मित्र के साथ रहता है वह बलवान कहा जाता है और ग्रह शत्रु के गृह में नीच में, पाप ग्रह से और शत्रु से युक्त होता है यह दुर्बल माना जाता है। जो राशि अपने स्वामी से तथा शुभ ग्रह से युत हो तो बलवान तथा पाप ग्रहयुक्त राशि दुर्बल होती है। जिसके घर का स्वामी छठे , आठवें और बारहवें भाग में पड़े अथवा षष्ठाष्टम द्वादशाधीश जिस भाव में पड़े उस भाव की हानि होती है।

जातक प्रकरण

अथादौ पितृपरोक्षज्ञानम्- जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे १, बुध शुक्र के भवन में चन्द्रमा हो, लग्न शनैश्चर चन्द्रमा से अष्टम हो ३, भौम सप्तम चन्द्रमा को न देखता हो ४- इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना। जहाँ राहु शय्या वहाँ भंग तहाँ कुज होय।

अथ मातृ-सुख-नाश योग - (१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पाप ग्रह हो (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे (५) चौथे भाव में शनि पाप ग्रह से ही दृष्ट हो, इन पाँचों में से एक भी योग मिले तो माता का भय हो - जप दान करना चाहिये।

पितृनाशयोगः- (१) सूर्य मंगल दशम वा नवम में गये हों। (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो इन चारों योगां में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोगः- भातृ गृह को ईश जो, भौम संग त्रिक होय, जाके ऐसे योग है, भ्रातृ हीन सो होय।

सन्तान सुख नाशक योग - गुरु से पञ्चम गेहपति, परे जाय त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव।। पुत्र धर्म अरु लग्नपति, जाय परे त्रिक यान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हानि।

नीच योगः- सहज सप्त धनु सदन में, क्रूर बसे रवि आई। भवन पाँचवे, गुरु बसे, नीच जातमान सोई।। सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विक्राल। म्लेच्छ होइ कुछ दिवस में यद्यपि ब्रज को बाल।। जिसके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज। लहै सर्वदा राज सुख होवे वेश्याबाज।

जारज योग - भानु, चन्द्र तनु ना लखै लग्नप लखे न लग्न। जो शिशु है पर पस्य को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुल गुरु तिथि अष्टमी, चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तरा जन्म में नव शिशु कही वरार।।

अथ स्त्री जातक- क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहिं होय सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहोय कोय। जाके कुज दश में बसे ऋणी हो पति तासु। लग्न राहुशनि सातवेंपति जीवै नहिं जासु। क्रूर युत लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुध वार कहँ कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में, कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें, कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि, निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहै, पति को तजे तमारि। छठे आठ वें चन्द्र जो, क्रूर परे जिन अंग। भौम आठ वें भवन में, सो पति करिहै भंग।। राहु सातवें लग्न कुज संकट शुभसो हीन। ताको पति जीवित रहे, वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूर युत राहु बसे तन धाम। राँड हो कुछ दिवस में, कहत गणक गुणधाम। पाप ग्रहों के बीच में, लग्न होइ वा चन्द्र। सो तिय नाशे दूनों, भाषत कविकुल वृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसे, सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनुभृगु बसे, बुधजन कहत विचारि।।

वैधव्य (विष) कन्यायोगः- चौपाई-रविवार द्वितिया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय।।१।। कृत्तिका होय शनिश्चरवार। याते तिथि कर करो विचारं।।२।। शतभिषा मंगलवार । कहो द्वादशी तिथि निर्धार।।३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानी सोय।।४।। जन्म लग्न द्वय शुभ ग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वय ग्रह मानो। तो कन्या को विधवा जानो।।६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार साते तिथि लीजो निर्धार ।।८।। रविवार द्वादशी जो होय नक्षत्र विशाखा जानो सोय।।९।। ऐसी योग ससि जो परै, तो कन्या को विधवा करे।।१०।। धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूरज होय सुत सदन में, कन्या विधवा जान।।११।।

वैधव्य (विष कन्या) भङ्गयोगः- जन्म लग्न वा चन्द्र ते, शुभ ग्रह अष्टम होय। अथवा सप्तम लग्नपति, शुभगा कन्या होय।

काकबन्ध्या योगः- द्वादशे अष्टमे काकबन्ध्याः। मन्दार्काषष्ठमै बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।

स्त्रीणां राजयोगः- चौपाई केन्द्रभाव नभगा शुभ होई। नर तनु पाप कलत्र न कोई। रानी होई बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइहैं सुत वाके। चन्द्र तुंग बसे तन जाई। लाभ नवम गुरु आगे भाई। सोई तिय होय नृपति की रानी। जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षटवर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि रवि केन्द्र भवन में सोई। ऐसे योग बने सुकुमारी। रानी होय सदन बद भारी।। **दोहा**- कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि भरपूर। पुत्र पौत्र धन भूरियुत ताको पति नृप शूर।। लाभ भवन सित चन्द्र जी, सोमज सप्तम भौन। सुर गुरु परिपूरन लावै, रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभाव विचार- पंचमे शुभसंदृष्टे पंचमाधिपतावपि केन्द्र कोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मासः-कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूती हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहाँ सर्वत्र सौर मास को ग्रहण करें। प्रसूती गौ आदि का तत्क्षण दान कर आहुति मन्त्रों से घृत युक्त पीली सरसों का हवन करे। कार्तिक में बच्चा जन्म तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ हो।

त्रिखल जन्म फल-यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा ३ पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं। कृपणता त्याग कर त्रिखला शान्ति करे तो शुभ होता है।

यदि बच्चे को सर्व प्रथम ऊपर की दंत पक्ति निकले तो मातुल को भयप्रद हो। सदन्तौर्ध्वपंक्ति वाला बालक जन्मे तो माता पिता आदि को भयप्रद होता है। शान्ति करानी चाहिए।

अथैकनक्षत्रजन्मफलम्- वृद्धगर्ग जी कहते हैं कि- यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता का एक नक्षत्र में और एक ही चरण में जन्म हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

कन्याजन्म नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठ	विशाखा
फलम्	श्वसुरहानि	सासनाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतश्वसुरहन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नव तथाऽऽश्लेषाद्यपादज।।

अथ मूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठ	मूल	रेवती

यह ६ नक्षत्र गन्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करनेवाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन भवन तथा घोड़ो का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र को ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए। तत्पश्चात् शान्ति कराके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा के चरण जन्म फल

मूल			आश्लेषा		
चरण		फल	चरण		फल
१	में	पितृनाश	४	में.	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

अथ मूलनिवास-फाल्गुन ज्येष्ठे वैशाखे मार्गे मूले रसातले। आषाढ़े वा आश्विने माघे स्वर्गे भाद्रपदे स्थितिः। श्रावणे कार्तिके चैत्रे पौषे च मृत्युमण्डले शुभं स्यात् स्वर्गपाताले मृत्युलोके च मृत्युदः।। तृतीय दशमी षष्ठी शनिः भौमः समन्वितः। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्। यदि गण्डे प्रसूयेत् महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टि वैधृती शूले, गण्डतिगण्डे च परिघे यमकंटके। ब्रहदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गण्डदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शांतिकम्।। यथा सर्वविषं च मन्त्र श्रवण विलीयते। तथैव गण्डदोषीऽपि विधानेन विलीयते।। यत्नैः शतौषधीमूले सप्तमृत्सि पूरयेत्। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि। बालकान्वापित्रस्नाने विप्रसम्पादिते सत्ति। जप होमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धाचरणे मूले कष्टं स्मृतं बुधैः मुनीनां वचनं सत्यं मन्त व्य कल्याणं इप्सिभिः।।

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
७	८	११	११	१२	१२	३	३
मूल नाश	वंश क्षय	मातृ पीड़ा	मातुल नाश	राज्य लाभः	राज्य मंत्री	राज्य प्राप्ति	श्र.श्रा.

ज्येष्ठ नक्षत्र की अन्तिम पाँच घटी, किसी के मत से चार घटी किसी के मत से एक घटी और किसी के मत से आधी घटी एवं मूल नक्षत्र की आदि की आठ घटी किसी के मत से चार घटी, दो घटी और आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाता है, इस समय में जो बच्चा जन्मे उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष तक मुह न देखे। घनगण्डे दरिद्रोऽपि शान्ति कुर्यात् स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोतिचाभुक्तर्क्षे विशेषतः।

अश्विनीनक्षत्रफलम्- अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय होता है। विशेषः-पितृहा तु दिवाजातो रात्रीजातस्तु मातृहा। आत्मकष्ट सन्धयोर्जातो नास्तिगण्डो निरामयः।

आश्लेषापाद फलम्- आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो शुभ सम्पत्तिदायक फल, द्वितीय चरण में धन का नाश, तृतीय चरण में माता का नाश, चतुर्थ चरण में पिता का नाश होता है। इसी नक्षत्र के दिन शांति करनेसे दोष नष्ट हो जाते हैं।

मघापाद फलम् - आद्यपादे मघायाः स्यान्मातृपक्षस्य नाशनम्। द्वितीये पितृनाशः स्यात्तृतीये सुखसम्पदः। चतुर्थे द्रविणं विद्यादिति शंकरभाषितम्।

ज्येष्ठापादफलम्- आद्यपादोऽग्रजं हन्ति अनुजं च द्वितीयजे। तृतीये जननीनाशः आत्मानं च तुरीयके। ज्येष्ठजपादयो ज्येष्ठे घ्नन्ति बाला न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षमातरं तथा।

रेवतीपादफलम्- रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री या प्रबन्धक, तीसरे में सुख सम्पत्ति युक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

सामान्य योग विचार

जन्मकुण्डली में जन्मराशीश बलहीन होकर पंचम नवम में हो तो क्रोधी होता है। जन्म लग्नेश और राशीश षष्ठ हो तो दुर्बल होता है। षष्ठ मेश अष्टमेश नवमेश पापयुक्त हो तथा पाप दृष्ट हो तो उस पुरुष की स्त्री व्यभिचारिणी होती है। चन्द्रमा मेष या वृष में मंगल शनि के साथ हो तो उसको दुष्ट रोग होता है। चन्द्रमा शुक्र मंगल कर्क वृश्चिक और मीन में हो तो भी कुष्ट रोग हो। बृहस्पति षष्ठाष्टम द्वादश में हो तो गुप्त रोगी हो मंगल और शनि षष्ठ वा द्वादश में हो तो वह व्रणयुक्त होता है।

मेष मीन कर्क मकर और वृश्चिक राशि में शनि, चन्द्रमा होकर नवम स्थान में पापयुक्त हो तो वह अंगहीन होता है। मंगल शनि और बृहस्पति चतुर्थ में हो तो हृदय रोग होता है। चतुर्थ में मंगल, पंचम में सूर्य बुध राहु और अष्टम शनि पड़ा हो तो वह सदैव दुःखी रहता है। मंगल और बुध एकत्र शुभग्रह के राशिमें हो अथवा शनि के राशि में हो, रवि की दृष्टि हो तो वह विदूषक होता है। मंगल बुध और चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो शीघ्रोत्तर दानशील होता है।

शुक्र और बुध सप्तम में हो (१) दशम में हो (२) शुक्र और मंगल दशम तथा सप्तम में हो (३) या दशम चतुर्थ में हो (४) चन्द्रमा से दशम स्थान में और शनि से चतुर्थ में शुक्र हो (५) सो व्यभिचारी होता है।

शुक्र शनि ग्रह मंगल के राशि में हो (१) सप्तम में शुक्र लग्नेश हो (२) शनि चन्द्रमा मंगल से दशम या चतुर्थ में हो तो उसकी स्त्री उससे सन्तुष्ट नहीं रहती।

सूर्य पंचम नवम वा द्वादश में पापयुक्त हो तो नेत्र विकार होता है और शनि हो तो कर्ण विकार होता। शुक्र मंगल अष्टम में हो (१) मंगल और शुक्र मंगल की राशि में हो (२) शुक्र और चन्द्रमा मंगल की राशि में हो या शनि बृहस्पति को देखता हो तो शुष्क वृद्धि होती है। धनु मेष या वृष लग्न हो पापग्रह देखते हो तो दन्त विकार होता है। पापग्रह का लग्न हो वा धनु या वृषलग्न हो और पापग्रह होतो खल्वाट होता है। नवम द्वितीय द्वादश और पंचम में पापग्रह हो तो वन्ध्यायोग होता है।

लग्न चन्द्रमा से सप्तम स्थान अपने स्वामी और शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट होतो उसका विवाह होता है। लग्न चन्द्रमासे पंचम स्थान स्वामी शुभ ग्रह से युक्त हो तो सन्तति होती है। कन्या लग्न में सूर्य और चन्द्रमा हो तो स्त्री पुरुष दोनों की आँख में विकार होता है।

शुक्र सप्तम स्थान में मंगल या शनिके वर्ग में हो मंगल शनि देखते भी हो तो वह स्त्री संसक्त हो,यदि ये चन्द्रमा के साथ हों तो उसकी स्त्री पुंश्चली होती है शुक्र और चन्द्रमा से सप्तम मंगल हो तो वह पुरुष स्त्री पुत्रहीन हो, सप्तम में स्त्री पुरुष दोनों ग्रह हो पाप ग्रह की दृष्टि हो तो अधिक अवस्था में विवाह होता है। शुक्र मंगल सप्तम में पाप दृष्ट हों तो प्रत्यक्ष रोग होता है। चन्द्रमा कर्क और वृश्चिक के नवांश में पाप युक्त हो तो गुप्त रोग होता है। द्वितीय और द्वादश में दो पाप ग्रह हो चन्द्रमा लग्न में और सूर्य दशम में हो श्वेत कुष्ठ होता है। चन्द्रमा दशम में मंगल सप्तम में और शनि द्वितीय में हो तो अंगहीन होता है। चन्द्रमा दो पाप ग्रह में रहकर सूर्य हो तो श्वास इत्यादि रोग होते हैं।

(१) अथ तेजी मन्दी निकालने का ध्रुवा

अथ दिन ध्रुवा ।।१।।

सूर्य १३०। चन्द्र ९४। मंगल ८०९। बुध ७०२। बृहस्पति ७१३। शुक्र ८०८। शनि ८५। पृथ्वी भर का ध्रुवा २०८५।

अथ तिथि ध्रुवा।।२।।

प्रतिपदा ६१०। द्वितीया ७१०। तृतीया ४८१। चतुर्थी २५० पंचमी ३३४। षष्ठी ३०४। सप्तमी ८१२। अष्टमी १११। नवमी ५६५। दशमी ३०५। एकादशी २२३। द्वादश २६१। त्रयोदशी ५२४। चतुर्दशी ५५२। पूर्णिमा ६३०। अमावस्या १६६।।

अथ नक्षत्र ध्रुवा।।३।।

अश्विनी १७६। भरणी ६८३। कृत्तिका ३७०। रोहिणी ७७५। मृगशिरा १०२। आर्द्रा १४६। पुनर्वसु ५४०। पुष्य ६३४। श्लेषा १७०। मघा ७३। पू.फा. ८५। उ.फा. १४८। हस्त ८१०। चित्रा ३०५। स्वाती ८६१। विशाखा ७३४। अनुराधा ७१२। ज्येष्ठ ७१६। मूल ६४३। पू.षा.६१४। उ.षा. ५२३। अभि.६८३। श्रवण ६५७। धनिष्ठ ५००। शतभिषा ५६४। पू.भा.प.३३६। उ.भा.प.१८३। रेवती ८३०।

अथ मास ध्रुवा ।।४।।

चैत्र ६१। वैशाख ६३। ज्येष्ठ ६५। आषाढ़ ६७। श्रावण ६९। भाद्र ७९। आश्विन ७३। कार्तिक ५१। मार्ग ५३। पौष ५५। माघ ५७। फाल्गुन ६५।

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ।।५।।

मेष ५२०। वृष ७६२। मिथुन ५१०। कर्क २१८। सिंह ८३०। कन्या २६०। तुला ५०३। वृश्चिक ७११। धनु ५२४। मकर ५५४। कुम्भ २७०। मीन ५८६।

अथ देश तथा नगरों की ध्रुवा।।६।।

कलकत्ता ३४७। नागपुर १६६। असाम ७९१। इटावाँ ८९०। हरद्वार १७२। बीकानेर २१३। अजमेर १६७। बम्बई १६८। मध्यप्रान्त १६८। नेपाल १५४। चीन ६४२। पंजाब ४१९। रंगून १६७। सूरत १२८। यूरोप २७६। अमेरिका ३२२।

अथ पदार्थों की ध्रुवा ।।७।।

सोना २५३। चांदी ७६०। तांवा ५६३। पीतल २५८। लोहा ९१५। कांसा-पत्थर १६३। मोती १४२। रुई ६१७। कपड़ा १२७। पाट ४७६। हैसियन ७३८। सूर्ता १०३। तम्वाकु २४०। सुपारी २५२। लाह ८८। मरिच २६८। घृत ४६४। अतर ७५ गुड़ ३५६। चीनी ३२८। ऊन ११२। शाल ८११। धान ७१२। गेंहू ३३२। तेल मूंग ८०२। चावल ७७४। तीसी ३८६। गौ १३२। बैल १६३। भैंस ६२८। हाथी ८३०। घोड़ा ८३५।

अथ तेजी मन्दी देखने का चक्र।।८।।

सूर्य १ तेज। चन्द्र २ अतिमन्द। भौम ३ तेज। बुध ४ अतितेज। बृहस्पति ५ मन्द। शनि ६ तेज। राहु ७ सम। केतु ८ तेज। शुक्र ९ तेज।

जिस देश की, जिस वस्तु की, जिस दिन तेजी मन्दी निकालनी हो उस देश, वस्तु, तिथिवार, नक्षत्र मास, राशि इन सबके ध्रुवाओं का योग (जोड़) कर ९ का भाग देकर शेष से जिस दिन को विचारना है, उस दिन से शेष तुल्य कोष्ठ आठ वें चक्र में देखकर तेजी मन्दी ज्ञान कर लेवें।

(२) दैनिक तेजी मन्दी निकालने की रीति

वस्तु विंशोपक धातु

सोना ९६। चाँदी ७१। पीतल ५९। मूंगा ५१। लोहा ५४। शीशा ९०। कांसा १२७। मोती ९५। रांगा ६७। ताँबा १०। कुमकुम २५।

किराना

कपूर १०२। गुड़ ७३। जीरा ७०। शक्कर १०२। मिश्री १०३। ज्वार १००। घृत ५०। तेल १०। नमक ५९। हींग ६२। सुपारी ३०४। अरहर ७२। मिर्च ८३। सूत ९४। सरसों ८०८। कपड़ा १००। चमड़ा ८७। मूंग १५। सोंठ १००। गुड़ ४०। बिनौला ८८। मजीठ १४४। नारियल ७८१। छोहारा १४४। चावल १७। जौ ५७। साठी १६५। गेहूँ १४ उड़द ८०। तिल ५३। अरहर ७२। चना ५६। कपास १२७। अफीम १९२ रुई ७७।

पशु

अश्व ७७०। हाथी ६४। भैंस ९२। गाय ७७ बैल ८७। बकरी ६०। सांड़ ९४ ऊँट ८५।

नक्षत्र विंशोपक

अश्विनी १०। भरणी १०। कृत्तिका ९६। रोहिणी २०। मृगशिरा ५६। आर्द्रा ८६। पुनर्वसु २१। पुष्य ६४। आश्लेषा १३५। मघा १५०। पू.फा.२२०। उ.फा. ७२। हस्त ३३४। चित्रा २१। स्वाती २१०। विशाखा ३२०। अनुराधा ४९३। ज्येष्ठ ५५९। मूल ५५२। पू.षा. १४२। उ.षा.४२०। श्रवण ४५०। धनिष्ठा ७३६। शतभिषा ५७६। पू.भा. २७५। उ.भा. २२६। रेवती २५६।

संक्रान्ति राशि विंशोपक

मेष ३७। वृष ८४। मिथुन ६६। कर्क १०९। सिंह १२५। कन्या १०२। तुला १०४। वृश्चिक १४४। धनु १४४। मकर १९८। कुम्भ १९०। मीन १८०।

तिथि		विंशोपक		वार		विंशोपक
१	१८	१०	१७	मंगल	५०	निकालनी हो उस महिने की संक्रान्ति का ध्रुवांक तिथि वार उसमें सब का ध्रुवांक जोड़ देवे। फिर ३ का भाग देने से १ शेष तो मन्दी २ समान और ० बचे तो तेजी।
२	२०	११	१५	बुध	७२	
३	३२	१२	११	गुरु	६५	
४	२४	१३	१३	शुक्र	२४	
५	२६	१४	८	शनि	१४	
६	२५	अमावस्या	९	**तेजी मन्दी**		
७	२३	पूर्णिमा	१६	जिस मास की		
८	२१	रवि	४०	या जिस दिन की		
९	१९	चन्द्र	५०			

(३) तेजी मन्दी निकालने का तृतीय प्रकार

वस्तु	स्वामी राशि	पुरश्चरण
गेहूँ	कुम्भ	नियम पूर्वक ब्रह्मचर्य से कामनानुकूल कार्य करना
सुवर्ण	मेष	
मोती	मीन	
खाँड़	कुम्भ	
चावल	मेष	
ज्वार	वृश्चिक	
रुई	मिथुन	
चाँदी	कर्क	

चन्द्रमा- जिस वस्तु के स्वामी राशि से आठ वां तथा बारहवाँ चन्द्रमा हो तो वस्तु तेज होवे। उस वस्तु के दशमी राशि से पहले दूसरे, तीसरे, पांचवे, छठे, सातवें, नवे, दसवें और ग्यारहवे स्थान में चन्द्रमा आवे तो वह वस्तु मन्दी कारक है।

सूर्य-मं.श.रा. के यह क्रूर ग्रह कहलाते हैं। ये क्रूर जिन प्रभाव राशि से तीसरे छठे दसवें ग्यारहवें रहे हो वह वस्तु मन्दी करेंगे। वही क्रूर जिस वस्तु के स्वामी राशि से पहले, दूसरे चौथे, पांचवे, सातवें, आठ वें नवें, बारहवें, जा रहे हों वह वस्तु तेज करेंगे। जितने अधिक क्रूर उपर्युक्त स्थान में गये होंगे, उतनी अधिक तेजी आवेगी।

अग्नि बुझाने का मन्त्र (आग बाँधना)

ॐ नमो कोरा करावा जल सा झरिया, ले गौरा के शिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द साँचा पिड काँचा फूरी मन्त्र ईश्वरी वाचा। मन्त्र ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें।

विधि-कूप सन्निकट से सात कंकड़ों को लेकर प्रत्येक पर सात बार पढ़ कर अग्नि की ओर देवे।

नजर झाड़ने का मन्त्र

गरुर चरण दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारन, देव दानव दैत्यानी लाई नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चाटी हुँकारे फूकार उडाय माटी शलिकेर पाँव देख, ठुकरिया आय अमुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलाय कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा। दीपावली में सिद्ध करके इस मंत्र से झारने का विधान है।

सर्प विषनाशक मन्त्र-औषधिः

गरुड़ास्त्र मन्त्र - ॐ सुपर्णोसि स्मरत्त्मां स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुबृहद् यन्तरेवक्षी। सोम आत्माछन्दा स्ययंमानि यजूंषिनाम साम। त तनुर्वाम देवं यज्ञयज्ञि यम्य छन्विष्टायाऽशम्या सुपर्णोसिगरत्त्मान्दिवं गच्छ स्वःपत ॐ। इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्ग से झारने का विधान है।

दधि मधु नवनीता, पीप्पली श्रृङ्गवेरं मिरचमपि कूटो प्रतिहन्सा सुकेशी। यदि डसति सरोष तक्षको वासुकीवा यम सदन, गतानाँनास्ति मृत्युर्नाराणाम्।

गाय के ताजे दूध से निकाला जाता मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल अदरक मिर्च और कूट, बराबर मात्रा में मिलाकर साँप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाता है।

(१) चिन्ता निवारण लक्ष्य प्राप्ति मन्त्र -

ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मैय नमः।

(२) पुत्र कन्या के विवाह में यदि कठिनाई उपस्थित होती हो या विघ्न होता हो तो श्रीकात्यायनी देवी का पूजन विधि से करावे।

स्थायीधन स्थिति मन्त्र - ॐ ही क्लीं महालक्ष्मै नमः।।

प्रसवसमयेजलमन्त्रः- आकाश टले पर्वत टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कोकी रिक्ता कुण्डली वसिया बाहिर हब असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़े।। ताजा शुद्ध जल को सात बार मन्त्र पढ़कर परोरने के पश्चात् पिलाने का विधान है।

मन्त्र - शक्ति

अथ मृत्युञ्जय मन्त्र - ॐ हौं जूंसः भुर्भुवः स्वः त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ।

पुराणोक्तामृत्युञ्जयमन्त्रः "मत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाह महादेवाय ते नमः।।"

ॐ हौंजूसः त्र्यक्षरमन्त्र है

इनके विनियोग न्यास नित्यकर्म प्रयोगशाला में देख लीजिये।

धन धान्य पूर्णकर- अन्नपूर्णा का मन्त्र

ॐ ही क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णस्वाहा क्लींश्री ही ॐ- इस मन्त्र के प्रभाव से धन धान्य पूर्ण रहता है। लक्षजप-तिल लाल धान की लाई, खीर, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिए। २ लक्षजप का पुरश्चरण। क्षेत्र के भीतर मन्त्र या तावीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

आपदुद्धारक बटुक भैरव मन्त्र

ॐ नमो भगवते बुटुकाय आपादुद्धारकाय कुरु कुरु वटुकाय हों। भात और सरसो चन्दन चूरा आदि से हवन करना चाहिये।

सब सिद्धिप्रद हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मन्त्र

ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा। खीर, दाख, ऊखरसा पखाड़, पीपल खैर की लकड़ी से हवन १ लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के अनुकूल हवन वस्तु होना चाहिए।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ॐ छः फट् स्वाहा। जल अभिमंत्रित करके देना

आदित्यरथवेगेन विष्णुवालबलेन च ताक्ष्र्य पक्ष निपातेन भूम्या गच्छ महाविष। राई से उतारना। (ताक्ष्र्य - गरुड़)

आँख झाड़ने का मन्त्र- शर्याति सुकन्यां च्यवनं शुक्रमश्विनी संध्योः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति। जल से धुलवाना।

ज्वर झाड़ना - ॐ नमो नरहरे रोगापहारिने ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

अन्तरा तिजरा चौथिया का मंत्रखलंकायाम् दक्षिणेतीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरण मात्रेण ज्वरो याति दशोदिश। पीपल के पत्ते पर लिख कर डोरा से बाँध देवे।

यदि गर्भवती को क्लेश हो तो सुख से प्रसव के लिये चन्दन से चक्रव्यूह कांसे की थाली में बनावे फिर धोकर धर्मराज का स्मरण करके पिलावें।

मंत्र-हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीनामयक्षिणी तस्य नूपुरशब्देन विशल्या गर्भिणी भवेत्।

चिरचिरा (चिचिड़ी) मस्तक में बाँधने से सुख से प्रसव होता है। इन सब मंत्रों को १०८ बार पढ़ना।

यात्रा में स्मरण करने का मंत्र - यः स्मरेत्तुलसी सीतां रामं सौमित्रणा सह। कार्यं कृत्वा रिपूञ्जित्वा क्षेमेणायाति वैनरः। दही थोड़ी सी अपने खाकर यात्रा करें और चंदनतिलक से सदा पूर्ण रहे।

गाँव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिये गुरु पुष्य हस्तार्क अथवा उत्तर पूर्व में मिट्टी के कड़े कसोरे (परई) के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दे तो बिमारी नहीं होगी।

मंत्र-अर्जुनः फाल्गुनी विष्णुः किरीटश्वेतवाहनः। वीभत्सुविजयी पार्थ सव्यसाची धनंजय। कपिध्वजी गुड़ाकेशो गांडवी कृष्णसारथिः।

एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च योलिखेत् न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते।

ज्वर झाड़ने का मंत्र - ॐ नमो अजेपाल की दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच।

इस मंत्र को सात बार पढ़कर झारे तो ज्वर न रहे। इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में सातबार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिये।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र-

यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रं प्रजापतेयत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्ज शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्र-

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मणत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्तव परित्यागो गच्छ सूत्रं यथासुखम्।

सूर्यार्घ्य मन्त्र

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पयमां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।

औषधी खाने का मन्त्र

अच्युतानन्द गोविन्द नामोच्चरण भेषजात्। नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

आयु-निर्णये

राशि सन्धिश्चखेटानां दशा रोगप्रदः भवेत्। त्रिशद्भागमनुक्रान्तदशायां मरणं नृणाम्।।१।। षष्ठ्यष्टमस्थो रिपुद्दणमूर्ति पापग्रहः प्रागृहोपगश्चेत् स्यात्तदशायां मरणं नराणां वदन्तिबुद्धे विजितस्वदाये।।२।। पञ्चम्यारदशामृत्यु दद्यात्षष्ठीगुरौदशा। दानेश्चतुर्थीमृत्यु स्याद्दशाराघरपंचमी।।३।। नीचारातिविमूढस्य विपत्प्रत्परिनैधनाः। दशदद्यमूर्ति तस्य पापयुक्त विशेषतः।।४।। यद्यदभावार्थकामेष दशास्वन्तर्दशासु तराद्भावविनाशः स्वात्तयुतकेक्षितकारकैः।।५।। अष्टमस्यत्रिभागीश पतिः स्थितगृहशनौ। तदीशनवभागर्थागतेवा मरणं भवेत्।।६।। रन्ध्रेश्वरौरन्ध्रयुक्तो रन्ध्रद्रष्ठरमेश्वरः। रन्ध्राधिपयुतश्चैव चतुः षट्यंशः नायकः।।७।। रन्ध्रेश्वराधिशत्रुश्च सप्तछिद्र ग्रहाः स्मृता। तेषांमध्येवलीग्रहस्तु तस्यदायेमृति वदेत्।।८।। ततद्भावादव्यवस्यस्य तद्भावादीश्वरस्य वा। वीर्योपतस्यखेट स्यपाकेमृत्युर्न संशयः।।९।। जीवमृत्युतनुयोगराशिने गोचरेणारथ रविजे धनक्षयः। तत्त्रिकोण गृहगेवा नृणां तत्रनाशकयुते तत्वैदेवः।।१०।।

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथिभानि। सद्भाराः चन्द्रबुधगुरुशुक्राःतिथयः १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ शुभ भानि पुष्य, अश्वि, रोहिणी,मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा ऐषु. भेषु।। दक्षिणाँगेऽखिले पुंसा वामांगे च मृगीदृशाम् शुभम्।। जन्मभेमृत्युयोगऽह्नि दग्धेविष्यादिदूषिते।। शुभम्।। अथपल्लीपतने विशेषफलम्।। पादयोर्जंघ्ने जान्वोः गुदे गुह्यो च मृत्युदा। अन्यत्र शुभदा प्रोक्ता सतैलं स्नानमाचरेत्।।१।। पल्या प्रपतने चैव शरटस्याधिरोहणे।। यत्रोक्तं हि मनुष्यस्य शुभाशुभफलप्रदम्। स्त्रीणांतुतद्विपरित्यागोष्यबुद्धिमता सदा इति। पल्लीपतनस्यानिष्ट फल निवाराणार्थमंत्रदानजपमाह।। तिलमादिदानं च स्नात्वादेवं द्विजन्मने नमस्तस्यजपेन् मन्त्रं षडक्षरम् (ॐ नमः शिवाय) शतं सहस्त्रमथवा सर्वदोषनिवारणम्। शिवालये प्रदद्याद्वा दोषं दोषोपाशान्तये।।१।। अशुभध्वंस्य मृत्युञ्जयजपस्वर्ण गोदानं कार्यमिति शुभम्।।

अङ्गस्थविभागेन पल्लीपतने फलम्

स्थानम्	फलं
केशान्ते	अतिकष्टम्
उदरे	भूषणलाभः
अधरोष्टे	धनैश्वर्यलाभः
नाभौ	बहुधनाप्तिः
वामपादे	बंधुनाश
भ्रूमध्ये	राज्यसभा
वामकर्णे	बहुलाभः
स्तनद्वये २	दौर्भाग्यम्
हस्तद्वये	वस्त्रलाभः
बा.मणिव.	कीर्तिनाशः
दक्षिणापादे	गमनम्
नेत्रयोः	वन्धनप्रा.
पृष्ठ देशे	बुद्धिनाशः
हृदये	धनलाभः
पादान्ते	स्वौनांशः
शिरसि	राज्यलाभः
नासाग्रे	व्याधिपीडनं
वाममुखे	राजभीतिः
जानुद्वये	शुभागमः
कटि भागे	अश्वलाभः
गुल्फयो	धनलाभः
दक्षिणमुखे	नृपतुल्यता
स्कन्धयोः	विजयः
मुखे	मिष्ठन्नभोजनं
ललाटे	बंधुदर्शनम्
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः
कण्ठे	शत्रुनाशः
२ जंघे	शुभावहः
द.मणिव.	मनस्तापं

रविभात्चुल्हीचक्रम्

पृष्ठे	६	श्रीलाभः
शीर्षे	४	मृत्युश्रवम्
वामे	८	सुखम्
मर्मे	५	विनाशः
हस्ते	२	सुभुक्ति
पादे	२	कलत्रमृतिः

गृहारम्भे वृष वास्तु चक्रम् गणना मार्भाजित		
स्थानम्	नक्ष.	फलानि
मूर्ध्नि	३	अग्निदाह
अग्रपादे	४	शून्यम्
पृष्ठ पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
दक्षकुक्षौ	४	लाभः
पुच्छे	३	स्वामीनाशः
वामकुक्षौ	४	दरिद्र
मुखे	३	पीडा

अथगृहप्रवेशे कुम्भ चक्रम् रविभाद्गणना		
स्थानम्	नक्ष.	फलम्
मुखे	१	अग्निदाह
पूर्वे	४	उद्वसनम्
दक्षिणे	४	लाभः
पश्चिमे	४	लक्ष्मीप्राप्ति
उत्तरे	४	कलहः
गर्भे	४	विनाशः
गुदे	३	धैर्यम्
कण्ठे	३	स्थिरत्वम्

अथ द्वारशाखाचक्रम् सूर्यभाद्गणना		
स्थान	नक्ष.	फलम्
शिरसि	४	श्रीलाभः
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखायां	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	स्वामीनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

ग्रामवास चक्रम् नक्षत्रावधि गणना अथग्रामभाद्वासकर्त्तुः		
मस्तके	७	धनं सौख्यम्
पृष्ठे	७	हानि-निर्धनम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	निर्धनम्

कूपचक्रम् । सूर्यभाद्गणना		
स्थान	नक्ष.	फलम्
मध्ये	३	शीघ्राज्जलम्
पूर्वे	३	निर्जलम्
अग्नि	३	आशुजलम्
दक्षिणे	३	निर्जलम्
नैऋत्ये	३	अमृतजलम्
पश्चिमे	३	निर्जलम्
वायव्ये	३	जलहानिः
उत्तरे	३	मधुरजलम्
ईशाने	३	क्षारजलम्

रोहिणीभात्कूपचक्रम्		
स्थान	नक्ष.	फलम्
मध्ये	३	स्वादुजलम्
पूर्वे	३	खंडितजलम्
अग्नि	३	स्वादुजलम्
दक्षिणे	३	जलहानिः
नैऋत्ये	३	स्वादुजलम्
पश्चिमे	३	निर्मलजलम्
वायव्ये	३	मिश्रजलम्
उत्तरे	३	पूर्णजलम्
ईशाने	३	क्षारजलम्

अथ गृहे शिलाप्रमाणानि

शिलाप्रमाणं क्रमशः प्रदिष्टं वर्णानुपूर्वेण तथांगुलानाम्।। अधेकविंशद्वर्णविधनन्दविस्तारकं व्यासमिदं तदर्धम्।। तदर्धमानं त्वचपिण्डकास्यात् ऊर्ध्वाऽधिका न्यूनतरा न कार्यम्। नामानि च। नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णेति। पञ्च कुम्भ नामानिपद्ममहापद्म शंख मकर समुद्र इति प्रधानशिलाधः पञ्चाधारशिलाभवन्ति।

अथेष्ट नक्षत्रकल्पनाऽनेन गणनाविचारः। आर्द्रादितिर्गुरुश्चैव सर्पश्चैव पितृमृगः। शतभपूर्वयुग्मञ्च नेष्टा गृहतारकाः।।१।। तत्रराशि कूटादिकं सर्वदाम्पत्योरिवचिन्तयेत्।। सेव्यसेवकयोश्चै- वगृहस्वामिनोरपि परस्परं मित्रयोश्च एकनाड़ी प्रशस्यतेइति।

अथ गृहप्रवेशे मुहूर्तबोधचक्रम्।

मासाः	वैशाख, ज्येष्ठ, माघ फाल्गुन जीर्णे गृहे श्रा. मार्गशीर्ष कार्तिक मासे अपिनवेप्यन्यादिभयसत्वे।
तिथयः	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३
वाराः	सोम, बुध, बृह. शुक्र, शनि।

भानि	रोहिणी,मृगशिरा,उत्तराफाल्गुनी,चित्रा,अनुराधा, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद रे.केचन्मते अश्वि.पु.ह.स्वा.मू.श्र. ध. श. नक्षत्रे कुम्भ चक्रशुद्धौ।
लग्नानि	२।५।८।११ एषु शुभ ३।६।९।१२ एषु मध्यम्।
	जन्मलग्न जन्मराशिभ्यामुपचये स्थिर राशौ। लग्नात् १।२।३।५।७ ९।१०।११ स्थानेषु शुभाः श्रेष्ठाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः श्रेष्ठाः४।८ शुद्धौ वामाकंशुभम्।

प्रवेशलग्नात्-वामोरविमृत्युसुतार्थलाभार्थतोऽर्के पञ्चमे प्राग्वादनादि मन्दिरम्।

अथ वापीचक्रम् रोहिणीभाद्दिनक्षत्रावधि गणना		
कोष्ठे	४	श्रीलाभः
नाभौ	४	मृत्युभयम्
हृदि	४	सुखं
मध्ये	४	विनाशः
नेत्रे	४	सुमुक्तिः
पादे	४	कलत्रमृतिः

अथ चरणीचक्रम्।		
पृष्ठे	४	शुभम्
नाभौ	४	बुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरतां
मध्ये	४	कलहः
नेत्रे	४	धनप्राप्तिः
पादे	४	अनर्थ

अथ चरणी विचार स्वामि हस्तप्रमाणे-नदीर्घविस्तारसंयुतम्। अष्टभिश्च हरदे भागं शेषं चरणिरुच्यते। पशुहानिः पशौरोगः पशुलाभः पशुक्षयः पशुनाशः पशुबृद्धिः पशुभेदः बहु पशुः।

अग्नेर्वासज्ञानम्- प्रतिपादितस्तिथिर्वारयुता सैक ४ भक्ता ०।३ शेषे भूमौवासः १ शेषे स्वर्गे २ पातालेवासः। भूमौ वासः शुभः।

शल्यानयनरीतिः

अ.	क.	च.	ट.	त.	प.	य.	श.	ह.षय.	वर्णा.
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	दिक्
मनुष्य	खरस्य	मनुष्य	शुनः	शिशोः	तुषांगार	विप्रश.	गोशल्यः	नृकपाल	शल्यः
१।।	२	२	१।।	१।।	४	२	१	३	हस्त
मृत्यु	राजभ.	स्वा.मृ.	वा. मृ.	गृ.वि.	दुःस्व.	दरिद्र.	गो.ना.	कु.ना.	फलानि

स्मृत्वेष्ट देवतां प्रष्टु र्वचनस्याद्यमक्षरम्। गृहीत्वा च ततः शल्याशल्ये पूर्व विचारयेत्। इत्युक्त्वा-प्रश्नाक्षराणामादिम वर्णतोविचारः कर्तव्यः।

अथ शिलान्यासस्तत्र बाराहः- छत्रं सुगन्धयुक्तं कृतधूपविलेपनं। स्तम्भ स्थाप्यस्तथैव कार्यो द्वारोच्छायः प्रयत्ने न।। दक्षिणपूर्वकोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत्प्रथमाम्। शेषाः प्रदक्षिणान्ताः स्तम्भाश्चैव प्रतिस्थाप्याः।।२।। शार्ङधरः प्रसादेषु च हर्म्येषु गृहेस्वन्येषु सर्वदा। आग्नेय्यां प्रथमं स्तम्भं स्थापेत्तद्विधानतः।३। तथा च ब्रह्मशम्भुः क्षेत्रभित्तिशिलान्यासः स्तम्भस्यारोपणं तथा। पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याह कश्यपः।।४।।

पिण्डतः आयाद्यानयनप्रकारः

पिण्डे क्रमात् ९।९।६।८।३।८।८।४।८ नवस्थानस्थापिते एतेगुणिते एतेऽ ८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२० विभक्तशेषेक्रमात् आयः १ वारः २ अंशकः ३ द्रव्यं ४ ऋणं ५ ऋक्षं ६ तिथिः ७ योगः ८ आयुश्च ९ भवति। बहुऋणाल्पद्रव्यं गृहमसत्। गृहगृहेशनक्षत्रैक्यं च न सदिती सर्वमादौ विचार्यम्।।६।। आयोध्वजादिः वारोऽर्कादिः। अंशको मेषादि-नवमांशाः। तारापि न अंशस्तु त्रिषट् नवं एवं शकाः रामशास्त्र निधि संज्ञका धनं तु वेद वसु भानु संज्ञकम्।

अथायानां नमानिउपयोगस्य कथनञ्च

१	२	३	४	५	६	७	८
ध्वज	धूम्र	हरिः	श्वानः	वृषः	गर्दभः	हस्ती	काकः

वापीकूपतड़ागादौगजो देयो विचक्षणैः। आसनेयोजयेत्सिहं शयने-काककुञ्जरो।१। वृष भोजनापात्रेषु दद्याच्छालादिषु ध्वजम्। महानसे-ऽग्निशालायां गृहे वाग्न्युपजीविनाम्।।२।। धूम्रं दद्यात्तथाश्वानं यवनान्त्यजयोगृहे। खरो वेश्यागृहेयोज्यो ध्वांक्षः पक्षिपतेर्गृहे।।३।। वृषं सिंह गजं दद्यात् प्रासादे पुर मन्दिर इति शुभम्।।

बीजोप्तिचक्रं राहुभाद्दिनमवधिः

८	९	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभः	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

हवनचक्रं सूर्यभात्भेचान्द्र

३	३	३	३	३	३	३	३	३
र.	बु.	शु.	श.	सो.	मं.	बृ.	रा.	के.
असत्	सत्	सत्	असत्	सत्	असत्	सत	असत्	असत्

अथ देवालये गेह विधौ जलाशये राहुमुख ज्ञानम् यत्र राहुमुखं तत्पृष्ठ कोणे खात शुभं भवति

कोण	ऐशान्यां	वायव्यां	नैऋत्यां	आग्नेयां
देवालया रम्भे	मी.मे.वृ. राशिस्थितेसूर्ये	मि.क.सि. राशिस्थितेसूर्ये	कं.तु.वृ. राशिस्थितेसूर्ये	ध.म.कु. राशिस्थितेसूर्ये
जलाशया रम्भे	म.कु.मी. राशिस्थितेसूर्ये	मे.मि.वृ. राशिस्थितेसूर्ये	क.सिं.कं. राशिस्थितेसूर्ये	तु.वृ.ध. राशिस्थितेसूर्ये
गृहारम्भे	सि.क.तु. राशिस्थितेसूर्ये	ध.वृ.म. राशिस्थितेसूर्ये	कु.मी.मे. राशिस्थितेसूर्ये	वृ.मि.क. राशिस्थितेसूर्ये

अथगृहकरणे चैत्रादिमासे पृथक् पृथक् फलबोधकचक्रम्

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.
शोकम्	धान्यम्	पशुमृत्तिः	पशुनाशः	द्रव्यवृद्धिः	नाशः	युद्धम्	भृत्यक्षयः	धनम्	लक्ष्मीप्रा.	अग्निभयं	लक्ष्मीप्रा.

अथ गृहारम्भे मुहूर्तबोधकचक्रम् (देवालयादि सहित)

मासः	वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, फाल्गुनमासे, मे.क.सिं.वृ.म. कु. राशस्थिसूर्ये च शुभम्।
श्रेष्ठभानि	रो. म. पुष्य, उ.फा. ह. चि. स्वा. उ.षा. ध. शत. उ. अनु. रो. एषु भेषु वृषभचक्रशुद्धौ शुभम्।
शुभवाराः	चं.बु.बृ.शु. शनयः रविभौम, रिक्ता, अमा. चरलग्न वर्जितम्।।
शुभतिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ शुक्लेपक्षे।
शुभलग्नानि	२।७।९।११।१२ ३, ५६ स्वस्वामि शुभदृष्टे शुभम्।
	लग्नात्- १।४।७।१०।५।९ शुभाः। पापा ३।६।११ स्थानेषु ८।१२ शुभ पापरहितेषु शुक्लपक्षे। अष्टम शुद्धौ गुरुशुक्रयोरुदये वालवार्द्धक्य नीचराश्यादि स्थितदोषरहिते समये शुभे।

कूपजलविचारः

अतृणे सुतणा यस्मिन सतृणे तृणवर्जिता मही यत्र ।।
तस्मिन् शिरा प्रदिष्टा वक्तव्यं जलं चास्मिन् ।।१।।
कण्ट काकण्ट कानां व्यत्यामेऽम्यस्त्रिभिः करैः पश्चात् ।
ज्ञात्वा पुरुषत्रितयं त्रिभागयुक्तं धनं सा स्यात् ।।२।।
नदति मही गम्भीरं यस्मिश्चरणाहता जलं तत्र ।।
सार्द्धं स्त्रिभिर्मनुष्यैः कौवेरा तत्र च शिरा स्यात् ।।३।।
वृक्षस्यैका शाखा यदि विनता भवति पांडुरा वास्यात् ।।
विज्ञातव्यं शाखातले जलं त्रिपुरुषं ज्ञात्वा ।।४।।
पूर्वोत्तरेण पीतोर्यदि वाल्मीकी जलं भवति पश्चात् ।
उत्तरागमना च शिरा विज्ञेयै पञ्चभिः पुरुष ।।५।।
चिन्हं दर्दुर आदौ मृत कला तत्परं भवेद्धरिता ।।
भवति च पुरुषेऽधोऽमातस्य तलेऽम्भोविनिर्देश्यम् ।।६।।
पीतोरंव प्राच्यां वाल्मीकोऽतोऽद्धिपंञ्चभिर्हस्तः ।।
दिशि याम्यां तोयं वक्तव्यं सप्तभिः पुरुष ।।७।।
प्रथम पुरुषे भुंजगः सितासितो हस्तमात्रमूर्तिश्च ।।
दक्षिणतः वहति शिरा साक्षरं भूरि पानीयम् ।।८।।

सर्वघातचक्रम्। रोगातगोसनेरणं दो मंगले

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सू. घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं. घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं. घा.	५	९	१	६	१०	२	७	१	८	१२	३	७
बु. घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
बृ. घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु. घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श. घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा. घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९.
मा. घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
ति. घा.	१ ६ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५
वा. घा.	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
न. घा.	म.	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.
यो. घा.	वि.	शू.	प.	धृ.	प्र.	शु.	शु.	ब्र.	वै.	गं.	व्या.	व.
ल. घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
ग्र. घा.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.
धा. घा.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.
व. घा.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.
सं. घा.	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
सं. घा.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
सं. घा.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.
व. घा.	रक्त	श्वे	हरि	पां.	धूम्र	चि.	कृ.	लक	पी.	कृ.	धू.	श्वे.
स्त्री	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.
चं. घा.	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

दीर्घः	विस्ता.	आयः	वार	अंश	धन	ऋण	ऋक्षं	तिथिः	योगः	आयुः	दीर्घ	विस्तार	आयः	वार	अंश	धन	ऋण	ऋक्षं	तिथिः	योगः	आयुः
२१	१९	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५९	५३	१	५	९	१२	३	१५	१२	२१	७२
२५	२१	५	७	९	१२	७	१६	१५	२१	१२०	६१	५५	७	६	९	१२	५	२१	३	२४	४८
२७	२५	३	६	९	१२	१	२७	१५	२७	१२०	६१	५३	१	५	३	४	३	२५	४	२६	६४
३१	२९	३	६	३	४	१	१७	७	५	११२	६१	५५	३	४	६	८	१	२	५	१	८०
३३	२७	३	४	९	१२	१	२७	३	२७	४८	६३	५७	३	७	९	१२	१	९	१२	१८	७२
३५	२९	७	७	६	८	५	२०	५	१०	८०	६३	५९	१	७	९	१२	३	१८	१५	९	१२०
३५	३३	३	७	९	१२	१	६	१५	३	१२०	६३	५३	७	७	९	१२	५	२७	३	२७	४८
३७	३१	३	५	६	८	१	२३	१०	२५	५६	६५	५७	५	७	९	१२	७	९	६	१८	९६
३७	३३	५	६	९	१२	७	२१	३	२४	४८	६५	५९	५	२	६	८	७	२०	५	१०	८०
३९	३३	७	५	९	१२	५	९	६	२८	९६	६५	६३	१	४	९	१२	३	२१	१५	२४	१२०
३९	३५	५	७	९	१२	७	१२	१५	६	१२०	६५	५५	३	४	६	८	१	८	५	४	८०
४१	३५	३	७	६	८	१	५	५	१६	८०	६७	६१	७	७	९	१२	५	९	१५	१८	१२०
४१	३९	७	६	९	१२	५	२१	१२	२४	७२	६७	६५	५	६	६	८	७	२३	५	२५	८०
४३	३५	१	७	३	८	३	२५	१०	२६	४०	६७	६१	७	५	६	८	५	२६	११	१३	५६
४३	४१	२	५	३	४	१	१०	४	५	६४	६९	६५	३	२	३	४	१	१०	१०	५	४०
४५	३७	१	५	९	१२	३	९	१५	१८	१२०	६९	६१	१	४	९	१२	३	३	१२	१५	७२
४५	४३	७	६	९	१२	५	९	१५	१८	१२०	७१	६३	३	७	९	१२	१	२७	६	२७	९६
४७	४१	७	४	६	८	५	२६	११	१३	५६	७१	५७	७	२	९	१२	५	३	६	१५	९६
४७	४५	३	२	९	१२	१	१८	१५	९	१२०	७१	६५	७	४	६	८	५	११	५	१९	८०
४९	४१	१	७	३	४	३	७	७	१७	११२	७३	६९	३	५	९	१२	१	२५	१२	२१	७२
४९	४३	३	७	६	८	१	८	११	४	५६	७३	६१	५	२	६	८	७	११	१४	१९	१०७
४९	४५	५	७	९	१२	७	९	१५	१८	१२०	७५	६३	७	७	९	१२	५	१८	१२	९	७२
५१	४५	७	५	९	१२	५	२७	१५	२७	१२०	७५	६५	१	५	३	४	३	२१	१०	२६	४०
५१	४७	५	६	९	१२	७	६	६	३	९६	७५	६३	५	७	९	१२	७	२७	१५	२७	१२०
५१	४९	३	७	९	१२	१	१२	१२	६	७२	७५	६५	३	६	५	१२	१	१२	१५	६	१२०
५५	४७	१	४	३	४	३	२५	१०	२६	४०	७५	६७	१	५	९	१२	३	२४	१५	१२	१२०
५५	४९	७	७	६	८	५	२४	५	७	८०	७५	६९	७	४	९	१२	५	९	१५	१८	१२०
५५	५३	३	६	३	४	१	१९	१०	२३	४०	७७	७३	३	२	९	१२	१	६	५	३	१२०
५७	५१	३	४	९	१२	१	९	६	१८	९६	७७	६५	५	७	६	८	७	२६	११	१३	८८
५७	५५	७	५	९	१२	५	२४	१५	१२	१२०	७७	७१	३	७	६	८	१	२१	१५	२५	५६
५९	४९	३	७	३	४	१	१६	१३	८	८८	७७	७५	७	७	९	१२	५	३	७	१५	१२०
५९	५३	७	३	६	८	५	१४	११	७	५६	७७	६७	७	७	३	१	५	१६	७	८	११२

अथ गृहे गृहस्योच्छ्रायनिर्णयः

विस्तारषोडशांश सचतुर्हस्तो भवेद् गृहोच्छ्रायः द्वादशभार्गेन भूमौ वा स्यात्समस्तानाम्। गृहस्यभित्तिप्रमाणम्। व्यासात् षोडशभागः सर्वेषां सद्मनां भवति भित्तिमे पक्वेष्ट का कृतानां दारुकृतानान्तु विकल्पः।। तथा च गर्गः।। विस्तारषोडशांशेन गृहभित्तिम् प्रकल्पयेत्।। नवत्रयोदशांशेश्च करेर्ज्ञात्वा प्रकल्पयेत्।।

वास्तुभूमिशुभाशुभज्ञानप्रकार- सायंकाले हस्तप्रमितायां विस्तृतिप्रमाणं गर्तं विधाय जलपूर्णंकृत्वां प्रातःकाले पुनर्विलोक्यम् तत्सजलं शुभम्। निर्जलं मध्यम्। स्फुटितं असदिति।

गृहेसूर्यचन्द्रवेधनिर्णयः - चन्द्रविद्धं गृहं कार्यं सूर्यविद्धं जलाशयम्। हृदो वा वाटिका वापि द्वाभ्यां विद्धा प्रशस्यर्ते।। पूर्वापरदैर्घ्ये रविवेधो याम्योत्तर दैर्घ्ये चन्द्रवेध उक्तः। अन्यच्च- मन्दिर देवायतनं तत्र पिण्डविचारोऽपि न कर्तव्यः।

कदा द्वादशस्थचन्द्रमा शुभदः

आदाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।
अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु।
यात्रायुद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशः शुभः।
उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहस्थितोऽपि वा।
मित्रवर्गं मित्र दृष्टः स ग्रह सबलः स्मृतः।

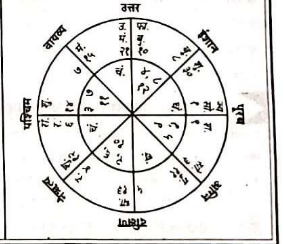
यात्रायां प्रस्थानस्थापनम्

प्रस्थापने भूमिपालो दशदिवसमभिव्यापय-पञ्चरात्रमित्यादि। दिक्परत्वेन प्रस्थान-स्थापनं।। सप्ताहएव पूर्वस्यां प्रस्थाने पञ्चं दक्षिणे। पश्चिमे त्रीणिशस्तानि सौम्यायान्तु दिनद्वयम्।

वाटिकाचक्रं शिवयामलोक्तम्

वृक्षं चक्रं कल्पयित्वा चक्रमेव न्यसेत्पुनः।।
सूर्यभाद्दिनम् यावद्वृक्षचक्रं विधीयते।।
मूले त्रयं रोगभयं त्वचि त्रीणि धनागमः।।
शाखासुवेदनाशः स्यात् पत्रे युग्मं दरिद्रता।।
शीर्षत्रीणि कृतं प्रोक्तं पूर्वचैकस्तु मृत्युदः।।
याम्ये पञ्चात्मकोऽप्यस्य पश्चिमे दोषागमः।।
उत्तरेवेद लाभाय।

शूल चंद्र एवं योगिनी चक्र



यात्रा विचार-

अथ यात्रायां शुभाशुभनक्षत्रज्ञानाय चक्रम्

अश्वि.	पुन.	अनु.	मृग.	पुष्य	रेवती	हस्त	श्रवण	धनिष्ठा	एषु शुभाः
रोहि.	पू.३	उ.३	ज्येष्ठ	मूल	शतभिषा				एषु भेषु मध्याः
भरणी	कृत्ति.	आर्द्रा	श्लेषा	मघा	चित्रा स्वाती विशा.				एतदे निन्द्याः
श्रवण	हस्त	मृग.	पुष्य	एषु सर्वदा दिक्शूल दिनं विहाय शुभाः					
पू.३	कृत्ति.	मघा	भरणी	स्वाती	ज्येष्ठ	विशा.	आश्ले.	चित्रा	एषु आवश्यके
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	१४	यात्रायां त्याज्य घट्यः

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम्

आद्यचन्द्रः श्रियं कुर्यात् द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राज सन्मानं चतुर्थकलहागमः।।१।। पञ्चमे ज्ञान वृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा। सप्तमे सुखकृच्चन्द्रोऽष्टमे मरणं भवेत् (कष्टं वा)।।२।। नवमे भाग्य वृद्धिश्च दशमे सुख सम्पदः। एकादशे सर्वलाभो द्वादशे चाशु भयावहः।।३।। आवश्यके द्वादशा-गतेऽपि यात्रा कार्यानिष्ट चन्द्रदानात्। दान-सामग्री दधि श्वेततण्डुल घृत रजत मुक्तादनम्।

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रायां छिक्का फलम्

पूर्वे अशुभम्। अग्नये दुःखी। दक्षिणे अनिष्टः। नैऋत्ये शुभम्। पश्चिमे सुभोज्यं। वायव्ये धन प्राप्तिः। उत्तरे कलहः। ईशाने शुभम्। मध्ये भयः।

अथ यात्रायां समयशूलचक्रम्

पूर्वस्मिन्	प्रातःकाले
दक्षिणे	मध्याह्नकाले
पश्चिमे	सन्ध्यायाम्
उत्तरस्यां	अर्द्धरात्रौ

यात्रायां समयविचारः

तत्र सर्वासु यात्रासु शुक्रास्तो निषिद्धः। तदा जन्मदशेशे-ऽस्तंगतेऽपि न गन्तव्यम् तीर्थ यात्रासु गुरु शुक्र रस्त कालो वर्ज्यः सिंहस्थ गुरुस्तोच्च गोऽपि वर्ज्यः।।

संमुखेऽर्थलाभायदक्षिणेसुख संपदः। पृष्ठेतोमरणं चैववामेचन्द्रेधनक्षयः।।
सर्व दोषा लघु यान्ति पूर्णचन्द्रे हि संमुखे।

अथ पथिराहुचक्रमिदम्

अश्विनी	पुष्य	अश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शतभिषा	धर्मभानि
भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठ	श्रवण	पू.भा.	अर्थभानि
कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.	कामभानि
रोहिणी	मृगशिरा	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्षभानि

समरे (मुकदमा अथ कुल-अकुल बोधचक्रम्

कुलगणः	स्थायी समरे जयः	अकुलगणः (यायि) जयः	कुलाकुलगणः (सन्धिः समरे)
तिथयः	८।१२।४।१४	१।३।५।७।९।११।१३।१५	२।६।१०
वाराः	भौम, शुक्र	रवि,चन्द्र, गुरु, शनि	बुध
भानि	पू.३ अश्वि.वि.म. मृ.कृ.चि.ज्ये.श्र.पु.	भ.श्ले.स्वा.रे.ह.ध. अनु.पुन.उ.३ रो.	श.मू.आर्द्रा अभि.

अथ वारपरत्वेन पाशचक्रम्

पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	दिशा
मं.	चं.	गु.	०	श.	शु.	गु.	बु.	वारा

सूर्यधर्म्मगते चन्द्रो न मोक्षे शुभप्रदः। सूर्यधनगते धर्म्म मोक्षमार्गेशुभः शशी।। कामेऽर्के धर्ममोक्षार्थे-संस्थचन्द्रो जयप्रदः मोक्षेऽर्केधर्म-गतश्चन्द्र शुभोऽन्यत्र न शोभनः।

यात्रायां सर्वदिक शूलज्ञानाय चक्रम्।	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नै.ऋ	प.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिक् ८
	चं.श.	चं.गु.	गुरु.	सू.शु.	सू.शु.	मं.	मं.बु.	बु.श.	वाराः

यात्रायां - लग्नशुद्धिः। जन्मराशिलग्ने। कुम्भकुम्भांशकोमीनपृष्ठोदयराशयः त्याज्याः। लग्नात् ९।४।७।१०।५।९ स्नाथेषु शुभाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः १० शनि ७ शुक्रो नेष्टः। लग्नात् १।६।७।८ स्थानगश्चन्द्रो १।६।७।८।१२ लग्नेशो न सत्। शुभाशुभहीनमष्टमभवनम्।

यात्रायामशुभशकुनानि-बन्ध्या स्त्री, चर्म, तुषा, अस्थि, सर्प, लवण निर्धूमाग्नि, इन्धन नपुंसक, विष्ठा, तपस्वि, उन्मत्त, चर्वी, ओषध, शत्रु, जटावान्, सन्यासी, तपस्वी, व्याधिमान्, नग्नतैलाभ्यंग, अंगभंग, जातिभ्रष्ट क्षुधार्त, रुधिर, स्त्री, पुष्प, नरट, छिक्का, स्वगृहदाह, मार्जारयुद्ध, रक्तवस्त्र गुड़, तक्र, पंक, विधवा, कुब्ज, कुटुम्बेकलह, वस्त्रादेस्खलनं, महिषयुद्ध कृष्णवस्त्र तूल वमनं, दक्षिण गर्दभशब्दः अत्यन्त क्रोधी, गर्भवती मुण्डी, आद्राम्बर, दुष्टवाणी, अन्ध, बधिर, रजस्वलाम्बर, कुमारहीन, अतिरोगी, गधादर्शन, जातकदर्शन, सूकरदर्शन, शशकदर्शन, मर्कट दर्शन, ऋक्षशब्दयाते, प्रयाणसमये दृष्टाः सन्त न शुभाः नद्युतार भय प्रवेश युद्धाषटार्यजन संवीक्षणे अशुभाशकुनाः शोभनाः नृपदर्शनेवलायां यात्रोदिता, शोभनाः।

यात्रायां शुभशकुनानि - ब्राह्मण २, अश्व, गज, फल, अग्र, दुग्ध, दधि धेनु, सर्षप, कमल विमलवस्त्र वेश्या, वाद्य, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, आदर्श ससुतस्त्री, सन्मुखछत्र, नघः नीलकण्ठ रज्वादिनाबद्धपशु २ चम्पकादिपुष्प, कन्या कार्यसिद्धिवाक्य, मृतिका सजलपूर्णघट, घृत, इक्षुदण्ड, रत्नमाल्यादि शिरोवेष्टन, श्वेतवृषभ मदिरा कज्जल, पीताम्बर, गोरोचन, अरोदनशव, १ पताका, मेष, रजक, वेदशब्द, मंगलवस्तु, गीतगानादि भरद्वाज पक्षी, शिवाका, अंकुशहस्तिचालक पश्चाद जलघट, मंगलशब्द, दुर्वा कोकिला पल्ली, सूकरी रला भैरवी, छछून्दरी, श्रृङ्गाली, कपोत, खंजन तित्तिर हंसादयः। मेखर शब्दः। प्रयाणसमये दृष्टाः फलदा भवन्ति।

आसन्न मृत्यु लक्षणम्-अरुन्धती ध्रुवं चैव नभो मन्दाकिनी तथा सर्व नाशाग्रं च चन्द्रार्कमायु हीनो न पश्यति। पांशु पंकादिषु न्यस्त चरणं खण्डितं यदि। स्वाम्बु लिप्त गात्रस्य यस्यात्यं प्राक् प्रशुष्यति। पिहिते कर्ण युगले यस्य घोषानुपश्रुतिः। अदर्शनं स्व शिरसः प्रति बिम्बे जलादिषु। छिद्रं प्रतिच्छायायां स चिरं नैव जीवति। दीप निर्वाण गन्धे च सुहृद्वाक्य-मरुन्धतीम्। न जिघ्रन्ति न श्रृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः।। (१) जब कान पर हाथ रखने से कान में से घोष न होवे। (२) जल में अपना मस्तक न दिखाई दे। (३) अपनी छाया में छिद्र का आभास हो। (४) अपनी नासिका का अग्रभाग न दिखाई दे। (५) कीचड़ या धूल में पांव रखने से पदचिन्ह खण्डित दृष्टिगोचर हो। (६) ध्रुवतारा न दिखाई दे इत्यादि, तो समझ जाइये कि आयु सम्बन्धी कष्ट आने वाला है।

आवश्यके दिग्शूल दोषनाशाय वारक्रमात् वस्तुनाम

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
घृतम्	पुष्पं	गुडम्	तिलान्	दधिः	यावान्	माषान्न	भक्षणं
ताम्बूलम्	चन्दनं	मृदु	पुष्पं	दधिः	घृतम्	तिलम्	धारणं

दिग्लग्नानि।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिक
१।५।९	२।१०।६	३।७।११	४।८।१२	शुभ
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्य
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	नेष्ट
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	नेष्ट

यात्रायां वारदोहदज्ञानायचक्रम्

रविः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः
रसालं	पयस्	कांजी	पक्वदु.	दधि	पयः	तिल

यात्रायां दिनमानस्याष्ट मांशेन रात्रौ रात्रिमानास्याष्ट मांशेन च (चौघड़िया मुहूर्त) बेलाफलज्ञानाय चक्रम्

श्री	र.दि.	चं.दि.	मं.दि.	बु.दि.	गु.दि.	शु.दि.	श.दि.
४	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
४	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
४	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
४	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
४	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
४	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
४	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
श्रीः	र.रा.	चं.रा.	मं.रा.	बु.रा.	गु.रा.	शु.रा.	श.रा.
४	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
४	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
४	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
४	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
४	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
४	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
४	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशः। षष्ठ्यष्टमोविष्णुदिनानि रिक्तां विहाय चित्रोत्तररोहिणी चं। मृगान्त्यमैत्रेशनिवित्सितेज्यैर्निवृत्य गेहं प्रविशेत्यत्राणात्। स्थिरराशिलग्ने ४।८ शुद्ध १।७।४।१०।५।९। स्थानेषु शुभैः। ३।६।११ स्थानेषु पापैः योजनान्तं लघुयात्रा २५ योजनं मध्यान्तः परं दीर्घा ज्ञेया।

दिन रात्रि में समान साधन युक्त 'सहम'

सहमा	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	सहमाः	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
मातृ	शनि	गुरुतः	लग्न	श्रद्धाः	भौमः	शुक्रात्	तनु
पुत्र	चन्द्र	गुरुतः	लग्न	प्रमाद	पुण्यः	शुक्रात्	तनु
रोग	चन्द्र	तनुतः	तनु	व्यापा.	बुधः	ज्ञानात्	तनु
बंधु	चन्द्र	बुधात्	तनु	कन्या	चन्द्रः	भौमात्	तनु
मृत्यु	चन्द्र	८भावात्	शनि	संताप	चन्द्र	शुक्रात्	तनु
यात्रा	धर्मेश	धर्मतः	तनु	गर्भ	शनि	ज्ञानात्	तनु
धन	धनेश	धनात्	तनु	जलाध्व	लग्न	शतशः	६भा.
परस्त्री	सूर्य	शुक्रात्	तनु	राज	गुरु	कर्काद्धत	मतम
वणिक	बुध	चन्द्रात्	तनु	घातक	पुण्यः	चन्द्रतः	तनुं
विवाह	शनि	शुक्रतः	तनु	घातक	पुण्य	गुरुतः	तनु

उदाहरण-दिन में पूर्ण सहम बनाने के लिये चन्द्र से सूर्य को घटाकर लग्न जोड़ना चाहिए। रात्रि में सूर्य में चन्द्र को और लग्न जोड़ दे अतः दिन में जो घटता है उस पर एषऊन जिसमें घटता है उस पर अस्मिन् लिखा है। कुछ सहम दिनरात्रि में समान ही रहते हैं एषउन अस्मिन् यह संकेत दिन के लिये ऊपर रात्रि के लिये नीचे लिखा है। उसमें से जो घटता है उन दोनों के बीच में लग्न न आये तो स्पष्ट सहम राशि में १ राशि जोड़ना चाहिए।

अथ नक्षत्रचक्रम् / अथ यात्रायां दिग्वाहनानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशाः	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशाः
ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.	भानि	गज	रथ	अश्व	शिवि.	वाहन

अथ यात्रायां दिग्दोहदचक्रम्

दिशः	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायु	उत्तर	ईशान
वस्तूनि	घृतम्	तंडुलं	तिलोदं	सक्तुकं	मत्स्य	गोधूम	दुग्धम्	पायस

अथ योगिनीवासचक्रम्

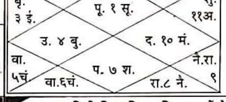
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथयः

अथैकस्मिन् दिनेप्यावश्यके योगिनीभोगस्तद्बोधकचक्रं

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै.	दिशा
३	७	११	१५	१८	२२	२६	३०	घटी
४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल
३३	३७	४१	४५	४८	५२	५६	६०	घटी
४४	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल

अथास्यफलम्

योगिनी सम्मुखेद्यूते गमे युद्धे च मृत्युदा।। अशुभा वामभागस्था पृष्ठे दक्षे जयप्रदा।



समयशूल-

उषाकाल में पूरब को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्न काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिये।

सहमसारिणी दिनरात्रिवश जिन सहमों के शोध्य में भेद होता है

दिने	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	दिने	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
पुण्यः	सूर्यः	चन्द्रे	तनु	प्रसूति	बुध	गुरुतः	तनु
गुरु	चन्द्र	रवौ	तनु	जाढय	शनि	भौमतः	बुध
यशः	पुण्यः	गुरौ	तनु	जल	चन्द्र	शनौ	लग्न
मित्र	गुरुस.	पुण्ये	तनु	शत्रु	शनि	भौमतः	लग्न
माहा	भौमः	पुण्ये	तनु	दरिद्र	बुध	पुण्यतः	बुध
आशा	शुक्रः	शनौ	तनु	शास्त्र	शनि	गुरुतः	बुध
राज	सूर्यः	शनि	तनु	वंदक	सूर्य	चन्द्रात्	तनु
जाता	शनिः	गुरौ	तनु	बन्धनं	शनि	पुण्यात्	तनु
जीवि.	गुरु	शनौ	तनु	अश्व	सूर्य	पुण्यात्	लाभः
कर्म	बुधः	भौमतः	तनु	अन्यक.	शनि	चन्द्रात्	तनु
कलि	भौमः	गुरुतः	तनु	वृद्धि	सूर्य	जीवात्	तनु
चेतु.	भावः	१२ भा	तनु	अरि	शनि	भौमात्	तनु
रात्रौ	अस्मिन्	एषऊन	युक्तं	रात्रौ	अस्मिन्	एषऊन	युक्तं

विद्या १ ज्ञान २ ज्ञाति ३ सहम गुरु सहम ही होता है। पिता सहम राजा सहम समान है। बल १ देह २ यश के सदृश है। विवाह सहम से स्त्री का विचार होता है। सामर्थ्य सहम के साधन में लग्नेश यदि भौम हो तो भौम को गुरु में घटायें। गौरव सहम के लिये दिन में वृ.-चं.+सू रात्रि में वृ.-र+चं. कार्य सहम दिन में चं.-लग्नप+ लं.रात्रि में लग्नप - चं.+ल कार्यसिद्धि श.-सू.+सू रा.प. रात्रि में श.-च+चं. रा. प. गुरुता दिन में सूर्योच्च- सू.+ल. रात्रि में चन्द्रोच्च चं.+ल.।।

श्रीकाश्यां लग्न सारणीयम्

०	अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	रा.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
७	०	४९	५६	४	११	१८	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२१	२९	३८	४६
२२	मे.	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
०	रा.	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
८	१	५४	३	११	२०	२८	३७	४५	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१५	२५	३५	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
२६	वृ.	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०	रा.	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
१०	२	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	८
८	मि.	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०	रा.	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
११	३	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३
२४	क.	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
०	रा.	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
११	४	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०
३०	सि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
०	रा.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
११	५	४१	५३	४	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५
१०	कं.	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
०	रा.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
११	६	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	४८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	३०	४१	५३	०	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८
१०	तु.	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
०	रा.	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
११	७	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४२	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०
३०	वृ.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०	रा.	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
११	८	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२३	३५	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४
२४	ध.	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०	रा.	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
१०	९	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	६	१४	२२	३१	३९	४८	५६	५	१३	२१	३०	३८	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४६	५४	३	११
८	म.	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	२६	५२	१८	४४	१०	३३	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	१८	१४	४०	६	३२
०	रा.	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
८	१०	१९	२८	३६	४५	५३	२	१०	१९	२६	३३	४१	४८	५५	३	१०	१७	२५	३२	४०	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३८	४६	५३	१
२६	कुं.	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	२	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
०	रा.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
७	११	८	१५	२३	३०	३७	४५	५२	०	७	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२१	२८	३५	४३	५०	५७	५	१२	१९	२७	३४	४२
२२	मी.	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४

लग्न स्पष्ट करने की विधि-

यत्सूर्यराश्यंश समान कोष्ठे घट्यादिकंस्वेष्टघटी युतंतत्।
तत्तुल्य् घट्यादि भवेद्धि यत्र तत्तिर्यगुर्ध्वांकमितं हि लग्नम्।

सूर्य राश्यंश के समान कोष्ठ के घटी पल में इष्ट काल घटी पलादि जोड़ने से आने वाली संख्या को उपरोक्त लग्न सारिणी में देखिये, जहाँ कही भी लग्न सारीणी में उक्त संख्या या उसके लगभग वाली संख्या मिले उसके बाई ओर लग्न की राशि तथा ऊपर लग्न के अंश होंगे।

उदाहरण-जन्म कालिक सूर्य ५।१२ इष्ट घट्यादि १५।३० है। लग्नसारिणी में सूर्य की ५ राशि १२ अंश का समकोष्ठ देखा तो ३०।५५।५० सूर्यफल मिला, इसमें इष्ट घट्यादि १५।३० जोड़ा तो ४६।२५।५० हुआ। अब लग्न सारिणी में इसे देखा तो ४६।२७।४८ मिला। इसके बाईं ओर धनुलग्न तथा ऊपर ४ अंश मिला अतः ८।४।४६।४७ राश्यादि लग्न हुआ।

यही लग्न सारिणी गाजीपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, झांसी, बलिया, बाँदा, इलाहाबाद, छपरा, पटना, मुँगेर, भागलपुर, हाजीपुर, हैदराबाद, चित्रकूट, बूँदी, पूर्णिया, शाहाबाद, सहसराम, कुदरा, डुमराँव, मालदह आदि स्थानों के लिये भी है।

शिववास फल विचार:

तिथिं च द्विगुणी कृत्वा पुनः पञ्च समन्वितम्। मुनिभिस्तु हरेद्भागं शेषं च शिववासनम्।।
एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरिसन्निधौ। तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुर्थके।।
पञ्चमे भोजने चैव क्रीडायां च रसात्मके। श्मशाने सप्तमे चैव शिववासः उदीरितः।।
कैलाशे लभते सौख्यं गौर्यां च सुख सम्पदौ। वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभायां तापकारकौ।।
भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीडायां कष्टमेव च। श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचारयेत्।।

चक्रमिदम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथयः शु. पक्ष
७	१	२	३	४	५	६	७	८ ३०	९	१०	११	१२	१३	१४	तिथयः कृष्ण पक्ष
मृत्युकारकः	शुभम्	कष्ट कारकम्	सन्ततिकष्टः	सौख्यं	अभीष्ट सिद्धिः	पीड़ा	मृत्युः	शुभम्	कष्ट कारकम्	सन्ततिकष्टः	सौख्यं	अभीष्ट सिद्धिः	पीड़ा	मृत्युः	फलम्
श्मशाने	गौरी सन्निधौ	सभायाम्	क्रीड़ायां	कैलाशे	वृषे	भोजने	श्मशाने	गौरीसन्निधौ	सभायां	क्रीड़ायां	कैलाशे	वृषे	भोजने	श्मशाने	शिववासः

विशेषमाहः-कृष्णपक्षस्य तिथि गणनायां पञ्चदश संख्यां मेलयित्वा अस्मिन् चक्रे फलादेशो निर्दिष्टः। शिवप्रतिष्ठया, महामृत्युञ्जय जपं तथा पार्थिव पूजने शिववासः विचारयेत्। नित्यं शिवपूजने न विचारणीयम्।

स्पष्टार्थ अथवा शिवास जानने की रीतिः-कृष्ण पक्ष की तिथि में पहले १५ जोड़कर तब गणित करें। ० शेष बचे तो उसको ७ मानें। जैसे ७ तिथि को ले-७ + १५ = २२ × २=४४ + ५ = ४९÷७ = शेष ० अर्थात् ७। शिव प्रतिष्ठा, महामृत्युञ्जय जप तथा पार्थिव पूजन में इसका विचार करें। रुद्राभिषेक में शिववास मिल जाये तो अच्छा है किन्तु अनिवार्य नहीं है। श्रावणमास में शिववास देखना आवश्यक नहीं है।

अथ चैत्रादिमासेषु मन्वादि तिथयः

चै.शु.	ज्ये.शु.	आषा.शु.	भा.प.शु.	आश्वि.शु.	कार्ति. शु.	पौष शु.	माघ शु.	फा.शु.	श्राव.कृ.
३।१५	१५	१०।१५	३	९	१२।१५	११	७	१५	८।३०

अथ युगादि तिथयः

वैशा.	भाद्रपद	कार्तिक	माघ	मासाः
शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	पक्षः
३	१३	९	३०	तिथयः
त्रेता	द्वापर	कृत	कलि	अनध्यायं प्रकुर्वीत
युगादिः	युगादिः	युगादिः	युगादिः	मन्वादि युगादिषु

सामान्य सुभिक्षादिकम

प्रभवात् द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनञ्च कारयेत्।।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम्।।
एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम्।।
त्रिषष्ठे च समता ज्ञेया शून्ये पीड़ा न संशयः।।

कल्पादि तिथयः-चैत्रशुक्ल १, वैशाख शुक्ल ३, कार्तिक शुक्ल ७, मार्गशीर्ष शुक्ल ९, माघ शुक्ल १३, चैत्र कृष्ण३।

दशावतार - मत्स्यावतारः चैत्रशुक्ल ३, अपराह्ने। रामावतारः चैत्रशुक्ल ९ मध्याह्ने। परशुराम अवतारः वैशाख शुक्ल ३, प्रदोषे। नृसिंहावतारः वैशाख शुक्ल १४, सायंकाले। कूर्मावतारः वैशाख शुक्ल १५, मध्याह्ने। कल्कि अवतारः श्रावण शुक्ल ६ सायंकाले, कृष्णावतारः भाद्रपद कृष्ण ८ निशीथे। वामनावतारः भाद्रपद शुक्ल १२ मध्याह्ने। बौद्धावतारः आश्विन शुक्ल १०, सायंकाले। वाराहावतारः भाद्रपद शुक्ल ३ अपराह्ने।

अथ जन्मकुण्डलीत प्रतिवर्षायप्रतिभाव विचार - जन्मागं प्रथमं विद्धि द्वितीयञ्च द्वितीयकम्। एवं द्वादश भावाः स्युर्द्वादशवर्षस्य सूचकाः।। द्विरावृत्या लग्न भावात् त्रयोदश पुरस्सराः, त्रिरावृत्तस्तु षट्त्रिंशद्वर्षाणि स्युरिहायुषाम्।। आवृत्तिस्तु दशभिः पूर्णाः पुरुषायुषः। वर्ष संज्ञक भावास्युर्यदि कोणेषु १।५।९ सद्ग्रहाः।। दैहिकं सकलं सौख्यं वर्षऽस्मिन्कथितं शुभम्। तद्वर्षमासा लग्नात्स्युतथा भावाः धनादयः। तत्तद्भावस्य कोणस्था यदि सर्वशुभग्रहाः।। तद् वर्ष तस्य भावस्य विशेषात्सुख कारकाः।। एवं पापग्रहास्तेषु कोणेषु यदि संस्थिताः सखलाः भावनाशाय निर्बलास्त्वसुखाय च।। शुभैस्तु शुभाधिक्यं पापैस्तु भाव संक्षयः। मिश्र मिश्र फलं ज्ञेयं बलाबल विशेषतः। इति।।

वार परत्वेन तैलाभ्यङ्ग फलं विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकान्तिः	मृतिः	धनप्राप्तिः	वृत्ति हानिः	विपत् हानिः	सुखं	फलम्
पुष्पं	०	मृत	०	दूर्वा	गोमयं	०	पातन

समानगोत्रप्रवरविवाहेमहापातकमुक्तम् - आपस्तम्बः समानगोत्रप्रवरांकन्यामुद्वोपगम्य च। तस्यामुत्पाद्य चाण्डालं ब्राह्मण्यादेव हीयते। अन्यच्च एकस्मिन्प्रवरेतुल्यमातृगोत्रेवरस्य च। तमुद्वाहनं कुर्वति सा भगिनी कन्या भवेत्।। आरूढपतितापत्यं ब्राह्मण्यां यश्चशूद्रजः। सगोत्रोद्वा सुतश्चैवचाण्डालास्त्रयईरितः।।

अथ समानां क्रियादि विचारः-एकमातृजयोरेकवत्सरे पुरुषस्त्रियो। न समानक्रियां कुर्यान्मातृभेदेविधीयते।। नारदोऽपि विवाहस्त्वेक जन्यानांषण्मासाभ्यन्तरे यदि।। असंशयात्त्रिभिर्वर्षैस्तत्रैकाविधवा भवेत्।। एकोदरप्रसूतयोः पुत्रयोः कन्ययोः कन्यापुत्रयोश्चापिनिषेधः सकलशुभ कर्मणाम्।। पुत्रविवाहानन्तरंपुत्र्युद्वाहनिषेधः पुत्रोद्वाहात्परं पुत्रोविवाहो न ऋतुत्रये। वर्षभेदे तु षण्मासाभ्यन्तरे विहितः शुभः।। कन्योद्वाहात्परं पुत्रविवाहः श्रेष्ठ ।। सोदरकन्ययोः सोदराभ्यामुद्वाहे निषेधश्च नारद। नचैकजन्मनोः पुंसो नैकजन्मे तु कन्यके।। नूनं कदाचिदुद्वाहे नैकदा मण्डपद्वयमिति।।

अथ रव्यादिग्रहाणां जन्मभाद्गोचरफलवेधयोज्ञानाय चक्रम्।

श्री	सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
१	स्थान नाशःपथा	पुष्टि अन्नलाभः	भयम् पीडाच	बंधनम् भयम्	अरिष्यादि भयम्	सुखं शत्रु नाशः	सर्वनाशः पीडाभयम्	हानिः कष्ट भयम्	हानिः रोगभयम्
२	हानिः भयम्	धननाशः सुखम्	धननाशः नेत्रार्ति	धनलाभः	धनादि लाभः	सुखम् धनप्राप्तिः	शोकः धनहानिः	नैस्वः व्ययं	वैर वित्तनाशः
३	सुखम् श्रीप्राप्तिः	द्रव्याप्तिः सुखम्	सुखं श्रीप्राप्तिः	भयम् शत्रुतः	भयम् रोगाप्तिः	सुखम् अर्थलाभ	सुखार्थ लाभः	नैरुज्यं धनप्राप्ति	सुखलाभ वृद्धिः
४	रोगभयम् माननाशः	रोगःमा-नार्थहानिः	कष्टं शत्रुः भीतिः	धनसुखा-दिप्राप्तिः	धनहानिः भयं	धनागमः	पीड़ाभयं शत्रुवृद्धिः	वैरशोकश्च	भीति पीड़ा
५	दैन्यम् अर्थनाशः	सुखं कार्य नाशः	रुग्भयम् धननाशः	रोगभयम् शोकश्च	लाभः सुखम्	सुखम् पुत्रलाभ	धनपुत्रयोः नाशः	हानिः शोकश्च	सुखमर्थः नाशः
६	रिपुनाशः सुखम्	वित्तलाभः	सुखार्थ लाभः	अलाभ-स्थितिः	रोगः शोकश्च	शत्रुभयं पीड़ाच	सुखम् वित्तलाभ	सुखम् लक्ष्मीप्रा.	सुखम् वित्तलाभ
७	गमनम् धनहानिः	द्रव्यप्राप्तिः सुखम्	कार्श्यं धननाशः	पीड़ाभयं विग्रहः	सुभोग सुखञ्च	शोकः अतिभयं	दोषः पीड़ाभयं	दारिद्र्यं हानिः	दुर्गति पीड़ा च
८	रोगार्त भयम्	क्लेश मृत्युभयं	भयंपाप बुद्धिः	धनादि लाभः	मृत्युभयं पीडाच	विपत्तिः धनदः	पीड़ाभयं शोकः	रुग्भयं व्यसनञ्च	पीडाभयं हानिश्च
९	कांतिक्षयः पापवृद्धिः	मानम् नृपभयम्	रुग्भयम् सुखम्	रुग्भयं धननाशः	सुखं सुमानं	सुख लाभः	पापम् धननाशः	पापकर्म रतः	पापं दैन्यश्च
१०	सौख्यसुख कर्मसिद्धि	शुभम् सुखम्	सुखम् शोकञ्च	सुखं सुखभागः	अति भयम्	धर्मलाभः असुख	वैमनस्य शुभः	वैरम् सुखम्	भयम् शोकञ्च
११	वित्ताप्ति सुखम्	विविधार्थ लाभः	लाभः सुखप्राप्ति	शुभः अर्थागमः	सौख्यं लाभः	दुःखम् धनागमः	सुखम् वित्तलाभः	सुखवृत्तिः प्राप्तिः	सुयशो ऽर्थलाभ
१२	द्रव्यनाशः पीड़ाभयम्	रोग धननाशः	रोग शोकञ्च	शोकः धननाशः	पीडा भयम्	धनागमः	क्लेशोऽ नर्थश्च	हानिः पीडाच	पीड़ाभयम् वैरञ्च

सहोदर भाई और सहोदर बहिन का विवाह शास्त्रोक्त नहीं है। एक मण्डप में दो विवाह नहीं करना चाहिये।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुधः	बृहस्पति	शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
१।६।१०।११	१।२।३।५।६	३।६।१०।११	२।६।१०।११	२।५।७।९।११	१।२।३।९।११	३।६।१०।११	शुभाः
१।२।५।७।९	७।९।१०।११	१।२।५।७।९	१।३।५।७।९	१।३।६।१०	१।२।५।७।९	१।२।५।७।९	पूज्याः
१।२।४।८	४।८।१५	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्याः

अथ वारपरत्वेन कालचक्रम्	पूर्व	अग्नि	दक्षि.	नैऋ.	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशाः
	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	भौम	चन्द्र	सूर्य	०	वाराः

अथात्रप्रत्येक ग्रहाणां रेखाष्टकज्ञानाय सारणीयम्

तत्रादौखेरष्टकवर्गाङ्काः ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९	९	११			९	१२	११
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

अथचन्द्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ४९

चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	४	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
१०	८	११	१०		११		१०
	११	१०	१२	११			
		११					

भौमस्याष्टकवर्गाङ्काः

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
			१०				१०
११				११			

अथ बुधस्याष्टकवर्गाङ्काः

बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९		५	८	१२	१०	८	८
	८	९		११	९	१०	
११		९	१०			१०	११
१२		११	११			११	

अथगुरोरष्टकवर्गाङ्काः ५६

गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१/२	२	१/२	१	१/२
२	५	५	३	५	४	२	४
३	६	६	४	७	७	४	५
४	९	१२	७	९	८	५	६
७	१०		८	११	१०	६	७
८	११		९		११	९	९
१०			१०			१०	१०
११			११			११	११

शुक्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२

शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	ल.
१/२	३	८	१/२	३	३	५	१
३	४	११	३	५	५	८	२
४	५	१२	४	६	६	९	३
५	८		५	९	९	१०	४
८	९		८	११	११	११	५
९	१०		९	१२			८
१०	११		११				९
११			१२				११

अथशनेरष्टकवर्गाङ्काः ३९

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	ल.
३	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	१०	१२		६
	८		११	११			१०
	१०		१२	१२			११
	११						

लग्नस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१	३	३	१	१	१/२	१	१
३	४	६	३	२	४	२	३
४	६	१०	६	४	५	३	४
५	१०	११	१०	६	६	४	६
७	११		११	८	७	५	१०
९				१०	९	८	११
१०				११	१०	९	
११					११	११	

अष्टकवर्गराशिगुणकाः- मे.७, वृ.१०, मि.८, क.४, सिं.१०, कं.५, तु.७, वृ.८, ध.९, म.१०, कुं.११ मी.१२। ग्रहगुणकाः सू.५, चं.५, मं.८, बु.५, वृ.१०, शु.७, श.५।। रेखाफलम् १ क्लेशः, २ अर्थहानिः, ३ प्रवासकषटम्, ४ समलाभः, ५ सुखं, ६ धनप्राप्तिः, ७ परमानन्दं ८ कार्यसिद्धिः।।

अथ ग्रहाणामधिप्रत्यधिदेवताज्ञानमाहः इंश्वरश्च उमा चैव स्कन्दो विष्णुस्तथैव च।। ब्रह्मणेन्द्र यमश्चैव कालश्चैव तथाष्टमम्। चित्रगुप्तन्तु नवमं अधिदैवत कीर्तित।. अग्निश्चैव तथा आपः पृथिवी विष्णुरेव च। इन्द्रश्चैव तथेन्द्राणी तथैव च प्रजापतिः।। सर्पश्चैव तु ब्रह्मा च एता प्रत्यधिदेवताः।।

अयाधान काले चन्द्रवशात् प्रसवस्य ज्ञानाय चक्रम्

चन्द्रराशयः				दिनानि
१	४	७	१०	२७१
२	५	८	११	२९७
३	६	९	१२	२८१ वा २७६

अथ ग्रहाणां गोत्र ज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि.	राहु.	केतु	ग्रहाः
कश्यपः	आत्रेयम्	भारद्वाजम्	आत्रेयम्	आङ्गिरसः	भार्गवः	काश्यपः	पेठनस्	जैमिनियम्	गोत्राणि

अथ भद्रयाः मुखपुच्छादि परिज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	१४	तिथिनाम
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेषु आदौ
५	५	५	५	५	५	५	५	घटयः शराः विष्टेरास्यं
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेषु अन्त्ये
३	३	३	३	३	३	३	३	घटित्रयं पुच्छे शुभकरं

प्रश्न कालात् आधानतो वा प्रसव कालिक चन्द्रविज्ञानमत्राह

यावत्संख्या द्वादशांशे शीतरस्मिव्यवस्थितः।। तत्संख्यावा ततो राशिर्जन्मादौ तद्गते भवेत।।

यस्मिन् द्वादश भागे गर्भाधाने व्यवस्थितश्च चन्द्रः। तत्तुल्यर्क्षे प्रसवो गर्भस्थ नियतमादिशेत्प्राज्ञः।। समुद्रजातकेऽपि- यतमे द्वादश भागे सूतिस्तत्संख्यके विधाविति। अत्र लग्न चन्द्रयोर्मध्ये यो बलवान् तस्य द्वादशांशकवशेन चन्द्रराशिर्ज्ञेयः इत्युक्तं लघुजातके लग्नतो यो बलवान् तस्याद्विरसांशकान्विते विधौ प्रसवः।।

वार परत्वेन तैलाभ्यङ्ग फलं विधिः-

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकान्ति	मृतिः	धन प्राप्ति	वृत्ति हानिः	विपत हानिः	सुखं	फलम्
पुष्पं	०	मृत्	०	दूर्वा	गोमयं	०	पातन

तैलाभ्यंग वर्ज्य तदत्राह-रवौ भौमे व्यतीपाते संक्रान्तौ वैधृति अपि। षष्ठी अष्टम्यां च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु। अत्र तात्कालिकास्तिथयो ग्राह्याः।।

अथात्रतैलाभ्यंगदोषापवादमाहः- तैलाभ्यंग न दोषाय प्रत्यहं क्रियते च यः। उत्सवे वात रोगे वा यत्र वाचनिकोपिवा। मैश्रितं क्वथितं तैलं सार्षपं पुष्प वासितम्। द्रव्यांतरयुतं वापि नैवदुष्येत्कदाचन।।

वर्णादिपरिहार शौनक-वर्ग वैरं योनि वैरं गण वैरं नृदूरकम्। दुष्ट कूट फलं सर्व ग्रह मैत्रेण नश्यति।।१।। न वर्ण वर्गान गणो न योनि द्विर्द्वादशे चैव षडष्टके वा। वरेऽपि दूरे नव पञ्चमे वा मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः।।२।। सद्भकूटं योनि शुद्धिः ग्रह संख्यं गुण त्रयम्। एष्वेकतमसद्भावे कन्या रक्षोगणा शुभा।।३।। राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे चांश नाथयोः। गणदिदौष्ठ ये प्यु द्वाहः पुत्र पौत्र प्रवर्धनः।।४।। स्त्री राशेर्वरभं दूरं कन्या दूरं शुभावहम्। व्यस्तं नृदूरमशुभं वश्यत्वात्तदपीष्टदम्।।५।।

वार बेला ज्ञानाय चक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
४।५	७।२	६।२	५।३	६।८	३।४	१।६।८	दिने
६।४	७।४	२	६।४	५।८	३	६।१	रात्रौ

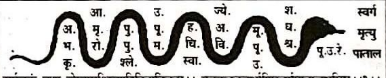
दिने-रवौ बर्ज्य चतुष्पञ्च सोमे सप्तद्वयन्तथा। कुजे षष्ठ द्वयञ्चैव बुधे पञ्चतृतीयकम्।। गुरौ षष्ठाष्टकञ्चैव शुक्रे वेद तृतीयकम्। शनावाद्यन्तषष्ठ ञ्च वार वेलेति निन्दिता।।

रात्रौ-रवौ रसाब्धी हिमगौ हयाब्धी द्वयं महीजे च बुधे रसाब्धी। गुरौ शराष्टौ भृगुजे तृतीये रसाद्यां निशिवार वेला।।

अथ अज्ञात जन्म राशेः विशेषस्तमाहः-अज्ञात जन्मानां नृणां नाम्नि भं परिकल्पयेत्। तैनैव चिन्तयेत् सर्वं राशिकूटादि जन्मभवम्। जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्यो निधनं भवेदिति।।

कालज्ञानम्-तात्काले दिवस निशासंज्ञा समुदेति राशि भागो यः। यावानुदयस्तावान् वाच्योदिवसस्य रात्रेर्वा।।

अथ वर्षाज्ञानाय सर्पाकारनाडीचक्रमिदम्



सर्पचक्रं तथा लेख्यमश्विन्यादित्रिनाडिकम्।। नवनन्दनचक्षांणिस्वर्गपातालभूमिषु।।१।।
एकनाडीस्थितिः सर्वे क्रूराः सौम्याश्च खेचराः तदा सद्यो वदेद्वृष्टि प्रभूतं जलमादिशेत्।।२।।
स्वर्गनाडीगतक्रूराः सौम्या पातालचारगाः।। तदा वृष्टि भवेदेव क्षिपत्तोयं समुद्रगम्।।३।।
नपुंसकानां योगः स्याद्वायुः स्त्रीयोगतो ध्रुवम्। पुंस्त्रीसंयोगतो वृष्टि ग्रहाश्च बलास्तदा।।४।।
क्लीवस्त्रीयोगतः शीतं पुंयोग वातजं भयम्। वातनाडयादिगाखेटाः कुर्युर्नाडीभवं फलम्।।५।।
एकोऽपि तत्फलं दत्ते सुनाडी संस्थितो ग्रहः। भूसुतः सर्वनाडीषु दत्ते नाडीभवं फलम्।।६।।
बुधशुक्रमहीसुनुः गुरवश्चैकनाडिगः। निःसंशयं तदाकाले, जायते वृष्टिरुत्तमा।।७।।
चलयङ्गारके वृष्टि रुदये च बृहस्पतौ। शुक्रस्यास्तङ्गते वृष्टि स्त्रिधावृष्टिः शनैश्चरे।।

काशी से अक्षांश-देशान्तर-सारिणी

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
अयोध्या	२६।४८	०।८	३प.
अमृतसर	३१।३९	१।२१	३२प.
अलीगंज	२६।१२	०।१४	६पू.
अमरावती	२०।५४	०५२	२१प.
अमेठी	२६।७	०।१२	५प.
अजमेर	२६।२८	१।२३	३३प.
अमरपुर	२६।५०	०।३८	१५पू.
अहमदनगर	१९।६	१।२२	३३प.
अलवर	२७।३२	१।४	२६प.
अलमोड़ा	२९।३५	०।३३	१३प.
अलीगढ़	२७।५३	०।५९	२०प.
अम्हर्स्ट (बर्मा)	१६।४	२।२५	५८पू.
अहमदाबाद	२३।१	१।४४	४२प.
आरा	२५।३४	०।१५	६पू.
आजमगढ़	२६।४	०।२	१प.
आगरा	२७।१२	०।४९	२०प.
आबा(मंडा)	२१।५५	२।१०	५२पू.
आसनसोल	२३।४३	०।४०	१६पू.
ओटावा(कना.)	४५।२४	२६।२७	६३५प.
इटावा	२६।४६	०।४०	१६प.
इन्दौर	२२।४४	१।१२	२९प.
इच्छागढ़	२३।५	०।२९	१२पू.
इम्फाल	२४।४८	१।५०	४४पू.
उज्जयिनी	२३।११	१।११	२८प.
उदयपुर	२४।३४	१।३३	३७प.
उन्नाव	२६।४८	०।२३	९प.
एटा	२७।३४	०।४३	१७प.
कछार	२४।५०	१।३८	३९प.
कलकत्ता	२२।३३	०।५३	२१पू.
कर्नाल	२९।४२	१।००	२४प.
कटक	२०।३०	०।२९	१२पू.
करांची	२४।५१	२।३९	६४प.
कन्नौज	२७।३	०।२९	१२प.
काश्मीर	३४।६	१।२५	३४प.
कानपुर	२६।२८	०।२७	११प.
काशी	२५।१८	०।०	००
कासगंज	२७।४७	०।४३	१७प.
काल्पी	२६।१०	०।३१	१२प.
काठमाण्डू	२७।४३	०।२२	९पू.
कृष्णगढ़ (बं.)	२३।२३	०।५५	२२पू.
कोटाबून्दी	२५।१०	१।१०	२८प.
कोहिमा	२५।४०	१।५०	४४पू.
कुरुक्षेत्र	२९।५७	१।१	२५प.

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
कूचबिहार	२६।२०	१।४	२६प.
कं.आ.दीप.अं	३३।५६	१०।४४	२५८प.
क्वेटा	३०।१२	२।४०	६४प.
काबुल	३४।३३	२।१८	५५प.
काञ्जीपुरम्	१२।५०	०।३२	१३प.
कुम्भकोणम्	१०।५७	०।३५	१४प.
कोल्हापुर	१६।४३	१।२७	३५प.
केनबरा (आ)	१५।१९	११।०	२६४पू.
कोलम्बो (श्री)	६।५४	०।३२	२३प.
खण्डपारा	२०।१६	०।२२	९पू.
गया	२४।४९	०।२०	८पू.
गाजीपुर	२५।३५	०।६	२पू.
गोरखपुर	२६।४७	०।३	१प.
गोंडा	२७।८	०।१०	४प.
ग्वालपाड़ा	२६।११	१।१६	३०पू.
ग्वालियर	२६।१२	०।४८	१९प.
गिद्धौर	२४।५१	०।३३	१३पू.
गोलाघाट आ.	२६।३१	१।५०	४४पू.
गोहाटी आ.	२६।११	१।२७	३५पू.
गोविन्दपुर	३२।५०	०।३६	१५प.
ग्रीनिच (ब्रिटेन)	५१।२९	१३।४९	३३२प
गोकर्ण	१४।३२	१।२६	३४प.
गोवा	१५।२७	१।३१	३६प.
चरखारी	२५।१२	०।३२	१३प.
चन्दौसी	२८।२८	०।४२	१७प.
चित्रकूट	२५।१२	०।२१	८प.
चुनारगढ़	२५।७	०।१	०प.
चाईबासा	२२।३३	०।२८	११पू.
चण्डीगढ़	३०।४४	१।०	२४प.
छटक (शिल.)	१५।१	१।२६	३४पू.
छतरपुर	२४।५५	०३३	१३प.
छपरा	२५।४६	०।१७	७पू.
छ्यगाँव आ.	२६।५	१।२३	३३पू.
जयपुर	२६।५३	१।११	२८प.
जबलपुर	२३।१२	०।३०	१२प.
जगन्नाथपुरी	१९।४९	०।२८	११पू.
जामनगर	२२।२७	२।९	५२प.
जनकपुर	२३।४३	०।१२	५पू.
जालौन	२६।९	०।३६	१४प.
जमालपुर	२४।५८	१।१०	२८पू.
जोधपुर	२६।२०	१।४०	४०प.
जौनपुर	२५।४४	०।३	१प
जलपाईगुड़ी	२६।३२	०।५७	२३पू

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
जमशेदपुर	२२।४८	०।३२	१३पू.
जूनागढ़	२१।२९	२।५	५०प
जिनिया	४६।१२	१२।५०	३०७प.
जकार्ता	६।१६द	४।०	९६पू.
झांसी	२५।२८	०।४४	१८प
टेकारी	२४।५८	०।१७	७पू.
टोकियो	३५।४०	९।२५	२२६
डुमरांव	२५।३२	०।१२	५पू.
ढाका	२३।४२	१।१५	३०पू.
तिलहर	२७।५०	०।३२	१३प.
तञ्जावर	१०।४५	०।३८	१५प.
तिरुपति	१३।४०	०।४३	१५प.
त्रिवेन्द्रम	८।३१	१।०	२४प.
तेहरान (ईरान)	३५।४१	५।१७	१२७
दतिया	२५।४०	०।४५	१८प.
दरभंगा	२६।८	०।२९	१२पू.
दार्जिलिंग	२७।३	०।५३	२१पू.
दीनाजपुर	२५।३७	०।५६	२२पू.
देहली	२८।३८	०।५७	२३प.
देहरादून	३०।१९	०।५०	२०प.
द्वारिका	२२।१४	२।२०	५६प.
डिब्रूगढ़	२७।२९	२।०	४८पू.
धवलपुर	२६।४२	०।५१	२०प.
धुले	२०।५३	१।२२	३३प.
नरसिंहपुर	२२।५७	०।३७	१५प.
नागौद (बुन्दे.)	२४।३४	०।२४	१०प.
नासिक	१९।५९	१।३२	३७प.
नागपुर	२१।१०	०।३८	१५प.
नीमच	२४।२७	१।२१	३२प.
नैनीताल	२९।२३	०।३५	१४प.
नेपालगंज	२८।०	०।१३	५पू.
पवानर	२४।०	१।२	२५पू.
पटियाला	३०।२०	१।५	२६प.
पटना	२५।३६	०।२२	९पू.
प्रतापगढ़	२५।३४	०।१०	४प.
पीलीभीत	२८।३८	०।३१	१२प.
प्रयाग	२५।२८	०।१२	५प.
पूर्णिया	२५।४९	०।४५	१८पू.
पूना	१८।३०	१।३०	३६प.
पुष्कर	२६।२९	१।२५	३४प.
पुरुलिया	२३।२०	०।३५	१४पू.
पेशावर	३४।२	१।५४	४६प.
पोरबंदर	२१।३९	२।१५	५४प.

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
प्रोम	१८।४७	२।०	४८पू.
पिंडरा	२२।४५	०।१०	४प.
पेरिस (फ्रांस)	४८।५०	१३।२६	३२२प.
फतेहपुर	२५।५५	०।२१	८प.
फैजाबाद	२६।४७	०।९	४प.
फर्रुखाबाद	२७।२६	०।३४	१४प.
बलिया	२५।४६	०।१२	५पू.
बहराइच	२७।३४	०।१४	६प.
बरेली	२८।२२	०।३५	१४प.
बक्सर	२५।३३	०।१०	४पू.
बड़ोदा	२२।१८	१।३७	३९प.
मुम्बई	१८।५६	१।४०	४०प.
बलरामपुर	२७।२७	०।८	३प.
वर्धमान	२३।१७	०।४८	१९पू.
बांदा	२५।२८	०।२७	११प.
बिहार	२५।११	०।२६	१०पू.
बीकानेर	२८।२	१।३६	३८प.
बेतिया	२६।४९	०।१५	६पू.
बालेश्वर	२१।३०	०।३९	१६पू.
बिलासपुर	३१।२०	१।०	२४प.
बून्दी	२५।२६	१।१३	२९प.
बुलन्दशहर	२८।२४	०।५१	२०प.
बराकर	२३।४६	०।३८	१५पू.
बाँसी(बस्ती)	२७।१०	०।१	०प.
बाकरगंज	२०।३०	१।१३	२९पू.
बदायूं	२८।२	०।३८	१५प.
बस्ती	२६।४८	०३	१प.
बाराबंकी	२६।५६	०।१८	७प.
बगदाद	३३।२४	६।१९	१५२प
बर्लिन(जर्मनी)	५२।३०	११।३५	२७८प
बंगलोर	१२।५८	०।५५	२२प.
बेलगाँव	१५।५०	१।२४	३४प.
बरहाणपुर	२१।१८	१।५	२६प.
बैंकाक(थाई)	१३।४४	२।५५	७०पू.
भरोच	२१।४१	१।४०	४०प.
भरतपुर	२७।१४	०।५५	२२प.
भागलपुर	२५।१४	०।४०	१६पू.
भुज (कच्छ)	२३।१५	२।१२	५३प.
भोपाल	२३।१६	०।५५	२२प.
भुवनेश्वर	२०।१५	०।२७	११पू.
मद्रास	१३।४	०।२८	११प.

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
मधुबनी	२६।२०	०।३१	१२पू.
मण्डाले	२२।०	२।११	५२पू.
मथुरा	२७।३१	०।५२	२१प.
मझौली राज्य	२६।३८	०।१	०प.
मालदा	२५।३	०।५१	२०पू.
माण्डवी (कच्छ)	२२।५०	२।१५	५४प.
मेरठ	२९।१	०।५२	२१प.
मेदिनीपुर	२२।२५	०।४३	१७पू.
मोतीहारी	२६।४०	०।१०	४पू.
मैहरराज्य	२४।१६	०।२२	९पू.
मुरादाबाद	२८।५१	०।४२	१७प.
मुंगेर	२५।२३	०।३५	१४पू.
मैनपुरी	२७।१४	०।४०	१६प.
मिर्जापुर	२५।९	०।५	२प.
मुजफ्फरपुर	२६।७	०।२५	१०पू.
मैमनसिंह	२४।४६	१।१४	३०पू.
मौलमीन	१६।२९	२।२६	५८पू.
मुर्शिदाबाद	२४।११	०।५३	२१पू.
मक्का	२१।२५	७।७	१७१प
मैसोर	१२।१८	१।२	२५प.
मछलीपट्टन	१६।१२	०।१७	७प.
मदुरा	९।५८	०।४७	१९प.
मास्को(रूस)	५५।४५	७।३५	१८२प
रंगपुर	२४।४५	१।२	२५पू.
रानीगंज	२३।३५	०।४१	१६पू.
राँची	२३।३५	०।२३	९पू.
राजमहल	२५।२	०।४८	१९प.
रायबरेली	२६।१४	०।१७	७प.
रीवाँ	२४।३१	०।१७	७प.
रायपुर	२१।१५	०।१३	५प.
रुड़की	२९।५२	०।५१	२०प.
रावलपिण्डी	३३।३५	१।४०	४०प.
रोम(इटली)	४१।५६	११।४५	२८२प
राजकोट	२२।१८	२।२	४९प.
राजमहेन्द्री	१७।०	१०।०	४प.
रामेश्वर	९।१७	०।३७	१५प.
रंगून (बर्मा)	१६।४७	२।२०	५२पू.
रायचूर	१६।१२	०।५५	२२प.
लखनऊ	२६।५१	०।२०	८प.
लखीमपुर	२७।५७	०।२२	९प.
लाहौर	३१।३५	१।३०	३६प.

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
लोहरदग्गा	२३।२७	०।१७	७पू.
बीरभूमि	२३।५४	०।४५	१८पू.
बारहभूमि	२३।१०	०।३४	१४पू.
वीरसिंहपुर	२४।३३	०।२०	८प.
वैद्यनाथ	२४।३०	०।३७	१५पू.
वाशिंगटन	३८।५४	२६।३९	६४०प.
विशाखापट्टनम्	१७।४३	०।३	१पू.
शक्तिगढ़	२३।१५	०।५०	२०पू.
शाहजहाँपुर	२७।५३	१।५६	४६पू.
शिवसागर	२६।५९	१।५६	४६पू.
शिमला	३१।६	०।५७	२३प.
सहारनपुर	२९।५७	०।५५	२२प.
सागर	२३।५०	०।४३	१७प.
सोहावल	२४।३५	०।२२	९प.
शिलचर	२४।५०	१।३८	३९पू.
सिलहट	२४।५३	१।३०	३६पू.
सीतामढ़ी	२६।३४	०।२४	१०पू.
सीतारामपुर	२३।४५	०।३९	१६पू.
सरगुजा	२३।५	०।२	१पू.
सीतापुर	२७।३४	०।२३	९प.
सुलतानपुर	२६।१६	०।२	१प.
सैनफर्नेंडो(स्पे.)	३६।२८	१४।५३	३५७प
सिंगापुर	१।२१	३।३०	८४पू.
सिडनी	२३।५५	११।२३	२७३प.
सातारा	१७।४१	१।३०	३६प.
सूरत	२१।१२	१।४४	४२प.
सोलापुर	१७।३९	१।१०	२८प.
सिलीगुड़ी	२६।४४	०।५५	२२पू.
श्रीनगर	३४।६	१।२२	३३प.
श्रीरंगपट्टम	१२।२६	१।३	२५प.
हज़ारीबाग	२३।५९	०।२५	१०पू.
हरिद्वार	२९।५८	०।४८	१९प.
हैदराबाद (द.)	१७।२५	०।४५	१८प.
हैदराबाद (सि.)	२५।२५	२।२६	५८प.
हाजीपुर	२५।४४	०।२२	९पू.
हमीरपुर	२५।५८	०।२८	११प.
हरदोई	२७।२३	०।२८	११प.
हल्द्वानी	२९।१५	०।३४	१४प.
हाथरस	२७।३७	०।४८	१९प.

ग्रीनविच से काशी का देशान्तर १३ घटी ५० पल (५ घंटा ३२ मिनट) होता है। गणितागत सूर्य घड़ी के अनुसार यह अन्तर वाराणसी और इलाहाबाद के बीच आता है। या मद्रास के देशान्तर में पड़ता है। काशी से देशान्तर पूरब (+) एवं पश्चिम (-) होता है।

काशी से अन्य स्थानों के लिये लग्न-परिवर्तन की आसान विधि

श्रीमहावीर पंचाग में मेषादि द्वादश लग्नो का समाप्तिकाल दिया गया है, यह काशी या इसके आस-पास के स्थानों के लिये उपयोगी है, काशी से दूरस्थ स्थानों के लिये लग्नारम्भ एवं समापन में काफी अन्तर आता है, कई बार तो लग्न भी बदल जाता है।

नीचे दी गयी लग्न-परिवर्तन सारणी की सहायता से भारत के सभी प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्ति का समय सामान्य सरल गणित द्वारा तुरन्त ही ज्ञात किया जा सकता है। लग्नपरिवर्तन सारणी में अर्थात् नगर के आगे और लग्न के नीचे जो संस्कार मिनट है, उन्हें चिन्हानुसार यदि संस्कार (+) है, तो जोड़ने से और ऋण (-) है तो काशी की लग्नों में उसे घटाने से इष्टदेश या प्रदेश में लग्नों के समाप्त होने का समय ज्ञात हो जायेगा। जैसे ता.९ जनवरी २००१ ई. को दिल्ली में मेष लग्न समाप्ति का समय ज्ञात करना है, तो गणित इस प्रकार की जायेगी।

	घं.	मि.	
दिन में.	१	- ३१	मे। लग्नात काशी में (महावीर पंचांग में)
	+ ०	- १७	दिल्ली के लिये मेष लग्न का संस्कार धन (+)
दिन	१	- ४८	बजे दिल्ली में मेष लग्न समाप्ति का समय ज्ञात हुआ। रेलवे समयानुसार इसे १३-४८ भी लिखा जा सकता है।

इस प्रकार भारत के सभी प्रमुख स्थानों के लिये लग्न ज्ञात करके आप स्वयं कुण्डली बनाकर भावी घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कुण्डली में लग्न एव दशम बिन्दु को स्थान की विशेष महत्ता एवं उपयोगिता है, अतः जन्मपत्रादि गणित में सूक्ष्म शुद्ध लग्नों का ही उपयोग करना चाहिये। यदि सारणी में आपका नगर न मिले तो उसके नजदीक का दूसरा शहर ग्रहण करें। कुण्डली का सम्पूर्ण शुभारम्भ फलादेश लग्न शुद्धि पर आधारित होता है।

नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अगरतला	-३१	-३०	-३०	-३१	-३३	-३४	-३५	-३६	-३६	-३५	-३३	-३२
अमृतसर	+२२	+१९	+२०	+२५	+३२	+३८	+४४	+४६	+४६	+४१	+३४	+२८
अयोध्या	+ ०	+ १	+ ०	+ १	+ ३	+ ५	+ ६	+ ७	+ ७	+ ५	+ ३	+ २
अल्मोड़ा	+ ५	+ २	+ ३	+ ७	+१२	+१७	+२१	+२४	+२३	+१९	+१४	+ ९
अलीगढ़	+१५	+१४	+१४	+१६	+१९	+२२	+२४	+२६	+२५	+२३	+२०	+१७
अहमदाबाद	+४५	+४६	+४६	+४४	+४२	+४०	+३८	+३७	+३७	+३९	+४१	+४३
आगरा	+१७	+१६	+१७	+१८	+१९	+२१	+२३	+२४	+२३	+२२	+२०	+१९
इलाहाबाद	+ ४	+ ४	+ ४	+ ५	+ ५	+ ५	+ ५	+ ५	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४
ऊना (हि.प्र.)	+१६	+१२	+१४	+२०	+२६	+३४	+४०	+४४	+४२	+३६	+३०	+२२
उज्जैन	+३३	+३४	+३३	+३२	+३०	+२८	+२५	+२४	+२५	+२६	+२९	+३१
कांगड़ा(हि.प्र.)	+१५	+११	+१२	+१८	+२५	+३२	+३९	+४२	+४२	+३५	+२८	+२१
कटक	- ३	- १	- २	- ५	-११	-१६	-२०	-२३	-२२	-१८	-१३	- ८
कलकत्ता	-१७	-१५	-१६	-१८	-२१	-२३	-२५	-२७	-२६	-२४	-२२	-१९
काण्ठमाडु	-१४	-१५	-१५	-१२	-१०	- ७	- ५	- ३	- ४	- ६	- ८	-११
कानपुर	+ ९	+ ८	+ ९	+१०	+१०	+१२	+१३	+१४	+१३	+१२	+१२	+१०
कुरुक्षेत्र	+१७	+१४	+१५	+१९	+२४	+२९	+३३	+३५	+३५	+३१	+२६	+२१
गया	- ७	- ७	- ७	- ८	- ८	- ८	- ९	- ९	- ९	- ९	- ८	- ८
गोण्डा	+ १	+ ०	+ १	+ २	+ ४	+ ६	+ ७	+ ८	+ ८	+ ६	+ ५	+ ३
गढ़वाल	+ ९	+ ६	+ ७	+११	+१६	+२१	+२५	+२८	+२७	+२३	+१८	+१३
चण्डीगढ़	+१४	+११	+१३	+१७	+२३	+२१	+३५	+३८	+३६	+३२	+२६	+२०
जम्मू	+१८	+१४	+१६	+२३	+३१	+३९	+४६	+५०	+४९	+४२	+३४	+२६
जालंधर	+२०	+१७	+१८	+२३	+२८	+३४	+४०	+४३	+४१	+३७	+३१	+२५
जवलपुर	+१६	+१७	+१६	+१५	+१३	+१४	+८	+७	+ ८	+ ९	+११	+१४
जमशेदपुर	- ९	- ८	- ९	- ९	- १२	-१४	-१७	-१७	-१७	-१६	-१३	-११
जमालपुर	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४

नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
जहानाबाद	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७
झरिया	-११	-११	-११	-१२	-१३	-१५	-१६	-१६	-१६	-१५	-१४	-१३
तरवंगज	+१	+ ०	+ १	+ २	+ ४	+ ६	+ ७	+ ८	+ ८	+ ६	+ ५	+ ३
दिल्ली	+१७	+१६	+१६	+१९	+२२	+२६	+२९	+३०	+३०	+२७	+२४	+२०
द्वारिका	+६२	+६३	+६२	+६०	+६०	+५४	+५१	+४९	+५०	+५२	+५६	+६१
देहरादून	+१२	+९	+१०	+१४	+१९	+२४	+२८	+३१	+३०	+२६	+२१	+१६
धनबाद	-१२	-११	-१२	-१२	-१४	-१५	-१६	-१७	-१७	-१६	-१४	-१३
दरभंगा	-१३	-१४	-१४	-१३	-१२	-११	-१०	-१०	-१०	-११	-१२	-१३
नीमच	+३४	+३४	+३४	+३३	+३३	+३२	+३१	+३१	+३१	+३१	+३२	+३३
नवलगढ़	+२७	+२५	+२७	+२८	+३०	+३३	+३५	+३६	+३५	+३४	+३१	+२९
नालंदा	- ९	- ९	- ९	- ९	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०
पूना	+४८	+५१	+५०	+४५	+३८	+३१	+२५	+२२	+२३	+२८	+३५	+४२
पोर्टब्लेअर	-१७	-११	-१४	-२३	-३४	-४७	-५७	-६३	-६१	-५२	-४०	-२७
पटना	-९	-१०	-१०	- ९	- ९	- ९	- ८	- ८	- ८	- ८	- ९	- ९
बुलन्दशहर	+१५	+१४	+१७	+१७	+२०	+२३	+२५	+२६	+२४	+२४	+२१	+१८
बद्रीनाथ	+४	+१	+२	+७	+१२	+१८	+२४	+२७	+२६	+२१	+१५	+१०
बाराबंकी	+४	+ ३	+ ४	+ ५	+ ७	+ ९	+१०	+११	+११	+ ९	+ ८	+ ६
बलरामपुर	+०	- १	- ०	+ १	+ ३	+ ५	+ ६	+ ७	+ ७	+ ५	+ ४	+ २
बड़ौदा	+४४	+४६	+४५	+४३	+४०	+३७	+३४	+३२	+३३	+३५	+३८	+४२
बम्बई	+५१	+५३	+५२	+४८	+४२	+३६	+३१	+२८	+२९	+३३	+३९	+४५
बक्सर	- ५	- ५	- ५	- ४	- ४	- ४	- ३	- ३	- ३	- ३	- ४	- ४
बोकारो	-१०	-९	-१०	-१०	-१२	-१३	-१४	-१५	-१४	-१४	-१२	-११
भागलपुर	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६
भोपाल	+२६	+२७	+२७	+२५	+२३	+२१	+१९	+१८	+१८	+२०	+२२	+२४
भिवानी	+२१	+१९	+२०	+२३	+२७	+३०	+३४	+३६	+३५	+३२	+२८	+२५
मथुरा	+१८	+१८	+१९	+१९	+२१	+२३	+२५	+२४	+२३	+२४	+२२	+११
मद्रास	+३०	+३५	+३३	+२४	+१४	+३	-८	-१३	-११	-२	+८	+११
मुजफ्फपुर	-११	-१२	-१२	-११	-१०	- ९	- ८	- ८	- ८	- ९	-१०	-११
मधुबनी	-१४	-१४	-१४	-१३	-१२	-१२	-११	-११	-११	-१२	-१२	-१३
मुंगेर	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४
मेरठ	+१५	+१३	+१४	+१७	+२०	+२४	+२७	+२९	+२९	+२६	+२२	+१८
रांची	-७	- ६	- ६	- ७	- ९	-११	-१२	-१३	-१३	-१२	-१०	- ८
रानीखेत	+६	+३	+४	+८	+१३	+१८	+२२	+२५	+२४	+२०	+१५	+१०
रुदौली	+२	+ १	+ २	+ ३	+ ५	+ ७	+ ८	+ ९	+ ९	+ ७	+ ६	+ ४
रेवाड़ी	+२१	+१९	+२०	+२२	+२५	+२७	+३०	+३१	+३१	+२८	+२६	+२३
लखनऊ	+५	+ ५	+ ५	+ ६	+ ८	+१०	+१०	+१२	+१२	+१०	+ ९	+ ७
लुधियाना	+१८	+१५	+१७	+२१	+२७	+३३	+३९	+४२	+४०	+३६	+३०	+२४
सासाराम	- ७	- ६	- ६	- ७	- ७	- ७	- ८	- ८	- ८	- ८	- ७	- ७
सीतामढ़ी	-२१	-२२	-२२	-२१	-१९	-१८	-१७	-१६	-१७	-१८	-१९	-२०
शिमला	+१३	+१०	+११	+१६	+२४	+२८	+३३	+३६	+३५	+३०	+२५	+१९
हरिद्वार	+११	+९	+१०	+१४	+१९	+२३	+२८	+३०	+२९	+२५	+२१	+१६
हम्मीरपुर	+१४	+१०	+११	+१८	+२४	+३१	+३८	+४१	+४१	+३४	+२७	+२०
हम्मीरपुर	+१०	+१०	+११	+११	+११	+१२	+१३	+१३	+१३	+१२	+१२	+११
हापुड़	+१५	+१३	+१३	+१६	+२०	+२४	+२७	+२९	+२८	+२५	+२२	+१८

अथ जन्मकालाद्दीर्घादि ३ भेदत्रयाणामत्र-चरादिराशिवशादायुर्बोधकचक्रमिदम्

दीर्घायु	मध्यायुः	अल्पायुः
चरभे १ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेष	चरभे लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेशः
स्थिरभे २ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ अष्टमेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः	स्थिरभे २ लग्नेश स्थिरभेश २ रन्ध्रेश
द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	द्विस्वभावभे३लग्नेशः द्विस्वभावभे३रन्ध्रेशः	द्विस्वभावभे३लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः

अथायुर्निर्णयचक्रानुसारेण

अथायुर्निर्णयः। चक्रानुसारेण। जन्मलग्नाष्टमेशाभ्यां लग्न सप्तमयोः स्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथाशनिचन्द्राभ्यां लग्न होरालग्नाभ्यां चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णतव्यम्। प्रकारत्रयेऽप्येकस्मायुष्यागते तदेव ग्राह्यम्। विभेदे वा प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्। त्रयाणां विवादे लग्नहोरालाग्रायुर्ग्राह्यम्।। जन्मलग्ने विषभे द्वितीयाष्टमाधीशयोर्योबली लग्नेशभे द्वादश-षष्ठाधीशतोमन्ये यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्त्वा दीर्घायुः। पणफरे स्थित्या मध्यायुः। आपोक्लीमे स्थित्या हीनायुरेव। एवमेवात्मकारकवशेनापि निर्णतव्यम्। लग्नाष्टमेशयोः कारकेण सहोच्चे वा योगे सर्वदामध्यमायुरेव।। विषमे जन्मलग्ने कारकः तृतीये, समे जन्मलग्ने कारकः एकादशे भवेद्वा कारक युति केन्द्रे हीनायुः पणफरे मध्यायुः आपोक्लीमे दीर्घायुः लग्नेशो रवेमित्रदीर्घायुः, समश्चेन्मध्यायुः शत्रुश्चेदल्पायुरिति।। सारण्युदाहरणम् कस्यचिज्जन्मेष्ट म् २।८।५ जन्मलग्न ७।३५।६।५४ होरालग्नं १।३०।५१।३ लग्नेशो भौमः ९।१९।३०।३० अष्टमेशो बुधः २।३।१।४७ चन्द्रः १०।१६।२०।० अत्रलग्नेशाष्टमेशयोः प्रथमान्तयोः स्थित्या अल्पायुः। मन्देन्दुभ्यामल्पायुः लग्नहोरालग्नाभ्यामप्याल्पायुः। एवं अल्पायुरेव सिद्धम्। तत्र भौम, बुध लग्न चन्द्रलग्न होरालग्नानां षण्णामंशाणां योग-मासादि ६।१८।१४ विकलानां दिनादि १।१०।२४ एषामेकोपचितस्थानयोगातभुक्तवर्षादिः १०।१।२५।३४।२४ अल्पायु-विशुद्धं स्पष्टमायुषो भोग्यवर्षादिकम् २१।१०।४।२५।३६ एकमेव भोग्यांशैरपि भवेदिति। एवं ३६।४० वर्षखण्डाभ्यामपि।।

रोगत्रिनाडीचक्रम्

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
पू.फा.	मघा	आश्लेषा
उ.फा.	हस्त	चित्रा
अनुराधा	विशाखा	स्वाती
ज्येष्ठ	मूल	पू.षा.
धनिष्ठ	श्रवण	उ.षा.
शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.
भरणी	अश्विनी	रेवती
कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा

रवीन्दुनामनक्षत्रमेकं-नाड्यां यदाभवेत्।
तदा मृत्यु विजानीयादिति।

दशम लग्न सारिणी

०	अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	रा.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	२	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
९	०	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
१६	मे.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
९	१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३४	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
५८	वृ.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
१०	२	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
४६	मि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
१०	३	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
४६	क.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
९	४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
५८	सि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
०	रा.	२८	२	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
९	५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
१६	कं.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
०	रा.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
९	६	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
१६	तु.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
९	७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	३१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
५८	वृ.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
१०	८	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३४	४६	५६
४६	ध.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
१०	९	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
४६	म.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
९	१०	१२	२	३२	४२	५४	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
५८	कु.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	९
०	रा.	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
९	११	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
१६	मी.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

दशम लग्न निकालने की विधि- लग्न सारिणी द्वारा प्राप्त सूर्यफल में इष्ट काल जोड़ने से घट् यादि अंक आया हो उसमें १५ घटी घटाकर जितनी संख्या मिले उस संख्या को दशम सारिणी में देखिए, उक्त संख्या उसके लगभग वाली संख्या जहाँ सारिणी में हो उसके बाई ओर दशम लग्न तथा ऊपर उसके अंश होगें।

सूर्यदशाफल– सूर्य महादशा में एक नये व्यापार से धनप्राप्ति, अग्नि-चतुष्पद से कष्ट, नेत्रकष्ट, उदरविकार, दाँत कष्ट, बच्चों से अलग वास, बड़ों में किसी का वियोग। सूर्य में मंगल, गुरु, शुक्र का अन्तर शुभ चन्द्र राहु, शनि, बुध और केतु का अन्तर अशुभ।

चन्द्रदशाफलम् - "हिम-किरण दशायां मन्त्रदेव द्विजाप्ति ...."
चन्द्र में चन्द्र, गुरु बुध, शुक्र, सूर्य का अन्तर शुभ मंगल, राहु, शनि केतु का अन्तर अशुभ।

भौमदशाफल- यदि भूमिसुतस्य शस्त्रहतसुरभूपाला-वाह्नेन भैषज्यानृतवञ्चनैश्च विविधैःकार्यैर्धनस्यागमम्। पित्तासृग्ज्वरपीडनं तु सततं नीचांगनासेवनं विद्वेषं सुतदार-गुरुभिदुष्टा भोगं कष्टं विदुः।। ***भौम में-*** भौम, राहु, शनि, केतु सूर्य चन्द्र का अन्तर अशुभ गुरु, शुक्र का अन्तर शुभ।

राहुदशाफल-सौख्यादिवित्तस्थितिनाशनं च कलत्रपुत्रादिवियोग दुखम् अतीवरोगं परदेशवासं विवादवृद्धिकुलतेफनीशः।।

विंशोत्तरीयमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्रम

सूर्यदशावर्ष६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७				राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९				बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रोहि.ह.श्रवण				मृ.चि.ध.				आर्द्रा.स्वा.शत				पुन.वि.पू.भा.				पुष्य.अनु.उ.भा.				आश्ले.रे.ज्ये.				मघा.मू.अश्वि.				पू.फा.पू.षा.भर.			
अन्तर्दशादि १८				अन्तर्दशादि ३०				अन्तर्दशादि २१				अन्तर्दशादि ५४				अन्तर्दशादि ४८				अन्तर्दशादि ५७				अन्तर्दशादि ५१				अन्तर्दशादि २१				अन्तर्दशादि ६०			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	गु.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	गु.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	गु.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	गु.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	गु.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	गु.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	गु.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

जन्मभं त्रियुतं तष्टमष्टभिः शेषतो दशा।। मंगलाद्या वृषेधृद्धाया संकटाष्टौदशामता।।१।।
भस्यभुक्त घटी स्वीय़ वर्षगुण्याभभोगतः।। लब्धं वर्षादिकं भुक्तं भोग्यं तच्छेषमुच्यते।।

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञानार्थ चक्रम्

मंगला १			पिंगला २			धन्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकठा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	स.	१६	०	म.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	स.	१३	१०	म.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	स.	१०	२०	म.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	स.	८	०	म.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	स.	५	१०	म.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
स.	२	२०	म.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्र.आर्द्रा चित्रा			ध.,पुनर्वसु स्वाती			पुष्य,विशाखा शतभिषा			अश्वि.,श्लेषा अनु.,पू.भा.			भर.,मघा, ज्ये.उ.भा.			कृ.,पू.फा. मूल,रेवती			रो.उ.फा. पू.षा.			मृग.,हस्त उ.षा.		

जन्मराशि जन्मलग्ना दरिष्टवर्षाणि

जन्म ल.	वर्षाणि					आयु
मेष	४	११	१६	४४	५८	१००
वृष	१	२८	३३	४४	६१	९०
मिथुन	४	१०	१४	३८	५८	८६
कर्क	५	२५	४०	४८	६२	१००
सिंह	५	१३	२८	३६	४८	६२
कन्या	४	१६	२३	३६	४५	१००
तुला	१५	३१	३५	६२	६४	७५
वृश्चि.	११	२१	३८	५२	६२	१००
धनु	२	१०	१८	३१	४२	६७।८१
मकर	५	१३	३६	५७	६२	९५
कुम्भ	२	२८	३३	४८	६४	९०
मीन	१	८	१३	३६	४८	८३

राहु में–राहु, शनि, केतु मंगल का अन्तर कष्ट कर। गुरुबुध शुक्र का अन्तर सुखद।
गु.द.फ.–स्थानप्राप्ति वित्तयांनाम्बराप्तिराजस्नेहचित्तशुद्धि विभूतिम्। ज्ञानचारं पुत्रदारादिलाभं देवाचार्यः स्वेविपाके करोति।।
गुरु में–गुरु, बुध, शुक्र, रवि चन्द्र का अन्तर शुभ फल, शनि केतु, मंगल का अन्तर अशुभ है।
शुक्र में – शुक्र, मंगल, गुरु, शनि, बुध, अन्तर शुभ, सूर्य चन्द्र राहु, केतु अन्तर अशुभ।।
गु.द.फ.-स्वकीयदाये गुरुबन्धुमित्रार्थजनं कीर्तिसुखं करोति। दौत्यं च सत्कर्महिरण्यपण्येधनायति वातरुजं कुमारः।।
बुध शुक्र, रवि, राहु, शनि का अन्तर, शुभ, शेष अशुभ।
के.द.फ.-केतोर्दशायामरिनीच पीड़ा न शस्त्रक्षतिमुष्णरोगम्। मिथ्यापवादं कुल दूषितत्वं वहेभयं प्रोषणामात्मवेशात्।।

शनि में–शनि केतु, सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु का अन्तर अशुभ। बुध शुक्र और गुरु का अन्तर शुभ फलप्रद होता है।
केतु में–केतु राहु, चन्द्र मंगल, राहु शनि का अन्तर कष्ट दायक शेष शुभ।
शुक्रदशाफलम्–स्त्रीपुत्रवित्ताप्तिमतीवसौख्यंसुगन्धमाल्याम्बर भूषणाप्तिम्।
यानादिभाग्यं नरपालतुल्यं यशः स्वपाके भृगुजः करोति।
अर्घ्य मन्त्रः- प्रसीद देवदेवेश विघ्नहर्ताधनप्रदः गृहाणार्घ्यं ममशान्तिं प्रयच्छमे।।
दान-प्रति भौमवार को तांबे के बर्तन में गुड़ गेहूँ रखकर दान देना चाहिए। इसे ऋणाधिक्य भूतवेताल डाकिन्योत्पादितसन्तानोत्पत्तिकष्ट से छुटकारा मिलता है।
तीनो नामों की कल्पना की जाती है। फिर भक्तीपूर्वक रक्तधान्य, रक्त पुष्प, गंध, धूप दीप और नैवेद्य से मंगल पूजन की विधि है।

अथमारकस्थानायुस्थानयोज्ञानमाह - अष्टमर्क्षं तृतीयञ्च लग्नादायुरदाहतम् द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिदरोगेशव्ययेशाष्टमेशदशास्वपि मारकसम्भवः परस्परमष्टमेशयोर्दशाऽन्तरञ्च न शोभनम्। मारके मारकान्तरान्तरे न शोभनम्। व्ययद्वितीयेशवद्ग्रहा सम्बन्धतः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽनिष्ठ सन्बन्धरहिता न मारककारिणी पापदशास्वनिष्टवेति।।

जन्म-चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा-साधन-सारणी

(जन्म कालिक चन्द्रमा के राशि, अंश, कला, विकला से विंशोत्तरीदशा के भुक्त वर्ष मास दिन-बोधक सारणी)

	मेष, सिंह धनु राशिस्थ चन्द्र				वृष,कन्या मकर राशिस्थ चन्द्र				मिथुन,तुला कुम्भ राशिस्थ चन्द्र				कर्क,वृश्चिक मीन राशिस्थ चन्द्र			
अंश	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१	के.	०	६	१	सू.	१	११	१२	मं.	४	०	९	बृ.	१३	२	१२
२		१	०	१८		२	४	२४		४	६	१८		१४	०	२४
३		१	६	२७		२	१०	६		५	०	२७		१५	७	६
४		२	१	६		३	३	१८		५	७	६	श.	०	११	१२
५		२	७	१५		३	९	०		६	१	१५		२	४	१५
६		३	१	२४		४	२	१२		६	७	२४		३	९	१८
७		३	८	३		४	७	२४	रा.	०	५	१२		५	२	२१
८		४	२	१२		५	१	६		१	९	१८		६	७	२४
९		४	८	२१		५	६	१८		३	१	२४		८	०	२७
१०		५	३	०		६	०	०		४	६	०		९	६	०
११		५	९	९	चं.	०	९	०		५	१०	६		१०	११	३
१२		६	३	१८		१	६	०		७	२	१२		१२	४	६
१३		६	९	२७			३	०		८	६	१८		१३	९	९
१४	शु.	१	०	२७		३	०	०		९	१०	२४		१५	२	१२
१५		२	६	०		३	९	०		११	३	०		१६	७	१५
१६		४	०	०		४	६	०		१२	७	६		१८	०	१८
१७		५	६	०		५	३	०		१३	११	१२	बु.	०	५	३
१८		७	०	०		६	०	०		१५	३	१८		१	८	१२
१९		८	६	०		६	९	०		१६	७	२४		२	११	२१
२०		१०	०	०		७	६	०		१८	०	०		४	३	०
२१		११	६	०		८	३	०	बृ.	१	२	१२		५	६	९
२२		१३	०	०		९	०	०		२	४	२४		६	९	१८
२३		१४	६	०		९	९	०		३	७	६		८	०	२७
२४		१६	०	०	मं.	०	४	६		४	९	१८		९	४	६
२५		१७	६	०		०	१	१५		६	०	०		१०	७	१५
२६		१९	०	०		१	४	२४		७	२	१२		११	१०	२४
२७	सू.	०	१	२४		१	११	३		८	४	२४		१३	२	३
२८		०	७	६		-२	५	१२		९	७	६		१४	५	१२
२९		१	०	१८		२	११	२१		१०	९	१८		१५	८	२१
३०		१	६	०		३	६	०		१२	०	०		१७	०	०

उदाहरणार्थ– किसी का जन्म मकर के चन्द्रमा के १८ अंश, ३० कला ४१ विकला पर हुआ है। अतः उपरोक्त राशि-अंश की सारिणी में मकर राशि के खाने में १८ अंश के सामने देखने से चन्द्रमा की महादशा का ६ वर्ष, ० मास, ० दिन फल प्राप्त किया। पुनः कला का फल अनुपात करके ४ मास १५ दिन प्राप्त किया। पुनः विकला का भी फल अनुपात करके ३ दिन प्राप्त किया। सभी को जोड़ दिया तो ६ वर्ष, ४ मास, १८ दिन चन्द्रमा की महादशा का भुक्त समय प्राप्त हुआ। उक्त समय को चन्द्रमा की महादशा मान १० वर्ष में से घटाने पर शेष चन्द्रमा महादशा का भोग्य समय होगा।

अथ ग्रहाणां स्वगेहोच्चनीचमूलत्रिकोणभवनानि तथा जातिवर्णादयः भाग्योदयाब्दबोधकचक्रम्

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः	ग्रहा	तैलिक चक्रम्		
सिंह	कर्कः	मे.वृश्चि.	मि.कन्या	धनु मीन	वृष तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन	गेहमानि			
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन	धनु	उच्च राशि अं.	स्था.	न.	फ.
मध्यान्ह	अपराह्न	मध्यान्ह	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या	कालवलम्	श्रृंगे	७	संवत्
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कुम्भ	सिंह	मूलत्रिकोणानि	मध्ये	३	शोकः
ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्वादि संज्ञा	तले	२	विपत
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	अन्त्यज	अन्त्यज	अन्त्यज	जातयः	कर्णे	७	धनम्
चतुष्पद	सरीसृप	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	द्विपद	पक्षी	सरीसृप	सरीसृप	पश्वादि संज्ञा	दास्यु	३	ऋणम्
पुरुष	वनिता	पुरुष	नपंसुक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुं.स्त्री.संज्ञा	संभार	७	सुखं
क्रूर	सौम्य	पापः	सौम्यपाप	सौम्य	सौम्य	पापः	पापः	पापः	सौम्यादि संज्ञा	अर्कभात्		
रक्त	श्वेत	रक्त	हरितः	पीत	कर्पूर	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	वर्णानि			
वनचर	जलचर	वनचर	ग्रामचर	ग्रामचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर	संज्ञान्तराणि			
नृलोक	भूलोक	नाग	स्वर्ग	स्वर्ग	नाग	नाग	नाग	नाग	लोकानि	न.	फलम्	
पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदयादि संज्ञा	३	अशुभ	
पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	कफल	वात	वात	वात	प्रकृतयः	३	शुभ	
कटुक	लवण	तिक्त	मिश्रित	मधुर	क्षाराम्ल	तिक्तं	तिक्त	तिक्त	कटुकादिरसा	४	अशुभ	
व्योमदृक्	समदृक्	व्योमदृक्	तिर्यग्दृक्	समदृक्	तिर्यदृक्	अधोदृक्	अधोदृक्	अधोदृक्	अवलोकनानि	२	अशुभ	
पूर्व मुख	प.मुख	द.मुख	उ.मुख	उ.मुख	पूर्वमुख	प.मुख	द.मुख	द.मुख	गृहदिङ्मुख	३	शुभ	
मुक्ता	रजत	वपु.	स्वर्ण	रत्न	रजत	लोह	अस्थि	अस्थिं	पदार्थानि	१	अशुभ	
वृद्ध	मध्य	युवा	वाल्य	वृद्ध	मध्य	गलित	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था	५	अशुभ	
पशुस्थान	जलगृह	दग्धम्	गोष्ठम्	देवस्थान	जलस्थान	ब्राह्मभृ	ब्राह्मभृ	ब्राह्मभृ	निवास स्थान	२	शुभ	
हरिवंशश्र	शिवार्चन	रुद्राभिषेक	कन्यादान	आमात्र	गोप्रतिमा	मृत्युञ्जय	भुजगदा.	ध्वजदा	क्षेमार्थमुपाय	४	शुभ	
२४ वर्ष	२४ वर्ष	२८ वर्ष	३२ वर्ष	१६ वर्ष	२५ वर्ष	३६ वर्ष	४२ वर्ष	४८ वर्ष	भाग्योदय	भाग्योदयावदस्थ		

शुष्क	सजल	शुष्क	जल	सजल	शुष्क	शुष्क	शुष्कादि	संज्ञा	भाग्योदयवर्षाणि प्रयोजनमाह।। यः खेचरः स्वगृहेस्वतुंगभवने षडवर्ग शुद्धश्चतस्यादिदेहिनृणां भवति सुख भाग्योदयं निश्चितमिति।।
अयन	मुहूर्त	दिवस	ऋतु	मास	पक्ष १	वर्ष	कालानां	उच्चासप्त	
सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	सत्वादिगुण	नीचसर्वेषु	
वहि	अम्बु	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	देवी	ब्रह्मा	वायु	आकाश	

अथ ग्रहयोगशान्तिः

वामने-दुर्भिक्षादि भयं चैव चतुर्ग्रहसमन्वये। महारोगभयं राष्ट्रक्षयो वृष्टिविनाशनम्।।१।।
पञ्चग्रहसमायोगे दुर्भिक्षं सङ्गरादिकम्। जनक्षयो नृपवैरं गर्भनाशस्तु जायते।।२।।
ग्रहषट्समायोगे मन्त्रिणो मरणं भवेत्। पश्वादि भयं सर्व सङ्करादि जनक्षयः।।३।।
पट्टराज्ञीविनाशो वा महाभयमथाऽपि वा। सप्तग्रहसमायोगे क्षितीशमरणं ध्रुवम्।।४।।
जगत्प्रलयेनवाऽपि तदा निर्मानुषं जगत्। अत ऊर्ध्वं महोत्पातनानादुःखमहाकुलम्।।५।।
सूर्यदव्यतिरिक्तश्चेत्तद योगोमहाद्भुतः। बिना चन्द्रेण योगोऽपि जगत्प्रलयकारणम्।।६।।
तदृक्षजातजन्तूनां महारोगी महाभयम्। अर्थनाशः स्याननाशो मानहानिनृपपीडनम्।।७।।
वात्तपित्तादिसम्भूतमहापीडा महद्भयम्। सप्त योगग्रहानृणां दोषान्कुर्वन्ति सर्वदा।।८।।
षण्मासाभ्यन्तरे वाऽपि आयुर्हानिः श्रियस्तथा। जन्माष्टद्वादशे राशौ चतुर्थे पञ्चमेऽपि वा।।९।।
पूर्वोक्तफलमेवात्र तस्माच्छान्ति प्रयत्नतः। कुर्याद्दोषानुसारेणवित्तशाठ्यं न कारयेत्।।१०।।
तत्तद्ग्रहाकृतिं कृत्वां सौवर्णन प्रयत्नतः। सुवर्णेन तदर्द्धेन पादेनाऽपि कनीयसीम्।।११।।
वित्तशाठ्यं न कर्त्तव्यं कर्त्तव्यंशक्तितो नरैः। पूर्वोक्तलक्षणेनैव ग्रहमूर्ति च कारयेत्।।१२।।
ग्रहस्यैकैककलशग्रहयोगप्रमाणतः। कारयेत्कुम्भमेकं वा निव्रणं सुदृढं नवम्।।१३।।
ग्रहस्येशानदिग्भागे शुद्धदेशे समस्थले। कुण्डे वा स्थण्डिले वाऽपि होमं कुर्याद् विधानतः।।१४।।
तस्य पूर्वोत्तरे देशे पूजास्थानं प्रकल्पयेत्। चतुरस्रं हस्तमात्रं स्थण्डिलं तण्डुलेन तु।।१५।।
लिखेद्ग्रहाकृतिं तत्र स्थापयेत्प्रतिमांततः। अधिप्रत्यधिदेवादीन् दक्षिणोत्तरतः क्षिपेत्।।१६।।
उक्तगन्धैस्तथा पुष्पैस्तत्तन्मन्त्रैः फलैरपि। तत्तद्ग्रहोक्तमन्त्रेण पूर्वोक्तेनैव पूजयेत्।।१७।।
स्वस्तिवाचनपूर्वेण आचार्य ऋत्विजैः सह। ग्रहपूजादिकं कृत्वा नैवेद्यान्तं समर्पयेत्।।१८।।
ततो होमं प्रकुर्वीतस्वगृहोक्त विधानतः। चतुर्थ्यन्तं प्रकुर्वीतं कलशस्थापनं ततः।।१९।।
पूर्वोक्तेनैवविधानेन शुद्धतोयेनपूरयेत्। पञ्चामृतपञ्चगव्यं पञ्चत्वक पञ्चपल्लवम्।।२०।।
तत्र मन्त्रैर्विनिक्षिप्य औषधानि विनिक्षिपेत्। तद्ग्रहोक्ता विधिना मूल्यान्यादाय निःक्षिपेत्।।२१।।
अलिंगैर्वारुणैवाऽपि कलशं पूरयेद्गुरु। तत्तद्ग्रहोक्तविविधैस्तनमन्त्रैहुतेद् भक्तिभिः।।२२।।
चर्वाज्ये जुहयात्पश्चात्तिलाहुतिसमाचरेत्। अथ स्विष्टकृत् हुत्वा होमशेषं समापयेत्।।२३।।
भद्रासनोपविष्टस्य यजमानस्य ऋत्विजैः कलशस्योदकेनैवमभिषेकं समाचरेत्।।२४।।
योगग्रहोक्तमन्त्रैश्च अभिप्रत्यभिमन्त्रतः। नवग्रहोक्तमन्त्रैश्च जातवेदादिपंचकः।।२५।।
त्र्यम्बकेन मन्त्रेण क्षेत्रस्य पतिना अपि। तत इन्द्रद्वयेनैव लोकपालावृकैरपि।।२६।।
सुरारत्वा इति मन्त्रेण येन देवादयः क्रमात्। अन्यैश्च पुण्यसूक्तैश्च अभिषेकं समाचरेत्।।२७।।
अभिषेकाप्लुत वस्त्रमाचार्याय निवेदयेत्। ततः शुक्लाम्बरधरः कुर्यादाज्यावलोकनम्।।२८।।
ऋत्विग्भ्यां दक्षिणां दद्याद्धेनुशंखादिकानपि। तद्भावे यथाशक्ति हिरण्यमपि दापयेत्।।२९।।
ब्राह्मणान्भोजयेतपश्चात्तथादिभवसारत। एवं यः कुरुते भक्तया ग्रहदीपविवर्जितः।।३०।।
पूर्वोक्तसर्वदोषैश्च विमुक्त पुत्रवान् सुखी। आयुरैश्वर्यसम्पन्नो जीवेद्वर्षशतं नरः।।३१।।
इह लोके सुखं भुक्त्वा सुखी पश्चाच्छिवापुरं व्रजेद् - इति ग्रहयोगशान्तिः।।

गुरुसर्ययोर्वलविचारः

स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठ पुरुषाणां रवेर्वलम्। द्वयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठ मितिगर्गेण भाषितम्।।१।। जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदोगुरु।। विवाहेऽथचतुर्थाष्ठ द्वादशस्थो मृतिप्रदः।।२।। स्वोच्चेत्वभेस्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे स्वराशावत्रापि शुभः।।

अथ मेषादीनां स्वामिवर्णधातुसंज्ञादिबोधकचक्रमिदम्

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेषादिराशयः
भौमः	शुक्रः	बुधः	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्रः	भौमः	गुरु	शनिः	शनिः	गुरु	राशीशाः
रक्त	श्वेत	हरित	श्वेतारुण	पाण्डुर	विचित्र वर्ण	कृष्ण	कनक सदृश	पिंगल	कर्पूर	बभ्रुव	स्वच्छ	राशीनां वर्णा
क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	जातयः
पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्तादि संज्ञा
चर	स्थिर	द्विस्व भाव	चर	स्थिर	द्विस्व भाव	चर	स्थिर	द्विस्व भाव	चर	स्थिर	द्विश्व भाव	चरस्थिरादिसंज्ञा
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष स्त्री संज्ञा
पृष्ठोदयः	पृष्ठोदयः	शीर्षोदयः	पृष्ठोदयः	शीर्षोदयः	शीर्षोदयः	शीर्षोदयः	शीर्षोदयः	पृष्ठोदयः	पृष्ठोदयः	शीर्षोदयः	उभयोदयः	पृष्ठादिसंज्ञा
रात्रिः	रात्रिः	रात्रिः	रात्रिः	दिन	दिन	दिन	दिन	रात्रिः	रात्रिः	दिन	समान	दिन रात्रि बल
चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपद	जलचर	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	कीट	अ.द्वि. ज.च.	अर्द्धच. अर्द्धद्व	जलचर	जलचर	चतुष्पदादि संज्ञा
शीर्ष	मुख	बाहुः	हृदयः	उदर	कटि	वस्ति	शिश्न	उरुद्वय	जानु २	जंघा २	पादद्वय	कालांगनिवास
दक्षिण	अग्नि	उत्तर	वायव्य	पूर्व	उत्तर	अग्नि	याम्य	-ईशानं	पश्चिम	पश्चिम	ईशान	प्लवत्वदिशा
ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	सम	ह्रस्वदीर्घादिकम्
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूरसौम्यस्वसंज्ञा
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राशीनां दिशा
मेष भूमि	गोच राशय	गीत नृत्य स्थान	युद्ध जल समीप	अरण्य भूमि	स्त्री गृह नौका	स्वसद्म ऊपरभू	युद्ध सर्प निवास	युद्धभू. वाजि स्थान	वन जल समीप	शि.गृ. पा.भा.	जल समीप	राशिनांनिवास स्थानानि

अथ ग्रहाणां दीप्ताद्यवस्थाज्ञानम्

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुखितः।। विकलश्च कोपी नवधा खेचरो भवेत्।।१।। उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वोच्चाधिमित्रभे।। मुदितो मित्रभेशान्तस्मभवेदीनउच्यते।।२।। शत्रुभं दुःखितोऽतीवविकलः पापसंयुतः।। खलऽखलगृहे ज्ञेयः कोपीस्यादर्क सयुतः।।३।। भावानांस्थिरकारकाः।। सूर्यो १ गुरु २ कुजः ३ सोमः ४ गुरु ५ भौम ६ सितः ७ शनिः ८ गुरु बुधः १० जीवो ११ मन्दश्च १२ भावकारकाः।

अथाङ्गस्फुरणफलचक्रम्

स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि
मस्तकस्फुरणे	पृथ्वीलाभः	वक्षःस्फुरणे	विजयध्रुवम्	कण्ठ स्फुरणे	ऐश्वर्य लाभः
ललाटस्फुरणे	स्थानलाभः	हृदयस्फुरणे	वांछितसिद्धिः	ग्रीवास्फुरणे	रिपुभयम्
स्कन्धस्फुरणे	भोगसमृद्धिः	कट यांस्फुरणे	प्रमोदोबलश्च	पृष्ठस्फुरणे	युद्धपराजयः
भ्रुवोयुग्म	सुखप्राप्तिः	कटि पार्श्वे	प्रीतिरनुत्तमा	कपोलस्फु	वरांगनाप्राप्ति
भ्रुवोर्मध्ये	महत्सौ भाग्यं	आंत्रिकस्फुरणे	कोश वृद्धिः	बाहूस्फुरणे	मधुरभोजनम्
नेत्र १ स्फुरणे	धनाप्तिः	भगस्फुरणे	पति प्राप्तिः	बाहुमध्ये	धनागमः
नेत्रकोणयोः	लक्ष्मीलाभः	कुक्षिस्फुरणे	सुप्रीतिलाभः	वस्तिदेशस्फुरणे	अभ्युदयः
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	उदरस्फुरणे	कोश प्राप्तिः	उरोस्फुरणे	वस्त्रलाभः
नेत्रपक्ष स्फुरणे	राज्यलाभः	लिंगस्फुरणे	स्त्रीलाभः	जानुस्फुरणे	शत्रुवृद्धि
नेत्रपक्ष २ स्फुरणे	संग्रामेजयः	गुदस्फुरणे	वाहन प्राप्तिः	जंघस्फुरणे	स्वामीप्राप्तिः
नेत्रकोपांगदेश १	कलत्रलाभः	वृषस्फुरणे	पुत्रलाभः	पादोपरि	स्थानलाभः
नासिका १ स्फुरणे	प्रीतिसुखम्	ओष्ठस्फुरणे	प्रियवस्तुलाभः	पादतले	नृपत्वम्
हस्तस्फुरणे	सद्द्रव्यलाभः	हनुदेशस्फुरणे	भयंमहत्	पादयोस्फुरणे	अलाभः

अथ तिथिवारयोर्भवारयोर्योगादनेकयोगानां बोधकचक्रम्

योगनामानि	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
चराख्ययोग	पू.षा.	आर्द्रा	विशाखा	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
क्रकचयोगः	११ ति.	११ ति.	१० ति.	१ ति.	८ ति.	७ ति.	६ ति.
दग्धयोगः	१२ तिः	११ ति.	५ ति.	३ ति.	६ ति.	८ ति.	९ ति.
विषाख्ययोगः	४ ति.	६ ति.	७ ति.	२ ति.	८ ति.	९ ति.	९ ति.
हुताशनयोगः	११ ति.	६ ति.	७ ति.	८ ति.	९ ति.	१० ति.	११ ति.
यमघंट योगः	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
दग्धयोगः	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठ	उत्तरा.फा.	ज्येष्ठ	रेवती
यमदंष्ट्र योगः	म.घनि.	वि.मू.	कृ.भ.	पू.षा.पुन.	उ.षा.अभि.	रोहि.अनु.	श्र.घ.
सर्वार्थसिद्धि-	ह.मृ.	श्र.रो.	अश्विनी	रो.अनु.	रेवती अनु.	रेवती अनु.	श्रवण
योगः।भवा,	उ.३,पुष्य	मृ.अनु.	उ.भा.	ह.कृ.	अश्विनी	अश्विनी	रोहिणी
रयोर्योगात्	अश्वि	पुष्य	कृ.श्लेषा	मृगशिरा	पुष्य पुनर्वसु	पुन.,श्रवण	स्वाती
अमृतसिद्धियोग	हस्त	मृ.श्र.	अश्वि.	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

राशियों का परस्पर शुभाशुभ योग

शुभ नव-पञ्चम		मध्यम नव-पञ्चम		श्रेष्ठ द्विर्द्वादश		अशुभ द्विर्द्वादश		प्रीति-षडाष्टक		शत्रु-षडाष्टक		अशुभ केंद्र	
९	५	९	५	२	१२	२	१२	६	८	६	८	४	१०
मेष	सिंह	कुम्भ	मिथुन	मेष	मीन	वृश्चिक	तुला	मेष	वृश्चि.	वृषभ	धनु	मेष	कर्क
वृष	कन्या	मीन	कर्क	मिथुन	वृष	मकर	धनु	मिथुन	मकर	कर्क	कुम्भ	वृष	सिंह
मिथुन	तुला	कर्क	वृश्चि.	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	सिंह	मीन	कन्या	मेष	कर्क	तुला
सिंह	धनु	कन्या	मकर	तुला	कन्या	वृष	मेष	तुला	वृष	वृश्चि.	मिथुन	कन्या	धनु
तुला	कुम्भ	अशुभ	सप्तक	धनु	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	धनु	कर्क	मकर	सिंह	वृश्चि.	कुम्भ
वृश्चि.	मीन	मकर	कर्क	कुम्भ	मकर			कुम्भ	कन्या	मीन	तुला	मकर	कर्क
धनु	मेष	कुम्भ	सिंह	अपवाद								मीन	मिथुन
मकर	वृष			कन्या	सिंह								

विशेष - तृतीय - एकादश संबंध किन्ही भी राशियों का शुभ ही होता है, किंतु सम-सप्तक (राशि-प्रतियोग) तथा केंद्र (चतुर्थ-दशम) संबंध उपर्युक्त अशुभ समसप्तक तथा अशुभ केंद्र की राशियों के अलावा शेष राशियों का भी शुभ होता है।

चन्द्र श्रृंगोन्नति का स्थूलं ज्ञान मेष और मीन राशि के चन्द्रमा का सिरा दक्षिण में (बायें) ऊंचा होता है। वृष और कुंभ राशि के चन्द्रमा का सिरा बराबर होता है। बाकी राशियों के चन्द्रमा का सिरा उत्तर में (दाहिने) ऊंचा होता है।

पुष्यनक्षत्र प्रंशसा-

पुष्य को नक्षत्र सम्राट कहा जाता है। पुष्य नक्षत्र में स्वयं ही सभी दोषों को नष्ट कर देने की क्षमता है। पापैर्विद्धेयुते होने चन्द्रताराबलेऽपि च। पुष्यसिद्धि सर्वाणि कार्याणि मंगलानि च।। ग्रहणे विद्धोप्यशुभान्वितोऽपि विलोमगोऽपि करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धि विहाय पाणिग्रहमेव पुष्ये।। पुष्य की बलवत्ता को देखते हुये इसमें पाणिग्रहण निषिद्ध है।

पञ्चक विचार-

जब घनिष्ठ नक्षत्र के आधे अर्थात् कुंभ राशि पर चन्द्रमा आता है। तब पञ्चक या पचखा आरम्भ होता है। जब अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि पर चन्द्रमा आता है तो पञ्चक समाप्त हो जाता है।

धर्म-शास्त्रम्

एकादशी व्रतम्

अथाष्ट वर्षादूर्ध्वमशीतिवर्षपर्यन्तमेकादशी, व्रताधिकारः।।

शक्तस्य तु वयसोऽर्ध्वमध्याधिकारः।। सभर्तृकाणां स्त्रीणां भर्त्रानुज्ञां पुत्राज्ञां च अनुपवासव्रताद्याचरणो व्रतवैफल्यं भत्रायुक्षयो नरकञ्च।। अशक्तायां तु स्वोदन वापि वपु प्रमस्तमात्रोत्तनुरक्तं च इति। अशक्तेषु शक्तितारतम्याल्पाहारः न त्वेकादशीत्यागः। प्रमादादिनेकदस्यामुपोषणाद्यकरणे द्वादश्यामपि व्रतं कार्यम्।। द्वादश्यामप्यकरणे वा तत्रचन्द्रायण प्रायश्चित्तम्। वास्तित्येद्धरणो पिपीलिका मध्यचान्द्रायणम्।। अशक्तेसति, पुत्राच्चदेशेव स्त्रीपुत्रभगिनी भ्रातादिभिरेकादशीव्रताचरणे क्रतुशतजं पुण्यम्।

स्त्रियों के लिये पति आज्ञा प्राप्त करके ही एकादशी व्रत करना चाहिये। इसमें बारम्बार जलपान दिन में सोना, ताम्बूल भक्षण विशेष बोलना तथा विलास वर्जित है। आठ वर्ष से अस्सी वर्ष तक आयु वालों के लिए यह व्रत है। ॐ नमोनारायणाय मन्त्र जप करना चाहिए।

नियमित रूप से एकादशी व्रत रहने वालों को यदि कोई असमर्थता आ जाय तो उनकी पत्नी व्रत रक्खे। उसी प्रकार पत्नी की असमर्थता में पति व्रत करें पुत्र, भगिनी, और भ्राता भी इसके अधिकारी है।

प्रदोष व्रतम्- तत्र त्रयोदशीशुक्ला पूर्वा, कृष्णापरा ग्राह्यमिति माधवःशुक्ला त्रयोदशी प्रदोष-समये हेमाद्रि गौडग्रन्थेषु व्रतञ्च-प्रदोषोस्तसमया दृध्वं घटि काद्वयमप्युच्यते। यस्तु-त्रिमुहूर्तः प्रदोष स्याद्रवावस्त गते सति।। यद्वागोण प्रत्यक्कालपरः।। तेन प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी विलोक्यम्।। द्वितीयदिन व्रतम।। दिनद्वये प्रदोषव्याप्तो तदेकरतदेसव्यापे वा उत्तरा उक्त इति। उद्वैव तिथियोरूभयोः प्रदोषव्यापिनी निर्णयः। तत्र वा त्रिविभाग स्याप्तोभयत्रापि मन्यते। यदा तु कृष्णपक्षे च परविद्धा न मन्यते। तदा वात्रापि पूर्वाविद्धा च ग्राह्येति- वशिष्ठ एकादशी तृतीया च षष्ठीचैव त्रयोदशी पूर्वाविद्धापि कर्तव्या यदि न स्यात्परेऽहनि।। प्रदोषे शनिवार योगस्य विशेषफलम्। शनिवार प्रदोषोऽयं दुर्लभः सर्वदेहिनाम् तत्रापि दुर्लभस्तस्मिन् कृष्णपक्षे समागते।। अथ श्रावणे सोमवासरे व्रतं प्रदोष व्रतवदस्य विधिः।। सोमवासरे व्रतं कार्य श्रावणे वेयथाविधिः। शक्तेस्पोषणं कार्यमथवा निशि भोजनमिति।।

शनि प्रदोष व्रत का विशेष फल है। श्रावण सोमवार व्रत प्रदोष के समान है इसमें रात्रि समय भोजन हो सकता है।

त्रयोपत्रयपज्ञसंख्यस्तत्रमनुः अपीडाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नाति बर्तते।। द्वाविंशशाब्दक्षत्रबन्धोराचतुर्विशतेर्विशः।।२।। अतऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः। सावित्रीपतिता व्रात्या प्रभुवन्त्यार्विगर्हिता।।२।। अथोपनयने द्वादशवर्षपर्यन्तफलानि।। मेषे भवति पाण्डित्यं वित्तविद्यायुता वृषे। युग्मे वेदान्तदर्शी स्यात्कुलीरे च षडङ्गवित्।। शिल्पधर्म करः सिंहे षष्ठे भवति पण्डितः। तुलायां वणिजः प्रोक्तः धनुषञ्च वृश्चिके। सर्वत्रपूजितश्चापे शूद्रवृत्तिमृगे तथा राजप्रेष्यो भवेत्कुम्भे मीने वदावताङ्गः इति। अन्यविशेषः शास्त्राधिपतिवारंच शाखाधिपः बलं शशी शास्त्राधिपतिबलमश्च। व्रताय दुर्लभवते।। राजमार्तण्डे।। पितुः सूर्यं बले श्रेष्ठं शाखाकर्णवसंदः सर्वेषा गुरुचन्द्रार्कबलं श्रेष्ठं व्रतादिपुरा। उपनयने कालविशेषः- मुख्यकालस्तु बलवान्व्रतं गोचरशुद्धितः। व्रतो निषिद्धकालस्य शान्तिर्नदृश्यते क्वचित्। ब्राह्मण का १६ क्षत्रिय का २२ वर्ष वैश्य का २४ वर्ष तक अवश्य यज्ञोपवीत हो जाना चाहिये।

वैशाख मास - वैशाखे सकले मासे मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमस्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमनुत्तमम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारेमधुसूदन। प्रातःस्नानेन मे नाथ फलदो भव पापहन्।। वैशाखे त्याज्यम्।। कांस्यं मांसं मसुरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधुरान्नं च पुनर्भोजनं मैथुनं इति। मेषार्के दानविशेषः। यो मेषस्याऽर्के ददाति सक्तून्गवृघटान्विताम्। उद्दिश्यपितृन् देवांश्च सर्वपापैः प्रमुच्यते।। दानमन्त्रः सक्तवो धर्मदा नित्यं ब्राह्मणप्रीतिकारकाः। त्वद्दानास्यपापानां क्षयोऽस्तु सुखमस्तु च।। वैशाखे सम्पूर्णस्नानाशक्तावन्ते त्रयोदश्यादिदिनत्रयम्।। अपि सम्यग्विधानेननारी पुरुषोऽपिवा प्रातःस्नायी सनियमः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। इति।।

अक्षयतृतीया कृत्यम्-सर्वतीर्थे स्नानं देवदर्शनं दानञ्चाक्षयफलम्।। दानम्- उदक्कुम्भान् सकनकान् सान्नसर्वरसैः सह।। यवगोधूमचणकान्सक्तुकुम्भान्तथा। व्यजनछत्रकुम्भंचातपत्रमुपानहौ।। दानमेतद्देयानपितृन चोदिश्यकुर्यात्।। संकल्पः- नामगोत्रमुच्चार्य अद्यतत्र शीतलोकदकयुतं घटं च विष्णुप्रीतये अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। प्रार्थना एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्माविष्णु शिवात्मकः। अस्य प्रदानात्स फला मम सन्तु मनोरथाः।। गन्धोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुम्भं फलान्वितम्। विष्णवेसंप्रदास्यामि अक्षयमुपतिष्ठतु।। पितृन्नद्दिश्यदाने-पितृभ्यसंप्रदानेन मम सन्तु मनोरथाः।। पितृभ्यः संप्रादास्यामीतिपदप्रक्षेपः-संकल्पोपितृणां प्रीतये इति विशेषः। अद्यपरशुरामं विधिवत्संपूज्यार्घ्यंदद्यात्- तन्मंत्रः। जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।। तत्र विष्णोश्चन्दनपूजनफलम्।। यः करोति तृतीयायां विष्णोश्चन्दनपूजनम्।। वैशाखस्य सिते पक्षे स याति हरिमन्दिरमिति। युगादितिथौ दानादि फलम्।। कृतोपवासः सतिलं युगादिदिनेषु तु। दास्यन्त्यन्नानि सलिलं तेषां लोका महोदयाः।

ज्येष्ठ मास - कंजजपूजनेननानावस्त्रविभूषणैः वर्षकोटिशत सायंसूर्यलोकेमहीते। कंजजो ब्रह्मा। वामनपुराणे-उदकुम्भं जलं धेनु तालवृक्षः सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठ मासि च।। इति।।

अथामायां वट सावित्रीविधिः।। अमायांञ्च तथा ज्येष्ठे वटपूजे महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधिनानेन संयुक्ता सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। विधिनाषोडशोपचारैः संपूज्य ब्राह्मणाय दद्यात्।। तन्मंत्रः सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्राह्मणायसती प्रसन्नाथाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यतामिति ज्येष्ठ शुक्लैकादश्यां दशाश्वमेधस्नानफलम्- ज्येष्ठ मासि सितेपक्षे प्राप्य प्रतिपदां तिथिम्। दशाश्वमेध के स्नात्वा मुच्यते सर्व किल्विषैः। दशहरा ज्येष्ठ मासि सितेपक्षे दशमीहस्तसंयुता। हरतेदशपापानितस्माद् दशहरा स्मृताः शुक्लपक्षेसु ज्येष्ठ मासि कुजेऽहनि।। अवतीर्णा यतः स्वर्गात् हस्तर्क्षे च सरिद्वरा।। दशहरां गंगा पूजनमन्त्र।। नमो भगवत्यै दशपाप हरायै गंगायै कृष्णायै विष्णुरूपिण्यै नन्दिन्यै नमोनमः।। दशहरायां दशोयागाः-ज्येष्ठ मासि सिते पक्षे दशमीबुधहस्तयोः व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। बुधभौमयोः कल्पभेदन व्यवस्था। इयं च यत्रैव योगाधिक्यं सैव ग्राह्या।

आषाढ़ मास - आषाढ़शुक्ल २ रथयात्रा।। आषाढ़स्य सिते पक्षे द्वितीयाः पुष्यसंयुता तस्यां रथे समारोप्य रामं सौभद्रयासह। यात्रोत्सव प्रवर्त्याथ प्रीणयेत द्विजान्बहून्। ऋक्षाभावे तिथौ कार्या स सदा प्रीतये मम। अथ रामो बलरामः।। आषाढ़े पूर्णिमायां धान्यानां तोलनम्। आषाढ्यां सर्वधान्यानि संध्यायञ्च पृथक पृथक। तोलयेद्वर्णनाने- जलादीन्यपिसर्वथः।। मन्त्रतोऽभिमन्त्र्य निशितानभिवासयेत् तोलयेच्चततः प्रातस्तेन मानेन दैववित्।। वृद्धोवृद्धिः समेसाम्यं ह्रासेहानिस्तथैव च।

आषाढ़ पूर्णिमायां वायुपरीक्षा।। आषाढ़पूर्णिमायाञ्च प्रदोषे वा दिवा।। निशि।। प्राच्यां वायुसुवृष्टिः स्याद्धान्यनिष्पत्तिस्तमा।।१।। अल्पवृष्टिस्तथाऽग्नेयामग्नि- भीतिर्महर्घता। स्वल्पवृष्टिः भवेद्याम्यां प्रजापीडा महर्घता।।२।। दुर्भिक्षंरौरवंघोरमनावृष्टिश्च नैऋते। वारुण्याञ्च महावृष्टिः धान्योत्पत्तिश्च मध्यमा।।३।। वायौ वायुः प्रचण्डश्च वृष्टि धान्यश्च मध्यम्।। बहुधान्यसुवृष्टिश्च उत्तरायां सुखी जनः।। ईशान्यां सस्य सम्पत्तिधान्यानि सुखिनो जना इति।।

श्रावण मास - श्रावणशुक्लपाञ्चमीयं परविद्धा। पंचमी नागपूजायां कार्या षष्ठ्येसमन्विता।। तस्यान्तु तुषिता नागा इतरा सचतुर्थिका।।१।। श्रावणे पंचमी शुक्ला सम्प्रोक्ता नागपंचमी। ताम्परित्यत्य पंचम्याचतुर्थीसहिता हिता।।२।। नागपूजनविधिः।। श्रावणे मासि पंचम्या शुक्लपक्षे बरानने।। द्वारस्योभवतो लेख्या गोमयेन विषोल्वणाः (सर्पा)।। घृतोदकाभ्यां पयसा तर्पयित्वा वरानने। गोधूम पयसा सैव लाजेश्च विविधेस्तथा पूजयेद्विविधे दीपैर्दैधुपैः प्रचुरैस्तथा। मांल्यपुष्पोपहारैश्चब्राह्मणानामपि तर्पणम्। तेनतुष्टि समायान्ति पद्मकास्तक्षकादयः। आ सप्तमान्कुले तस्य न भयं सर्पतो भवेत।। मन्त्रोऽयमुच्यते सर्वविषस्य प्रतिशोधकः। तस्य जप तस्यामाजन न विषप्रभवते क्वचित। मन्त्रः - ॐ कुंकुलाय हुँफट् स्वाहा अस्य जपात्सर्पविषक्षयः आदौ लिखितस्थले सर्वनागेभ्यो नमः। सर्वनागानावाहयामीत्यावाहनं।। "सर्वनागेभ्यनमः" इति मन्त्रेणयथोपचारैः संपूज्य प्रार्थयेत्।। मन्त्रः अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मकम्बलमेव च।। तथा कर्कोटकं नागं नागमभयंतं तथा धृतराष्ट्रं शंखपालंकालाख्यं तक्षकं तथा। पिंगलंच्च महानागं प्रणमामि मुहुर्मुहुरिति।। स्नान क्षौर विचार - सिरः स्नानं प्रकुर्वीत देव पित्र्ये च कर्माण उदङ्मुखः प्राङ्मुखोवा श्मश्रुकर्मचकारयेत्।।

भाद्रपदमास - भाद्रपदे-हृषीकेशप्रीत्यर्थं गुडोदनलवणादेर्दानम्। गणेशचतुर्थी।। विनायकवचनानि।। चतुर्थीगणनाथस्य मातृविद्धाप्रशस्यते। अन्यदपि चतुर्थी तृतीयायां महापुण्यफलप्रदा।। कर्तव्याव्रतिना एव गणनाथसुतोषिता।।१।।

चन्द्रोदयेऽर्घ्यदानमंत्र- क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भवः। गृहाणार्घ्यंशशांकेदंरोहिणी सहितोमम।। ज्योत्स्नापतयेतुभ्यंज्योतिष्ठपतयेनमः। नमस्तेरोहिणीकान्त सुधावास नमोस्तु ते।।२।। नमोमण्डल दीपाय शिरोसाय धूर्जटेः। कालाभिर्वर्द्धमानायनमश्चन्द्राय चारवे।।३।।

अगस्त्यार्घ्यदानमन्त्रः- ऋग्वेदसंहितायाम्- अगस्त्यः श्वनमानःखनित्रैः प्रजामपत्यंबलमिच्छमानः। उभौवर्णावृषिरुग्रःपुपोषसत्याददेवेष्वाशिषोजगाम्।।

जन्माष्टमीविशेषः। अष्टमी कृष्णपक्षस्य रोहिणी ऋक्षसंयुता। भवेत्प्रोष्ठपदे मासि जयन्तीनाम सा स्मृता। विष्णुधर्मोत्तरे। रोहिण्यामर्द्धरात्रे तु सदा कृष्णाष्टमी भवेत्। तस्यामभ्यर्चनं शौरेर्हन्ति पापं त्रिजन्मजम्। समायोगे तु रोहिण्यांनिशीथे राजसत्तम्। समाजायतगोविन्दो बालरूपी चतुर्भुजः।। अष्ट मीरोहिणीयुक्ता निशार्द्धे यदिदृश्यते। मुख्यकालइतिख्यातस्तत्रजातो हरिः स्वयम्। रोहिणी च यदा कृष्णपक्षेऽष्टम्यां द्विजोत्तम। कृष्ण जयन्ती सा प्रोक्ता। सर्वपापहरी तिथिः।

जन्माष्टमीव्रतपारणानिर्णयो निर्णयसिन्धौ।। स्मार्तानां द्वितीय-दिनेऽष्टम्यायामद्भयादिखसत्त्वेऽपि प्रातःकाल एवं पारणेतः। तिथ्यन्ते तिथि भान्ते वा पारणा यत्रचोदिता। यामद्वयोर्ध्वगामिन्यां प्रातरेवहि पारणम् सर्वत्रतं पारणायसमयः। तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते चव्रती कुर्वीतपारणम्।। अथव्रतनाशकारणि असकृज्जलपानाच्च सकृताम्बूलभक्षणात्। उपवासः प्रणश्येत्। दिवास्वापाच्च मैथुनात्।। अथ व्रतीनां विशेषनियमः। गात्राभ्यङ्गशिरोऽभ्यंगं ताम्बूलंचानुलेपनम्। व्रतस्थोवर्जयेत्सर्वं यच्चान्यत्र निराकृतम्। कचिन्न्द्विकालपरिते ऽपि। प्रायश्चितं व्रती कुर्यान्ज्जप्त्वाष्टसहस्रकम्। मिथ्यावादे दिवास्वापे बहुशोऽम्बुनिषेवणे। अष्टाक्षरजपाज्जप्त्वाशतमष्टोत्तरं शुचिः अष्टाक्षरमन्त्र- ॐ नमो नारायणाय।

हरतालिकाव्रतनिर्णयः- तत्र चुर्थोसहिता या तु सा तृतीया फलप्रदा अवैधव्यकरा स्त्रीणांपुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।। चतुर्थ्यांचन्द्रदर्शनदोषशमनाय पठनीयमन्त्रः सिंहःप्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवताहतः। सुकुमारकमारोदीः तवह्येषस्यमन्तकः।। इति।। पंचम्यामपामार्गदन्तधावनमन्त्रः- आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजापशुवसूनि च ब्रह्मप्रज्ञां च मेधांच त्वन्नो देहि वनस्पते।।१।। मुखदौर्गन्ध्यनाशाय दन्तानाच विशुद्धये ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्।।२।। षष्ठ्यां सूर्यपूजनम्। निर्णयसिन्धौ।। शुक्ल भाद्रपदे षष्ठ्यां स्नानं भास्करपूजनम्। प्राशनात्पंचगव्यस्य अश्वमेधफलाधिकम्।। पंचगव्यप्राशनमन्त्रः - यत्त्वगस्थिगतं पापं देहेतिष्ठति मामके। प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्वाग्निरिवेन्धनमिति।। श्रवणयुक्ताद्वादश्यां विष्णुपरिवर्तनोत्सवः। रात्रौषोडशोपचारैः श्री विष्णु संपूज्य प्रार्थयेत्।। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तिथिः। पार्श्वेन परिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधवः। श्रवणं १२ उत्तराषाढ़युक्ता नैवोपोष्या। उत्तराषाढ़संयुक्ता श्रोणामाध्याह्नगापि वा आसुरी सैव तारस्याद्वतिपुण्यपुरहरम्।। बुधे श्रवण संयुक्ता सैव द्वादशी भवेत्। अत्यन्तमहतीपोष्याव्रतं भवति चाक्षयम्, अनन्तचतुर्दशीनिर्णयः। मध्याह्नव्यापिनी त्रिमुहूर्तोदयकालव्यापिनी चतुर्दशीपक्षे च वचनानि लभ्यन्ते तत्र माधवः सूर्योदयकालव्यापिनी हि अन्ये दिवोदासगतापमार्तण्ड-कालविश्वरमकालिदासादयः मध्याह्नव्यापिनी या च भाद्रशुक्ला चतुर्दशी। सैवानन्तव्रते ग्राह्या पर्वयुक्त विशेषतः। ज्योतिर्विदाभरणे मध्याह्नकालान्तगता-चतुर्दशीहिताहिसाभाद्रपदेनृयापिताम्। बुधैरनन्तमादतन्वदा तदा कलोनापि ततः फलाप्तये। माधव निर्णयनिर्णयसिन्धुकाराः भ्रान्ति कथयन्ति। तत्कथाप्रासंगेकमुक्तव्रतादि निर्णयविरोधादिनाऽयुक्तमेव। अतोसंध्याह्नव्यापिन्येव ग्राह्याः।

आश्विनमास - जीवत्पुत्रिकामहालक्ष्मीव्रतयोनिर्णयः महालक्ष्मीव्रतेऽष्टमीचन्द्रो व्यापिनी ग्राह्या। पूर्वा वा परविद्धा वा ग्राह्या चन्द्रोदये सदा जीवत्पुत्रिका- तुलक्ष्मीव्रतंचाभ्युदिते शशांके यत्राष्टमी आश्विनकृष्ण पक्षे यत्रोदयः वेकुरुते दिनेशस्तदा भवेत्ज्जीवत्पुत्रीकाख्या। अत्रविशेष पूर्वद्युरन्यद्युः वा प्रदोषे यत्र चाष्टमी। तत्र पूज्यः स नारीभिः राजा जीमूतवाहनः। अन्यच्च प्रदोषसमयेस्त्रीभिः पूज्योजीमूत वाहन। इति मैथिल निवन्धनिर्णयः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानांकाल विभागः- पूर्वाह्नेदैविकं श्राद्धमपराह्ने पार्वणम्। एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्। शुक्लपक्षस्य पूर्वाह्ने श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः।। कृष्णपक्षेऽपराह्ने च रोहिणं न तु लंघयेत्।। क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्प्रतिविज्ञातदशध्यात्मृतेऽहनि। श्राद्धविघ्नेनिर्णयः श्राद्धविघ्नेसमुत्पन्नेह्यविज्ञाता मृतेऽहनि कर्तव्यं कृष्णपक्षे विशेषतः।। इति गयाश्राद्धकालः।। मीने मेषेस्थिते सूर्ये कन्यायांकार्मुकेघटे। दुर्लभंत्रिषुलोकेषु गयायां पिण्ड पातनम्।। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः। दुर्लभं त्रि।। गयायांसर्वकालेषुपिण्डंदद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने तथास्ते गुरुशुक्रयोः।। न कर्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्थे च वृहस्पतौ। गयाश्राद्धं प्रकुर्वीतसंक्रान्त्यादौ विशेषतः कालेवपरपक्षे:वा चतुर्थ्यादितिथिष्वपि महालयं गयाश्राद्धं मातापित्रोमृतेऽहनि। कृतोद्वाहोऽपि कुर्यात् पिण्डदानं यथा विधि।। मृताहंचसपिण्डञ्च गयाश्राद्धं महालयम्।

आश्विनशुक्लप्रतिपदा - कलशस्थापनम्।। तत्र विधिः- स्नानं मांगलिकं कृत्वा ततो देवी प्रपूजयेत्। शुभाभिर्मृत्तिकाभिश्च पूर्वं कृत्वा तु वेदिकाम्।।१।। अन्नान्वै वापयेत्तत्र जलकुम्भसमन्वितान् तत्र संस्थापयेत्कुम्भं विधिनामन्त्र पूर्वकम्।।२।। सावर्णं रजतं वापि ताम्रमृण्मयन्तुर्वेति। आदौसंकल्पः देशकालौसंकीर्त्य ममेहजन्मनि दुर्गाप्रीति द्वारा सकलापच्छान्ति पूर्वक दीर्घायुर्विपुल धन पुत्र पौत्राद्यनवच्छिन्नसन्तति वृद्धि स्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ शत्रु पराजय सदाभीष्ट सिद्धयर्थंशारदनवरात्रप्रतिपदिहित- कलशस्थापनं दुर्गापूजनं कुमारी पूजनादिकं च करिष्ये।। ततो यथाविधिकलश वैदिकमन्त्रैः संस्थाप्य तदुपरि वरुणमावाह्य सम्पूज्य नूतनप्रतिमायां वा दुर्गामावाह्य पूजयेत्। पूजनमन्त्रः। जयन्तीमंगलाकाली भद्र कालीकपालिनी दुर्गाक्षमाशिवाधात्री स्वाहास्वधानमोस्तुते।। ॐ दुर्गे २ रक्षीणी २ स्वाहेतिमन्त्रेण सम्पूज्य प्रार्थयेत् आनन्द वरदे देवि दैत्यदर्पनिपातिनी। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।१।। सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्विते। इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणेस्सह।।२।। दुर्गेदेवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय। बलि पूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह एकैक पूजनातकन्या मेकवृद्धयापि वा पुनः। द्विगुणां त्रिगुणां वापि प्रत्यहं नवकन्तु वा नवभिर्लभ्यते भूमिमैश्वर्यं द्विगुणेन तु। एकवर्षा तु या कन्या पूजार्थेतां विवर्जयेत।। कन्यापूजनेऽन्योविशेषः। ब्राह्मणी सर्वकार्येषु युद्धार्थे क्षत्रियः तथाधनार्थे वैश्यवंशस्य सुखार्थे शूद्रवंशजा। दारुणां चान्त्यजातीयां पूजयेद्विधिना नरेरिति।।

हनुमज्जन्मनिर्णय- वाराहपुराणेः-कार्तिकस्यासितेपक्षेस्वात्यां भौमे चतुर्दशी। मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरः शिव। शुक्लादिमासगणनाया आ.कृ.।। का.कृ. तुलार्के मेषलग्नेसालोक जन्मोत्सवः द्वितीय दिने दर्शन पूजनं चोक्तं। अमायां लक्ष्मी पूजा। देशकालौ संकीर्त्य ममगृहेऽचल श्रीवासायलक्ष्मी पूजनं करिष्ये। विहितोपचारैः पूजान्ते प्रार्थना।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्तंव प्रपन्नानां सा मे भवतु तव दर्शनात्।

तुलासंक्रमणदीपदानम्-तुलायांतिलतैलेन सायंकालेसमागते। आकाशदीपं यो दद्यात्मासमेकं हरि-प्रति। महता श्रियमाप्नोति जय सौभाग्यसम्पदः। आकाशदीपदान मन्त्रः। दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।

प्रतिपदादितुलासंक्रान्ति यावत्।। अथगोवत्सद्वादश्यां-सवत्सरं पयस्विनी गां- अलंकृत्य विधिवत्सम्पूज्य ताम्रपात्रेण अर्घ्यंदद्यात्।। मन्त्रः। क्षीरोदार्णवसंभूते सुरासुर नमस्कृते। सर्वदेवमयी मातर्गृहाणार्घ्यं नमोनमः।। कार्तिकृष्ण त्रयोदश्याम्- सायंकालेऽपमृत्युनिवारकं गृहाद्वहिर्यमाय दीपदानम्। तत्र मन्त्रः। मृत्युनां पाशदण्डाभ्यां कालेन यमया सह। त्रयोदश्यां दीपदानात सूर्यजः प्रीयतां ममेति। कार्तिकस्यासितेपक्षे निशामुखे। यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युविनश्यतीति। अद्यैव नरकोद्देशेन चतुर्वर्तिसमायुक्तं सर्व पापप्रणुत्तये।। अत्रयमतर्पणमुक्तंमदनपारिजाते वृद्धमनुना। दीपोत्सवे चतुर्दश्यां कार्तिके यमतर्पणम्। अपामार्गस्य पत्राणि भ्रामयन्मस्तकोपरि। ततश्चतर्पणं कार्यं धर्मराजं नमामि इति। कार्तिकमास कृत्यम-विष्णुं कार्तिके सकलं मासं प्रातः स्नायी च जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यं भुग्दान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते। वामनपुराणे-अद्य कनकं दीपान्मणिफलादिकम्। दामोदरस्य प्रीत्यर्थम् प्रदद्यात् कार्तिकमासे। प्रबोधनोत्सवः। अत्रैकादश्यां द्वादश्यां वा षोडशोपचारैः विष्णुं तुलसीं च विधिवत्संपूज्य प्रबोधयेत्। प्रबोधमन्त्रा वाराहपुराणोक्ताः।। ब्रह्मेन्द्र रुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वन्दितवन्दनाय।। बुद्धस्वदेवेश जगन्निवास मन्त्रप्रभावेण सुखेन चैव। इयन्तु द्वादशी देवप्रबोधानार्थं विनिर्मिता। त्वमेव सर्वलोकानां हितार्थंशेषशायिना।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यजनिद्रां जगत्पते। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। स्थिते बोध्यते सर्वं उत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव। गतामेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मला दिशः। शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशवः। इन्द्रविष्णुरितिप्रोक्तो मंत्र उत्थापन हरेरिति चतुर्मास्य व्रत समाप्ति का मंत्र इदंव्रतं मया देव कृतं प्राप्त तव प्रभो। तेन मे पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन इति।। **कार्तिकशुक्ल सूर्यषष्ठी निर्णयः।।** कलाकाष्ठानिमेषोऽपि यदि स्यादपरेऽहनि। षष्ठ्याः कथंचिदद्विपेन्द्रसेवोपोष्यामहातिथिः। षष्ट्यामुपोष्य विधिवत् सप्तम्यामर्कं पूजयेत्। सद्द्रव्यभोग्यायुश्चेव सम्प्राप्नोतीप्सितं फलम्।। उपोष्यगमा ६, त्यक्त्वा च यदेक पूजयेदिति विधौ श्वोऽध्यादिना पुनरस्यैव प्राधान्यापगमात्, पूर्वदिनेऽध्यादिना पूजयेत् सायं ६ वा ७ तिथिः ग्राह्येति नियमः।। ध्रुव निर्णयोरामनायकृतातिथिनिर्णय, ल्लिखितो व्रतस्य तत्देशीयत्वात्। यमद्वितीया निर्णयः- यामद्वितीयां प्रतिपद्युताग्राहा।। यमद्वितीया मध्याह्न व्यापिनी पूर्वविद्ध, चेति हेमाद्रि। ऊर्जशुक्लद्वितीया यामापराह्नेऽर्चयेत् यमम। स्नानंकृत्वाभानुजायां यम लोकं न पश्यति। प्रतिपदिविध स्कः लभ्यं यदि वा प्रातः प्रतिपदघटि त्रेकापरयुक्तान्यायपूर्वा।।५।। स्कन्दव्रतंऽविरिक्ता परा सदा।।७।। पूर्वाविध्येव सर्वदा।।८।। कृष्णपूर्वा शुक्लेपरा शिवदेवासंवादे कृष्णाऽपि परैव।।२।। कार्यम् नारीनिराजनं प्रातः मंगलमालिका।। गोवर्धन पूजापानगोवर्धनं पूज्य व्रतं चापि समाचरेत।। गोवर्धनपूजैव गोवर्धनपूज- भ्रातृभोजन-पूर्वागम् गोवर्धनपूजयेति।

अस्तापवादमाह। नित्ययाने गृहे जीर्णे प्राशने परिधान के वधूप्रवेशे मांगल्ये न मौढ्यं गुरुशुक्रयोः। गोदावर्यां गयायां च तीर्थेषु ग्रहणद्वये। अयने विषुवेचैव चातुर्मास्यव्रतादिषु। उत्सवेषु च सर्वेषु सीमन्ते च ऋतुत्रये सुरासुरेज्ययोश्चात्र मौढप्रदोषो न विद्यते इति।।

पौषपूर्णिमातो माघस्नानमन्त्राः।। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्यमाघेपापविनाशने। मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युतमाधव। सपित्रेप्रसवित्रे देवे यथोक्तफलदोभव।। मंत्राविमौ पठन स्नायाततोऽर्घ्यदानमन्त्रः सवित्रेसावित्रे च परं धाम जले मम।। त्वत्ते जसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा। ततस्तर्पणादिकं कर्त्तव्यमिति।।

यावन्माघस्नानमसक्तो दिनत्रयम्।। माघमासे पुरस्कृत्य स्नायात दिनत्रयमिति।। माघे प्रयागस्नान माहत्म्यं प्रयागे माघमासे तु त्र्यहं स्नानस्य यत्फलं अश्वमेधसहस्रेण तत्फलं लभते भुवि।। अथ मकरसंक्रांति फलं स्कान्देधेनुं तिलमयो राजन् योदद्याच्चोत्तरायणे सर्वान् कामनावाप्नोतिविन्दते परम् सुखम्।। माघे देयाः तैलकम्बलकाश्चैवतीर्थे देयास्तु नित्यशः। ततः प्रज्वालयेद्वह्नि सेवनार्थं द्विजन्मनाम्।।१।। एवं स्नाना वासाने तु भोज्यं देयं च वस्त्रादिकम्। भोजयेद्द्विजदाम्पत्यं भूषयेद्वस्त्रभूषणैः।।२।। कम्बलाजिनरत्नादि वासांसि विविधानि चोलकानि च देयानिप्रच्छादनवस्त्रानि।।३।। उपानहौ तथा ? गुप्तमोचको पापमोचको अनेन विधिना स्नानेन माधवः प्रीयतामिति।।४।। माघमासनियमः।। भूमौ शयीत होतव्या आज्यन्तिलसमन्वितम्। सर्वान् कामनावाप्नोति विन्दते परम् सुखम्।। विष्णुधर्मोत्तरेः सौम्यायने तु विप्राय वस्त्रदाने महत्फलम्। तिलपूर्णमाषां दत्वा रोगैः प्रमुच्यते।। शिवरहस्ये च तस्यां कृष्णतिलेस्नानं कार्यचोद्वर्तनं शुभम्।। तिलादेयाश्च विप्रेभ्यः सर्वदेवचोत्तरायणे।। तिलतैलेन दीपश्च देयाः शिवगृहे शुभा इति।। प्रयागे तीर्थ स्नानमुक्तं काशीखण्डे।। काश्यां दशाश्वमेध ये तपसि स्नान्ति मानवाः। दशाश्वमेधजनितं फलं तेषां भवेद्ध्रुवमिति।। माघकृष्णचतुर्थ्यांतु प्रादुर्भूतो गणेश्वर इति। अत्रषट्तिला पापनाशनीति।। अमायांऽवशेषमाघे क्रियते दानं तद्दान मेरुसन्निभम्। तत्र सावित्रीसहित ब्राह्मणं पूजयित्वा धेनुदद्यात् हेमाद्रि भविष्योत्तरः। अमायां माघमासस्य पूजयित्वा पितामह। गायत्री सहितं देववेदांगभूषितम्।। नवनीतमयी धेनुं फलैर्नानाविधैर्युताम्। सहिरण्यां सवस्त्राणांचब्राह्मणाय निवेदयेत्।। कीर्तयेत्प्रीयतामत्र सनातनः पद्मयोनिः। स्थाने स्वर्गेऽथपाताले यन्मर्त्ये किंचिदुत्तमम् तदाप्नोत्यसंदिग्ध पद्मयोनेः प्रसादतः।

माघ शुक्लसप्तसंख्या येनार्चयतेरवितत् पापविनाशाय- श्री भास्करप्रीत्यर्थमरुणोदये स्नानमन्त्रः यद्यदाचरितं पापं मया जन्मसुजन्मसु। तन्मे च शोकं च माकरीहन्तु सप्तमी। यद्यदत्र कृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं स्यापि ज्ञाताज्ञातंचयेपुनः- इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तिसप्तके। सप्तव्याधिसमायुक्तेहर माकरिसप्तमी।। स्नानान्तर अर्घ्यम् दद्यात्। सप्तर्षिसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर इति। जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तप्तिके। भीष्माष्टम्यां तर्पणम्। तत्र मंत्रः। वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्य प्रवराय च। गंगापुत्राय भीष्माय सर्वदाब्रह्मचारिणे। इति।।

अथ शिवरात्रिव्रतमहात्म्यम् - परात्परं नास्ति शिवरात्रिः परात्परम्। येनार्चितं भक्तेशं रुद्रत्रिभुवनेश्वरम्।।१।। जन्म-जन्मसहस्रेषु भ्रमते नात्रः संशयः वर्षे वर्षे महादेवो नरोनारोपतिव्रता ।।२।। शिवरात्रौ महादेव नित्यं भक्त्या प्रपूज्येत्। अर्णवोयादिवा शुष्येत् क्षीयतेहिमवानपि।।३।।

फाल्गुनशुक्लपूर्णिमायां होलिका दाहः- तत्रपूजा- देशकालौ संकीर्त्य मम सुकुटुम्बस्य दुण्ढाराक्षसीपीड़ापरिहारार्थं होलिका पूजनमहं करिष्ये। असक्त्याभयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वम् होलिवालिशे। अतस्त्वां पूजयित्वाभूते-भूतिप्रदाभव इति ध्यात्वा। होलिकायै नमः इति। विहितोपचारान्ते दीपनमन्त्र। दीपयाम्यद्यते घोरे चिति रक्षांसि सप्तमे। हिताय सर्वजगतां प्रीतये पार्वतीपतेः। अनेनार्चनेन होलिका-धिष्ठात्रीदेवताप्रीयताम्। होलिकायां ज्वलितायाम्। तमग्निं त्रिपरिक्रम्य शब्दैर्लिंगभगादिगतैः तेन शब्देन सा पापाराक्षसी तृप्तिमाप्नुयात्। द्वितीयदिने होलिका भस्मधारण मन्त्रः- वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च। अतस्त्वं पाहिनो देवि विभूतिर्भूतिदाभवति।। होलिकावायु परीक्षा- पूर्वे राजा प्रजासुखं आग्नेमग्निभयं दक्षिणनेऋत्येदुर्भिक्षं पश्चिमे महावृष्टि वायव्ये वायुवृद्धिः, उत्तरे सुभिक्षं ईशान्याञ्च प्रजासुखं संक्षेपात्सकाल-तिथिनिर्णयः। रम्भाहित्वापराविद्धा।। गणेशव्रते चन्द्रोदये ग्राह्यम् ।।५।। नागपूजायां सर्वत्र पूर्वविद्धम्।।१०।। नवमीयुक्तं च शुभाऽलाभे औदयिकी ।।१।। स्मार्तरुदयव्यापिनी ।५९। दण्डालिकापोष्या। पारणार्थाद्वादश्यांलाभे १० विद्धाप्युपोष्या। परमपोष्या।। परमवैष्णवे ५३ दण्डाधिकाया द्वादश्या मुपवासतेनकदाचिद् दशमी विद्धाया सामान्य वैष्णवः ५५ दण्डाधिकाया द्वादश्या मुपलासीनकदाचिद् दशमी विद्धाया सामान्य वैष्णवः ५५ दण्डात्मिका-एकादशी नैवोपोष्या।१२। सर्वत्र सर्वान पूर्वविद्धाकृष्णा परविद्धा कृष्णापूर्वा शुक्लापरा।।१५।।

संक्षिप्त पूजन विधि

पूजा प्रारम्भ करने से पूर्व पूजक (यजमान या स्वयं) स्वस्थचित्त होकर आसन पर बैठकर 'ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः' कहकर आचमन करे तत्पश्चात् 'ॐ हृषीकेषाय नमः' उच्चारणपूर्वक हस्तप्रक्षालन कर 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥' इस मन्त्र के साथ सबसे पहले बाये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से शरीर की पवित्रता हेतु जल छिड़कने के बाद प्राणायाम करें। 'ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति नः पूषा-विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।' इत्यादि मन्त्र के साथ स्वस्ति वाचन तथा गणपत्यादि देवताओं का स्मरण करें अनन्तर तदनन्तर हाथ में जल, पुष्प, सुपारी, दक्षिणा लेकर संकल्प करें- 'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽहनि द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते बौद्धावतारे........... नाम्निसंवत्सरे.......अयने.........ऋतौ......... मासे.....पक्षे.....तिथौ...... वासरे.......नक्षत्रे शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानेषुस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण-विशेषणविशिष्टायां....... गोत्रोत्पन्नः....... नामाऽहं मम कायिक-वाचिक-मानसिकज्ञाताज्ञात-सकलदोषपरिहार्थं श्रुति-स्मृतिपुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सकलकामना-सिद्ध्यर्थञ्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः पूजनमहं करिष्ये।' तत्पश्चात् सुपारी पर मौली लपेट कर चावलों पर स्थापित करें और नीचे लिखे आवाहन मन्त्र पढ़कर अक्षत छोड़ें। यदि मूर्ति हो तो पुष्प छोड़े। आवाहनम्-गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्॥ उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्॥ आगच्छ भगवन्देव। स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव॥ आसनम्-रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!॥ (आसनं समर्पयामि) प्रतिष्ठा-अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥ पाद्यम्-उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥ (पाद्यं समर्पयामि) अर्घ्यम्-अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते। (अर्घ्यं समर्पयामि)। आचमनम्-सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्॥ आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥ (आचमनीयम् समर्पयामि) स्नानम्-गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे॥ (स्नानम् समर्पयामि)। दुग्धस्नानम्)-कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥ (दुग्धस्नानम् समर्पयामि) दधिस्नानम्-पयसा तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (दधिस्नानम् समर्पयामि) घृतस्नानम्-नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकं। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (घृतस्नानम् समर्पयामि) मधुस्नानम्-तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधुः। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (मधुस्नानम् समर्पयामि)। शर्करास्नानम्-इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारकम्। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (शर्करास्नानं समर्पयामि)। पंचामृतस्नानं-पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करा युतम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (पंचामृतस्नानं समर्पयामि) चन्दनम्-मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम् चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (चंदन स्नानं समर्पयामि) शुद्धोदकस्नानम्-मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि) अनन्तर शुद्धदेववस्त्र से भगवान को पोछें तत्पश्चात् वस्त्रम्-सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्। (वस्त्रम् समर्पयामि)। यज्ञोपवीतम्-नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥ (यज्ञोपवीतम् समर्पयामि) गन्धम्-श्रीखण्डश्चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्। (गन्धम् समर्पयामि) रोली-कुंकुमं कामनादिव्यं कामिनीकामसम्भवाम्। कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर!॥ (रोली समर्पयामि) सिन्दूरम्-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥ (सिन्दूरम् समर्पयामि) अक्षतम्-अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥ (अक्षतान् समर्पयामि) पुष्पम्-पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः। पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥ (पुष्पम् समर्पयामि) पुष्पमालाम्-माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो! मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर। (पुष्पमालां समर्पयामि) बिल्वपत्रम्-त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर॥ (बिल्वपत्रम् समर्पयामि) दुर्वा-त्वं दुर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि। सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरी भव॥ (दुर्वा समर्पयामि) दुर्वांकुरम्-दुर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायकः॥ (दुर्वांकुरान् समर्पयामि) शमीपत्र-शमी शमय मे पापं शमी लोहितकण्टकी। धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी। (शमीपत्रम् समर्पयामि) अबीरगुलालम्-अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च। अबीरेणार्चितो देव अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ (अबीरगुलालञ्च समर्पयामि) आभूषणम्-अलंकारान्महादिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान्। गृहाण देवदेवेश प्रसीद परमेश्वरः॥ (आभूषणम् समर्पयामि) धूपम्-वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ (धूपम् दर्शयामि) दीपम्-साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥ (दीपम् दर्शयामि) नैवेद्यम्-शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम्। उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ (नैवेद्यम् निवेदयामि) मध्ये पानीयसमर्पणम्-अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धिं च पिबेच्छया। त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि!। (मध्ये पानीयं समर्पयामि) ऋतुफलम्-इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि। (ऋतुफलम् समर्पयामि) आचमनम्-गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशेस्थितम्। आचम्यतां सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम॥ (आचमनीयं समर्पयामि) ताम्बूलम् पुंगीफलञ्च-पुंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्। (ताम्बूलं पुंगीफलञ्च समर्पयामि) दक्षिणा-हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ (दक्षिणां समर्पयामि) आरती-चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥ (आर्तिक्यं दर्शयामि) पुष्पाञ्जलिम्-नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!॥ (पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि) प्रार्थना-रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षकः। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्। (प्रार्थनां समर्पयामि) अनया पूजया श्रीमहागणपतिः प्रीयतां न मम॥ इसी प्रकार अन्य देवों की भी पूजा करनी चाहिये। □

संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय

१. नवसंवत्सरः-काशीस्थ शीर्षस्थ ज्योतिषियों पञ्चाङ्गकारों सम्पादकों के एक उच्चस्तरीय विमर्श के पश्चात सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा १९ मार्च गुरुवार सन् २०२६ से "रौद्र" नामक संवत्सर का विनियोग वर्षपर्यन्त संकल्प आदि धार्मिक कृत्यों में किया जायेगा। साथ ही इस वर्ष विगत चैत्र कृष्ण अमावस्या गुरुवार १९ मार्च गुरुवार को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय हुआ है। इस प्रकार शास्त्र के नियम के अनुसार क्षयवती प्रतिपदा में ही नवसंवत्सरारम्भ एवं वासन्तिकनवरात्रारम्भ हो जायेगा। **कलश स्थापन प्रातः ६।४० बजे के बाद दिनभर किसी भी समय किया जा सकता है।**

२. गंगादशहरा-यदि ज्येष्ठ के महीने में मलमास लगता है तो गंगा दशहरा का प्रसिद्ध पर्व मलमास में पड़ने वाली ज्येष्ठ शुक्ल दशमी तिथि को ही मनाया जायेगा। तदनुसार अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी (१०) मंगलवार २६ मई को ही गंगा दशहरा का पर्व एवं स्नान सम्पन्न होगा। **"ज्येष्ठे मलमासे सति तत्रैव दशहरा कार्या न तु शुद्धे।"**

३. रक्षाबन्धन-२८ अगस्त शुक्रवार को श्रावण पूर्णिमा तिथि दिन में ९।१८ बजे तक है। भद्रा नहीं है अतः रक्षाबन्धन के लिये पूरा दिन मुहूर्त है। इसे भद्रारहित और तीन मुहूर्त से अधिक उदयकाल व्यापिनी पूर्णिमा मे करना चाहिए। **"अथ रक्षाबन्धनमस्यामेव पूर्णिमायां भद्रारहितायां त्रिमुहूर्ताधिको व्यापिन्यामपराह्णे प्रदोषे वा कार्यम्।"**

४. श्रीकृष्णजन्माष्टमी- इस वर्ष जन्माष्टमी व्रत-पर्व के लिये ४ सितम्बर २०२६ शुक्रवार को उदया तिथि अष्टमी रात ११।१३ बजे तक है तथा रोहिणी नक्षत्र भी रात ११।१२ बजे तक है। इस प्रकार औदयिक अष्टमी एवं रोहिणी नक्षत्र दोनो एक साथ एक ही दिन ४ सितम्बर शुक्रवार को जयन्ती योग में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व सबके लिये होगा। **"समायोगे तु रोहिण्यां निशीथे राज सत्तम्। समजायत गोविन्दो बालरूपी चतुर्भुजः।।"** इस वर्ष की श्रीकृष्णजन्माष्टमी अति उत्तम योगवती है।

५. शारदीय नवरात्र-इस वर्ष का शारदीय नवरात्र १० दिन का होगा क्योंकि अष्टमी तिथि की वृद्धि हुयी है। नवरात्रारम्भ का कलश स्थापन चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग होने के कारण ११ अक्टूबर रविवार को मध्याह्न अभिजित मुहूर्त में ११।३६ बजे से १२।२४ बजे के मध्य किया जायेगा। नवरात्रारम्भ के कलश स्थापन में चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग त्याज्य है। **"सम्पूर्णा प्रतिपद्देव चित्रा युक्ता यदा भवेत्। वैधृत्या वापि युक्ता स्यात्तदा मध्यंदिने रवौ।"** महाष्टमी का मान १८ अक्टूबर रविवार को होगा तथा महानवमी १९ अक्टूबर सोमवार को मनाई जायेगी।

६. विजयादशमी-२० अक्टूबर मंगलवार को उदयातिथि नवमी दिन ९।३५ बजे तक है। उसके पश्चात् दशमी तिथि लग जायेगी। श्रवण नक्षत्र भी दिन ४।८ बजे तक है। इस प्रकार दशमी तिथि एवं श्रवण नक्षत्र का संयोग अपराह्न काल में मिल जा रहा है। अतः **विजयादशमी** का प्रसिद्ध पर्व **२० अक्टूबर मंगलवार** को मनाया जायेगा क्योंकि २१ अक्टूबर को श्रवण नक्षत्र दशमी तिथि का संयोग नही बन रहा है। **"सा च द्वितीयदिने श्रवण योगाभावे पूर्वा प्राह्या।"**

७. धनतेरस-प्रदोष काल में त्रयोदशी तिथि ६ नवम्बर शुक्रवार को मिल रही है अतः धनतेरस धनत्रयोदशी एवं धन्वन्तरि जयन्ती ६ नवम्बर शुक्रवार को मनाई जायेगी।

८. दीपावली-प्रदोष एवं रात्रि व्यापिनी कार्तिक कृष्ण अमावस्या में ही दीपावली का प्रसिद्ध पर्व ८ नवम्बर रविवार को पूरे देश में एक साथ एक ही दिन मनाया जायेगा। लक्ष्मी पूजा के लिए तीन मुहूर्त निर्धारित किये जा रहे है-१.व्यावसायिक प्रतिष्ठानो में जहाँ दिन में ही **लक्ष्मी पूजन** किया जाना हो वहाँ स्थिर कुम्भ लग्न १।० से २।३१ बजे तक। २.सर्वोत्तम प्रदोष काल का स्थिर वृष लग्न सायं ५।३७ बजे से ७।३४ बजे तक तथा ३.महानिशा मे **काली पूजा** एवं तंत्र मन्त्र सिद्धि के लिए स्थिर सिंह लग्न रात १२।५से २।१९ बजे तक। स्थानीय समय के अनुसार स्थान विशेष का समय निर्धारित किया जायेगा। कृपया लग्न परिवर्तन तालिका (पृष्ठ ४६) से काशी के उपरोक्त समय में स्थानीय समय के अनुसार धन-ऋण कर समय निर्धारित कर लें।

९. होलिकादहन-होलिका दहन तीन शास्त्रीय नियमों का पालन करते हुए किया जाता है। १.फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि हो। २.रात का समय हो एवं ३.भद्रा बीत चुकी हो। इस वर्ष **२१मार्च रविवार को** सायं ५।१४ बजे के बाद चतुर्दशी उपरान्त पूर्णिमा तिथि प्रारम्भ हो जायेगी तथा उसी के साथ भद्रा भी प्रारम्भ होकर रात ४।२७ बजे तक है अतः ऐसी परिस्थिति में शास्त्र के नियम के अनुसार भद्रा पुच्छ रात १२।२६ बजे से लेकर १।३८ बजे तक का समय 'होलिका दहन' के मुहूर्त के लिए निर्धारित किया गया है। **"प्रदोष व्यापिनी प्राह्या पौर्णिमा फाल्गुनी सदा। तस्यां भद्रा मुखं त्यक्त्वा पूज्या होलानिशामुखे।"**

१०. होली धुरेड़ी-काशी की परम्परा है कि होलिका दहन के साथ ही होली का उत्सव काशी में स्थित चतुर्षष्टी (चौसट्ठी देवी) की यात्रा कर उनको रंग-गुलाल चढ़ाकर होली का पर्व शुरु हो जाता है। अतः काशी मे होली का पर्व २२ मार्च सोमवार को ही मनाया जायेगा। शास्त्र के नियमानुसार चैत्र कृष्ण प्रतिपदा २३ मार्च मंगलवार को वसन्तोत्सव सहित होली का पर्व पूरे देश में (काशी से अन्यत्र) मनाया जायेगा।

भारतीय पर्व एवं व्रतोपवास संवत् २०८३

विक्रम नवसंवत् वसन्त नवरात्रारम्भ	१९ मार्च	गुरु.
झुलेलाल जयन्ती	२० मार्च	शुक्र.
मुस्लिम पर्व ईद	२१ मार्च	शनि.
चैती छठ	२४ मार्च	मंगल.
श्रीरामनवमी	२७ मार्च	शुक्र.
महावीर जयन्ती (जैन)	३१ मार्च	मंगल.
चैत्री पूर्णिमा, श्री हनुमद् जयन्ती	२ अप्रैल	गुरु.
मेष-सतू संक्रान्ति, अम्बेडकर जयन्ती	१४ अप्रैल	मंगल.
श्री परशुराम जयन्ती	१९ अप्रैल	रवि.
अक्षय तृतीया	२० अप्रैल	सोम.
आद्यजगत गुरु शंकराचार्य जयन्ती	२२ अप्रैल	बुध.
श्री रामानुजाचार्य जयन्ती	२२ अप्रैल	बुध.
गंगा सप्तमी, बाबू कुँवर सिंह जयन्ती	२३ अप्रैल	गुरु.
श्री नृसिंह जयन्ती	३० अप्रैल	गुरु.
वैशाख पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती	१ मई	शुक्र.
वट सावित्री व्रत (बरगदाई)	१६ मई	शनि.
मलमासारम्भ	१७ मई	रवि.
श्रीगंगा दशहरा	२६ मई	मंगल.
मलमास समाप्ति, सोमवती अमावस्या	१५ जून	सोम.
निर्जला एकादशी (भीमसेनी)	२५ जून	गुरु.
मु.पर्व मुहर्रम	२६ जून	शुक्र.
सन्त कबीर जयन्ती, ज्येष्ठ पूर्णिमा	२९ जून	सोम.
रथयात्रा	१६ जुलाई	गुरु.
हरिशयनी एकादशी	२५ जुलाई	शनि.
गुरु पूर्णिमा	२९ जुलाई	बुध.
धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जयन्ती	१४ अगस्त	शुक्र.
हरियाली तीज, कजरीतीज, भार.स्वतन्त्रता दिवस	१५ अगस्त	शनि.
नाग पंचमी	१७ अगस्त	सोम
रक्षाबन्धन	२८ अगस्त	शुक्र.
हलषष्ठी, ललही छठ	२ सितम्बर	बुध.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सबकी	४ सितम्बर	शुक्र.
कुशोत्पाटिनी अमावस्या	१० सितम्बर	गुरु.
हरितालिका तीज, गणेशोत्सव	१४ सितम्बर	सोम.
वैनायकी वरद श्रीगणेश चतुर्थी		
ऋषि पंचमी	१५ सितम्बर	मंगल.
लोलार्क षष्ठी, विश्वकर्मा पूजा	१७ सितम्बर	गुरु.
महारविवार व्रत	२० सितम्बर	रवि.
अनन्त चतुर्दशी	२५ सितम्बर	शुक्र.
पितृपक्ष श्राद्ध तर्पणारम्भ	२७ सितम्बर	शुक्र.
गांधी व शास्त्री जयन्ती	२ अक्टूबर	शुक्र.
महालक्ष्मी पूजन समापन	३ अक्टूबर	शनि.
जीवित्पुत्रिका व्रत, सोरहिया मेला समाप्त	३ अक्टूबर	शनि.
मातृनवमी	४ अक्टूबर	रवि.
सर्वपैतृ अमावस्या, पितृ-विसर्जन	१० अक्टूबर	शनि.
शारदीय नवरात्रारम्भ	११ अक्टूबर	रवि.
महाअष्टमी	१८ अक्टूबर	रवि.
महानवमी	१९ अक्टूबर	सोम.
विजयादशमी	२० अक्टूबर	मंगल.
पापांकुशा एकादशी, भरत मिलाप (काशी)	२२ अक्टूबर	गुरु.
कोजागरी, शरद पूर्णिमा	२५ अक्टूबर	रवि.
पूर्णिमा, वाल्मीकि जयन्ती	२६ अक्टूबर	सोम.
करक चतुर्थी, करवा चौथ	२९ अक्टूबर	गुरु.
अहोई अष्टमी	१ नवम्बर	रवि.
राधाष्टमी, राधा जयन्ती	२ नवम्बर	सोम.
धनतेरस, धन्वन्तरी जयन्ती	६ नवम्बर	शुक्र.
नरक चतुर्दशी, हनुमत जयन्ती	७ नवम्बर	शनि.
दीपावली	८ नवम्बर	रवि.
अन्नकूट, काशी से अन्यत्र गोवर्धन पूजा	९ नवम्बर	सोम.
काशी गोवर्धनपूजा, भईयादूज, चित्रगुप्तपूजा	१० नवम्बर	मंगल.
सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ, नागनथैय्या (काशी)	१३ नवम्बर	शुक्र.
सूर्यषष्ठी (डाला छठ)	१५ नवम्बर	रवि.
गोपाष्टमी	१७ नवम्बर	मंगल.
अक्षय नवमी	१८ नवम्बर	बुध.
हरिप्रबोधिनी एकादशी, तुलसी विवाहोत्सव	२० नवम्बर	शुक्र.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	२३ नवम्बर	सोम.
कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानकजयन्ती, देवदीपावली	२४ नवम्बर	मंगल.
श्रीकालाष्टमी, कालभैरवाष्टमी जयन्ती	१ दिसम्बर	मंगल.
रुद्रव्रत (पीड़िया)	९ दिसम्बर	बुध.
विवाह पंचमी	१४ दिसम्बर	सोम.
मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती	२० दिसम्बर	रवि.
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	२३ दिसम्बर	बुध.
क्रिसमस डे, बड़ा दिन, मालवीय-अटल जयन्ती	२५ दिसम्बर	शुक्र.
गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती (नवीन मत)	५ जनवरी	मंगल.
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (अंग्रेजी दिनांक)	१२ जनवरी	मंगल.
मकर संक्रान्ति का पुण्यकाल (खिचड़ी पर्व)	१५ जनवरी	शुक्र.
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती	२३ जनवरी	शनि.
गणेश चौथ	२५ जनवरी	सोम.
भारतीय गणतन्त्र दिवस	२६ जनवरी	मंगल.
मौनी अमावस्या	६ फरवरी	शनि.
वसन्त पंचमी	११ फरवरी	गुरु.
हरसुब्रह्मदेव जयन्ती, महानन्दा नवमी	१५ फरवरी	सोम.
माघी पूर्णिमा, रविदास जयन्ती	२० फरवरी	शनि.
जानकी जयन्ती	२८ फरवरी	रवि.
महाशिवरात्रि	६ मार्च	शनि.
आमलकी रंगभरी एकादशी	१८ मार्च	गुरु.
होलिकादहन	२१ मार्च	रवि.
होली रंगोत्सव (काशी में)	२२ मार्च	सोम.
बसन्तोत्सव, धुरेड़ी सर्वत्र	२३ मार्च	मंगल.
बुढ़वा मंगल	३० मार्च	मंगल.
महा वारुणी पर्व योग	३ अप्रैल	शनि.
संवत्सर २०८३ समाप्त	६ अप्रैल	मंगल.

पत्र व्यवहार का पता-

रामेश्वरनाथ ओझा एम.ए. ज्योतिषाचार्य

प्रधान सम्पादक

श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्

कार्यालय

बी. ३७/१८२-क, खन्ना वाटिका, बिरदोपुर, वाराणसी-२२१०१०

ज्योतिष सम्बन्धी विमर्श के लिये पत्र भेजें, उत्तर दिया जायेगा।

सत्वाधिकारी रामेश्वरनाथ ओझा की ओर से आनन्द अग्रवाल द्वारा मुद्रित तथा सह प्रकाशक सावित्री ठाकुर प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित।